

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178915

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No **H 83/D 49 R** Accession No **H 2491**

Author **देवदास दास,**

Title **स्वतन्त्रता-संग्राम, 1951**

This book should be returned on or before the date
last marked below

रक्त-राग



ज्ञानपीठ-लोकोदय-ग्रन्थमाला—हिन्दी ग्रन्थाङ्क ५५

रक्त—राग

श्री देवेश दास



*Sarvodaya Sahitya Mandir,
Kotha (Bus Stand) Hyderabad—(A.P.)*

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

ज्ञानपीठ-लोकोदय-ग्रन्थमाला-सम्पादक और नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन, एम० ए०

प्रकाशक

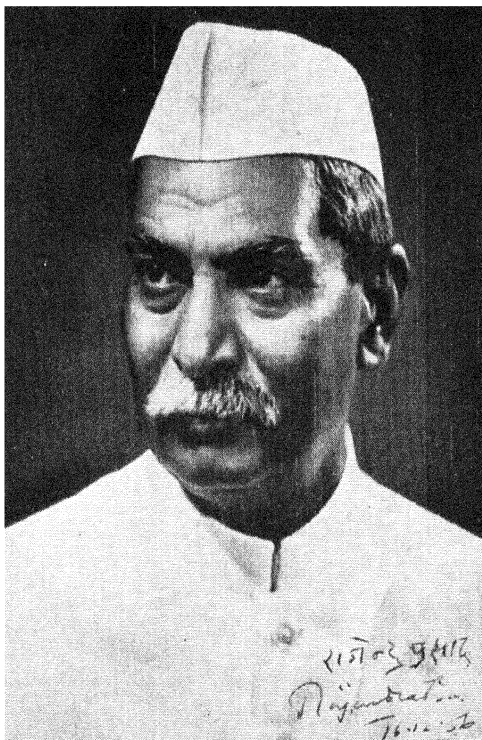
अयोध्याप्रसाद गोयलोय

मंत्री, भारतीय ज्ञानपीठ

दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस

प्रथम संस्करण
१९५७ ई०
मूल्य तीन रुपये

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली



डा० राजेन्द्रप्रसाद
राष्ट्रपति
एवं
सर्वोच्च सेनापति



राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली ।

१५ दिसम्बर, १९५६

श्री देवेश दास 'इंडियन सिविल सर्विस' के एक उच्च पदाधिकारी हैं। अपने उच्च पद के कर्तव्यों की पूरा करते हुए भी इन्होंने बंगला साहित्य में रस लिया है और उसकी वृद्धि में सक्रिय सहयोग भी दिया है और इस प्रकार स्वनामधन्य बंकिमचन्द्र चेटर्जी, रमेश चन्द्र दत्त, द्विजेन्द्रलाल राय प्रभृति साहित्यकारों की परम्परा की इन्होंने इस युग में कायम रखा है।

'रक्त राग' मूल पुस्तक बंगला में लिखी गई है। इसका हिन्दी संस्करण भी उसके साथ ही प्रकाशित हो रहा है, यह प्रसन्नता की बात है। राष्ट्रभाषा के प्रति उनका यह



राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली ।

प्रेम सराहनीय है।

यह पुस्तक सामरिक पृष्ठभूमि पर उपन्यास के रूप में लिखी गई है। सैनिक जीवन सर्वसाधारण के लिये एक प्रकार से रहस्य बना रहता है। इसमें उस जीवन पर कुछ प्रकाश डाला गया है। मेरी आशा है कि इससे देश की ओर विशेषकर हमारे सैनिकों की कुछ मार्गदर्शन मिलेगा और सच्चे सैनिक का आदर्श उनके सामने आयेगा।

रा. जिन्दा ५६१५

भाव भूमि

एक अंगरेज जनरल धीरे से दरवाजा खोल कर अन्दर झाँका और दस्तक दी। ठक-ठक। इस आवाज के साथ-साथ मिलिटरी यूनीफार्म पहने हुए जनरल अन्दर आकर खड़ा हो गया। उसके मुँह में चुकट और नेत्रों में भय समाया था। अत्यधिक कालफ की हुई यूनीफार्म में, और उसके गले के गरम स्वर में ठीक तरह से मेल नहीं बैठ रहा था। मैं तुरन्त ही भाप गया कि कोई गुस्तर व्यापार है। अपने सामने मेज की दूसरी ओर खाली कुर्सी पर बैठने का सज्जन मिया।

उसका मतलब था कि थोड़ी देर ठहरिये। मैं अपने सामने की फाइल से निपट लूँ तब बातचीत मुनूँ।

फिन्तु जनरल साहब का उतनी देर रुकना भी कठिन हो गया। बदहवासी में वे अपना टॉप उतारना और भारी भरकम मूँछों पर स्नेह पूर्वक हाथ फेरना तक भूल गये। अतएव मैंने जिज्ञासा की—“क्या बात है?”

निचल होट का दांतों से दबाकर उन्होंने बहुत धीरे से उत्तर दिया—
सब कुछ खत्म हो गया।

उनकिर्क सागर तट पर यद्ध में हार हो जाने और समस्त सार सगञ्जाम से हाथ धा बैठने पर भी जिन्होंने हार नहीं मानी, लन्दन के बम से तहम-नहस हो जाने पर भी जिन्होंने अपना मिर् ऊँचा रक्खा और पलट कर जर्मनी पर हमला बोला दिया, उन्होंने यह कैसे कहा कि सब कुछ खत्म हो गया? आखिर बात क्या है? मैंने तुरन्त दो कप काफी लाने का आदेश दिया।

मेरे घड़ी बजाने के साथ ही जनरल उठा और उसने जाकर आफिस के दरवाजे अन्दर से बन्द कर लिये। अर्थात् काफी नहीं, केवल कामकाज। केवल गोपन मलाह-मशविरा।

धीरे-से फुमफुमाता हुआ जनरल बोला—भगवान् की मोगन्ध! मैं इस समय आपको जो जो गुप्त समाचार बतलाने जा रहा हूँ, उसे बिल्कुल गोपन रखना होगा। कल सबेरे आप समाचार-पत्र में एक अजीब-सी खबर पढ़ेंगे।

जापानियों ने मणिपुरी नागा पहाड़ पर हमला कर दिया है। समस्त देश इतना ही जान सकेगा। युद्ध क्षेत्र के भीतर या बाहर सिर्फ आप ही एक ऐसे भारतीय हैं जो यह जानेंगे—इतना कह कर जनरल रुक गया। और मेरी ओर ताकने लगा।

हँस कर मैंने कहा—इतने वर्षों से सरकारी काम करते-करते इस स्टील फ्रेम में सम्म होकर बैंक ऑफ इंग्लैण्ड के गर्भ-गृहों के समान निरापद हो गया हूँ। इतमीनान से अपनी बात कहिये।

माफ़ी मांगते हुए वह बोला—जी. एच. क्यू. से सब खबरें लेकर आपके पास आया हूँ। लिखा पढ़ी का कोई भी निशान बाक़ी नहीं छोड़ा है। समस्त बातें खोल कर बताता हूँ।

उनका चुरुट ठंडा पड़ गया था।

किन्तु मेरे समस्त शरीर में आग-सी लग गई थी।

—केवल जापानी ही नहीं आये हैं, साथ में आई है आई. एन. ए.। तुम्हारे सुभाष बोस की तैयार की हुई, उन्हीं के नेतृत्व से अनुप्राणित सेना। यह समाचार हम किसी भी भारतीय को बताना नहीं चाहते। इसका कारण आप समझ ही गये होंगे।

—किन्तु इसे आप छिपा कर कब तक रख सकेंगे ? युद्ध में आहत सैनिक ऐंबुलेंस-द्वारा पीछे भेजे ही जायेंगे।

—नहीं, वे नहीं आ सकेंगे। उनका आना नहीं हो सकेगा। इसके अलावा मणिपुर-दिमापुर मार्ग बंदखल हो गया है।

—तब ?

—किन्तु विमान से आई. एन. ए. ने जो इश्तहार और तस्वीरें आदि फेंकी हैं, वे सब दिल्ली भेज दी गई हैं। उसमें क्या लिखा है, उन्होंने इधर के लोगों से क्या आवेदन किया है, यह सब हम लोग जानना चाहते हैं। यहाँ के सरकारी लोग तो इस मामले में बड़ी गड़बड़ी करेंगे। इससे मैं उन्हें ये सब बातें नहीं बताना चाहता। इसके अलावा हम तुरन्त ही समस्त बातें भी जान लेना चाहते हैं। लालफीते के तरीके से जानने पर बहुत समय बरबाद हो जायेगा। उतना समय हमारे पास नहीं है। तिल-तिल करके समय बीतता जा रहा है।

तस्वीरें, इश्तहार, आवेदन-पत्र हिन्दी, बंगला; अंगरेज़ी तथा कई

भाषाओं में थे। वे सब एक-एक करके उनके पोर्ट फोलियो से बाहर आने लगे। उन्हें पढ़ा और देखा।

उस दुःसह अग्नि के ताप से भरे दिन की स्मृति क्या स्वप्न थी, या सत्य ?

उसके तीन-चार वर्षों बाद समस्त भारत को 'एक्सिस' इण्टरनी अर्थात् जर्मन, जापानी, इटालियन, बन्दी लोगों के साथ उनके कैम्प-जीवन का प्रत्यक्ष निविड़ परिचय हो गया। उनके बन्दी जीवन की छोटी-मोटी रोज़मर्रा की बातें ही मुझे मालूम नहीं हुईं अपितु पकड़े जाने के पहले की समस्त घटनाएँ, कहानी, भागने की चेष्टा और दूर दूरान्तर के समस्त असीम वैचित्र्य, मानवता, अमानुषिकता सभी को जान गया।

आसाम-वर्मा की सीमान्त में जहाँ-जहाँ युद्ध की छाप पड़ी थी, उन समस्त स्थानों में मेरे पैरों की भी छाप पड़ी और हृदय में उसकी अमिट छाप पड़ गई। और फिर १९४२ में आज़ाद हिन्द के अस्तित्व के शेष काल में कभी-कभी बेतार से नेता जी का आह्वान और आज़ाद हिन्द सरकार का संवाद किस भारतीय ने न सुना होगा ?

युद्ध-दफ़्तर में बहुत से गोपनीय कागज-पत्र हैं। उनमें-से कुछ प्रकाशित भी हुए थे। विलायत में आई. एन. ए. के बारे में जो पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं, उनमें समस्त घटनाओं का व्योरेवार वर्णन दिया था। लाल क़िले के ऐतिहासिक विचार के समय बहुत-से समाचारों का पता चला, उसके प्रकाश में अन्य सूत्र भी हाथ में आ गये। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि सामरिक जीवन तथा युद्ध के नियम क़ानून की बातें पढ़ते-पढ़ते न जाने कितनी कल्पनाएँ तथा अनेक तथ्य मेरे मन में जागृत हो उठे। समस्त तथ्यों से महान तथ्य मेरे सामने यह आया कि मैंने मानवता की कहानी मानव-दृष्टि से देखी।

इस कथा के अधिकांश पात्र काल्पनिक हैं। कुछ ऐसे पात्र भी हैं जो इतिहास में स्थान प्राप्त कर चुके हैं, उनके बारे में कोई कल्पना नहीं की गई है। इसमें वर्णित घटनाएँ एवं युद्ध सब कुछ सत्य हैं। केवल इतिहास को साहित्य का मोयन दे दिया गया है।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के अगणित सेनानियों को

रक्तराग

१

सैनिक-भोजन-शाला में आज विदाई की धूम-धाम है। कल बहुत तड़के सबको युद्ध क्षेत्र में जाना है। कौन कहाँ भेजा जायगा, इसका किसी को पता नहीं।

“तुम्हारी पत्नी तो ठीक-ठाक है न ? लेफ्टिनेंट सिन्हा ?”

नव नियुक्त सैनिक पदाधिकारी सिन्हा यकायक चौंक पड़ा, मानो वज्रपात हो गया हो। तुरन्त ही वक्षःस्थल तान कर खड़ा हो गया और उसने सैनिक सलामी दी। उसके सम्मुख ब्रिगेडियर स्वयं खड़े थे, जिन्होंने अभी गुरु गंभीर स्वर में उससे पूछा था, “तुम्हारी पत्नी तो ठीक-ठाक है न ? लेफ्टिनेंट सिन्हा ?”

“पत्नी ? सर, पत्नी तो नहीं हैं।”

“हाँ, हाँ, मेरा आशय तुम्हारी हज़िफ़ से है।”

“सर, म-म-मैंने विवाह नहीं किया है।”

ब्रिगेडियर साहब का साढ़े छः फुट लम्बा बेंत के समान शरीर सहानु-भूति से थोड़ा झुक गया। खास अंग्रेज चेहरा। छरहरे लम्बे शरीर पर दुबला पतला चेहरा अच्छा लग रहा था। बहुत परिश्रम से सँवारी हुई मूँछें थीं, जिनके भीतर से शरारत भरी मुसकान झलक रही थी। तीन बटालियनों के क़रीब तीन हज़ार जवान और अधिकारी इस मुसकान में अच्छी तरह परिचित थे। तीन-तीन लेफ्टीनेंट-कर्नलों का इस हंसी के मारे नाक में दम था।

यह हँसी थोड़ी तिरछी होकर प्रायः एक फुट नीचे लेफ्टीनेंट सिन्हा पर उतर आई थी। ब्रिगेडियर बोले, “नेवर माइण्ड ओल्ड बाय, विवाह करो या न करो; पत्नी तो तुम्हें रखनी ही पड़ेगी।”

बेचारा देवल सिन्हा ! उसने मारे शरम के सर नीचा कर लिया, किन्तु उसे उत्तर तो कुछ-न-कुछ देना ही था। ब्रिगेडियर एक सम्पूर्ण उपक्षेत्र का सेनापति होता है। उसका यह कहना कि विवाह करो या न करो, किन्तु पत्नी तो तुम्हें रखनी ही होगी, निरर्थक न था। इतने दिनों बाद यह बात समझ में आई कि भद्र घराने के बंगाली लोग सेना में भरती क्यों नहीं होते। सब कुछ सहन कर लेंगे, “जगह खाली नहीं है” का नोटिस देख कर भी साहब के घरों पर धरना दे लेंगे, किन्तु इधर आने की कभी न सोचेंगे। बिना किसी बात के चरित्र पर लांछन तो न लगेगा।

इसी बीच ब्रिगेडियर की और बातें सुन कर उसका मिर चकरा गया। उसने आज्ञा दी, “जाओ, शीघ्र पत्नी का प्रबन्ध करो। कैप्टीन के मैनेजर से सब पता लग जायगा। अपनी सैनिक पोशाक के बटनों का भी विचार रखना।”

सिन्हा ने साहब को सैनिक अभिवादन किया और तुरन्त हाल के बाहर चला गया। चारों ओर सैनिक अधिकारियों का जमाव था। प्रायः सभी अंग्रेज थे, किन्तु इस महायुद्ध में इनसे काम चलता न देख कर कुछ देसी भारतीयों को भी रखना पड़ा था। उनमें तीन पंजाबी थे, एक उत्तर प्रदेश के थे, जिनका नाम था रवीन्द्र मिश्र। अंग्रेज इन्हें प्यार में राबिन* पुकारते थे।

ऐसे संकट में फँस कर देवल किसी की ओर देख तक न सका। वह सबकी दृष्टि बचाकर हाल के बाहर खिसक रहा था कि ब्रिगेडियर के शब्द उसे फिर सुनाई पड़े, “मैनेजर से कहना कि आज ही तुम्हारे लिए एक हजिफ़ का प्रबन्ध कर दे।”

देवल को लगा कि बहुत से लोगों की दबी मुसकान और छिपी चितवनें उसका पीछा कर रही हैं। यदि रात्रि का अन्धकार दया करके नीचे न उतर आया होता तो सभी देख लेते कि बेचारे के कान टमाटर की तरह लाल हो रहे हैं।

अब देवल क्या करे? अब तो सैन्य दल से नाम कटा कर चले जाने का भी कोई उपाय नहीं है। कल सबरे पता नहीं, किस मोर्चे पर

* राबिन, अंग्रेजी भाषा में एक पक्षी का नाम।

ब्रिगेड को युद्ध के लिए चले जाना पड़ेगा। आज रात को उसी की विदाई का भोज था। अब तो नौकरी छोड़ कर जाया भी नहीं जा सकता, नहीं तो सब बदनामी करेगे कि बगाली हमेशा से डरपोक होते हैं। भीरु कापुरुष की तरह कोई बहाना बना कर रुका भी नहीं जा सकता है। पैर बिल्कुल ठंडे और सन्न पड़ गये हैं। मगर यह सब चलेगा नहीं। भागा भी तो नहीं जा सकता है। वह भी तो अपराध है, और फिर भाग कर जाये भी कहाँ ?

किन्तु चागे ओर जो इतने सैनिक और इतने अधिकारी हैं, ये सबके सब खराब चरित्र के तो नहीं कहे जा सकते। गोरे सैनिक और अधिकारी “नेशनल सर्विस एक्ट” के नियम को मान कर अपना काम छोड़ कर आये हैं। इनमें बहुतों के घर में पत्नी और बच्चे हैं। सेना में आने के कारण ही क्या सब छिप कर फौजी रखेलियाँ रखे होंगे ? फिर समझ में नहीं आता कि ब्रिगेडियर साहब ने क्या सोच कर सबके सामने ऐसी बात कह दी ? इस अवसर पर कुछ निमंत्रित महिलाये भी तो थी। यह सुन कर उन्होंने क्या सोचा होगा ? छि ।

देवल ने बाई कलाई पर बँधी घड़ी को अपने से चिपटा लिया। उस घड़ी के पीछे ढकने के भीतर एक छोटी-सी छवि थी। यदि कोई कलक लगा तो यह छवि उसे सात्वना देगी और सहायता करेगी। वह अकेला नहीं है।

आज बड़े ठाठ-बाट से मेस-रात्रि मनायी जायेगी। कल तडके ही शिविर उखाड़ लेना है। इतने दिनों तक सैनिक प्रशिक्षण और युद्ध की तैयारी होती रही। स्थान-स्थान से बारह-चौदह हजार सैनिक इस स्थल पर उपस्थित होंगे और फिर पता नहीं, कहाँ भेज दिये जायेंगे। सैनिक जीवन में इतना ही यथेष्ट है।

किन्तु देवल को न तो इन सबकी चिन्ता थी और न घड़ी के ढक्कन के नीचे की मानुषी-छवि की। सैनिक जीवन में इस पत्नी के आविर्भाव के बारे में किसी को कुछ पता न था। छुट्टी के समय कुछ रंगीले अधिकारी तिरछी टोपी या हैट लगा कर अँधेरे में न जाने कहाँ खिसक जाते थे। कप्तान रमैया ने शपथ खाकर बताया कि किसी परिवार में उसने अपनी राधा खोज ली है, किन्तु यह तो बड़ी विचित्र-सी बात हुई कि लेफ्टिनेंट सिन्हा से सबके सामने पत्नी का प्रबन्ध करने को कह दिया गया।

कैण्टीन के दरवाजे खुले थे। आज खूब खाने-पीने और रँगरेलियों की रात थी। यहाँ से इस ब्रिगेड के चले जाने पर दूसरा दल इन बैरकों में प्रशिक्षण लेगा। नये ग्राहकों के लिए खूब साज-सजावट की जा चुकी है। अंग्रेज व्यापारियों का मंत्र है कि ग्राहक सर्वदा ठीक होता है। वे हमारी देशी दुकानदारों की तरह यह नहीं सोचते कि चीज बेच कर ग्राहक को पर दया कर रहे हैं; परन्तु सैनिक कैण्टीन के देमी मैनेजर ने अंग्रेजी व्यवहार अच्छी तरह सीख लिया था।

उसने लेफ्टिनेंट साहब को रात्रि में आते देख कर बड़े विनम्र भाव से अभ्यर्थना की। देवल को ऐसा लगा मानो वह कोई गोपन बात मुनने को तैयार है। वे इससे और भी घबड़ा गये। वे शीघ्र ही निर्णय न कर सके कि उससे क्या कहें। मैनेजर चौधरीसिंह की मूँछे ब्रिगेडियर साहब के ढंग पर कटी हुई थी। इस सादृश्य से उन्हें ऐसा लगा मानो वह भीतर-ही-भीतर ब्रिगेडियर साहब से मिला हुआ है।

बहुत-सी इधर-उधर की बातें करने के बाद अन्त में देवल को मैनेजर से यह कहना ही पड़ा कि ब्रिगेडियर साहब की यह आज्ञा है कि आज रात के लिए उनके लिए कहीं से एक हज्रिफ़ का प्रबन्ध किया जाय। छिः छिः कितनी वाहि्यात बात है। कालेज में शिक्षा प्राप्त आज तक इतने चरित्रवान देवलकी सैनिक जीवन में ऐसी..... ?

देवल बात पूरी तौर से कह भी न पाया था कि अट्टहास से चौधरीसिंह की मूँछों और तोंद पर भूचाल-सा आ गया। हँसते-हँसते उसने दो-एक बार देवल के कंधे थपथपाये। उसे ऐसा लगा मानों नीचे की मिट्टी खिसक जायेगी।

“हज्रिफ़ ? ब्रिगेडियर साहब ने हज्रिफ़ का जुगाड़ बैठाने को कहा है ? और उससे तुम्हारा चरित्र नष्ट हो जायगा ? अरे पढ़े लिखे बेवकूफ़, अपने विश्वविद्यालय का नाम तो डुबाया ही, अब सैनिक अधिकारी होने का नाम भी डुबा दिया। शीघ्र उन्नति पाकर ये लाल मुँह वाले हम हिन्दुस्तानियों से खूब हँसी मज़ाक़ करते हैं।”

देवल कुछ आहत होकर बोला, “क्यों, ब्रिगेडियर ही ने तो हज्रिफ़ की बात की थी।”

“ज़रूर की थी, पाँच सौ बार की थी, अरे भाई, सेना में आये हो और

हज़िफ़ नहीं जानते ? क्या कभी पोशाक ठीक करते समय इसका नाम नहीं सुना ? सुई, डोरा, बटन जिस छोटी-सी थैली में रखे जाते हैं, उसे हज़िफ़ कहते हैं। नाम जरूर एक जैसा है, किन्तु वह औरत नहीं है। अब आप अपना चरित्र अपनी जेब में, जहां वह रखी जाती है, सुरक्षित रख सकते हैं।”

सारी बात स्पष्ट हो गई। इतने अधिकारियों के सामने खुल कर हँसी-मज़ाक ? सबकी छिपी हँसी, ब्रिगेडियर का बटन ठीक से बन्द करने का उपदेश सारी बातें देवल की समझ में आ गई।

हल्के मन से वह भोजन घर में गया। खूब कस कर लोग जमे हुए थे, किन्तु उसकी ओर किसी ने न देखा। एक भारतीय के असम्पूर्ण अंग्रेजी ज्ञान के हँसी-तमाशे को और उसके चरित्र-पतन से आतंकित हो उठने वाले दृश्य को लोग भूल चुके थे। इस समय किमी और बात पर हँसी चल रही थी।

मुहूर्त भर में जिसका जीवन समाप्त हो सकता है, उसके लिए एक ही बात को देर तक पकड़े रहना संभव नहीं। कल सबेरे सबकी एक अनजान पथ पर यात्रा प्रारम्भ होगी। मृत्यु के अभिसार में, जीवन के अभिशाप से आच्छादित जो दयाहीन क्षमाहीन पथ है, उस पथ की यात्रा।

देवल ने शांत होकर निःश्वास फेंका।

कई उच्च सैनिक अधिकारियों की पत्नियाँ भी आई थीं। उनके लिए आज विदा की रात्रि थी। इसके बाद वे या तो सैनिकों की स्त्रियों के मेस में या अपने आत्मीय स्वजनों के यहाँ चली जायेंगी और प्रति दिन बिना नाम धाम के किसी युद्ध क्षेत्र से अपने प्रियजनों के पत्र पाने की आशा में रात-दिन गिनेंगी, किन्तु उस पत्र के स्थानपर किसी अन्य के हाथ से लिखा एक सरकारी तार भी मिल सकता है, जिसमें “अत्यंत दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि.....” लिखा हो।

क्या सूचित किया जाता है, इसे बताने की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी।

ऐसी विदा की रात्रि को थोड़ा सहज कर देने के लिए केवल सैनिकों की

हज़िफ़ (House Wife) अंग्रेजी का एक द्विअर्थक शब्द है, जिसका एक अर्थ है पत्नी, तथा दूसरा सैनिकों के पास रहने वाली एक छोटी सी पोटली, जिसमें सुई, धागा, बटन इत्यादि रखे जाते हैं।

स्त्रियाँ ही नहीं, स्थानीय असैनिक अधिकारी और उनकी स्त्रियाँ भी आई थीं। सबके साथ मिल कर मन को ताज़ा रखना था और अपने को भूल जाना था। यह जान कर कैप्टीन के मैनेजर ने आज रंगीन कागज़ों के फ़ीतों और गुब्बारों से उस स्थान को खूब सजाया था।

कहा गया था कि खाना-पीना होगा, किन्तु यहाँ तो पीना खूब चल रहा था और कभी-कभी थोड़े काजू, बादाम और आलू के लच्छे मुह में रख लिये जाते थे। मेज़ पर कटल सासेज, मसालेदार उबले अंडे, चीज़स्ट्रे (पनीर में भुने हुए मैदे के लम्बे गोल टुकड़े) लच्छेदार स्पेनी प्याज, और घी से भुने टोस्ट पर तली सार्डिन मछली, रखे थे। जहाँ खाने के इतने सामान हों, वहाँ पीने के लिए भी कई तरह की चीज़ें चाहिए ही। जिन, व्हिस्की, रम, ब्रांडी, शेरी, पोर्ट, ये सब तो सुपरिचित नाम हैं ही।

किन्तु यह “जरूमे दिल” क्या चीज़ है ?

कप्तान जो बड़े हँसमुख और उदार हृदय के व्यक्ति है। उनके कंधे पर तीन सितारे थे और देवल के कंधे पर एक। किन्तु उससे कोई बाधा नहीं पड़ी। जो ने ठट्ठा करते हुए कहा, “देव, आज की पार्टी में “देवतांत” है। उसके सम्मान में आओ हम “जरूमे दिल” पियें।

विलायत में लड़की को पहले पहल समाज में प्रविष्ट कराने को “देवतांत” कहते हैं। इस हँसी से देवल का चेहरा लाल पड़ गया, किन्तु उससे भी अधिक लाल यह नई तैयार की हुई मदिरा थी। अंग्रेज़ी में इसको कहते हैं “ब्लीडिंग हार्ट”

आज क्या देवल “जरूमे दिल” को लेकर इधर-उधर की बात सोचेगा। बी. ए. पास करने के बाद डलहौज़ी स्कवायर में भटकते फिरना और अवकाश प्राप्त पिता की कठिनता से चलने वाली गृहस्थी की बात सोचने की क्या जरूरत ? उन बातों को पीछे छोड़ो।

सब छोड़ कर रशियन स्कैण्डल में चित्त लगाया जाय।

पहले तो स्कैण्डल नाम सुन कर देवल भड़क उठा, किन्तु इसमें ऐसी कोई बात न थी। यह अत्यंत निरीह ताश का खेल विदित हुआ। सबको पत्ते बाँटे गये। निमंत्रितों में कमिश्नर की स्त्री भी थीं। सबसे बड़ी स्त्री। सैनिक जीवन में छोटा और बड़ा मान कर चलना उसी प्रकार है, जैसे लेफ्ट राइट,

एबाउट टर्न । अतएव कमिश्नर की स्त्री ने अपनी विराट देह को सबके बीच में फैला कर पत्ते बाटे ।

इसके बाद उन्होंने ताश का एक नया पैकेट उठा कर उसे फेटने के बाद पहले पान का बादशाह सम्मुख रखा और बाकी पत्ते उलट कर रख दिये ।

बाँटे हुए ताशों में जिसने पान का बादशाह पाया, उसे बताना पडा । जिसे वह मिला है उसे यह अधिकार होगा कि कोई प्रश्न करे । उसने जिज्ञासा की —“यहाँ सबसे अच्छा कौन नाचता है ?”

कमिश्नर की स्त्री ने हाथ वाले पैकेट के सबसे ऊपर वाले पत्ते को खोल दिया । चिडी का दहला निकला । वह बेचारा क्या नाचे ? सब शोर-गुल करते दहले को फूँकने जा रहे थे कि मूँछ पर ताव देते हुए माढ़े पाँच फीट के ब्रिगेडियर ने चिल्ला कर कहा, “और कोई नहीं, मैं ही हूँ वह दहला ।” कमिश्नर की स्त्री ने तमाशा देखने के लिए अपने हाथ से एक दहला निकाल कर दिखलाया । वह कितनी अच्छी नाचने वाली है, यह ताश के अन्दर कैसे प्रमाणित होता । ब्रिगेडियर के नाच का अर्थ सगिनी के पैर के अँगूठे को दबाना था इसे भूल कर सबने बड़े जोर से तालियाँ बजाई ।

अब उन्हीं को प्रश्न करना था । उन्होंने जोर से कहा, “मेरी तरह से नृत्य कला में प्रवीण व्यक्ति के साथ कौन नाचेगा ?”

ब्रिगेडियर के भाग्य अच्छे थे । सब एक दूसरे को ताक रहे थे । इतने में कमिश्नर की स्त्री ने जो पत्ता उठाया, वह एक अल्पवयसी वाकाई के पास निकला । दोनों बहुत प्रसन्न हुए । इसका समर्थन तालियों की गडगडाहट के साथ हुआ ।

सबके सम्मुख ओठों की लाली को अच्छी तरह मलते हुए कुमारी वाकाई ने महीन स्वर में कहा, “मुझे कौन विदा-चुम्बन देगा ?”

उसके प्रश्न में न लज्जा थी न जडता । जो लोग देश के लिए प्राण देने आये हैं, उन्हें थोड़ा प्रसन्न करने के लिए विदा-चुम्बन देने में, मधुर स्वप्न देखने के लिए सहारा कर देने में आतक्ति होने की कोई बात नहीं है ।

सभी अधिकारी सिर उठा कर खुसुर-फुसुर करने लगे । इस बार कमिश्नर की स्त्री के हाथ में जो पत्ता निकलेगा, वह देखो, किस भाग्यवान के हाथ में निकलता है । कप्तान जो ने खड़े होकर “जिस दिन तुम आये

प्रियतम" गाना गाया ।

किन्तु ताश देवल के भाग्य में था । वह इसे किसी तरह छिपा न सकता था । कोई मार्ग न था । देवल ने संकट टालने के लिए तुरन्त पत्ता ले० उमराव-सिंह के हाथ में दे दिया । उसने पहले तो कृतज्ञता दिखाई, फिर खड़े होकर कहा, "इस पत्ते को न भूलियेगा, सब लोग वृन्दावन में—भूल गया—साइवेरिया में—साक्षी रहे । कम-से-कम सैनिक बाजा तो साक्षी है ।"

बहुत रात हो गई । कल ही चल देना है । अब एक अन्तिम खेल रह गया है । इसका नाम फ़ॉरफ़ीट अर्थात् ज्वत् करना है । हर एक को कुछ न कुछ जमा करना पड़ा । इसके बदले में एक बोर्ड में नाम लिख कर भाग्य-परीक्षा का अवसर मिला । जो बेचारा अन्त तक इस भाग्य-परीक्षा में पराजित होगा, उसे जमा की हुई वस्तु वापस नहीं मिलेगी । हां, एक शर्त पर मिल सकती है, वह यह कि अपनी साथिन के जूते का फ़ीता खोल कर फिर बाँध दे । साथिन चुनने का व्योरा यह है । छोटी-छोटी चिटों पर जगत प्रसिद्ध स्त्रियों—जैसे रानी क्रिश्चियाना, मेरी पिकफ़ोर्ड, नार्माशेरर, मेरी अन्त्वानेत का नाम लिखा जाता है । दूसरी चिटों में उनके पति या प्रेमियों का नाम लिखा जाता है । सब पुरुषों को एक-एक चिट लेनी पड़ती है । इसके बाद जो जिसका साथी या साथिन बन जाय, उसके साथ बैठ कर कुछ खाता पीता है । मेरी अन्त्वानेत को सम्भ्राट लुई नहीं रखेगा तो जायगा कहाँ ? फिर यह भी क्या पता कि अन्त तक जूते का फ़ीता खोलने की नौबत आ जाय ?

ले० देवल के भाग्य में एक नवेली मेम आई । सैकड़ों विलायती कुमारियाँ इस समय सैनिकों की सेवा के लिए आई हुई थीं । प्रत्येक सैनिक स्थलों पर उनका यह काम था कि वे सैनिकों को वीरता के लिए उत्तेजित करें । इस प्रकार की एक कुमारी राबिन हुड की प्रेमिका मैरिन के रूप में देवल के पास आकर बैठी और मुसकरा कर बोली, "हलो जार्ज ! आज तुम अपनी कौन-सी संपत्ति फ़ॉरफ़ीट कराओगे ?"

यदि देवल सैनिक वंश से होता, कम से कम पंचनद की ओर का नव-युवक होता, तो क्या उत्तर देने से चूकता ? कल सबेरे ही प्रस्थान करना है, इसलिए नृत्य की व्यवस्था नहीं है पर मन तो नाच सकता है । परन्तु देवल कुछ कह न पाया । उसका सैनिक जीवन एक महीने का था । उसके मुख पर

अभी भी असैनिक छाप थी। वह केवल मुसकराया, किन्तु तरुणी छोड़ने वाली न थी। वह यकायक अन्तरंग हो गई। उसने देवल के हाथ से घड़ी उतार ली, और बोली, “यदि राबिन हुड हार गया तो या तो जूते का फ्रीता खोलना पड़ेगा नहीं तो घड़ी ज़ब्त।”

उसने एक बार घड़ी के ढक्कन की बात सोची। पर कुछ सोचने या करने का साहस उसमें न था। अजीब विपत्ति है। इस लड़की का ध्यान भी गया तो घड़ी पर। इधर कमिश्नर और ब्रिगेडियर की स्त्रियों ने यह निर्णय किया, चूंकि आज की पार्टी केवल पुरुषों की ही नहीं है, इससे उसे समाप्त कर देना चाहिए। विदाई में भी तो कुछ समय लगेगा। बिना पार्टी समाप्त हुए कोई उठ भी तो नहीं सकता। ब्रिगेडियर उठे और अन्य लोग उनके पीछे चले और हाथ पकड़ कर गाने लगे, “अच्छा सुन्दर साथी !”

आज प्रत्येक के मन में उल्लास और आनन्द था। चारों ओर निरापद असामरिक संसार बहुत मनोरम लग रहा था। सभी सोच रहे थे कि आज की रात तो कट गई, किन्तु कल क्या होगा ?

“जार्ज ! तुम्हारा धन वापस देती हूँ” कह कर मैरिन ने अपने क्षण भर के राबिनहुड का प्रेम भरे शब्दों में अभिनन्दन किया। “फिर मिलेंगे, और जब तक भेंट न हो, तब तक के लिए, भारतीय मित्र, विदा।”

अनजान भारतीय को जब वे मित्र बना लेती हैं, तब वे उसे जार्ज कहकर पुकारती हैं। फिर विदाई सामान्य गुडबाई से पूरी नहीं होती—जर्मन भाषा में जिसे स्नेहमयी, गन्धभरी विदा की वाणी—“आउफ़ हि दरशेहेन” कहते हैं, उससे वह पूरी की जाती है।

वहाँ से निकलने पर देवल को ऐसा लगा कि कुछ लोग अँधेरे में बातचीत कर रहे हैं। पागल की तरह व्याकुल स्वरों में उमरावसिंह कह रहा था, “नहीं, नहीं, ताश के खेल को केवल खेल मत समझो। प्यारी, विदाई का एक चुम्बन दो। मैं गुप्त रूप से तुम्हें बताता हूँ कि हमें “सियाक”—दक्षिण पूर्व एशिया कमांड—जाना है। क्या पता, कब जापानियों के हाथों मुर्दा माँस बन जायं। उसके पहले एक बार..... !”

विवाह की भांति बैर और प्रीति भी बराबर वालों में ही होनी चाहिए, किन्तु घोर कलिकाल है । जापानी सम्मुख आकर युद्ध नहीं करते, किन्तु जीतते चले जाते हैं ।

अतएव १७ नम्बर इंडियन लाइट डिवीजन का आपरेशन आर्डर दूसरे ढंग का बनाया गया था । सैनिकों की बोलचाल में आपरेशन आर्डर को संक्षेप में ओ० ओ० कहते हैं । इसमें युद्ध का लक्ष्य, उद्देश्य इत्यादि बातें बताई जाती हैं । प्रत्येक ब्रिगेड एवं आर्टिलरी डिवीजन के लिए अलग-अलग निर्देश-पत्र होते हैं, किन्तु प्रत्येक ब्रिगेड की बहुत-सी कम्पनियाँ तथा इकाइयाँ अभी से खर्च के खाते में दिखा दी गई हैं । ऐसी अवस्था में ब्रिगेडियर साहब क्या कर रहे थे ? वे जर्मन सिलवर के टंकार्ड (लम्बे जग) में बियर भर कर आराम से सेवन कर दिन काट रहे थे । और कोई उपाय भी न था । यहाँ स्कटल्स (गुल्ली डंडे का विलायती संस्करण) खेलने का भी अवकाश न था । जब से उनका ब्रिगेड इस रबर के जंगल में पहुँचा तब से उनका समय बहुत बुरा कट रहा था । उन्होंने स्वेच्छा से बहुत-सी सुखद वस्तुओं से अपना हाथ खींच लिया था, यद्यपि वे थी उनके साथ ही, किन्तु दल का साहस और मानसिक स्थिति ठीक रखने के लिए यह आवश्यक था कि सारे कष्ट और असुविधाएँ सब लोग समान रूप से झेलें ।

उन्होंने बड़े यत्न से रखा हुआ पाइप और तमाखू निकाल कर उसे पीना शुरू किया और सोचने लगे कि अभी कुछ दिन पूर्व उनके काम काज का मुख्य केन्द्र यह था । इतनी साध से सजा सँवारा वह केन्द्र अब भूमिष्ठ हो चुका था । जापानी तो जैसे साक्षात् यम थे । सभी कुछ मटिया मेट कर दिया था । कुछ भी तो नहीं बचा । मेस तक समाप्त हो चुका था ।

ब्रिगेडियर ने अल्पवयस ही में सेण्डहर्स्ट सैनिक प्रशिक्षण लेते समय प्रथम भाग में पढ़ा था कि सेना पेट भर कर आगे चलती है केवल पैर से ही नहीं चलती । उस शिक्षा का उन्होंने अब तक अक्षरशः पालन किया था ।

इसलिए जिस जंगल में उनका हेडक्वार्टर बना, वहीं एक छोटे-से टीले पर मेस भी बनाया गया। खाने-पीने के लिए एक विशाल हाल बनाया गया। उसके सामने चटाइयों से घेर कर एक चौड़ा बरामदा बनाया गया। मदिरा-सेवन और बैठक का स्थान भी रखा गया। बांस की कुर्सियों पर पैराशूट रेशम की गद्दियाँ बिछाई गईं। किसी वस्तु का अभाव नहीं लगता था। एक दिन वायुयानों ने प्रचुर मात्रा में हर प्रकार के खाने-पीने की वस्तुएँ और युद्ध सामग्री वहाँ पहुँचा दी थी। सारा सामान पोटलियों में कुर्सियों के नीचे से लेकर वृक्षों तक भरा पड़ा था। उस समय सब अधिकारियों ने सैनिक अभिवादन कर कहा था, “सर, यह मेस आप की सर्वोत्तम कीर्ति है।”

इतने साध से निर्माण किया हुआ हेडक्वार्टर जापानी हमले से मिनटों में गायब हो गया। खाने-पीने और आराम करने का पक्का प्रबन्ध था, किन्तु बर्बर शत्रु दो मुट्ठी चावल और चूड़े की पोटली गले में बाँध कर जंगलों में फिरते रहते थे। उनसे ये सभ्य सैनिक कैसे पार पा सकते थे? इसलिए ब्रिगेडियर साहब के मन में जापानियों के विरुद्ध क्रोध का अन्त न था।

ये जापानी बिल्कुल स्पोर्ट्स न थे। वे केवल ब्रिटिश सेना से अपने को बचाते हुए बड़े-बड़े नगरों पर कब्ज़ा करते जा रहे थे। इसके बाद छोटे-छोटे दलों में बँट कर पीछे से छापा भी मार देते थे। बाकी और सब दक्षिण मलय द्वीप की राजधानी कुआलालम्पूर की ओर चीटियों की तरह पिल पड़े थे।

शत्रुओं ने पीछे से रसद तथा गोला बारूद लाने का पथ काट दिया था। किसी रसद पहुँचाने वाले दल अथवा चलते-फिरते केन्टीन या भोजनालय के आ सकने का पथ बंद था।

फिर भी आपरेशन आर्डर की चौदहवीं धारा में यह लिखा है—“जिस स्थान पर अधिकार है, उसे अन्तिम सिपाही और अन्तिम गोली तक न छोड़ा जाय।”

भयानक स्थिति थी।

ब्रिगेडियर साहब पाइप पीता भूल गये। उनके दांतों का व्यायाम शरू हो गया।

इसी समय उनके लेफ्टिनेंट कर्नल उन्हें अभिवादन कर सम्मुख खड़े हो गये। आपरेशन आर्डर आ गया है। शायद किसी नये ढंग से तैयारी करके युद्ध करना पड़ेगा, किन्तु जिन चार-चार सेक्शनों को समाचार लाने भेजा गया था, उनका तीन दिनों से कोई पता न था। सब से विचित्र बात तो यह थी कि उनके साथ जो वितन्तु यंत्र आदि थे, उनसे भी कोई समाचार नहीं मिला था। समाचार लाने वालों में ६ व्यक्तियों का एक सेक्शन बनता था। किन्तु जापानियों के अधिक मजबूत और रणकुशल होने के कारण ११ आदमियों का एक सेक्शन समाचार लाने के लिए बनाया गया था। केवल इतना ही नहीं। भयंकर विपत्ति को जान कर इन चार सेक्शनों को समाचार लाने के लिए और इनमें योगायोग रखने के लिए स्वयं कप्तान जो गये थे। विलायत के स्टाफ कालेज में इन्होंने इस विषय में विशेष योग्यता दिखा कर खूब नाम कमाया था। घोर जंगल में बैठ कर कप्तान जो दाँतों का व्यायाम कर रहे थे। वह सिगार पर या शत्रु पर क्रोध से दाँत पीसने का नहीं था। वह हो रहा था अत्यन्त निरीह बिस्कुटों पर। उन्हें खाते-खाते वे बोले, 'सिन्हा कई वर्षों से दाँत के डाक्टर का जो बिल चुकाता रहा हूँ, वह व्यर्थ नहीं गया।'

देवल इस मजाक को समझ न सके। केवल थोड़ी-सी खीस निपोर कर रह गये। इससे अधिक दाँत दिखाना सम्भवतः अशिष्टता होती।

उमराव सिंह ने सिर हिला कर कहा, "कप्तान साहब, अवसर मिलने पर दो एक जंगली मुर्गियों और चिड़ियों का शिकार कर लेता हूँ। केवल "सी राशन" पर चलने वाला व्यक्ति मैं नहीं हूँ। मेरा सेक्शन पहिले दो दिन तक अवश्य उसी पर चला। पहिले दिन जो कुछ खाया वह कुछ खराब न था। खूब बड़ी-बड़ी मोटी रोटियों के बदले टीन के डिब्बों के भोजन में कुछ नयापन तो लगा ही। प्रतिदिन तीनों समय टीन का खाना। बड़ा मजा आया। न चूल्हा जलाने का झंझट न लकड़ी फूँकने की उलझन। फिर धुँआ देख कर शत्रु वायुयान से बम भी गिरा सकता है।"

जो ने रवीन्द्र के म्लान चित्त को लक्ष्य कर प्रश्न किया, "तुम्हें "सी राशन" कैसा लगता है रविन?"

"सर, एक समय के भोजन के लिए जो दो टिन दिये जाते हैं, उनमें

दूसरा टीन कुछ बुरा नहीं होता है। उसमें गोश्त, सब्जी, और प्याज शायद टमाटर के लाल रस में मिले रहते हैं। उसमें आलू-कचालू से लेकर मद्रासी रसम् तक के सारे स्वाद मिल जाते हैं। और पहिले टीन के क्या कहने? उसमें काफी और कोको का पाउडर होता है। जल से सत्तूऐसा बना कर खाते हैं। मुंह मीठा करने के लिए तीन टाफ़ी या लेमन्जूस होते हैं। यह सब तो खैर किसी तरह सहन कर ही लेता हूँ, किन्तु जब केवल पांच गोल बिस्कुट सामने देखता हूँ तो माँ के हाथ का तैयार किया हुआ हलुआ याद हो आता है।”

“हलुआ? यह कौन पदार्थ है?” अब बातचीत में ज़रा मज़ा आयेगा, यह सोच कर कप्तान जो इत्मीनान से टांगें फैला कर एक वृक्ष का सहारा लेकर बैठ गये।

“वह आप के राशन में मिला च्विगंम-जैसी कोई चीज़ नहीं है। हाँ, सप्लाई कोर हमें एक ढेले से दो पक्षी मारना अवश्य सिखा रहा है। च्विगंम जेब में हमेशा पड़ा रहता है। उसकी लार से गला भिगो कर प्यास दो एक घंटे रोकी जाती है। यदि जापानी आक्रमण के कारण दाँत-ब्रुश खो गया हो तो वह दन्तमंजन का काम भी दे सकता है।”

“क्यों? अपनी डेप्टानास्टिक भी काम में ला सकते हो?” यह कह कर उमरावसिंह खीसे निकाल कर हँसा।

“अर्थात् नीम की दातून जो सैनिकों के व्यवहार के लिए लाई गई थी?”

“हाँ, ठीक वही” हँस कर उमराव सिंह ने कहा। फिर ज़रा खकार कर उसने कहा, “सर, आप जानते हैं, कलकत्ते के सप्लाई विभाग में मेरा एक भाई है। उसने नीम की दातून का विलायती नाम चालू करके उसकी जाति ऊँची उठा दी। और उससे सबको सुविधा भी हुई। एक पैसे में तीन की जगह वे दो आने में एक के हिसाब से बिकीं। इससे बेचने और व्यवहार करने वाले दोनों को लाभ हुआ। और हमारे जवान भी इस देशी दातून के विलायती नाम को पसन्द करते हैं।”

जो थोड़ी म्लान हँसी हँसे। उन्होंने सोचा कि यह दुनिया भी एक चिड़ियाघर है, विचित्र चिड़ियाघर। न जाने वे कितने मधुर स्वप्नों को

संजो कर अपने लिए एक सुखी घर बनाने की चेष्टा करते हैं। 'जय' को तो एक महीने भी रुकना कठिन लगता था। विवाह की पोशाक—'ट्रूसो' इत्यादि की तैयारी में समय नष्ट करने से क्या लाभ? जीवन की परम लग्न को दूर नहीं हटाना चाहिए। किन्तु किया क्या जाय? ठीक इसी समय न जाने कहाँ से यह युद्ध आ पड़ा। विवाह? हाँ, विवाह तो वह तब भी करके आ सकता था। बहुतों ने सैन्य दल में नाम लिखाने के पहिले ही विवाह कर लिया था। कइयों ने विलायत छोड़ कर विदेश जाने की सम्भावना को सोच कर अपना वंश चलाने की व्यवस्था भी कर ली थी। और फिर निश्चित मन से युद्ध में चले गये। स्वाधीनता की रक्षा के लिए जो जाति जूझ सकती है वह कभी "वार ब्रांड" और "वार बेबी" की बातें भूल नहीं सकती।

किन्तु स्वाधीनता की रक्षा के लिए युद्ध में गये अपने स्वामी अथवा प्रणयी को उनकी बधू ही भूल जाय तो?

तो भूल जाने दो। ऐसे लोगों की स्मृति से ही क्या लाभ होगा और इसी से वह विदा के पूर्व विवाह करने को राजी नहीं हुआ था। बेचारी तरुणी 'जय' का उसने उस दिन खूब प्रेम से आदर किया था और सान्त्वना दी थी। एक समय आक्सफोर्ड का छात्र और नावों की दौड़ में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी जो ने भारी गले से कहा, "मैं अनिश्चित में छलाँग लगा रहा हूँ। किन्तु विवाह एक निश्चित व्यापार है। इससे इन दोनों में मेल बैठाने की चेष्टा करना ठीक न होगा, जय। तुम्हारा बन्धनहीन प्यार मेरे सब कष्टों और परीक्षाओं में अविराम आनन्द देगा। तुम्हें विवाह में बांध कर रखने से इतना आनन्द नहीं मिलेगा।"

म्लान होकर जय ने उत्तर दिया, "बन्धन की बात मत करो, जो। वह तो रहेगा ही।"

बातचीत को थोड़ा हल्का करने के विचार से जो ने कहा, "यह विवाह-स्वीकृति की अँगूठी इतनी पतली है कि इसे तुम अपने मन में बन्धन मत मानना। यह प्रतिदिन तुम्हारी दृष्टि में आयेगी भी नहीं।"

जो ने उस दिन ऊपरी बन्धन की बात को बिल्कुल उड़ा देना चाहा था। वह खिलाड़ी था। जिस मस्ती और मौज से उसने जल के ऊपर नौका चलाई

थी, वही वस्तु क्या उसके इस जीवन में न आ सकती थी ? वह सम्पूर्ण रूप से ब्रिटिश खिलाड़ी था ।

अंग्रेज़ समझते थे कि जर्मन बड़े शैतान हैं । वे कटिबंध के नीचे घूँसा मारने में बड़े उस्ताद हैं । वे प्रायः निर्मम रसिकता से युद्ध में गये हुए सैनिकों को लक्ष्य करके रेडियो पर कहते थे “वाह, तुम लोग तो युद्ध में प्राण देने आये हो । और इधर तुम्हारे घरों में, तुम्हारे शयन-कक्षों में तुम्हारे परम मित्र और हितैषी कनाडियन, आस्ट्रेलियन खूब मौज कर रहे हैं । क्या यह तुम्हें नहीं मालूम ?” जर्मन-प्रचार-कार्यालय इसे पक्का करने के विचार से दो एक चालू अंग्रेजी नाम और उनका ठिकाना रेडियो-द्वारा कह देते थे । हेम्पस्टेड की बस्ती में बीस-एक व्यक्ति ‘जो स्मिथ’ नाम के होंगे ही, उनमें एक-दो तो ऐसे होते ही थे जो युद्ध-क्षेत्र में बन्दूक की सफाई करते समय अपनी स्त्री अथवा वाग्दत्ता वधू की याद करते हों ।

कई जोस्मिथ ऐसे भी थे जो अपने देश में, अपने ससार में, निरापद और निश्चिन्ततापूर्वक रहते थे । वे नीम की दातून को डेण्टानास्टिक कह कर पैसा बना कर जेबे भर रहे थे ।

यदि कप्तान ऐसा सोचने लगे तो इस घोर जंगल में चारों ओर शत्रुओं के आक्रमण के बीच इस सेक्शन की अवस्था ठीक नहीं रहेगी । चारों ओर जापानी ‘स्नाईपर’ हैं । ये छिप कर यकायक बंदूकों से, राइफलों से, या ग्रेनेड से आक्रमण कर कुछ लोगों को घायल कर देते हैं । चारों ओर जापानियों का जाल बिछा हुआ है । यह समाचार रेडियो से ब्रिगेड हेड-क्वार्टर तक नहीं पहुँचाया जा सकता । रेडियो खोल कर कोई साकेतिक बात शुरू करने के साथ ही जापानी छिपे हुए लोगों का पता लगा लेते थे । और देखते-देखते गोली दागना आरम्भ कर देते थे । लोगों की तबीयतों में भय और आतंक समाया था । इन सब बातों को ठीक ठाक करने के लिए सब सेक्शन कमाण्डर यहाँ जमा होने वाले थे । किन्तु लेफ्टिनेंट ओशिया अभी तक यहाँ पहुँच न सके थे । और कप्तान अपनी ही भावना में डूबे हुए थे । इसलिए उमरावसिंह ने वातावरण को थोड़ा सरल करने के लिए रात्रि की एक कहानी कहना प्रारम्भ किया ।

“आपको मालूम है, सर, कल रात्रि को क्या हुआ । हमारे सेक्शन में

इस समय करीब पाँच जवान बचे होंगे। आप ने इसीलिए सिन्हा के सेक्शन से थापा को उधार दिया। कल रात्रि समाप्त होने पर जब थापा की सत्री ड्यूटी पडी तब हम लोग निश्चिन्त हो गये। सच बात तो यह है कि गुर्खों के समान सजग और होशियार दूसरी जाति नहीं है। ये विलायती राई सरसों के समान तेज होते हैं। यहाँ के जंगलो मे दिन को भी दस हाथ से आगे कुछ भी दिखाई नहीं पडता है, फिर रात की तो बात ही क्या? थापा अत्यन्त सजग होकर चारो ओर अपनी आँखे घुमा फिरा कर देख रहा था। जापानी रात्रि के पिछले प्रहर ही मे धावा करते हैं। और उस समय जरा-सी भी अस्वाभाविक आवाज सुनाई पडते ही शत्रुओ का आभास होने लगता है। इससे कानो को काफी चौकन्ना रखना पडता है। यकायक बादलो की गडगडाहट का-सा शब्द चारो ओर सुनाई दिया। थापा झपटने के लिए तैयार हो गया। अधिकार को फाड कर एक आकृति सामने दीख पडी। बस, अब किधर जाता है? “जय शम्भू” की ध्वनि कर थापा उस पर लपका। पलक मारते ही एक कातर शब्द सुनाई दिया। थापा को यह जान कर थोडा शोक हुआ कि शत्रु भाग निकला। हम लोगो ने टार्च के सहारे देखा कि वह मनुष्य नहीं था, किन्तु बाघ था, जिसके पजे की छाप वहाँ मिट्टी मे मौजूद थी। थापा की सैनिक पोशाक उलझ कर फट गई थी।

देवल आतंकित होकर बोला, “थापा का भाग्य अच्छा था, बच गया।” जो यह सुनते ही खिलखिला कर हँस पडे और उठ कर बोले, “मैं इस बारे मे दूसरी राय रखता हूँ। हाँ, हा बच अवश्य गया, किन्तु थापा नहीं बाघ।”

किन्तु शीत और बाघ एक दूसरे मे ही नहीं जाते। बाघ पास ही कही था। यकायक उत्पात शुरू हो गया। अकस्मात् झाडियो के बीच से बहुत-से लाल रंग के ट्रेसर बाल ऊपर उठ कर फटने लगे। उनके फटने से चारो ओर प्रकाश ही प्रकाश हो गया। ऐसा लगता था मानो अग्निमुखी प्रेतो का नृत्य हो रहा हो। उनके दातो के किटकिटाने से जो और उनके दल को उनके छिपने का स्थान मालूम हो गया।

किन्तु यह अकस्मात् आक्रमण उनके ऊपर नहीं था। ऐसा लगा कि वे लोग भी कही पास ही हैं। उनकी मोटर बैटरी फटफटा कर गर्जन करने लगी। हठात् एक दारुण शब्द फट—और उसके बाद गोला गिरने का शब्द

सुनाई दिया। फिर बिल्कुल सन्नाटा हो गया। थोड़ी-थोड़ी देर बाद गोला फटने का शब्द सुनाई दे जाता था।

बहुत दूर से पैरों का भारी भरकम शब्द सुनाई दिया। सब लोग लंबायमान हो लेट गये और चारों ओर देखने लगे। ऐसे घने जंगल में क्या पता शत्रु उन लोगों की खोज करते आ रहे हों। जो ने सब को आज्ञा दे दी कि ग्रिनेड की पिनें खोल कर तैयार हो जायें। उसके बाद उन लोगों ने रुद्ध श्वास से जिधर से पदचाप सुनाई दे रही थी, उसी ओर निशाना साध कर एक बम फेंक दिया।

एक मूर्त, दो, तीन, चार। वह स्थान प्रकाश से जगमगा उठा। मित्स बम और ग्रिनेड खूब धड़ाके से फटने लगे।

उस ओर तब तक खण्ड युद्ध समाप्त हो चुका था। सर्वत्र शांति छा गई।

थोड़ी देर बाद खूब दबे शब्दों में सांकेतिक आवाज़ सुनाई दी। सब लोग निश्चिन्त हो गये कि अपने ही दल के आदमी आ रहे हैं।

और थोड़ी ही देर में वे आ गये। किन्तु संख्या में काफी कमी थी। दल के कमाण्डर लेफ्टिनेंट ओ'शिया जंगल में तैयार एक स्ट्रेचर पर लाद कर लाये गये। उनका दाहिना पैर कुचला जा कर, अलग होकर, झूल रहा था। किन्तु आइरिश रक्त सहज ही में ठंडा नहीं होता। उन्होंने अभी हाल ही में उन्नति की थी। बी० ओ० आर० (ब्रिटिश अदर रैंक अर्थात् अधिकारियों के नीचे के पद के सैनिक) ओ'शिया की अवस्था कम ही थी, किन्तु कष्ट सहने की क्षमता खूब अधिक थी। इतने भयंकर युद्ध से अथवा ऐसे घाव से वह चिन्तित नहीं थे। आयरिश नेत्रों में सदा हँसी ही हँसी खेला करती है। जिस ओर कालिमा होती थी, दुःख एवं वेदना होती थी, उस ओर वे दृष्टि भी नहीं करते थे। दूसरी ओर देख कर हँसने में मग्न हो जाते थे।

जो तुरन्त ओ'शिया के पास आकर खड़े हो गये। इस दल के साथ फौजी अस्पताल न था, केवल प्राथमिक चिकित्सा एवं सहायता के साधन थे। उसके हो जाने के बाद जो ने अत्यन्त सहानुभूतिपूर्ण स्वरों में उससे पूछा, “तुम्हारे पैर की वेदना में कुछ कमी हुई?”

ओ'शिया किसी तरह दांतों के नीचे ओंठ दबा कर बोले, “मरीन बहुत भली लड़की है। बड़ी ही सुन्दर और सभी कुछ उसमें अपूर्व है, किन्तु,

सर, मैं ही उसका प्रथम पुरुष-मित्र हूँ। देश के किसी भी युवक के साथ आज तक उसने सैर-सपाटा नहीं किया। मेरी मां ने भी चिट्ठी-द्वारा सूचना दी है कि वह मेरे यहाँ युद्ध में आने के बाद भी किसी के साथ बाहर नहीं निकली, यहाँ तक कि अमेरिकनों के साथ भी नहीं।”

थोड़ी देर चुप रह कर वह फिर कहने लगे, “किन्तु यदि यह पैर मेरे शरीर से काट कर अलग कर दिया गया तो क्या मेरा वहाँ जाना उचित होगा ? एक पैर नदारद। वहाँ सब युवक-युवतियां मेरी ओर सदैव अँगुली उठावेंगे। मरीन को क्या केवल एक बात के जोर से ही समस्त जीवन बाँधे रखना उचित होगा। उस बेचारी को एक भले घर में अपना संसार बसाना उचित होगा, किन्तु मेरा पैर यदि काट दिया तब ?”

हाय ! क्षत स्थान पर अनास्थटिक लगाने से वेदना-बोध तो चला जाता है, किन्तु हृदय के घाव में कौन-सी अनास्थटिक लगाई जाय। उसकी वेदना कैसे दूर की जाय ?

थोड़ी देर चुप रह कर ओशिया फिर कहने लगे, “सोचता हूँ उसके लिए उसे चिट्ठी लिख दूँ। अभी से सारी बात समाप्त कर देना अच्छा है। आपकी क्या सलाह है ?”

जो को छोड़ कर उसके देश का, उसकी जाति का और कोई भी व्यक्ति उस मलय के जंगल में नहीं था।

देवल, रवीन, उमराव सब चुपचाप सिर नीचा किये खड़े थे। चारों ओर पहरेदार और सर्तकता से पहरा देने लगे। क्या पता जापानी फिर से ट्रेसर बाल जला कर उन्हें खोजना शुरू न कर दें। हो सकता है वायुयान भेज कर सारा जंगल ही बमों से तहस-नहस कर दें। केवल देवल ने यह देखा कि उसकी कलाई पर बँधी घड़ी बन्द हो गई है।

हँसने की चेष्टा करते हुए जो बोला, “ओशिया यह सब क्या सोचते हो। हम तुम्हें ब्रिगेड के हेडक्वार्टर में भेज देंगे। वह कलालम्पुर में है। जानते ही होंगे वह मलय की राजधानी है। चाँदी की तरह चमचमाते टिनों ने ओर रबर ने उसे रुपयों से भर दिया है। वहाँ के फौजी अस्पताल की सभी नर्सों के केश सुनहरे हैं। वहाँ आराम से स्प्रिंगदार शय्या पर लेटकर और सुनहरी नर्सों के कोमल हाथों की सेवा से तुम शीघ्र ही अच्छे हो उठोगे।”

आयरिश के नेत्र चमक उठे । थोड़ी देर तक अवरुद्ध कण्ठ के कारण वह कुछ कह न सका । फिर बोला, “मैं भी यही सोचता हूँ कि मैं अच्छा हो जाऊँगा ।”

घंटे भर तक सभी चुप रहे । क्या किया जाय ?

“कैसी तबीयत है—ओ’शिया ?

जो के इस प्रश्न से वह बेचारा भग्न-सा हो गया । बोला, “नहीं जानता । सब कुछ अजीब अद्भुत-सा लगता है । मैंने कभी भी यह न सोचा था कि मैं ऐसा हो जाऊँगा और अंगहीन होकर जीवित रहूँगा । ऐसा लगता है कि जीवन में हमेशा से मैं ऐसा ही था । इन्जेक्शन लगाया हुआ और पट्टी बांधा हुआ पैर मेरा कभी भी नहीं था । मरीन, मरीन मुझे उसने सर्वदा एक पैर की ही दशा में देखा है । और उसी तरह डाल और पत्तियों से तैयार किये स्टेचर में सदा से अपने देश में घूमता रहा हूँ ।”

थोड़ा खांस कर वह फिर कहने लगा, “ऐसा लगता है मेरी चिट्ठियाँ ब्रिगेड के हेडक्वार्टर्स में जमा है । बहुत दिनों से मैं छिटक कर दूर जा पड़ा हूँ । इस बीच में वायुयान ने अवश्य ही चिट्ठीपत्री पहुँचा दी होंगी । इस समय कहीं एक भी चिट्ठी मिल जाती तो कितना अच्छा होता ।”

जो ने किसी तरह अपने को सँभाला और कहा, “चिट्ठी तो अवश्य ही आई होगी । हम लोगों के ब्रिगेड में पहुँचते ही चिट्ठी मिल जायगी ।”

“अच्छा, उस युद्ध-कार्यालय से यह समाचार तो नहीं दिया जायगा कि मेरा एक पैर नष्ट हो गया है । उसे तो केवल मरने ही पर समाचार दिया जायगा न ? . . . समझे । मेरा एक पैर चले जाने से वह क्या सोचेगी । किसान के रूप में अब मेरा कुछ भी मूल्य नहीं रह गया ।”

“तुम अपने बारे में ऐसे कुवचन क्यों बोल रहे हो, ओ’शिया । तुम्हारा पैर अवश्य ठीक हो जायगा । और यदि न भी हुआ तो आजकल डाक्टर पैर लगा कर ऐसा चमत्कार कर देते हैं कि दूसरा कोई जान ही नहीं सकता कि नकली है ।”

ओ’शिया से यह बात सहन न हो सकी । वे अपना धैर्य खो चुके थे । “इतना बड़ा घाव और इतना रक्तपात हो गया । खैर यह सब जाने दो । क्या वह भी इसे जान न सकेगी ? क्या वह भी ठगी जा सकती है ? क्या

हमारे घर के लोग भी इस धोखे में रह सकेंगे ?”

स्वयं क्रुद्ध हो जाने के कारण उन्हें थोड़ी लज्जा लगी । उन्होंने जो का हाथ पकड़ लिया और बोले, “कप्तान मुझे अपने आचरण पर खेद है । किन्तु सोचिये तो लकड़ी का पैर लगा कर मैं खेती-बारी कैसे कर सकूंगा ? और फिर खाऊंगा क्या ?”

देवल अपनी बन्द घड़ी को चलाने के लिए बड़े मनोयोग से उसे हिलाने-डुलाने लगे । और सब लोग भी दूसरी ओर अपना मन फेरे हुए थे । ऐसा लगता था, मानो कुछ भी नहीं हुआ । जो प्राणपण से अपने दांत भीचे बैठे थे ।

ठीक इसी तरह ब्रिगेडियर साहब भी प्राणपण से ओंठ बन्द किए बैठे थे । उनके हाथों में सेन्सर-द्वारा भेजी हुई एक खुली चिट्ठी थी । वह चिट्ठी जो की थी । “जय” ने लिखी थी ।

“मेरे प्यारे जो !

आज शेष रात्रि में जेरी* ने झुंड-के-झुंड वायुयान भेजे । अपने घर के नीचे तल्ले का आधा भाग उड़ गया है । विमान विध्वंसकों से अपना पल्ला बचा कर और समस्त आकाश में छाये हुए युद्ध-वायुयानों के जाल को तोड़ कर न मालूम कैसे जर्मन-विमान-वाहिनी इस ओर शेष रात्रि में आक्रमण करने आ पहुँची, यह वही जाने । किन्तु तुम कुछ ओर मन मोचना । मैं अच्छी तरह से हूँ और सारा काम-काज ठीक तरह से चल रहा है । अपने ब्रिटेन के इस युद्ध में निश्चय ही हमारी विजय होगी ।

तुम ने अपने पिछले पत्र में जिस भारतीय अधिकारी सिन्हा के विषय में लिखा था, उसे पढ़ कर बड़ा आनन्द आया । तुम्हारे और पत्रों को पढ़ कर मैं समझ गई थी कि वह कौतूहल-पूर्ण युवक है । उसका मन अभी कच्चा है । और उसे खूब नचाया जा सकता है । मगर उसमें तुम्हें क्या आनन्द मिलेगा ? वह अक्सर कनखियों से अपनी हाथ-घड़ी की ओर देखता है । मैं समझ गई, उसके पीछे कोई रहस्य है । सीधी तरह से न देख कर कनखियों से देखने का अर्थ ही यह है कि कोई गुप्त बात उसके मन में है । मुझे ऐसा लगता है कि तुम शीघ्र ही उसकी भीतरी बातें भी जान जाओगे ।

बेचारा बड़ा सीधा सादा है । अपने देश में अपनी प्रेयसी को छोड़ कर युद्ध में विदेश जाना बड़ा कठिन है । जो जाता है और जो पीछे रह जाता है, दोनों ही पर बड़ा भारी बोझा पड़ता है । मगर क्या तुम यह जान सकोगे कि जो युद्ध में आगे चला जाता है उसे कष्ट कम है, चिन्ता भी कम है । युद्ध भी एक नशा है । अपने देश की रक्षा करनी है, अपने प्रिय परिजनों के लिए युद्ध कर रहा हूँ, यह बहुत बड़ी सान्त्वना है । वहाँ तुम अपने को सारे

*जेरी, वश, हून इत्यादि नामों से युद्ध के समय अंग्रेज लोग जर्मनों को पुकारते थे ।

समय व्यस्त रखते हो। अपनी रेजिमेंट और अपने शत्रुओं के लिए भी व्यस्त रहते हो। तुम्हारे सिन्हा केवल घड़ी की ओर देखकर ही शान्ति प्राप्त कर लेते हैं। किन्तु वह एक तरह का अलस विलास मात्र है और कुछ भी नहीं। तुम्हारे सोचने-समझने के लिए और भी बहुत-सी बातें हैं। उन सब को यहाँ नहीं लिखूंगी, नहीं तो अभिवेचक तुम तक पत्र पहुँचने ही न देंगे।

आज मैं तुम्हें एक विशेष समाचार दूंगी। तुम कदाचित् यह कहो कि पहिले से क्यों नहीं दिया। किन्तु ऐसे प्रश्न का कोई अर्थ नहीं है। उसके पूर्व अपने सिन्हा की घड़ी में रखी छवि के साथ हमारी अवस्था की तुलना करके देखो। केवल मेरी ही नहीं, अपने देश की सहस्रों स्त्रियों की भी।

दो बातों के भय के कारण रात को नीद नहीं आती है। तुम तो 'सियाक' चले गये। मलय में जापानी आँधी की तरह बढ़ रहे थे और हमारी सेना प्रायः बिना युद्ध के ही बन्दी होकर उनके हाथों में पड़ रही थी। रेडियो प्रतिदिन यह समाचार देता था। पता नहीं आज तुम कहाँ हो। तुम्हारे पत्र में कोई ठौर ठिकाना न होकर केवल ब्रिगेड का नम्बर भर था।

किन्तु जेरी के हवाई आक्रमण में यह बात मैं तुम्हें कैसे बताऊँ? तुम हो कहां इसकी चिंता करना भी एक विलासिता है। बड़ी देर से साइरन बज रहा है। सर्चलाइटें आकाश की छाती में छुरा चला रही हैं। सिर के ऊपर घर का मकान अररधम हो कर गिर रहा है। पहिले बम से ही दोनों तल्ले उलट कर गिर पड़े। उसके बाद एक के बाद एक लहरों के समान उस ओर के वायुयान आने लगे। हमारा नीचे का तल्ला बिल्कुल चूर-चूर हो गया। अस्त्र बनाने का कारखाना यहां से निकट होने के कारण ही इस स्थान पर बमबारी अधिक हुई। ड्राइंग रूम के मेण्टलपीस से तुम्हारी छवि छिटक कर हमारे पास आ गिरी। उसके चौखटे का शीशा चूर-चूर हो गया और उसने छवि को भी घायल कर दिया।

भोजन बनाने की मेज के नीचे मैं घुटनों के बल सिकुड़ी हुई बैठी थी। मैंने हाथ बढ़ा कर छवि को पकड़ लिया और एक रुमाल में उसे लपेट लिया, किन्तु फिर भी मुक्ति थोड़े ही हुई।

एक-एक करके छत को चीरते हुए बम नीचे गिर रहे थे और ऐसा लगता था मानो मेरा सिर ही उड़ जायगा। आँखें बन्द कर किसी तरह

जान बचाई। अकेली—ऐसे भीषण काल में अकेली। ऐसी विपत्ति में कहीं अकेली रह कर बचा जा सकता है? अकस्मात् आँखें खुलीं तो देखा कि मिस्टर मे अधट्टी सीढ़ियों से धीरे-धीरे उतरे चले जा रहे हैं। किन्तु एक और बम गिरते ही सीढ़ी टूट गई और मि० मे किसी तरह फांद कर फर्श पर सीधे लेट गये।

मिस्टर मे के विषय में मैंने तुम्हें इसके पूर्व नहीं लिखा था। समय भी नहीं था। नये ढंग के ~~बम~~ बनाने के लिए ~~उन्हें~~ लाया गया है। हमारे ही कारखाने में वे ~~भगवे~~ भगवेणा कर रहे हैं। प्रति संध्या ब्लेक आउट हो जाने पर हम दोनों कारखाने से घर तक साथ-साथ जाते हैं। एक ही घर में हम दोनों रहते हैं। गत कई मास से मैं अपना घर छोड़ कर कारखाने में काम करने के लिए यहाँ रहने के लिए आ गई हूँ। माँ के लिए मन बहुत उलझता है। किन्तु माँ को और मुझे अलग-अलग नगरों में काम करने के लिए रहना पड़ रहा है। जब देश के ऊपर विपत्ति आई हो, तब मनुष्य की असहाय अवस्था का क्या सोच विचार?

बम का एक और आक्रमण प्रारम्भ हो गया। यह और भी सांघातिक है। यकायक तोपों के गोले हमारे चारों ओर गिरने लगे। एक बम फटने के कारण रसोई घर की मेज उड़ गई। सिर के ऊपर केवल अन्धकार है। केवल अन्धकारमय आकाश। उस अंधकार में बिजली गिरने की तरह बम फटते हैं। बिजली चमकने की तरह बारूद फटती है—ओफ़, और लिखा नहीं जाता।

मैं बेहोश हो गई। संभवतः सिर के ऊपर एक बम फटने का धक्का लगा था। जब मैं होश में आई तो देखती क्या हूँ कि अभी तक बम वर्षा हो रही है और मे ने मुझे बचाने के लिए एक गड्ढे में मुझे रख कर उसे ऊपर से अपने शरीर से ढक रखा है। आह, एक जीते-जागते मनुष्य का ऊष्ण स्पर्श—उसमें कितनी शांति, कितना भरोसा मिलता है, इसे तुम सरीखे मनुष्य, जो मनुष्य

~~सामरिक~~ सामरिक अभिवेचक इस प्रकार के चिन्ह से पत्रों में न भेजे जाने वाले समाचार मिटा देते थे। युद्ध-क्षेत्र की प्रत्येक चिट्ठी सेन्सर होती थी।

का वध करते हैं, देश के नाम पर ही सही, किन्तु वह वध ही है, समझ न सकेंगे ।

इसके बाद मुझे सात दिनों तक इनफ़ारमरी में रखा गया । चारों ओर मेरी ही तरह बम के आक्रमण के कारण लाई गई दुर्बल लड़कियाँ थीं । सब ही को उनके आत्मीय स्वजन या प्रेमी मित्र देखने के लिए आते थे । वे थोड़े-से फल, थोड़ा-सा दूध या चाकलेट किसी तरह अपने राशन से बचा कर उनके लिए लाते थे । फूल तो कहीं भी मिलते ही न थे । फूलों के समस्त बगीचों में आजकल आलू और शाकभाजी लगाई जा रही है ।

रात के बाद रात को बम के अत्याचार से कभी भी मुझे ऐसा नहीं लगा । चारों ओर सभी के जाने पहचाने या अपने स्वजनों को देखते-देखते मुझे बड़ा एकाकीपन-सा मालूम होने लगा । उस दिन वायु-आक्रमण से बचने के बाद मैंने सबसे पहले यह अनुभव किया कि विपत्ति में किसी की सहारा दी हुई बाहु का उत्ताप कितना भरोसा और कितना साहस प्रदान करता है ।

हाय, एक रत्ती की सोने की अँगूठी क्या जीवित मनुष्य का उत्ताप दे सकती है ? क्या यह संग दे सकती है ? क्या कानों में स्नेह की वाणी घोल सकती है ? विपत्ति में अपने पास खींच सकती है ?

यदि मे न होता तो मैं कभी भी इनफ़ारमरी से स्वस्थ स्नायु लेकर वापस नहीं लौट सकती थी । आज मे है, इसी से मैं तुम्हें यह चिट्ठी लिख पा रही हूँ । मेरी अवस्था की समस्त विवेचना करके तुम क्षमा कर दो ।

निश्चय ही तुम्हारे उन सिन्हा की प्रेमिका के जीवन में ऐसी घटना नहीं घटेगी । वह अपने माता-पिता आत्मीय-स्वजनों के बीच में सुरक्षित होगी । युद्ध-क्षेत्र से दूर निरापद होकर वह अपने वीर प्रेमी के स्वप्न देखेगी । उसके बारे में तन्मय होकर मोजे बुनेगी । निश्चिन्त मन से बिना राशन कार्ड के ही बाज़ार से अच्छी से अच्छी वस्तुएं लायेगी । सुन्दर कागज़ में प्रत्येक सप्ताह चिट्ठी लिखेगी । भारतवर्ष में यदि ब्लैक आउट चालू हो भी गया तो तब भी वहाँ शुक्ल पक्ष की रातों में चन्द्र और तारों का प्रकाश यथेष्ट होता होगा ।

मैं समझ सकती हूँ कि इस पत्र को पढ़ कर तुम्हें बड़ा कष्ट होगा ।

यह भी मैं जानती हूँ कि घायल होना, अंगहीन होना, यहाँ तक कि मर भी जाना—यह सब युद्ध में जाने वाले मनुष्यों के भाग्य में होता है, किन्तु

अपने मनमें ऐसा दुःख पाने के लिए कदाचित् तुम प्रस्तुत न होगे। देह के आहत होने की अपेक्षा मन का आहत होना अधिक दुःखप्रद होता है। मैं जानती हूँ कि चारों ओर गोलों के गिरने से तुम घबराने वाले नहीं हो। किन्तु जब अकेले सोने के लिए जाते होगे, तब तुम्हें शांति नहीं मिलती होगी। उष्ण प्रदेश में तुम्हारी शैया के चारों ओर कीचड़, गन्दगी, जोंकें और मिट्टी के तेल की कुप्पी का प्रकाश होगा। ऐसी दशा में जब तुम्हारा शरीर और न चल पाता होगा, आँखें अपने आप चिपक जाती होंगी, तब तुम्हें कहीं नींद आती होगी।

तुमने लिखा है कि जापानी 'जीरो' युद्ध विमानों की गर्जना से तुम्हारी नींद में बाधा नहीं पड़ती और तुम स्वप्न देखा करते हो कि तुम लौट आये हो। उसके बाद जब तुम यह देखते हो कि तुम डोवर या प्लाइमथ बन्दरगाह पर जहाज से उतर रहे हो और मोड़ के बीच में मैं खड़ी हुई तुम्हें प्राणपण से हाथ हिला कर तुम्हारी दृष्टि में मिल जाने की चेष्टा कर रही हूँ, तब तुम्हारी नींद खुल जाती है और तुम्हारे सर्वांग में रोमांच हो जाता है और तुम्हारी सारी देह ठंडी पड़ जाती है। मरने से तुम्हें भय नहीं है। भय इस बात से है कि मरने के बाद तुम मुझसे मिल न सकोगे। और हाथ में हाथ डाल कर आक्सफ़ोर्ड के मार्ग पर टैक्सी बुला न सकोगे। कार्नवाल के समुद्र तट पर जेटी में वायु सेवन करते हुए स्लेट मशीन में एक पेनी डाल कर एक पौंड वापस पाने का जुआ नहीं खेल सकोगे। हरी दूब पर सादी बेंच पर बैठ कर क्रिकेट का खेल देखते-देखते मेरे कानों में गुप चुप प्रेम की कोई बात कह न सकोगे।

तुम्हारे अन्तिम पत्र को मैंने बार-बार पढ़ा है। तुम्हारे चारों ओर अनेक तरुण, अनेक युवक किसी तरह शत्रु को मारने की चेष्टा में स्वयं मर जाते हैं। प्रति दिन ही वे मर रहे हैं। प्रत्येक दिन सीसे की गोलियाँ और लोहे के गोले शत-शत आशाओं और स्वप्नों को चूर-चूर कर रहे हैं। और इधर उसी समय बी. बी. सी. से बेकार लोगों का दल गले में गिटकिरी देकर गाता है, "उस कोने से उठा इन्द्रधनु" या "हम्पटी डम्पटी हार्ट" या "मधुर प्रेमिका मेरी।"

तुमने शायद अत्यंत क्रोध में यह लिखा है कि किसके आकाश में इन्द्र-धनुष दिखायी दिया है? दिशाहारा दुर्दशा के बीच मेरा कलेजा किस तरह से छटपटा रहा है, उसकी किसे चिन्ता है? जो प्रेयसी हैं, वे किसी मित्र पक्ष

के बाहु का सहारा पाकर सान्त्वना पा सकती हैं। तुमने क्रोध में लिखा है कि जो गले में ठाठ से टाई बाँध कर, चमकता सोला हैट सिर पर रख कर, मोटर से उतर कर हम लोगों को प्राण देने के लिए गरमागरम वक्तृता झाड़ते हैं, उनका वीरत्व वक्तृता तक ही सीमित है। तुमने और जो कुछ लिखा था, उसे अभिवेचक ने काट दिया। किन्तु अर्थ समझने में कोई असुविधा नहीं हुई।

तुम उस समय यह नहीं जानते थे कि इसके बाद चिट्ठी में ये सब बातें लिखूंगी। किन्तु तुम वास्तव में वीर हो। सोला हैट पहनने वाला कनैडियन तुम्हारे वीरत्व की तुलना में कुछ भी नहीं है।

तुम्हारे मतानुसार वह मरना निश्चित समझ कर ही युद्ध-क्षेत्र में नहीं गया। उसे वैज्ञानिक होने के कारण सैन्य-दल में नाम लिखाने से छूट मिली हुई है। इसके अतिरिक्त वह मुझसे विवाह करते ही अपने देश कनाडा में मुझे भेज देगा। वहाँ जेरी के आक्रमण नहीं, देश पर आक्रमण का भय नहीं, और न राशन की क्यू है। और न रात में धड़कते हृदय से अन्धकार में रास्ता खो जाने का डर है। तुम मुझे जीवित रहने दो। तुम स्वयं बच कर लौट आओ। भगवान जानता है कि उससे बढ़ कर और अधिक आनन्द मुझे और नहीं होगा।

मैंने तुम्हें बड़ा कष्ट दिया है। जो अपने देश के लिए, अपने राजा के लिए युद्ध करने गया है, उसे ऐसा कष्ट देने में पाप है। किन्तु उसे ठगना और भी बड़ा पाप है। उसे यदि बिना संदेह के अनिर्दिष्ट काल तक अपना स्वप्न देखते देने रहती और उस समय तक मैं पागल न होकर दूसरे की हो जाती तो वह और भी महान पाप होता। इसीसे तुम्हें सब कुछ बता देना चाहती हूँ। तुम बच कर स्वस्थ होकर वापस लौटो, किन्तु मुझे भी जीने दो।

तुम्हारी अँगूठी मैंने उतार दी है। तुम्हारी चिट्ठी पाने पर उसे तुम्हारी माँ के पास भेज दूंगी।

अन्तिम बार तुम्हारी जय !”

किन्तु चिट्ठी के पीछे मन भारी करने का समय कहां है ? प्रेम ? वह तो केवल अलस विलास है ? देश ? वह केवल राजनीतिज्ञों की बकवास है। जीवित रहना, केवल जीवित रहना ही सबसे बड़ा काम है और सबसे बड़ी बात है।

जय, तुमने बिल्कुल ठीक लिखा है।

यह जय को बता देना आवश्यक है। किन्तु कोई उपाय नहीं है। एक वायूयान थोड़ा-सा 'सी राशन' और कुछ डाक जंगल में छतरियों-द्वारा गिरा गया था, किन्तु अपने हेडक्वार्टर्स में लौटे बिना पत्र लिखना संभव नहीं है। यहाँ से लौटना भी हो सकेगा या नहीं, इसका भी क्या ठीक ठिकाना।

किन्तु जय अब कोई बड़ी समस्या नहीं रह गई। जय ने पत्र में देवल के बारे में भी लिखा है, उसकी प्रेमिका के साथ तुलना भी की गई है। इसी कारण देवल आज और मन के इतना निकट आ गया है और अपना लग रहा है। मगर देवल की बात भी अब इतनी बड़ी नहीं रह गई है। सबसे बड़ी बात तो इस सिख जवान की है, जिसे जंगल से सबेरे ही उद्धार करके लाया गया है।

जो ने उससे जिज्ञासा की—“जब तुम अन्धकार में घायल हो गये तो सहायता के लिए पुकारा क्यों नहीं? हम तुम्हें तुरन्त ही उठा लाते।”

थोड़ी ब्राँडी से गला भिगोक़र जवान धीमे गले से बोला, “नहीं, सर, यदि मैं सहायता के लिए पुकारता तो मेरे साथी मुझे ले जाने के लिए अवश्य ही दौड़ पड़ते और तब जापानी उन्हें गोली मार देते। और यह छिपने का स्थान भी उन्हें मालूम हो जाता। इसी से चुप होकर सारी रात पड़ा रहा। भोर होते ही किसी तरह रेंगते-रेंगते और भी घने जंगल में चला गया। इस विचार से कि शत्रु मुझे वहाँ देख नहीं पायेंगे और यदि मेरे दल के लोग मुझे शीघ्र ही खोज न सके तो मैं धीरे-धीरे मर जाऊँगा।”

जो ने तुरन्त ही उसके सड़े घाव के परिष्कार का प्रबन्ध किया, किन्तु अब उसका धैर्य टूट गया। वह चीख कर बोला, “शीघ्र ही मुझे गोश्त रोटी या जो कुछ भी हो खाने को दो। मैं भूख के मारे मर रहा हूँ।”

उसे खाने को दिया गया। उसके घुटनों में पट्टी बाँध दी गई। और थोड़ी ब्राँडी दी गई। किन्तु इतनी देर तक भूखे रहने के कारण और सेप्टिक घाव के ज्वर के कारण वह उसे सहन न कर सका। वह बड़बड़ाने लगा, “मैं लड़ाई से लौटा हुआ सिपाही हूँ, मेम साहब। मेरे वक्ष पर युद्ध की वीरता का फ़ीता देख कर लाहौर के फ़ैलेट होटल के मैनेजर ने मुझे दरबान का काम दिया है। वह समझता है कि इससे उसका मेरे प्रति कर्तव्य पूरा हो

गया है । सलाम मेमसाहब । टैक्सी सामने हाजिर है, मेमसाहब, सलाम !”

थोड़ी तन्द्वा से आच्छन्न होने के बाद उसने फिर प्रारम्भ किया, “शिमला के सैनिक दफ्तर ने गुजरानवाला तार भेजा है । मेरे पिता ने काँपते-काँपते गाँव के चौधरी से कहा—“देखो तो क्या लिखा है । तार क्यों आया ? . सैनिक दफ्तर ने लिखा है—“तुम्हें अत्यंत शोक के साथ बताया जाता है कि तुम्हारा बेटा ।”

जीवन से खेल चल रहा है । मरना तो प्रति दिन का कारबार है । इसमें जय के पत्र का कहाँ स्थान है ? जो ने सोच समझ कर अपने मन को दृढ़ कर लिया । भविष्य में एक दिन ऐसा भी आयेगा, जब मनुष्य ओर नहीं लड़ेगा । रोबट अर्थात् कल पुर्जे के मनुष्य लड़ा करेंगे । जो आज उसी रोबट का अग्रिम नमूना है । उसने चिट्ठी को अपनी सैनिक पोशाक की पतलून में रख लिया ।

उसके बाद ठीक क्या हुआ जो को उसका आभास न हो सका । अन्य-मनस्क होकर दल को छोड़ कर घूमते-घूमते वह काफी दूर चला गया । इस ओर अधिकार था । इस समय अपने दल को छोड़ कर दूर जाने में विपत्ति थी । जब से कम्पास निकाल कर वह पता लगाने लगा कि वह किधर जाय । थोड़ी देर बाद वह आतंकित हो उठा । उसने देखा कि एक वृक्ष की जड़ में एक बड़ा-सा गड्ढा है । उसके चारों ओर डालियाँ और पत्ते डाल कर बड़ा अच्छा छिपने का प्रबन्ध किया गया है । यह बिल्कुल अग्रेजी भाषा के फाक्स-होल-सा था । जापानियों ने इसे आवश्यक रवेशन पोस्ट बनाया था । शत्रुओं की गति विधि पर दृष्टि रखने के उद्देश्य से यह बनाया गया था ।

अतएव अब उद्धार की आशा नहीं है ।

पलक मारते ही आँखों पर फील्ड ग्लास लगा कर जो ने देखा कि दूर से ६ जापानी टहलदार इसी ओर आ रहे हैं । बीच में करीब ३०० गज के जंगल और धान के खेत हैं । जो प्राणपण से दौड़ने लगा । जंगल के किनारे किनारे पेड़ों की आड़ लेकर वह भाग खड़ा हुआ । मगर खुले धान के खेतों में छिपने का अवसर न था । इधर जापानियों ने चिल्लाना शुरू कर दिया, “वानजाई, वानजाई ।”

जो की समझ में यह न आया कि अभी तक जापानियों ने गोली चलाना क्यों नहीं शुरू किया । शत्रु के दल को दौड़ कर जो को पा लेना कठिन था ।

किन्तु वे गोली तो चला सकते थे । जो के हाथ में केवल एक टामीगन थी । किन्तु उसके सहारे ७ शत्रुओं को रोका नहीं जा सकता था । और न अपने को बचाया ही जा सकता था ।

किन्तु उनका 'वानजाई वानजाई' कहकर जोरों से चिल्लाना ही काल हो गया । जो के दल के कुछ टहलदार एक नाले में छिपे हुए थे । इस शब्द के साथ उनके सिर पर लगी टोपियों के ऊपर के पीले गोल-गोल फूल दिखाई दिये । वे और नीचे खिसक गये । जो की दृष्टि से कुछ भी छिपा न रहा । क्योंकि वह प्राणभय से दौड़ा था । और जापानी कुछ भी देख नहीं सकते थे ।

निर्घात मरने से बचने का रास्ता भी निकल आया । साथ-साथ जो की बुद्धि थोड़ी सजग हो उठी । वह यदि अपने दल की टुकड़ी की ओर दौड़ता है, तो एक ढेले में दो शिकार होते हैं । उसे भरपूर सीधा निशाना मारने का सुयोग मिल सकता है । यह सोच कर जो नाले की ओर दौड़ा और थोड़ी देर बाद छाती के बल लेट गया । उसने अपने दल के लोगों की बन्दूकों की नली देख ली थी । किन्तु यह भी तो हो सकता है कि दल के लोग जो के गोली लग जाने के भय से गोली न चलावें । इस युद्ध में शत्रु की दृष्टि को धोखा देने के लिए पोशाक का रंग मटियाले हरे रंग का था । किन्तु इस समय उससे कितनी असुविधा हो सकती थी, उसे भी जो समझ गया ।

उसने लेटे-लेटे सोचा । जापानी यदि उसे सामने न देख कर वापस लौट गये तो इतना अच्छा अवसर हाथ से निकल जायेगा । क्या वह अपने को विपत्ति के मुँह में झोंक कर फिर उठ खड़ा हो ?

किन्तु इसका अवसर नहीं आ पाया । जो सैनिक अपने सूर्य-पुत्र सम्राट के लिए युद्ध कर रहे थे, वे किसी भी श्वेत वर्ण शत्रु को भागने नहीं दे सकते थे । वे आगे बढ़कर और भी सामने आ गये । और तुरन्त गोली चलना शुरू हो गया । केवल ब्रेनगन की गोलियाँ ही नहीं आकाश की छाती को चीरता बम का गोला भी जापानियों पर गिरा । केवल सात सेकेंडों का फ्यूज बमों में लगा था । तीन जापानियों ने सात सेकेंडों बाद बमों को फटते देखा तो समझदारी का लाभ उठा कर उन्हें गिरने के साथ ही उठा लिया । और सात सेकेंड के बीच ही में उन्हें अंग्रेजी दल के ऊपर फेंक देना चाहा । किन्तु उन्हें इतना भी समय न मिल सका । इधर से जो बमों का दूसरा दौर

फेंका गया, उसमें तीन सैकेंड का फ्यूज था। वे फट गये और सारे जापानी वहीं ढेर हो गये।

इसके बाद नाले से निकलकर सैनिक यह देखने लगे कि सब शत्रु मर गये हैं या नहीं। फिर उनकी जेबों से सब कागज़-पत्र, मानचित्र इत्यादि निकाल लिये गये। उनकी सैनिक पोशाकों को खोलकर अस्त्र-शस्त्र और तरह-तरह के स्मृति चिन्ह भी ले लिये गये। एक सैकेंड लेफ्टिनेंट की देह खोल कर उसकी तलवार ले ली गई।

उनके साथ यही एक अधिकारी था। जो ने उसके कागज़-पत्र खूब अच्छी तरह परीक्षा करके देखे। जापानी सैनिक सुविधा पाते ही इस तरह का कौशल करते हैं कि एक शत्रु उनके अफसर के सामने पड़ जाय। जिसमें वह उनके अफसर की तलवार से मरने का सम्मान पा सके। किन्तु अब तो युद्ध का तरीका ही बदल गया है। तलवार केवल शोभा और शरीर पर झूलने की वस्तु रह गई है।

तब भी इस भारी लम्बी नक्काशी की हुई तलवार का सम्मान बहुत अधिक है। संभव है कि वंश की पुरानी पवित्र तलवार सैकेंड लेफ्टिनेंट शाकूरा कमर में लगा कर युद्ध में आये हों। उसमें न जाने कितने नाम, मंत्र और सम्राट के राजचिन्ह गहराई से उत्कीर्ण थे। ५ फुट के लम्बे जापानी की चार फुट लम्बी तलवार की मूठ हाथी दांत की थी। उसमें जापानी पुष्पों का राजा गुलदावदी उत्कीर्ण था। उसकी म्यान बाँस की बनी थी। उसपर काला एना-मेल किया गया था। रंगीन फ्रीता और स्त्रियों के केश बांधने की एक लच्छी मूठ पर लिपटी थी। जो उस पर हाथ फेरने लगा। उसकी दृष्टि शाकूरा के कमरबन्ध पर पड़ी। सादी रेशम की लम्बी पेट्टी थी। इसे हजार सिलाइयों की पेट्टी कहते हैं। केवल प्रेयसियाँ ही खूब महीन सिलाई करके इस पेट्टी को तैयार करती हैं। हर तरह के मंत्र और तावीज़ उसमें सी दिये गये थे। कई तरह की जापानी पत्तियाँ और बेलें उस पर कढ़ी हुई थीं। मानो कह रही हों “कुशल से रहो, कुशल से रहो, तुम्हारे ऊपर युद्ध की आँच बिल्कुल न लगने पाये, वहाँ से अच्छी तरह बच कर और स्वस्थ होकर तुम वापस लौटो।”

जो ने उसकी भीतरी जेब से कागज़-पत्र निकाल लिये। सैनिक पोशाक पहने उसकी छवि थी, वृद्धा माँ की छवि थी, छोटे-छोटे भाई-बहनों की ग्रूप

फोटो थी । और.....और.....अन्तिम छवि किसकी थी ? इसे जो को समझते देरी न लगी । उसका मुख-हास्य, उसके नेत्रों का इंगित, उसकी तिरछी भाव-भंगी, यह समस्त पृथिवी पर एक ही है । उसके ओठों की नीरव भाषा तथा कातर पुकार क्या जो आज समझ न सकेगा ?

जो चुप खड़ा रह गया । धीरे-धीरे वे कागज़-पत्र जो ने उसके वस्त्रों में रख दिये । मुँह फेर कर वह दूसरी ओर देखने लगा ।

इसी समय अनजाने उसका हाथ अपनी जेब में चला गया और मुट्ठी में जय की चिट्ठी आ गई ।

“तुम अच्छी तरह, स्वस्थ होकर, बच कर वापस लौट आओ ।” धीरे-धीरे मुट्ठी खोल कर जो अपना हाथ बाहर ले आया ।

रात को फ्रैंसी-ड्रेस-बाल नाच होने वाला है।

स्टीमर के लाउंज अर्थात् बैठक-खाने में नोटिस टँगा हुआ है। किन्तु देवल का मन इस ओर नहीं है। उसके मन में जाग उठी है अपनी प्रिया की प्रार्थना।

“अच्छी तरह रहो। वहाँ से कुशल-क्षेम सहित वापस लौटो।” मिता बहुत दूर से, युद्ध की विपत्ति से बहुत दूर, निरापद होकर प्रार्थना कर रही है, किन्तु जिसके लिए प्रार्थना की जा रही है, क्या वह बेचारा भी प्रार्थना करेगा ? उसे मनुष्यों को मारने में अपने मरने का भी ध्यान न होगा। यह बात अवश्य है कि वह स्वयं जीवित बचा रहे।

देवल ने कनखियों से अपने हाथ की ओर देखा। आज उसे अपने हाथ की ओर सीधी दृष्टि से देखने का साहस नहीं हो रहा है।

बंगाली पुत्र ! इन्हीं हाथों से काव्य-ग्रंथों के पृष्ठ उलटे हैं। अपनी मिता का काँपता हाथ अपनी मुठ्ठी में बन्द किया है। मिलिटरी-मेस से विदा-भोज के बाद स्पेशल ट्रेन से कई स्थानों में घूमघाम कर अन्त में कलकत्ते के घाट में एक रात्रि के समाप्त होने के समय एक स्टीमलंच पर सवार होना पड़ा था। ठीक किस स्थान पर जहाज को जाना था, यह किसी को मालूम न था। सभी कुछ अज्ञात था। बहुत रात बीते जहाज के इंजिन की आवाज़ सुन कर मिता के हृदय की धड़कन बन्द-सी हो गई थी, किन्तु देवल के हाथ में उसके हाथ का कम्पन मानों थम ही नहीं पाता था।

अब देश वापस लौट कर देवल उन्हीं हाथों का स्पर्श कैसे कर सकेगा ? यह तो मनुष्य-हत्या किया हुआ हाथ है। खूनी का हाथ है।

जब उसने युद्ध में नाम लिखाया था, उसे तब यह मालूम था कि युद्ध में मनुष्यों को मारना होता है। किन्तु जानना एक बात है और वास्तव में वह करना दूसरी बात। इसके अतिरिक्त दल के साथ युद्ध के नशे में मारने को सैनिक लोग मारना नहीं कहते हैं। मलय के जंगलों में उसने और उसके दल

न कई युद्ध किये हैं। कितने ही शत्रुओं का संहार किया है। किन्तु वह संहार दल के सब सैनिकों ने मिल कर, बन्दूकों दाग कर, राइफलें चला कर, और ग्रिनेड फेंक कर किया था। किसने किसे मारा, इसका कोई हिसाब न था। और न हिसाब का समय ही था। मंत्र यह था कि “एक साथ सब मिल कर मारे जाओ।”

किन्तु इतने दिनों बाद उसने अपने हाथ से अपने सामने जानबूझ कर एक शत्रु पर गोली चलाई थी। जब गोली चलाई थी, तब यह नहीं सोचा था कि किसी को मारने के लिए गोली चलाई है। मारना है या और कुछ करना है, यह सब सोचने-विचारने का समय भी न था। मारो, नहीं तो मर जाओ। अतएव उसे मारना था।

उसका टहलदारी दल चारों ओर रास्ता भूल कर ब्रिगेड से छिटक कर अलग जा पड़ा था। चारों ओर जापानी दल थे। सब दक्षिण मलय की राजधानी की ओर जा रहे थे। पीछे कहाँ और कौन-सी छोटी-छोटी अँगरेजों के पक्ष की टुकड़ियाँ पड़ी हैं, इसकी उन्हें चिन्ता नहीं थी। उनका विचार था कि ये टुकड़ियाँ अपने आप जाल में फँस जायेंगी।

इसीसे जो ने यह तय किया कि आसपास के किसी स्थानसे अपने चारों ओर दलों को निरापद स्थान में पहुँचा दें। वहाँ पहुँच कर किसी बड़ी सेना में मिल जाना संभव होगा। मानचित्र देखकर और कम्पास के सहारे वे समुद्र के किनारे एक छोटे-से नगर में आ पहुँचे। नगर के चारों ओर खबर के बाग थे। अनेक अँग्रेज परिवार बसे हुए थे।

जो के हिसाब से भूल नहीं हुई। बाग के अँग्रेज उस स्थान को छोड़ कर सिंगापुर भागने का प्रबन्ध कर रहे थे। जापानियों ने अकस्मात् आक्रमण कर मलय को ऐसा हिला दिया था कि वे वहाँ से हट न सके थे। तब भी उन्होंने किसी तरह कुछ भागने का प्रबन्ध कर ही लिया था।

समुद्र के तटवर्ती नगरों के साथ यातायात करने वाली कोस्टल स्टीमर सर्विस से उन्होंने एक स्टीमर किराये पर ले लिया था। और समस्त अँग्रेज स्त्री-पुरुष, बालक-बालिकायें, वहाँ से खिसक जाने को तत्पर थे। ऐसे ही समय जो का दल वहाँ पहुँच गया। संगीन चढ़ाये बंदूक धारियों के आ जाने से जान व माल का भय जाता रहा।

किन्तु जो मंजा हुआ सैनिक था। उसकी पैनी दृष्टि बहुत सतकं थी। उसने सोचा कि केवल जहाज पर चढ़ जाने ही से आपत्ति नहीं टल जायेगी। यह भी तो देखना है कि इस जहाज का ज़रा-सा भी संधान शत्रु-पक्ष को न लग सके। उसने तुरन्त ही नगर की पुलिस को जापानी गुप्तचरों की खोज में लगा दिया। यह तो सब ही को मालूम था कि एक जहाज में अंग्रेज भर कर भाग रहे हैं और साथ में थोड़ी सेना भी है। यह समाचार गुप्तचर तुरन्त ही जापानियों को पहुँचा देंगे। किन्तु इस मामले में केवल पुलिस के भरोसे ही नहीं रहा जा सकता है। जहाज के छूटने के समय तक सैनिक टहलदार भी नगर के कोने-कोने में गुप्तचरों की खोज में व्यस्त थे।

बन्दरगाह के ठीक बाहर पार्क के पीछे यह कौन है? ऐसा लगता है, माली है। मगर नहीं, सन्देह निवारण कर लेना अच्छा है। जहाज का तख्ता जिससे लोग तट से उस पर आते-जाते थे, उठा लिया गया। सामने जो खड़ा था। उनसे थोड़ी देर ठहरने को कहकर देवल धीरे-धीरे उस ओर गया।

माली बन कर वह काम भी माली का ही कर रहा था। खुरपी से मिट्टी खोद रहा था। किन्तु ऐसे डाँवाडोल समय में जब सब लोग अपनी प्राण रक्षा के लिए भागने की चिन्ता में थे, तब इसमें ऐसी कर्तव्य-परायणता कहाँ से आ गई? रिवाल्वर सामने उठा कर देवल ने ललकारा—हैण्ड्स अप !

देवल अपना स्वर सुन कर स्वयं चकित हो गया। इतने दिनों में उसने एक बार एक प्याला चाय के लिए कैबिन में ज़ोर से पुकारा था। और कभी मैस के नौकरों को पाज़ी, मूर्ख भी कहा था। एक बार अपनी प्रेमिका के ऊपर भी थोड़ा तेज़ी से चीख पड़ा था, किन्तु इस समय का उसका स्वर कुछ और ही प्रकार का था। ऐसा लगता था कि जैसे वह बोला ही न हो और वह आवाज़ किसी मनुष्य की न हो। उसका जैसे जन्मान्तर हो गया हो। इस समय केवल एक ही मार्ग था। या तो मारो या स्वयं मरो। इसके अतिरिक्त और कोई पथ न था मिट्टी के नीचे एक छोटा वितन्तु पारेपक यंत्र उसे दिखाई दे गया।

नहीं। अब मारने के अतिरिक्त दूसरा पथ नहीं है। हाथ काँप गया? एक गुप्तचर को मारने में देवल का हाथ काँपा? उसने तुरन्त ही सोचा कि एक ओर रेडियो से समाचार भेजने वाला निरस्त्र गुप्तचर है, और दूसरी

ओर जहाज में न जान कितने परिवार, अपना सैन्य दल और वह स्वयं है। और वह केवल अकेला ही तो नहीं है। उसके पीछे उसकी प्रेमिका है—
“सानन्द वच कर लौटो।”

माली का मुख पीला पड़ गया। हिलते तार की तरह वह भयानक रूप से कांपने लगा। किन्तु बोला कुछ भी नहीं। देवल का हाथ भी क्या कापा? नहीं, कापा नहीं। गंगा के उस पार रात्रि के अन्तिम प्रहर में विदा की वेला में वह सिहरा था। इसके बाद तो उसके सिहर उठने का कोई समय नहीं आया।

रिवाल्वर से धुआ निकला, ओर उसे पोछ कर देवल वापस लौटा।

सध्या का स्टीमर के डेक में नोटिस टेंगा था कि फेंसी ड्रेस बाल नाच होगा। सब लोग प्रसन्न चित्त से नाना प्रकार की पोशाके पहन कर नाचने के लिए जायेंगे। नाच स्टीमर के बैठक-खाने में होगा। नाचने के लिए रेडियो संगीत के स्थान पर ग्रामोफोन के रिकार्ड बजेगे।

दिसम्बर की ठंड के कारण बैठकखाने की खिड़किया एव द्वार बन्द कर दिये जायेंगे। ब्लैक-आउट, अधिकार, होना आवश्यक है। यह अधिकार केवल बाहर वालों के लिए है जिसमें शत्रुओं की दृष्टि इस ओर पड़ न सके। अपने मन में अधिकार करने को किसी से नहीं कहा गया है।

रबीन ने देवल को समझाते हुए कहा, “देखो, इतना गुमसुम होने की क्या आवश्यकता है। जानते हो, अँग्रेजों का एक मूल मंत्र है कि अपनी ठोड़ी सर्वदा ऊँची रखो, मन को खराब करना ठीक नहीं।”

देवल ने हँसकर कहा, “किन्तु ठोड़ी तो जापानियों ने तोड़ दी है।” रबीन यह सुन कर हँस पड़ा और बोला, “उनके शास्त्र में इसकी दवा है। तुमने रिकार्ड का वह गाना सुना ही होगा, “कीप योर सनी साइड अप” बचने के लिए जान लेकर भागो और अपने को बचाओ। साथ-साथ नाचते कूदते भी चलो। अँग्रेजों का ब्लैक आउट केवल बाहरी है। आज तुम देख लो कि लोगों के दिलों में कैसी दिवाली जलती है।”

देवल थोड़ा खिसक कर निकट बैठ गया और समझदार व्यक्ति की तरह सिर हिला कर कहने लगा, “किन्तु जानते हो, भोर होने तक वहाँ बचेगा क्या? केवल राख और जली हुई बत्तियाँ।”

“तुम्हें रिवाल्वर चलाना तो जरूर आ गया, किन्तु दृष्टिकोण नहीं बदला। अरे जिसके कलेजा होता है, वही जलता है। प्रदीप जलता है राख होने के लिए ही तो। जब तक तुम अग्नि के प्रकार और रंग को खोज नहीं लेते हो, तब तक उसके उत्ताप को देखकर भयभीत तो होगे ही।”

इसके बाद वह थोड़ा झुक कर देवल की आँखों में अपनी आँखें डाल कर बोला, “किन्तु देवल, तुम्हारे प्रदीप में भी अग्नि जल रही है, मैं जानता हूँ।”

“तुमसे किसने कहा?”

“तुम्हारा इस तरह का प्रश्न करना ही बता रहा है। इसकी साक्षी हैं तुम्हारी आँखें, तुम्हारा मुख, तुम्हारे हावभाव। यदि कही मैं शरलाक होम्स होता, तो एक बार तुम्हारी कलाई-घड़ी को अवश्य देखता।”

हे-हे करते हुए उमरावसिंह उपस्थित हो गये। समस्त शरीर से आल्हाद फूटा पड़ रहा था। दाढ़ी पर बड़े यत्न से सफ़ेद पट्टी बँधी थी। देवल आतंकित हो उठा। उसने जिज्ञासा की, “मुँह में क्या हुआ, बड़ा घाव तो नहीं हुआ?”

“घाव?” मारे प्रसन्नता के आँखें नचाता हुआ उमराव बोला, “मेरे मुँह में और घाव? इतनी बड़ी छाती लेकर कोई पैदा ही नहीं हुआ जो मेरे मुँह की ओर देख तो सके। और तुम कहते हो, मेरे मुख पर घाव? देखो तो इस सुन्दर घुंघराली दाढ़ी की ओर अच्छी तरह से। भरपूर दृष्टि से देखो। यह मेरे गर्व का धन है। तख्तेताऊसपर बैठकर शाहजहाँ भी अपनी दाढ़ी को इतना प्यार न करता होगा।”

रबीन ने उमराव की बात में थोड़ी बाधा दी और कहा, “वाह, भागते जहाज़ में बैठकर लाल क़िले के शाहजहाँ बेचारे को क्यों घसीटते हो?”

दाढ़ी की पट्टी पर धीरे से हाथ फेरते हुए उमरावसिंह बोला, “वाह, जरूर घसीटूंगा। दीन दुनिया के मालिक शाहजहाँ में और उमरावसिंह में रक्ती भर भी फ़र्क़ नहीं है। उसके नेत्रों में, मुख में और दाढ़ी में था जीवन के प्रभात के विलास का मद। मेरी दाढ़ी में इस जहाज़ की समस्त स्त्रियों के मन को जीतने का नशा है। उसने तो कुछ भी नहीं जीता। बिना चाहे ही उसे सब कुछ मिल गया। मैं बिना पाये सब कुछ चाहता हूँ। जो कुछ भी प्राप्त कर सकूँगा, वही मेरा तख्तेताऊस होगा। मेरे साहस का वह निशाना होगा। झंडा ऊँचा रहे हमारा।”

तब भी देवल उसकी पट्टी की ओर देखता रहा। रबीन हा-हा करके हँस पड़ा और बोला, “फिर मैं देवल को तुम्हारी पट्टी का रहस्य खोल कर बता दूँ। जब मेरे पिता की बदली शिमले की हो गई तो गाँव के सभी लोगों ने शिमला के बारे में जानना चाहा। मैंने लिखा, ‘खबरदार, तुममें से कोई भी शिमला जाने की इच्छा न करना। बड़ी बुरी जगह है। रात को इतनी मारपीट होती है कि सत्रे झुण्ड-के-झुण्ड लोग मुँह में पट्टी बाँध कर आफ़िस जाते हैं। और समस्त मारपीट मुँह ही पर की जाती है। किन्तु यहाँ के वैद्य डाक्टर भी बड़े चतुर हैं: संध्या तक किसी के घाव नहीं दिखाई देता। मुँह पर किसी के पट्टी नहीं बँधी होती है।”

“इसका अर्थ?” आश्चर्य से देवल ने पूछा।

दाढ़ी के बन्धन पर प्यार से हाथ फेरते हुए उमरावसिंह ने उत्तर दिया- “इसका अर्थ आज रात को देख लेना। जानते हो, हमारी इस दाढ़ी ने न जाने कितनी तरुणियों के कानों में गुनगुनाया है। किन्तु आज उसकी घुँघराली बहार भी देखना। सारे दिन इसे बाँध कर संध्या को खोल दूँगा। आज इसकी लहरों में मलय की समस्त तरुणियों को फ्रैंन्सी ड्रेस नाच में नचा कर खींच लूँगा।”

रबीन खिल उठा। वह बोला, “भाग्य से उमराव हमारे साथ है। उसकी दाढ़ी और पगड़ी के कल्याण से हमारे देश की पताका आज नाच घर में खूब फहरा कर उड़ेगी। मलय के साहबों की मेमों ने किसी काले आदमी को अभी तक पकड़ाई नहीं दी है। मलय के देशी आदमियों के साथ मिसें दया का बर्ताव करती हैं। किन्तु वहाँ आज होगा हमारा हीरो—वीर उमराव। मगर वह तो वीरों से भी सवा है। मध्य युग का पूरा राजा। श्री चैयर्स फ़ार उमराव।”

“श्री चैयर्स फ़ार ए ग्लास अव ‘लागार’। ‘लागार’ बियर के ग्लास की जय ध्वनि करते-करते उमराव चला गया। जहाज के सभी व्यक्ति यह जानते थे कि ‘बार’ में एक सुनहरे केशों वाली सुन्दर मुस्कान भरी गोरी युवती अपने हाथों से बियर पिला रही थी।

रबीन ने देवल के सन्निकट होकर कहा, “भाई, मैं तो बंगाल का हूँ नहीं। इससे भावुकता ने मेरी प्रकृति की कमर नहीं झुकाई है, किन्तु तुम यद्ध में आकर भी इस भारी पत्थर को मन से हटा न सके।”

देवल न दृष्टि नीची कर ली और नाखून कुरेदता हुआ बोला, “जानते हो, आज मैंने एक निरस्त्र को मारा है। मैं खूनी हूँ।”

“ओ, उस गुप्तचर की बात कह रहे हो, किन्तु ये लोग आदमी थोड़े ही होते हैं। ये तो हमेशा ही मरा करते हैं। और इसके अतिरिक्त उसे निरस्त्र तो होना ही था। क्योंकि उसके पास जो वितन्तु पारेपक यंत्र था, वह तो बड़ा भीषण अस्त्र है।”

“तब भी उसे आत्मरक्षा का कोई मार्ग न था। मैंने उसे रिवाल्वर से कीड़े की तरह मार दिया।”

“इसलिए तो तुम्हें विक्टोरिया क्रॉस मिलना चाहिए, देवल ! इस जहाज में जितने असामरिक लोग हैं, बाल-बच्चे हैं, जो के आधीन सेना है, उन सबकी तुमने रक्षा की है।”

देवल करुण हास्य हँस कर बोला—“रवीन, देखो, जब मैंने उसे ललकारा—हाथ ऊपर करो—तो वह अवाक् होकर ताकता रह गया जैसे भूत देख लिया हो, पैर उसके ऐसे हो गये मानों उसमें पेंचकश लगे हों। अन्त में उसने वितन्तु यंत्र को पकड़ लिया, जैसे वह उसका हथियार हो। उसके ओंठ गूंगे की तरह काँपने लगे। अन्त में उसने पतलून का पिछला भाग पकड़ लिया। मैंने एक असहाय को मार दिया।”

“नहीं, यह मत कहो कि तुमने असहाय का खून किया है। तुम्हें इस वीरता के लिए विक्टोरिया क्रॉस मिलना ही चाहिए। गुप्तचर और किसी की दृष्टि में नहीं आ पाया।”

“विक्टोरिया क्रॉस ? क्यों मजाक करते हो। हम भारतीयों को विक्टोरिया क्रॉस मरने के बाद मिलता है। कारण यह कि हम काले वर्ण के लोग श्वेत वर्ण के लोगों से अधिक जान प्राण की बाज़ी लगा कर लड़ते हैं। फिर जहाँ सभी वीर हों, वहाँ ठीक स्थान पर, ठीक समय के हिसाब से मरना चाहिए। और सबके सामने दिन के प्रकाश में मरना चाहिए। अगर बड़े साहब ने मरना न देखा तो कुछ भी नहीं।”

रवीन इसे अस्वीकार न कर सका। इसे सभी जानते हैं। वह बोला, “नहीं देवल, तुम बड़ी गंभीर प्रकृति के हो, कैसे रह पाते हो ?”

“अंग्रेज़ इस बात को अच्छी तरह समझते हैं। इसी से जब तक जापा-

नियों के हाथ में नहीं पड़ते हैं, भागने की चेष्टा करते रहते हैं। और जितने दिनों तक भागते रहते हैं, रस रंग से मन को हलका करने की चेष्टा करते हैं। संसार का बोझ मन पर नहीं पड़ने देते। विपत्ति भी तो बड़ी भारी है।”

इसी से तो जहाज के बैठकखाने में सुन्दर वस्त्रों से सज्जित नर-नारी मन से भय और भार को फेंक कर देह में वस्त्र और लज्जा को धारण कर वहाँ एकत्र होने लगे।

तीन तरुणियाँ प्रथम पुरुष आदम की योग्य संगिनी की सज्जधज में नाचते-नाचते वहाँ आईं। उनके सिर पर सूखी घास की टोपियाँ थीं। उनके शरीर पर जो कुछ भी था, ऐसा लगता था, कि अभी उड़ जायेगा। परन्तु ये टोपियाँ चिपकी हुई थीं। एक तरुणी पर लाल काशज के कटे अक्षरों में लिखा था, “दि” दूसरी पर “थ्री” तीसरी पर “मस्कटियर्स”। तीनों संगीन-धारिणी थीं।

देवल ने धीरे से फुमफुमाते हुए कहा, “बेचारे फ्रॉम के साहित्यिक ने जब इस नाम का उपन्यास लिखा होगा, तब सपने में भी यह न सोचा होगा कि इस नाम की यह दुर्गति होगी।”

रबीन ने तुरन्त उत्तर दिया, “दुर्गति कैसे कहते हो ? मैं तो समझता हूँ कि उसका इस नाम की पुस्तक लिखना सार्थक हो गया। जैसी तीन संगिनी वैसी ही तीन संगीनें। चलो, उन मस्कटियर्स के सामने हम सीना तान कर खड़े हो जायें।”

उमराव की पगड़ी ज़रा सामने की ओर झुकी थी। वह जिस बात की तैयारी करके आया था, उसे कोई भी भूल नहीं सकता था।

छमाछम करती एक तरुणी छलकती जलधारा की तरह भीतर आई। वह केवल तंजोब का गाउन पहने थी, जो उसके शरीर पर जल-तरंग की तरह अठखेलियाँ ले रहा था। उसके वक्षस्थल पर वह गाउन न जाने कैसे अटका था, इसका रहस्य स्वयं गाउन भी नहीं जानता था।

देवल ने कहा, “खूब, संभवतः गाउन स्वयं लज्जाशील है, इसी से नीचे नहीं खिसक रहा है।”

उमरावसिंह बोला, “तुम्हारे देश के कवि दिव्य हैं। खबरदार, सौंदर्य का ऐसा अपमान मैं सह न सकूँगा। देखते नहीं हो, उसकी छाती पर एक लाल

रंग का पान बना हुआ है। आज रात को वही पान की बीबी—हृदय की रानी बनेगी। मैं उसे अपने साथ बाल्ज नृत्य का निमंत्रण दूँ ?”

रबीन बोला—“उमराव बढ़ो आगे। आज तुम्हारी जय होगी। हम लोग पीछे हैं।”

किन्तु जुट पड़ने का समय कहाँ था। हृदय की रानी के पीछे नाचते-नाचते एक जोड़ा नर-नारी आया। पुरुष संधाली या किसी शिकारी की पोशाक में था। हाथ में धनुर्बाण और कमर से नीचे धोती के समान कोई रंगीन वस्त्र झूल रहा था, जो कई रेशमी कपड़े के टुकड़ों की सिलाई करके तैयार किया गया था। वक्षस्थल पर भारतीय स्त्रियों की चोली थी। सिर पर जरीदार जाली की ओढ़नी थी। उस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—शिकारी—उसके हाथ में हाथ डाल कर उसकी संगिनी हिरणी आई थी। बिल्ली के समान हल्के नीले नेत्रों में सुरमा डाला हुआ था, मृगनयनी जो ठहरी। उसके समस्त शरीर पर—गाउन से ढके अथवा खुले स्थानों पर हरिण की छाप लगी थी। सिर पर मुकुट पहने थी। मस्तक के दोनों ओर हरिण के सींग की तरह कुछ लगा लिया था। नीचे लिखा हुआ था—“ओ प्यारी हिरणी !” उसने एक बार हिरणी की तरह चपल दृष्टि से देखा, और अपने गाउन में लाज से सिमट कर रह गई।

उमरावसिंह हार मानने वाला पात्र नहीं था। मुसकरा कर बोला, “देखो, देखो, एक बार इस प्यारी हिरणी को तो देखो। ऐसा गाउन मैंने सिने-तारिकाओं को पहने देखा है। यह अभी हाल ही का फैशन है। पेरिस के मजे हैं। किन्तु मनहरनी तो पहले ही शिकारी के साथ क़ैद हो चुकी है। उसका उद्धार कैसे किया जाय ? कुछ तरकीब तो बतलाओ जी।”

इसके बाद ऐड़ी तक चुस्त पतलून और मध्य युगीन फ्राक कोट पहन कर हाथ में मैण्डालिन लेकर एक व्यक्ति आया जो प्राचीन काल का फ्रांसीसी गायक कवि लगता था। इसका काम था नगरवासियों की खिड़कियों के नीचे खड़े होकर प्रेम-गीत गाना, जिसका मनोहर नाम है ‘सेरीनेड’। गान के स्वरों में प्रेम निवेदन किया जाता है और उसे सुनकर ऐसा लगता था, मानों लबालब प्रेम छलक रहा हो।

बीन ने उमराव से कहा, “देखा, कप्तान हमें बहुत अरसिक समझता

है। युद्ध में जाने वालों के सम्मान में यह फ्रैन्सी ड्रेस नाच किया गया है। और हम लोग विशेष प्रकार से निमंत्रित अतिथि हैं। इसी से अपनी पूरी सैनिक पोशाक में आये हैं। मगर आश्चर्य तो इस बात का है कि ये अंग्रेज इस दशा में इतने तरह-तरह के कपड़े कहाँ से और कैसे पा गये। क्या हमें भी कुछ कपड़े नहीं मिल सकते ?”

“क्यों नहीं। नाचने वाली संगिनी तो दे ही देगी। मगर उससे तुम्हारा लाभ क्या होगा ?”

“उससे लाभ होगा देवल का। उसे हम ऐसा ही फ्रांसीसी कवि बना कर इस नाच घर में छोड़ देते। और तीनों साथिनियों को कर देते इशारा। उसे ये लोग भगा ले जातीं। तरुणी के हाथों से सैनिक का हरण—आः सोचने ही में आनन्द आता है और उस बेचारे का मन हल्का हो जाता। पृथ्वी पर वीरत्व का एक नया रिकार्ड स्थापित हो जाता। सैनिक पदक मिलने वाली बात है।”

इसी बीच बड़े हल्के कोमल स्वरों में और मस्त कर देने वाला वाद्य-वादन प्रारम्भ हो गया। यह एक फ्रांसीसी रेकार्ड था, जिस पर ‘तुजूर लामूर’ (सर्वदा प्रेम मग्न रहो) की ध्वनि बज रही थी। यद्यपि वहाँ फ्रेंच संभवतः कोई ही जानता हो, उसकी रस स्निग्ध स्वर लहरी में डूब कर उसका अर्थ बहुतेरे समझ गये। किन्तु जापानियों ने हमला किया है। कान उमेठ दिये हैं और घर छोड़ कर भागना पड़ रहा है। सारे दिन प्रेम ही तो नहीं किया जा सकता। यह कितने दिन तक चलेगा ?

मलय के साहबों की मेमें इस बात को अक्षरशः मानती थीं। वे सारे दिन आमोद-आल्हाद में डूबी रहती थीं। यहाँ के प्रधान सेनापति ब्रुक पपाम की माननीय सहधर्मिणी ने रेडियो और पत्रों-द्वारा उनकी इस मनोवृत्ति पर गम्भीर दुख प्रकट किया था और निन्दा की थी।

एक तरुणी ने अपने मनमोहक सौंदर्य की झलक दिखा कर और अठ-खेलियों से आल्हादित हो जिज्ञासा की, “ह्वाट एबाउट ए ड्रिंक”—कुछ पियोगे नहीं ?”

चट से उमराव ने अपनी रंगीन पगड़ी से सुशोभित सिर को उसके सामने झुकाया। उसके गाल की दोनों ओर की दाढ़ी सरिता के दो तटों के समान

हँसी की तरंग से खिल उठी। उसने कहा, “अवश्य अवश्य मिस।” किन्तु क्या पिलाओगी, यह तो बताओ। तुम जो कुछ अपने हाथों से दो गी, वही ले लगा।”

तरणी रूप की झलक दिखा कर बोली, “तुम्हे पसद क्या है, यह तो बताओ।”

“मेरी पसद ?” उमराव ने अपने हृदय पर हाथ रख लिया। इस प्रश्न के साथ ही ऐसा लगा जैसे उसके हृदय में अथाह पीड़ा और बेचैनी हो रही हो और वह उसे वीर पुरुष की तरह सहन कर रहा हो। “मेरी पसद ? मेरी पसद है ह्वाइट लेडी।”

“नहीं, नहीं, देवल चौको मत। इसका अर्थ श्वेताग्निनी से नहीं है—जिन मिला कर एक तरह की सैनिक काकटेल का नाम है ह्वाइट लेडी।”

अंग्रेज तरणी खिलखिला कर हँस पड़ी—“ओ माई हैट। तुम्हारी चतुराई की तुलना नहीं है।” उसकी हँसी से जो फूल झरे वे उमराव के मन के आकाश में फूल बरसाने लगे। नावघर की बस्तियाँ क्षण क्षण में टिमटिमा कर गुल हो जाती थी और फिर धीरे से जल उठती थी। नाच के समय आजका ऐसा ही फैशन है। मन के आकाश में वामना के नक्षत्र टिमटिमा कर गुल हो जाये और फिर चमक उठे और खूब जले।

देवल बन्द जगले के सम्मुख चुपचाप खड़ा था। उसने नाचना नहीं सीखा था। सीखने की कभी इच्छा भी नहीं हुई। किन्तु रबीन की शिक्षा-दीक्षा साहबी ढँग पर हुई थी। उसका रबीन नाम कवींद्र ग्वींद्र की स्मृति में रखा गया था। वह नई सीखी विद्या दिखाये बिना न रह सका। नाचने लगा। मदिरा से नाचने में अधिक नशा है। यौवन का जादू मंत्र है नाच।

छोटा-सा जहाज समुद्र की तरंगों पर थिरक-थिरक कर नाच रहा था। बाजे की ताल-ताल पर चरण नाच रहे थे। और हृदय ? वह तो सगिनी की बाहु पकड़ने के साथ ही मस्त हो गया था। लोगों के मन खूब हल्के थे। सरिता की तरंगों के समान हृदय की इच्छा तरंगित हो रही थी।

नाच समाप्त हो जाने के बाद उमरावसिंह का मुख बहुत विरस हो गया। वह अपनी पगड़ी ऊँची करने लगा।

देवल ने जिज्ञासा की, “उमराव क्या बात है ? कुनैन-खाये ऐसे क्यों लगते हो ।”

चेहरे पर कुनैन का-सा कड़ुवा स्वाद लाते हुए वह बोला, “मैं उससे इस तरह थोड़े ही शरमा जाता । मैं रोज जिन और बियर से शुरू करता हूँ । मदिरा तो मधु है ।”

देवल ने मुसकरा कर कहा, “तो कौन-सा नया माल चखा ?”

सिर हिला कर उमराव बोला, “नया कुछ नहीं । नया क्या होगा ? यह पहली बार ऐसा कारवार हुआ । इसे कहते हैं चार सौ बीस ।”

“अर्थात् !”

“ओह, तुम अभी बच्चे हो । संसार का कुछ भी नहीं जानते । धोखेबाजी जानते हो ? पिनलकोड की चार सौ बीसवीं धारा ?”

देवल काफी समय तक समझने की चेष्टा करता रहा । उसकी कुछ समझ में न आया । उसने कहा, “तुम्हें किसने ठगा ? तुम तो आज की रात्रि के नरसिंह हो—लायन एमंग मेन । मैं देख रहा था कि समस्त सुन्दरियां तुम्हारे साथ नाचने के लिए तड़प रही थीं ।”

“वही तो काल हो गया ।” उमराव की बातचीत से दुःख फटा पड़ रहा था । तीन-तीन सुन्दरियाँ चेहरा लगाये हुए आ गई । उनके साथ रंवा नाच नाचना था । आज की रात के अलावा नाचने के लिए फिर तरुणियों का साथ नहीं मिल सकता । ऐसा सौभाग्य ! क्या हाथ आई लक्ष्मी ढकेल दूँ ? देखभाल कर एक बड़ी चटकीली के साथ चला गया ।”

“किन्तु” सिर हिला कर उमराव फिर कहने लगा—“जो चमकता है, वह सोना नहीं होता ।”

देवल ने सान्त्वना देने की चेष्टा की, “तुम्हारी यह अपनी स्त्री या प्रेयसी तो थी नहीं । फिर गिल्ट में इतनी आपत्ति क्यों ?”

उमराव को इससे सान्त्वना नहीं मिली । वह बोला, “अरे वह गिल्ट भी तो नहीं, पीतल निकला । किन्तु हमारा नाच तो मिट्टी हो गया । नाच के बीच में जब प्रकाश धीमा हुआ तो सुन्दरी ने शीघ्रता से चेहरा हटा लिया ।”

थोड़ा मजाक करने का लोभ देवल को हो आया । वह बोला, “तुम्हारा अभिनन्दन करने की इच्छा होती है । चेहरे से मुख पहिचाना जाता है ।”

उमराव सहन न कर सका। वह बोला, “ऐसी सुन्दरी के साथ नाचने से तो जापानी की गोली से मरना कहीं सहज है। सुन्दरी वह जिसके साथ नाच कर मनुष्य ठाठ से युद्ध क्षेत्र में चला जाय।”

देवल ने सान्त्वना देने की फिर चेष्टा की और कहा, “ऐसा लगता है कि सुन्दरी ने ठीक तरह से मेक-अप भी नहीं किया था।”

“मेक अप ?” उमराव ने दांत और दाढ़ी के बीच से गरजते हुए कहा, “मेकअप पचास बरस की तरुणी को अनंत यौवन देता है। तब भी इस विद्या के जोर से सदा नहीं चला जा सकता।”

देवल हँस कर बोला, “तुम्हें चाहिए था कि तुम केवल उसकी आँखें ही देखते।”

“आँखें मन की खिड़की हैं। कई बीते बसन्त की बहारों में इन्हीं खिड़कियों ने मुझे घायल किया है। न जाने कितनी रातें जाग कर बिताई हैं। न जाने इनमें कितने प्रेम का आनन्द मिला है। इस मतवाले पन में बहुत-से रंगीन नशे भरे पड़े हैं।”

“इससे तुम्हें क्या आपत्ति हुई ?”

लाहौर के मिशनरी कालेज के छात्र, विश्वविद्यालय की हाकी टीम के सर्वोच्च खिलाड़ी, उमराव, को थोड़ा और कुरेदने की इच्छा देवल को हो आई। उसने जिज्ञासा की, “उसमें तुम्हें क्या आपत्ति है ? तुम भी उस अक्षय माला के नूतनतम पुष्प होकर गुथ जाओ।”

उमराव ने जोर से सिर हिलाया। उसके विशाल शरीर के हिलने को देखकर उसके मन की अवस्था का अनुमान किया जा सकता था।

वह बोला, “जानते हो, देह और वयस का बड़ा साथ है। मन का नशा भी कभी उतरा है ? यौवन जलतरंग है, वह समस्त ग्लानि दूर कर देता है ; पाप की भी कोई छाप नहीं रह जाती है। मैंने उसके नेत्रों के भीतर झाँका और देखा कि बीते बसंत के सूखे झरे पत्ते हैं

“और इसी से मैंने आँखों को न देख कर मुंह को देखा। जब वह हँसी तो पहले तो ऐसा लगा कि किसी डाकघर का लाल बक्स खुल गया है। फिर यह समझ में आया कि सर्जन के चाकू से नया कटा हुआ आपरेशन है और इस पर अभी पट्टी नहीं बाँधी गई है। क्या किया जाये। यौवन चले जाने की

वेदना असह्य होती है।”

“तुम्हारे उच्छ्वास से हिली दाढ़ी देख कर ऐसा लगता है कि उस वेदना को तुमने बाहर फेंक दिया है।”

“पता नहीं, किन्तु ऐसा लगता है कि सब झूठ है। असली कुछ नहीं। माया है, बहुत बड़ी माया है। किन्तु फिर नाच जम न सका। इस तरह नाचते-नाचते उसके कानों में दो-चार साधारण बातें भी कह न सका।”

“उमराव, तुम्हारी कोई आशा नहीं है। पाँच मिनट के नाच में असल चीज ढूँढ़ने लगे। अरे असली चीज़ तो नाच है। संगिनी तो केवल माया है।”

“वाह ! संन्यासी जी महाराज, धन्य हैं आप ! अरे संगिनी ही तो सब कुछ है। नाच माया है। क्या तुम किसी स्थूलकाय थलथल आदमी के साथ रंभा नाच के चक्कर लगा कर मस्त हो सकते हो ?”

“नहीं, हो सकते हो न ? असली बात तो यह है कि जीवन में नारी ही परम सत्य होती है।”

यह कह कर एक नाच और नाचने के लिए झूमता हुआ उमराव चल दिया। जाते-जाते मुँह फेर कर मुसकरा कर कहता गया, “और, परनारी होती है परमा-नारी।”

नाचघर के मधुर संगीत की मतवाली झंकार को दूर कर देवल चुपचाप वहाँ से चला गया। उसने पीछे का दरवाजा खूब सावधानी से अच्छी तरह बन्द कर दिया, जिसमें प्रकाश की एक रेखा भी बाहर न पड़ने पाये। ऊपर के डेक में बँधी हुई एक लाइफबोट की आड़ में वह चुपचाप जा कर बैठ गया। जहाज के समान उसके मन में भी ब्लैक आउट था। प्रकाश, है कहीं प्रकाश ?

प्रकाश तो खैर है। किन्तु मिता की दीपशिखा को उसने बड़े यत्न से ढक रखा है। इस खून-खच्चर, और प्राणों के खींचतान के निष्ठुर प्रकाश में वह, अपने हृदयाकाश के प्रदीप को घसीटना नहीं चाहता।

कलकत्ते के निकट किसी अनजाने घाट में जहाज पर चढ़ने के समय मिता के साथ उसकी अन्तिम भेंट कैसे हो गई थी, इसे वह स्वयं जान न सका था। अवाक् होकर उसने जिज्ञासा की, “मिता तुम्हें कैसे खबर मिल गई? मैंने तो किसी को बताया नहीं। बताना मना भी था।”

परन्तु मिता ही क्यों, कलकत्ते के बहुत-से लोग यह बात जान गये थे कि उस दिन एक ब्रिगेड कलकत्ते से रवाना होगा। मिता ने हिसाब लगा कर यह जान लिया था कि आज ही देवल कलकत्ते से जहाज पर रवाना होगा।

इसी से मिता ने देवल के प्रश्न का सीधा उत्तर नहीं दिया। उसने कहा, “अँग्रेजों के सेना संबंधी गुप्त समाचारों को गुप्त रखने की जब यह व्यवस्था है, तब सोच नहीं सकती कि उनके साथ रह कर तुम कितनी विपत्ति में पड़ सकते हो। तुम्हारे यहाँ किसी को नहीं पता कि कहाँ जाना है। किन्तु चौरंगी में सभी को यह खबर मालूम है।”

“परमात्मा जाने, कैसे जान गये। अगर ऐसा न होता तो तुम्हारे साथ अकस्मात् मिलन कैसे होता।”

“इस तरह समाचार फैल जाने से क्या शत्रु तुम्हें विपत्ति में नहीं डाल सकते ? तुम लोगों का जीवन कितने संकट में है, यह सोच कर बड़ी चिन्ता

होती है। आज कलकत्ते में न जाने कितने लोग तुम्हारे जाने के बारे में जानते हैं। फिर क्या शत्रु पक्ष के लोग नहीं जानेंगे ?”

“अरे छोड़ो भी शत्रु और युद्ध की बातें। थोड़ा-सा ही तो समय है।” देवल न अनुनय कर कहा, “फिर तुम्हारे पास निर्भाव रूप से रह भी तो नहीं सकता।”

किन्तु मिता को इससे सान्त्वना नहीं मिली। म्लान हँसी हँस कर बोली, “ओ, तुम समझते भी हो कि क्या कह रहे हो। यह क्षण सदा ऐसा ही बना रहे। अभी तक निरे बालक ही रहे। तुम अच्छी तरह से भले-चंगे होकर लौट आओ। मुझे थोड़ा समय या चिरकाल की आवश्यकता नहीं है।”

समय बहुत ही थोड़ा रह गया था। रात को आठ बजे ट्रान्ज़िट कैम्प से कूच का घंटा बजेगा। हाथ में बँधी हुई घड़ी भी टिक-टिक करती हुई समय बीतने की सूचना दे रही थी।”

चारों ओर निर्जन, सन्नाटा। ऐसा लगता था कि घड़ी की टिक-टिक भी कुछ जोर से हो रही है। जिस हाथ में मिता का हाथ था, उसी में घड़ी बँधी होने से देवल को बड़ा संकोच हो रहा था। मिता ने इसे लक्ष्य कर लिया। हँस कर बोली, “घड़ी की टिक-टिक से अस्थिर हो उठे ? इतने दिनों में तो तुम्हारे कान मशीन गन की आवाज़ के अभ्यस्त हो गये होंगे।”

“हो तो गये हैं। फिर भी घड़ी की आवाज़ ने सबको दबा लिया है। ऐसा लगता है, मानो वह कह रही है कि अभी चल देना है। तुम्हें छोड़ कर जाना ही पड़ेगा।”

उसके म्लान मुख की ओर देख कर मिता हँस कर बोली, “अच्छा तो मैं अभी उस घड़ी को अपनी स्मृति से ओत-प्रोत किये देती हूँ।”

बैनिटी बेग से उसने एक ग्रूप फोटो निकाला। थोड़ी दूर लैम्प पोस्ट के धीमे प्रकाश में ठहर कर उसने उसमें-से अपने मुख की छवि का अंश निकाल लिया। घड़ी के नीचे का ढक्कन खोल कर उसमें उसे रख दिया और बोली, “यह घड़ी टिक-टिक करती समय बताने के साथ ही मेरी बातें भी तुम्हें बताती रहेगी। तुम्हारे साथ यह मेरा चिन्ह रहेगा। यह घड़ी तुम्हारे मन में और कोई बात आने न देगी। मैं आज संध्या को तुम्हें छोड़ कर जा रही हूँ, किन्तु तुम यही समझना कि मैं सर्वदा तुम्हारे साथ हूँ।”

देवल ने अर्द्धस्फुट स्वरों में कुछ कहा। मिता ठीक तरह से सुन न सकी। देवल ने इतने धीरे से, भर्राये गले से जो कहा था। थोड़ी देर बाद उसने जिज्ञासा की, “तुमने मेरी बात का जवाब नहीं दिया ?”

मगर मिता उसकी बात सुन ही न सकी थी। उसे फिर से पूछ कर वह देवल को क्षुण्ण नहीं करना चाहती थी। किन्तु इस मुहूर्त्त में, और बात ही क्या हो सकती ? ऐसे समय संसार में सब स्नेही जन चिरकाल से एक असहाय बात कहते आये हैं—“याद रखना, भूल मत जाना।”

वही चिर परिचित मनुष्य आज बड़ी दूर चला जा रहा है। अनजान देश में, अज्ञात भविष्य में। वह चारों ओर निश्चित विपद से घिरा होगा, उससे भी अधिक सुनिश्चित भावना से।

पूरी तौर से न समझ कर भी मिता ने ठीक अनुमान कर लिया कि देवल क्या कहना चाहता है। देवल की मुट्ठी में बन्द अपनी उँगलियों को उसने और अधिक आत्मसमर्पणमय कर दिया। और धीरे-धीरे बोली, “मैं तुम्हारी ही रहूँगी। तुम्हारी बाट जोहती रहूँगी। तुम शीघ्र लौटो। अच्छी तरह भले चंगे होकर लौटो।”

म्लान भाव से देवल बोला, “और यदि अच्छी तरह न लौट सका ? भला चंगा न लौट सका ?”

“निश्चय ही लौटोगे। भगवान् हमारी कातर प्रार्थना निश्चय ही सुनेंगे। ऐसी बातें मत कहो।”

देवल के मन के कोमल भाव जैसे किसी ने कस कर दबा दिये। दाँत भीचे-भीचे वह धीरे से बोला, “और यदि न लौटा ?”

किन्तु मिता के पास असहाय भावावेग का समय नहीं था। उसने देवल की बात को उड़ा दिया और उपेक्षा का भाव दिखाते हुए बोली, “तुम निश्चय ही लौटोगे। तुम्हारे ऊपर कोई विपत्ति नहीं पड़ सकती। यह हमेशा याद रखना—मैं तुम्हारी बाट जोह रही हूँ। केवल तुम्हारी ही। सब सुख-दुःख विपत्ति में।”

थोड़ी देर दोनों चुप रहे। किन्तु दूर पर कहीं से एक बड़ा घंटा टन्-टन् करके बज उठा। देवल को इसी समय जाना होगा। समय नहीं है, अब बिल्कुल समय नहीं है। हाय रे मानव हृदय !

चलते-चलते देवल ने उसके कानो में धीरे-से कहा, “याद रखना—
प्यार ।”

अनतकाल तक देवल इसी तरह बोलते रह सकता था । किन्तु वह
अनतकाल है कहाँ ? दूर बजे हुए घटे की ध्वनि ही एक मात्र सत्य है ।

मिता आगे कुछ भी कह न सकी । उसके ओठ चिपक कर रह गये ।
मुख बन्द हो गया । नेत्रों में लबालब जल भर आया । केवल हँधे स्वरो में
कह सकी, “मेरे वीर ” ।

अकस्मात् पीठ पर किसने हाथ रखा ? मिता ने तो नहीं ? नहीं, वह
जानता है कि यह मिता नहीं हो सकती । तब भी उसकी बाते सोचने में भी
भली लगती है । किन्तु सोचने का समय नहीं है । मुंह फिरा कर उसने देखा
कि कप्तान जो है । सीधे खड़े होकर उसने सेल्यूट किया और कहा, “यस
सर ।” जो ने भी प्रतिसेल्यूट कर सम्मान दिखाया । सभ्य समाज का यही
नियम है । यदि कोई सम्मान के बदले सम्मान न दे सका तो उसका बड़ा
होना बेकार है ।

“सुनो, देवल, इस समय में तुम्हारा खूब घनिष्ठ मित्र हूँ । इस बात को
भूल जाओ कि मैं तुम्हारा आफिसर कमांडिंग हूँ । आओ, यहा जरा खुले
में बैठे ।”

दोनों लाइफ बोट के एक तख्ते पर आमने सामने बैठ गये ।

“बताओ, देवल, तुम्हारा मन इतना भारी क्यों रहता है ?”

कोई उत्तर नहीं ।

“बताओ, तुम इतने गभीर क्यों रहते हो ? मैं जानता हूँ तुम्हें किसी का
भय नहीं है । न जापानियों का, न जल में डूब मरने का । तब ?”

कोई उत्तर नहीं ।

“मुझे क्षमा करना, देवल, तुम्हारे व्यक्तिगत जीवन की बातें कर
रहा हूँ । किन्तु इस समय मैं जैसी अवस्था में हूँ उसमें भद्रता की बेडियो को
काट कर फेक देने में कोई बाधा नहीं है । तुम्हारे जीवन में कोई नारी है ?
है न ?”

कोई उत्तर नहीं ।

“मैं सोचता हूँ कि तुम्हें यदि और कोई चिन्ता होती तब भी ठीक था ।

सर्वदा किसी चिन्ता में डूबे रहना, या मतवाले-से बने रहने का कारण होती है नारी। क्षमा करना देवल, अनेक पुरुषों के जीवन में ऐसा होता है, किन्तु उसके कारण इस तरह से रिक्त रहना, सब कुछ से अपने को वंचित रखना तो ठीक नहीं है न ?”

देवल ने अब वही जा कर उत्तर दिया। बहुत धीमे स्वरो में वह बोला, “मैं सब कुछ ठीक तरह से तो कर रहा हूँ। है न यह ठीक कप्तान ?”

जो ने तुरत उसे आश्वस्त करते हुए कहा, “अवश्य, अवश्य, परन्तु तुम अवसर पाने पर अपनी इच्छानुसार या जो तुम्हें अच्छा लगे उससे अपने मन को प्रसन्न क्यों नहीं करते हो ? इतना दुःख क्यों झेल रहे हो ? किस भावना के वशीभूत हो तुम साधारण अलस विलास तक से भी अपने को वंचित रखते हो ?”

यह कह कर जो थोड़ा मुसकराया और फिर कहने लगा, “तुम बहुत बड़ा चढ़ा कर चिन्ता करते हो। यही चिन्ता का कारण है। तुम्हें अपनी हृदयेश्वरी, या जिस की भी चिन्ता करते हो उसके अलस-विलास की भावना से अलग होने की चेष्टा क्यों नहीं करते। मैं तुम से अवस्था में बड़ा हूँ। पृथिवी पर मैंने बहुत कुछ देखा है। मेरी बात सुनो।”

“किन्तु आपकी बाते, आपकी अभिज्ञता मेरे किस काम आ सकती है ? आपके देश में बहुत-सी बातों के लिए सीमा निर्धारित है। अपने को उस बंधन में बाँधते ही वे प्राप्य हो सकती हैं। इस नाच घर ही में इतना हुल्लड मचा हुआ है, इतना रस-रंग प्रवाहित हो रहा है। क्या ये सब निश्चित मन से स्फूर्ति ग्रहण कर रहे हैं ? न जाने कितनों के हृदयों में काटा कसक रहा होगा, कितनी व्यथाये होगी, कितने भग्न हृदय होंगे। तब भी ये नाच रहे हैं। हम से वैसा नहीं हो सकता।”

“क्यों नहीं हो सकता, थोड़ी-सी चेष्टा करने से तुम भी कर सकोगे। क्या तुम चेष्टा करने से उमरावसिंह की तरह दिल-फेक नहीं बन सकते ? अपनी समस्त भावना, विगत स्मृतियाँ वर्तमान आज के स्रोत में विसर्जन कर क्या तुम थोड़ी देर के लिए भी उल्लास से हँस नहीं सकते ?”

“संसार के समस्त कार्य सभी लोग नहीं कर सकते।”

“न सही। तब भी नकली चेहरा तो लगा ही सकते हो। आज के सभ्य

जगत में असली चेहरे से नकली के दाम कुछ कम नहीं है ।”

बोलते-बोलते ऐसा लगा मानो जो के मुख पर पड़ा आवरण हट गया । उसका चेहरा अधिकार से ढका था, किन्तु इस समय की बातचीत से वह खिसक गया और उसका असली रूप सामने आ गया ।

देवल ने उसे लक्ष्य कर लिया । वह बोला, “कप्तान, आप ने मुझे मित्र कह कर माना है । इसी से साहस बटोर कर यह कहने के लिए क्षमा कीजिये कि आप के मन पर भी एक आवरण पड़ा हुआ है ।”

“यदि मैं ‘हाँ’ कह दूँ तो क्या तुम्हें खुशी होगी ?”

“नहीं, खुशी नहीं होगी ।” देवल ने भारी गले से कहा—“खुशी नहीं होगी । बीते दिनों में हमारे देश में मनुष्य सरल और सहज था । वह स्वाभाविक प्राकृतिक नियमों से बँधा था । वासना से घिरा था । आप के पश्चिम के प्रभाव से आज उस वासना को वेदना की खाद अच्छी तरह मिल गई है । इस युग में जिसे प्यार किया जाता है वह केवल स्त्री ही नहीं, प्रेयसी, सखी भी होती है । बाहर के ससार में जिसका मन प्रतियोगिता की खींचतान में उलझता है वह केवल बधू नहीं हो सकती । पहिले तो वह मित्र होती है । उसका मन जीत लेने के बाद, अपना घर बसाने के पूर्व कितनी दीर्घ प्रतीक्षा करनी पड़ती है ।”

“किन्तु इस कारण तुम्हें दुःखी होने का कोई कारण नहीं है । अगर तुम्हें इन बातों में सकोच होता है तो जाने दो । मगर निरंतर चद्रमा की ओर ताकते रहने से क्या थकते नहीं हो ।”

“आप अपनी बात कीजिये । मैं ठीक तरह से अभी तक समझ नहीं सका हूँ कि अपने मन को ठीक तरह से पहचानता भी हूँ । इससे आप अपनी बात कीजिये ।”

“नहीं, देवल, अपनी बात कहो । तुम्हारे मन में ज्वार उठा है । यदि तुम बाँध नहीं काटोगे तो तुम्हारा सब कुछ इसमें डूब जायगा ।”

देवल थोड़ी देर चुपचाप बैठा रहा और चिन्तानिमग्न हो गया, जो ने अत्यन्त स्नेह से उसके कंधे पर अपना हाथ रख कर कहा, “देवल, मैं सब समझता हूँ । तुम्हें कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है । बेरी सारी ओल्ड बाय ।”

देवल तपाक से बोला “नहीं, आज मैं सब ही कुछ बतला दूँगा । किसी

एक को तो अपनी बातें बता रखनी चाहिये । आपको अपना पता-ठिकाना भी बता दूँगा । यदि कभी कोई ऐसी ही बात आ पड़े तो यह मेरी हाथ की घड़ी वहाँ भिजवा दीजियेगा ।”

“अच्छा उसे अभी रहने दो । पहले कुछ पिछली बातें बताओ ।”

देवल ने कहना शुरू किया, “मैं उन दिनों एम. ए. में पढ़ता था । कटे पतंग की तरह इधर-उधर फिरता रहता था । यही उन दिनों का फ्रैशन था । नहीं तो यह कैसे मालूम होता कि मैं भद्र परिवार का हूँ ।

“एक दिन दक्षिण कलकत्ते में ट्राम पर चढ़ रहा था । लेडीज सीट पर एक लड़की बैठी थी । मुझ से थोड़ी बड़ी ही होगी । चारों ओर लोगों की भीड़-भाड़ थी । उस भीड़ में उस मनोहर तरुणी के सामने ट्राम का डंडा पकड़ कर खड़े होने में किसी लज्जा या संकोच की कोई बात न थी । मुझे चीन्हता ही कौन था ?

“सहज भाव से मैंने उसकी ओर देखा । वह भी मेरी ओर दृष्टि किये थी । यूँही, अकारण, जैसे चंद्रमा की चाँदनी सब के ऊपर समान भाव से पड़ती है । कोई खास विचार भी मन में न था । उसके मुझे देखने में कोई औत्सुक्य या आनंद या घृणा कुछ भी नहीं था । किन्तु भगवान् ही जानता है उसने किस भाव से मेरी ओर देखा ?

“वास्तव में बड़े आश्चर्य की बात है । प्रथम दर्शन ही में ?” जो के प्रश्न में आश्चर्य के साथ अत्यन्त समवेदना थी ।

“नहीं, नहीं प्रेम नहीं । उसके नेत्रों में एक प्रकार की निष्कृति का-सा भाव था । इतने लोगों के बीच में केवल मैं ही ऐसा था जिसकी दृष्टि में किसी प्रकार की जड़ता या ओछापन न था । ऐसा लगता था मानो मेरे नेत्रों में सागर-तट की परिच्छन्न बालुका राशि हो और उस तरुणी के नेत्रों की पुतलियाँ उस सागर के नील जल की खोज कर रही हों । मेरे नाखूनों में स्याही लगी थी, कमीज मैली थी और उसके सामने के बटन टूटे हुए थे । किन्तु अनजाने ही मैं ये सब बातें तुच्छ होकर रह गईं, जैसे सुन्दर पके फल पर लगी धूल की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता है । थोड़ी देर बाद अपने स्नेहमय हाथों की कोमल उँगलियों से मुझे एक ओर हटा कर वह चली गई ।”

“उसके मुख की प्रसन्न दीप्ति से मानो मेरे मन की युगो तक की कालिमा परिष्कृत हो गई। उसके जाते ही मुझे ऐसा लगा मानो वह मुझे अकेला छोड़ कर चली गई। इस गन्दे ओछे समार के बीच मुझे छोड़ कर चली गई। मुझे—जिसके मन की समस्त कालिमा अभी परिष्कृत हुई थी।

“दूसरे दिन अनजाने ही खोजता-खोजता मैं फिर उसी ट्राम पर जा बैठा। वह तरुणी भी उसी से जा रही थी। उससे और कुछ न कह कर मैं उसके सामने ट्राम का डडा पकड़ कर खड़ा रहा।

“इस बार मुझे ऐसा बोध हुआ कि मैंने दाढ़ी नहीं बनाई है। जल्दी से मैंने कमीज के कालर को उलट कर उसमें अपने गाल छिपा लिये। जहाँ तक छिप सके अपने को छिपा लूँ। एक बार बैठने की जगह भी मिली। किन्तु बैठने का साहस नहीं हुआ। कहीं ऐसा न हो कि मेरी टूटी चप्पल पर उसकी दृष्टि पड़ जाय। वह ठीक पहिले ही की तरह देखती रही। उस चाहना में भाषा थी, ध्वनि नहीं। आश्वास था, किन्तु आशा नहीं। जब वह उठ कर चली गई तो मैंने देखा कि जहाँ वह बैठी थी वहाँ बीच में गद्दी कुछ दबी हुई थी। और उस दबे हुए स्थान को मैं सूनी दृष्टि से देखता रह गया।”

जो इतनी देर बाद बोला, “ऐसा लगता है कि रातोंरात तुम कालेज के बालक से पृथ्वी के मनुष्य में परिणत हो गये।

“नहीं—ठीक ऐसी बात नहीं। आपने कभी देखा है कि कैसे धीरे-धीरे कच्चा केला पीला रँग धारण करता है ? उस रहस्य को मैं कैसे समझाऊँ। मिट्टी के गद्दवरो में आप सोने की खाने खोजते हैं। कुदाल चलाते-चलाते हठात् ठीक स्थान मिल जाता है।

“मेरे उसी कच्चे हरे रँग को उसने सोने का रँग दे दिया। उसकी चितवन के उत्ताप से मुझमें जो कालेज का विद्यार्थी था, वह धीरे-धीरे यौवन के रस में पक उठा। मैंने अपनी ओर देखा, दूसरो ने भी देखा। न जाने मेरी समस्त देह में, मन में, कौन से माया-जाल की सृष्टि हो गई।

“ट्राम गाड़ी जैसे मेरा बैठकखाना हो गई। उसके पास उठते-बैठते मुझे जरा भी लज्जा नहीं लगती थी। चप्पल का स्थान शांति-निकेतनी सेडिलो ने ले लिया। सिकुड़ी कमीज की जगह बढ़िया कलफ किया कुर्त्ता आ गया। उलझे अस्तव्यस्त केशों की जगह ठीक तरह से सँवारे केश होगये। अनेक

बार मन में ऐसा लगा कि मैं उसके साथ बातचीत करने के लिए अपने को तैयार कर चुका हूँ, तब भी कर न सका। बार-बार खाँस खाँस कर गला साफ करता था; ओठ भी हिल पड़ते थे, तब भी बोल न सका।”

मृदु स्वर में जो बोला, “तुम्हारी बातें तो रूपकथा के समान बड़ी आश्चर्यजनक लग रही हैं। ट्राम में जिस प्रेम का उदय हुआ, उसका अन्त कहाँ हुआ यह जानने की बड़ी इच्छा हो रही है।”

“धीरे-धीरे परिचय पाने की वासना प्रबल हो उठी। तब भी न मन में साहस ही था न भरोसा। क्या कह कर परिचय दूँ? कालेज का पंचम वर्ष का छात्र हूँ, वह क्या परिचय होगा? घर में, पिता जी के मत्थे किसी तरह पेट भरता हूँ, क्या यही परिचय हुआ? अभी हाल ही में अँगड़ाई लेकर जागा हुआ मनुष्य अपनी स्थिति, अपने अस्तित्व के लिए पागल-सा हो उठा। किन्तु, जो साहब, आप भारत के शिक्षित लोगों की नौकरी के बाज़ार की खबर नहीं जानते हैं। एक चिथड़े का मूल्य भी उसकी अपेक्षा अधिक है।”

जो बीच ही में बोल उठा, “आहा, शिक्षित लोगों की अवस्था देख कर मन में ऐसा लगता है कि इन समस्त कालेजों को बन्द कर दिया जाय। हथौड़ा चला कर भी पृथिवी पर रहा जा सकता है। हाँ यह बात अवश्य है कि हमारे देश में मनुष्यत्व का अपमान इस सीमा तक नहीं हुआ है। खैर जो कुछ भी हो, अपनी बात कहो? तुम ने फिर क्या किया?”

“हर स्थान पर “कोई जगह खाली नहीं है” की तख्ती लगी मिलती थी। पिता के धन से कितने दिनों तक सैडिल और कलफदार कुरते चलते। एक दिन समस्त साहस बटोर कर ट्राम से उतर कर उसके पीछे-पीछे चला। साहबों के एक नये क्लब के दरवाजे तक उसके पीछे लगा रहा। अपने श्यामल देश की श्यामा का आदर वहाँ देखा। महिला रिसेप्शनिस्ट के व्यक्तित्व की दीप्ति में सब की आँखें चकाचौंध हो जाती थीं। उसके पास बहुत से सितारे और मुकुट मार्का सैनिक अधिकारी विनयपूर्वक झुक कर भद्रता प्रदर्शित करके धीरे-धीरे बातचीत करते थे। सामने पथ खुला हुआ था। मैं भी इसी तरह उसके सामने जाऊँगा।”

जो ने जिज्ञासा की, “तो तुम केवल पेट के लिए सेना में नहीं आये?”

“नहीं, बिल्कुल नहीं। डलहौजी स्ववायर में स्थान न पाने के कारण मैं फोर्ट विलियम नहीं गया। मैं जानता था कि दल-के-दल भारतीय ब्रिटिश सेना में नाम लिखा रहे थे। कांग्रेस कहती थी कि इसका कारण है अभाव, अन्न का न मिलना। बात ग़लत नहीं थी। किन्तु मैंने देखा कि केवल लेखनी घिस कर मैं अपना पालन-पोषण न कर सकूँगा। नवीन, जाग कर उठा हुआ, व्यक्तित्व केवल क़लम घिसाई से प्रकाश में नहीं आ सकेगा। मन-तुरंग विश्व विजय के लिए रस्सी तुड़ा रहा था। उसे घर के कोने में बाँध कर कैसे रखा जा सकता था ?

“इसी से एक दिन सीना तान कर और सिर ऊँचा करके रिक्शूट कार्यालय में चला गया। वहाँ से इंटरव्यू के लिए शिमला गया। अन्तरतम में सुलगते देवलसिंह का नूतन जन्म हुआ।

“सैनिक-कार्यालय के प्रशिक्षण से छुट्टी पाकर कलकत्ते आया। संध्या को उसी क्लब में गया। ट्राम से नहीं टेक्सी से। बेचारे टेक्सी-चालक को उस दिन कितनी बख़शीश दी, नहीं मालूम, किन्तु वह रिसेप्शनिस्ट के सामने ताकता ही रह गया। टेक्सी के हटते ही मैं उसके सामने जा कर खड़ा हो गया। आमने-सामने, मुख के सामने मुख।

“उसने अत्यन्त प्रशान्त नेत्रों से मेरी ओर देखा। उसकी चितवन पूर्ण-रूप से निरासक्त थी। किन्तु उसकी उसी चितवन ने मेरे हृदय में हाहाकार मचा दिया। मेरे कानों में विनचेस्टर रिपीटर राइफिलों की अनवरत गोली छूटने की आवाज़ गूँज रही थी। मेरी दशा उस समय कोर्ट मार्शल के सामने खड़े सैनिक की-सी हो रही थी। उसके दोनों नेत्र बन्दूक की दो नलियों के समान थे। मेरा सारा शरीर पसीने-पसीने हो गया। बदहवासी में टोपी तक उतारना भूल गया।

“उसी ने मुझे स्वप्न से जगाया। कितने ही अतिथि जा रहे थे। एक के बाद दूसरे की अभ्यर्थना सुननी थी। सब का स्वागत करना था। जगह देनी थी, दो चार मीठी बातें करनी थी, उन्हें प्रसन्न करने के लिए मुसकराना था—इस तरुणी के पास कितना काम था। उसके सागर के तट पर एक मात्र देवल ही तो सीप नहीं था।

“सीप न सही, किन्तु शंख था। इस क्लब में मैं पहिले पहिल आया

था। किसी को पहचानता न था और न सभ्यतापूर्ण व्यवहार ही कर सका था। तब भी मन मार कर वहाँ से चला। उसने सामयिक सभ्य ढंग से मेरे प्रार्थना-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। मैनेजर मुझे 'बार' में ले गया जहाँ अनेक व्यक्तियों से मैंने बातचीत की। नये सभ्य के सम्मान में सभी ने है-है करके अभिनन्दन किया। उसी के खर्चे पर उसी के कल्याण के लिए सबने एक पेग व्हिस्की का पिया। किन्तु मैंने केवल निरामिष नींबू मिश्रित बार्ली ली।"

"छि: लेफ्टनेंट सिन्हा। तुम इस सब्जी जल को पीकर अपनी सैनिक पोशाक का असम्मान कर रहे हो।" बार में मेरे इस व्यवहार पर सभी ने हथेली ठोक कर आपत्ति की। रिसेप्शनिस्ट जहाँ बैठी थी वहाँ से 'बार' दिखाई पड़ रहा था।

विजय के हास्य से मेरा मुख फूल उठा। मैंने तुरन्त उत्तर दिया, "सब लोगों का कहना यह है कि व्हिस्की सबसे उत्तम पानी है। किन्तु मैंने ऐसा कौन-सा पुण्य किया है जो इस उत्तम पानी के योग्य हो सकूँ?"

एक सदस्य ने सिर ऊपर कर शून्य की ओर ग्लास उठा कर कहा, "यह नये सभ्य हम दुष्ट सभ्यों के सामने लज्जा कर रहे हैं। नशे में मस्त होकर रंगीन चश्मे के अन्दर से फिर देखेंगे कैसे?"

यह कह कर वे मेरी ओर देख कर हँसने लगे। मैंने अपनी बांह को अर्धचन्द्रमा का रूप देते हुए कहा, "मेरे दोनों नेत्र अभी से रंगीन हो गये हैं। मुझे बाहरी सहायता की आवश्यकता नहीं है।"

काले साटिन की काँट-छाँट की हुई और कढ़ी हुई चुस्त चोली पहिने सुन्दर मुख वाली एक तरुणी बोली, "हमारे इस वीर की आँखें योंही रंगीन हैं। किन्तु मन को भी तो रँगना है।"

इस बार मैं झेंप गया। मध्य युग के नाइट के समान इस युग की अटपटी सैनिक पोशाक की उपेक्षा करते हुए मैंने थोड़ा विनम्र हो कर कहा, "सुनो प्रिय महिला, सबसे बड़ा नशा प्रेम का है, मेरा मन उसी से रंगीन है।"

उसके पास ही सम्भवतः उसका स्वामी खड़ा था, उसकी बाहु स्पर्श कर वह बोली, "यह देखो सैनिक अधिकारी है, तब भी मदपान न करके नशे का अभिनय कर रहा है, और तुम ? हूँ।"

स्वामी ने गभीर स्वर से उत्तर दिया, “व्हाट हूँ ? यह तो प्रेम में पडा है, फिर भी नशे में रहने का अभिनय करता है, किन्तु मैं किस दुःख का अभिनय करूँ ? मैं निर्जला नशा करूँगा ।”

उसके यह कह चुकने पर उसके साथियो ने काउण्टर पर खनखना कर ग्लास रख दिये । अर्थात् और भरो ।

अकस्मात् आँखें पोंछते-पोंछते यह तरुणी उस स्थान को छोडकर चली गई । उस दिन से मैं क्लब छोडने में काफी देरी करने लगा । इस बात का विचार रखता था कि अभ्यर्थनाकारिणी को कब छुट्टी होती है । मैं ठीक उसी समय तक वहाँ रुका रहता था । निर्जन पथ में ज्योत्स्ना के मधुर आलोक में हम दो यात्री थे ।

ऐसा लगता था मानो कोई स्वप्न देख रहा हूँ । वह केवल पथ ही नहीं था । ऐसा लगता था मानो मेरे मन पर पुष्पो की चादर बिछा कर वह चल रही है । अधिक बातचीत नहीं होती थी । मेरा मन भरा था । उसके मन में भीरुता थी । मुझ में यह परिवर्तन कैसे और क्यों हो गया, इसे उसे समझने की आवश्यकता न थी । क्या सभी कुछ कह-सुनकर ही समझा जा सकता है ।

उस पथ की ट्राम पर हम फिर बैठे । उस रात अपने घर के सामने जब मैं विदा मागने लगा तो उसने केवल इतना कहा—‘मेरे वीर’—।”

थोड़ी देर चुप रहकर देवल अस्फुट-स्वरो में बोला, “मेरी विदा के समय भी वह इतना ही बोली थी ।”

किन्तु देवल को स्मृति के भार में भग्न होने नहीं दिया जा सकता था । जो हटात् बोल उठा, “शीघ्र नाच घर में चलो । नहीं तो लोग कहेंगे कि बडे नीतिवागीश आये हैं । छि, वह बडी लज्जा की बात होगी । अपना आवरण उतार दो, चलो उनारे ।”

दोनों नाच के जलसे में चले गये । नाच उस समय बन्द था । किन्तु सारा प्रबन्ध बडी समझदारी से किया हुआ था । नाच नहीं चल रहा था, किन्तु खेल चल रहा था । मजे का खेल—सगी-सगिनी के साथ । जिसमें नशा उतरने न पाये ।

कुर्सियाँ गोलाकार सजाई गई थी । जो लोग नाच में शरीक न हो

सके थे, उनके लिए विशेष बन्दोबस्त था। जितने लोग उपस्थित थे, उनमें-से एक के लिए कुर्सी कम थी। पियानो टुंग टांग बज रहा था और सब लाइन लगा कर बाजे की ताल पर नृत्यगति से कुर्सियों के चारों ओर गोल वृत्त बना कर ठुमक रहे थे। अकस्मात् बिना सूचना के पियानो रुकने वाला था और लोग कुर्सियों पर बैठने वाले थे। किन्तु पुरुषों के लिए यह नियम था कि अपनी सगिनी को बिठा कर तब स्वयं बैठे। एक कुर्सी कम होने के कारण एक व्यक्ति बैठने से वंचित रहेगा। इसके बाद बाजा फिर बजेगा, लोग वैसे ही नाचेंगे और एक कुर्सी और कम कर दी जायगी। इसी तरह से नाच चलता रहेगा और एक-एक करके कुर्सियाँ कम होती जायँगी। अन्त में दो कुर्सी रह जायँगी, उन पर जो जोड़ी बैठेगी उसके नाम पर टोस्ट प्रस्तावित होगा। अर्थात् उनके नाम पर सब लोग मदिरा का रसास्वादन करेंगे।

बड़ा निरीह खेल था। इसमें किसी शास्त्र या पंडित को आपत्ति करने का कोई कारण नहीं था। जो ने देवल को ढकेल कर इस चक्कर में डाल दिया। देवल ने अपने को समझाया, किन्तु उसका भाग्य मन्द था। वह अन्त तक रह गया। समस्त दल ने ग्लास उठाकर उसके नाम पर टोस्ट पान किया।

विजय गर्व से उसकी सगिनी ने चारों ओर सिर घुमा कर देखा। और अपना मुँह देवल के अधिक निकट ले आई। थोड़ा और अधिक।

नहीं यह 'बाक्सिंग डे' अर्थात् बड़े दिन के बाद का उत्सव नहीं था। उस दिन नाचघर में विलायती मिसिलटो पेड की डाले झूमती हैं। उसके नीचे बालक-बालिकाओं को परस्पर एक-दूसरे का चुम्बन लेना पड़ता है, किन्तु आज तो वह सब नहीं है। चुम्बन करने का वैसा अबाध अधिकार भी नहीं है।

फिर भी—फिर भी—पैरो के नीचे सागर लहरा रहा है, जहाज थिरक रहा है, आर्केस्टा का संगीत तरंगित हो रहा है। मृत्यु के हाथों से छीनी हुई इस रात्रि का मूल्य यदि यह तरुणी अदा करना चाहे तो? आज जो रजनी बीत रही है क्या उसे लौटना है?

फिर वह इस आगे किए मुख को कैसे फेरे?

इतने में हँसता हुआ उमरावसिंह आ गया। दोनों के बीच में अपनी पगड़ी को झुका कर, कोमल और अन्तरंग भरी वाणी में उसने कहा, "हैलो हनी, अगली बार तुम मेरे साथ नाचना, यही मेरी प्रार्थना है।"

अन्त में वे सिंगापुर में सिंह की गुफा में जाकर पड़ गये। जापानी सिंह चारों ओर से छेके थे।

“काने हिरन की कहानी जानते हैं, सर ?”

अकस्मात् देवल ने यह प्रश्न किया। फरवरी का महीना था। शीत चलने की तैयारी कर रहा था, किन्तु बसन्त का आगमन नहीं हुआ था। जापानियों ने आकाश को बमों से गरम कर दिया था। पलक मारते ही वायुयानों के झुंड बम वर्षा कर जाते थे। चारों ओर बारूद की गंध, तोपों का धुँआ और भय के भूत थे। पीछे सिंगापुर नगर के ऊपर दनादन गोले पड़ रहे थे। बड़े-बड़े मकान आग से जल रहे थे।

रात को जो की टुकड़ी पहरेदारी के लिए युद्ध-क्षेत्र के उसी भाग में भेजी गई थी। खाइयों में लेट कर पहरा देना था। और कितनी दूर से किधर से आक्रमण हो रहा है इस पर नज़र रखनी थी। और ये समस्त समाचार उस ओर मलय के कमाण्डर को देने थे। यह जगह बड़ी भयानक थी। साक्षात् मृत्यु का मुख था। इसके पहिले जितनी टुकड़ियाँ यहाँ भेजी गई थीं, गोलों की मार से समाप्त हो गई थीं। इसी से यहाँ कोई आना नहीं चाहता था। आस्ट्रेलियनों ने कहा कि अभी तक उन्हीं के लोग यहाँ भेजे गये हैं और वे निरीह जानवरों की तरह मरे हैं। किन्तु वे युद्ध करने के लिए आये हैं, इस तरह मरने के लिए नहीं। इसलिए वे अब यहाँ नहीं आयेंगे।

ब्रिटिश अधिकारियों ने सिर हिला कर कहा, बात ठीक है। अभी तक जापानियों की आँखें आस्ट्रेलियनों ही पर पड़ी हैं। फिर यदि सारे जाति भाई ही मर गये तो फिर बात ही क्या रही। देश की रक्षा तो उन्हीं के लिए की जा रही है।

और ब्रिटिश सेना ? उनके लिए तो हैडक्वार्टर में बड़ा ज़रूरी काम है। जहाँ युद्ध न हो रहा हो वहाँ भी तो काम रहता ही है। जहाँ शत्रु-पक्ष इतना नीच हो वहाँ अपना रक्त बहाने से लाभ ?

किन्तु सिगापुर मे चालीस हजार भारतीय सेना किस लिए आई है ? वे अत्यन्त जवान, अत्यन्त साहसी और वीर हैं। अब की जापानियों को लोहे के चने चबाने पड़ जायेंगे। कई जगी जहाज उन्हें लाकर यहाँ उतार गये हैं। और सब मेम, साहब एव उनके बाल-बच्चे छिपकर उन जहाजों से खिसक गये हैं। उनकी पहरेदारी के लिए अंग्रेज अधिकारी भेज दिये गये हैं।

इसी से देवल, उमराव और रवीन को चुनकर मौत के मुँह में भेजा गया। उन्होंने कई दिनो तक जहाज में मजे से मौज भी तो उड़ाई है। मलय कमाण्ड का एक स्टाफ मैनिंक देखभाल करने के लिए रह गया किन्तु जहाज की खबर पाते ही उसका मुँह लाल हो उठा। उसने सोचा कि यदि इस जहाज से भागने का मौका मिल जाय तो कितना अच्छा हो। यमराज को चरका देकर जीवन के साथ अभिसार करने का आनन्द आ जाय। वह फिर मेम साहबों के साथ फैसी ड्रेस का नाच कर सकेगा ? क्यों नहीं, क्या ससार में वीर पुरुषों का अभाव है ? उसका लाल मुँह थोड़ा काला पड़ गया। दाँत पीस कर वह जो से बोला, “ठीक है, मैंने आराम ही कितने दिन किया है। इस बार मौत के मुँह में जाने की तुम्हारी बारी है। राजपूताना राइफिल्स से तुम्हें थोड़े जवान और दिये जायेंगे। और जो, तुम्हें यही रहना होगा। इस सेना के साथ योगायोग रखने की सुविधा होगी।”

उसी मौत के मुँह की खाइयों में सारी रात बैठ कर, खड़े होकर चित लेट कर इधर-उधर करवटे बदल कर उन्होंने पहरा दिया। जो भी अन्त तक उनके साथ रहा। उसके ऊपर पहरे का समस्त दायित्व था। वह सब के साथ रहकर सब विपत्ति बटाता रहता था।

उसी से देवल ने प्रश्न किया, “काले हिरन की कहानी जानते हैं, सर ?” जो जानता था। चारों ओर जापानी शेल के गोले गिर रहे थे, मृत्यु मुँह बाये खड़ी थी। तब भी उसने कहा, “ठीक से याद नहीं पड़ती, तुम बताओ।”

देवल कहने लगा, “ईसप की कहानी के हिरन की केवल एक ही आँख थी। उस आँख से वह स्थल की ओर दृष्टि रखता था कि कहीं कोई उसे उधर से मार न दे।

“किन्तु शिकारी जल की ओर से नौका से आये। हिरन को उस ओर से

कोई चिन्ता न थी, इसी से उसने अपनी कानी आख उसी ओर कर रखी थी । ओर उसकी मृत्यु भी उसी ओर से हुई ।”

“सर, लदन के सामरिक उच्चाधिकारी काने हिरन के समान है ! समुद्र की तीन दिशाओ की ओर उन्होंने खूब प्रबन्ध कर रखा है । पैतीस करोड रुपये इस में खर्च हुए हैं । किन्तु स्थल दिशा में एक तोप का भी प्रबन्ध नहीं है । उस ओर उच्चाधिकारियों ने आत्मरक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं किया है । यहा तक कि सिगापुर में पीने का जल भी यथेष्ट नहीं है ।”

जो फुसफुसा कर बोला, “चप, चुप । हमारा काम केवल लडना है ।”

“केवल लडना । गलत रण कौशल, गलत प्रबन्ध क्या उच्चाधिकारियों की आँखों में उँगली देकर उन्हें दिखाया न जाय ? वैसा न करना अधर्म होगा । इतने आदमी मारे जायेंगे । इतना खर्चा हो रहा है , यह युद्ध स्वाधीनता के लिए, देश के लिए हो रहा है । तब भी उनकी भूल न बतायी जाय ?”

“भूल, तुम्हारी भी तो हो सकती है, देवल ? हम लोगो के लिए जिन्होंने उतनी बुद्धि खर्च की है, उन्होंने सबकुछ सोच लिया होगा ।”

“कुछ नहीं सोचा है । आज मौत के मुँह में जाने की तैयारी है । अगर इसमें कुछ भूल है तो क्या उसे कहना बेकार है ? यह तो सबका कर्त्तव्य है । यदि सामान्य अधिकारी भूल करे तो क्या उसे भी मानना ही पडेगा ।”

“अर्थात् हर बात में तर्क करोगे ?” हँस कर जो ने कहा ।

“तर्क ? नहीं यह तर्क नहीं है । किन्तु हम में-से हर एक सोच-समझ तो सकता है ।”

रवीन अब तक चुपचाप सब कुछ सुन रहा था । अब उसने बाधा दी । उसने देवल को कवि टेनीसन की एक कविता की कुछ पक्तियाँ याद दिलाई । रूस के साथ युद्ध में अँग्रेज सेनापति ने गलत आज्ञा दे दी थी । आज्ञा गलत जानकर भी वे सैनिक जूझने को चल पडे । सब वीर गति को प्राप्त होकर अमर हो गये ।

“आज्ञा-उल्लघन का कोई तुम्हें नहीं अधिकार,
बढ़ कर मर जाना या करना अरिदल का सहार ।”

सिर के ऊपर से दूर तक जाने वाले गोले चल रहे थे । सिगापुर के

सिंहद्वार से शत्रुओं का आना-जाना चल रहा था। इतने ही में वही एक शेल भीषण शब्द करके फट पड़ा और वे सब धूल से अच्छी तरह ढक गये।

देवल ने बान जारी रखते हुए कहा, “वह बहुत बड़ी भूल है।” चार्ज आव दी लाइट ब्रिगेड” में वीरत्व पर कविता लिखी जा सकती है, किन्तु उससे युद्ध नहीं जीता जा सकता। हम लोग आज सिगापुर में कुत्ते की मौत जो मर रहे हैं, उसका कारण अँगरेज सैनिक अधिकारियों की मूर्खता है।”

जो बोला, “हम ने किसी दिन यह नहीं सोचा था कि देवल मरने से डरता है।”

देवल ने भारी गले से उत्तर दिया, “नहीं, देवल भारतीय है। उमे मृत्यु से भय नहीं है। हमारे यहाँ के बालक पटाखे की तरह कच्चे बमों से अँगरेजों के साथ लड़ते रहे हैं। उसके बदले में उन्हें मिली है यूनीफार्म और नवीनतम अस्त्र शस्त्र। मैं मरने से नहीं डरता। किन्तु मूर्खों की तरह मरने की इच्छा नहीं होती।”

रबीन ने देवल को बाधा दी और बोला, “देवल, बेकार तर्क मत करो। तुम बहुत चिन्ता करते हो, इसी से इतना तर्क करते हो। आज्ञा-पालन करने के पूर्व उसे जाँच लेना चाहते हो। इसी से तुम्हारा नाम सैन्य दल में होना बड़ी विपत्ति का कारण है।”

“क्यों ? गलत आज्ञा का मानना तो और अधिक विपत्ति का कारण हो सकता है।”

“होने दो। आज्ञा जाँचने का दायित्व तुम्हारा नहीं है, अधिकारियों का है। जब तुम अधिकारी होगे, तब सब लोग तुम्हारी आज्ञा बिना हिचकिचाहट के मानेंगे। इस समय हमारा काम है केवल युद्ध करना। अनुशासन, भाई मेरे, अनुशासन। भारतीयों को बदनाम मत करो।”

टेलीफोन के रिसीवर से अकस्मात् बातचीत सुनाई पड़ी। विचित्र-सी आवाज में यह क्या सुनाई पड़ रहा है—ब्रिगेड मेजर की जरूरत है—ब्रिगेड मेजर।

जो तुरन्त बोल उठा—“कौन ? क्या काम है ?”

“सब लोग निकल आओ। तुरन्त सब लोग बाहर निकल आओ। तुम्हारा बदली दल आया है।”

बदली दल के आने का अर्थ है कुछ समय तक जीवित बचे रहना, कुछ समय के लिए विश्राम और खाना-पीना। वे सब तुरन्त ही अपना सामान और हथियार इकट्ठे करने लगे। उमराव तो मारे खुशी के नाच उठा। वह मौज में आकर कुछ गुनगुनाने लगा।

रवीन बोला, “अरे इतने खुश मत हो। पता नहीं घड़ी भर में कौन-सी दूसरी आज्ञा आ जाय। शायद बियर का ग्लाम तुम्हारे मुँह में लगा ही रहे और कोई दूसरी आज्ञा आ जाय।

उमराव ने राइफल की चमड़े की बैल्ट को कसते हुए कहा,

प्रत्येक प्रेयसी अपने प्रेमी को पसन्द नहीं करती। मेरी प्रेयसी भी अपने वीर को प्यार नहीं करती। न करे। मैं जानता हूँ कि जीवन किसी को सभी बातें नहीं देता। किन्तु जितना मिले उतना ही सुख भोग लूँ यही मेरे जीवन का दर्शन तत्व है।”

खाइयों से निकलने के पूर्व देवल ने उमराव का हाथ थोड़ा दबा दिया था। उमराव सब समझ गया था। सिर के ऊपर गोले शूँ-शूँ करते आकाश को चीरते हुए नगर में गिर रहे थे। बम-मार हवाई जहाज निरन्तर ज़ोरों से शब्द करते गोले गिरा रहे थे। चारों ओर मशीन गन के खेल चल रहे थे। ऐसे समय ऐसा जीवन-दर्शन क्या काम दे सकता है? किन्तु उमराव को कौन समझाये। अगर मरना ही है तो हल्के मन से मरो।

उमराव ने जल्दी से बात शुरू की, “इसके अर्थ यह हुए कि अगर मौक़ा मिले तो बियर का टिन पूरा कर पाऊँगा या नहीं। टिन हाथ में आने दो फिर देखो पीता हूँ या नहीं। उसके बाद क्या होगा, वह केवल भगवान जानता है।”

अकस्मात् देवल ने सब को ट्रेंच से बाहर निकलने से मना कर दिया। उत्तेजित होकर वह बोला, “थोड़ा ठहरो। एक बार टेलीफ़ोन की जांच करके देख लो।” जिस अधिकारपूर्ण ढँग से देवल ने यह आज्ञा दी थी, उससे इसमें किसी ने बाधा नहीं दी। जो तक अवाक् होकर रह गये।

“मैं ब्रिगेड मेजर की ओर से बोल रहा हूँ। हम ऊपर आ रहे हैं, किन्तु थोड़ा प्रकाश दिखाओ। आकाश में हरे प्रकाश के दो-एक बम छोड़ो। हम

अभी ऊपर आते हैं।”

उसके बाद सबसे मशीन गन तैयार रखने को कहा गया। सब लोग बिना बातचीत के बिना तर्क के तैयार हो गये। इसी समय आकाश में हरा रंग फूट पड़ा। साथ ही जापानियों के एक दल की काली छाया भी उस प्रकाश में दिखाई पड़ गई। खरर-खरर करता देवल का मीडियम मशीनगन चलने लगा। इस प्रकार इनके प्राण बचे। अपने हेडक्वार्टर से बदली आ रही है यह मान लेना ही गलत था।

सबने बड़े तपाक से देवल का अभिनंदन किया। जो ने कहा, “सचमुच देवल आज मैं तुम्हारे सामने अपनी टोपी उतारता हूँ। तुम्हारी सूझबूझ के लिए ईश्वर को धन्यवाद। तुम्हारा तर्क बड़े काम आया।”

खब बिनीतभाव से देवल बोला, “सर, मैं क्षमा चाहता हूँ। अब और तर्क नहीं करूँगा। मैं सर्वदा नियम मान कर चलने वाला अनुशासनबद्ध सैनिक रहूँगा। इस समय यदि सब लोग मेरी बात न मानते तो समाप्त हो जाते। मुझे क्षमा मिलनी चाहिए।”

रवीन ने धीरे से देवल से कहा, “शाबाश सिन्हा। तुम वास्तव में सिंह हो।” किन्तु इन सब बातों में समय बरबाद करने का समय नहीं था। देवल ने जो को सेल्यूट किया और बोला, “सर, उन मरे हुए जापानियों की तलाशी भी तो ले लेनी चाहिए। संभव है कोई गोपन समाचार मिल जाय। अभी सवेरा तो हुआ नहीं है। फिर भी शव तो मिल ही जायेगे, और ऐसा लगता है कि तब तक शत्रुओं की दृष्टि उधर तक नहीं आने पायेगी।”

जो ने अकस्मात् खड़े होकर देवल के दोनों हाथों को पकड़ कर धीरे से झकझोर दिया और कहा, “देवल, तुम्हारा अभिनंदन करता हूँ। इतनी विपत्ति में भी तुम्हारा दिमाग कितना ठीक काम करता है। एक टहलदारी दल को लेकर तुम ही जाकर तलाशी का काम करो। किन्तु सावधानी से जाना। चारों ओर बारूद भरे गड्ढे हैं। उनमें किसी का भी पैर न पड़ने पाये।”

चारों ओर स्मशान-ऐसा लग रहा था।

थोड़ी देर बाद देवल का दल वापस लौट आया। साथ में एक बन्दी था।

बन्दी ? उपस्थित सभी जन हे-हे कर उठे ।

जो ने कहा, “बन्दी ? जापानी बच गया, तब भी बन्दी हो गया ? विश्वास नहीं होता ।”

देवल—“हाँ, बन्दी बच ही गया । बेहोश पड़ा था ।”

जो ने सिर हिला कर कहा, “अहा, तभी । उधर के सेनापति की आज्ञा है कि यदि कोई बेहोशी की अवस्था में बन्दी कर लिया जाय तो सुयोग पाते ही अपनी जीभ को गले में फँसा कर आत्म-हत्या कर ले । किन्तु यह तब भी बच गया ।”

देवल ने जिज्ञासा की—“दुभापिये के द्वारा इससे कुछ बातें क्यों न पूछी जायँ ?”

“हाँ, निश्चय ही उसे बुलाओ, किन्तु यह कुछ भी बोलेगा नहीं । उसका उत्तर हार या जीत ही तक है ।”

जो धीरे-धीरे थोड़ा-सा बड़बड़ाता हुआ कहने लगा, “यदि कोई गोरा सैनिक उनके हाथों में पड़ जाय तो उसकी मृत्यु निश्चित है । किन्तु इसे बचा-कर बन्दी बना कर रखा जायगा । क्योंकि यह मरना चाहता है और उसी की चेष्टा भी कर रहा है ।”

बन्दी सिर नीचा किये हुए खड़ा था मानो प्रार्थना कर रहा हो । कभी-कभी वह एक हिस्टीरिया के रोगी के समान व्यवहार करने लगता था । जो ने उसके ओठों में एक सिगरेट रख दी । उसने उसे ठीक तरह से लगा लिया और दियासलाई निकाली । दियासलाई के प्रकाश में शत्रुओं की दृष्टि इस ओर पड़ सकती है । क्योंकि अभी पूरी तौर से सवेरा नहीं हुआ था । इससे वह हटा ली गई ।

उसके स्थान पर उसे एक चाय का प्याला दिया गया । किन्तु बन्दी ने चाय नहीं पी । उसके दोनों ओंठ काँप रहे थे और वह कुछ बक रहा था ।

जो ने कहा । “अभी इसकी ओर कोई मत देखो । इसके धड़ में जान आने दो ।”

इस बार उसके मुँह में चाय फिर लगाई गई । पिये बगैर कोई चारा न था । दो एक घूंट पीने के बाद उसके नेत्रों में थोड़ी-सी चमक आई । फिर चाय उसके मुँह से गिरने लगी । और हिस्टीरिया का दौरा शुरू होगया । अकस्मात्

उसने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया । बीच-बीच में वह दीर्घ श्वास छोड़ता था । उसका समस्त शरीर थर-थर काँपने लगा ।

जो उसकी ओर ताक रहा था । क्या वह मनुष्य नहीं मशीन है । उसके मन नहीं है । जापानी सैनिकों का जैसा वर्णन उसने सुना था उससे तो इसकी कोई बात नहीं मिलती । उसे देखकर जो को दया आ गई । ऐसा लगता था मानों मिट्टी के पुतले को वीर-वेश में रँग दिया गया हो । उसके भीतर कुछ भी गोपन नहीं, कोई जीवन नहीं, अथवा कोई शक्ति या उत्सर्ग होने की भावना नहीं थी । सामरिक पोशाक शरीर से खुल कर खिसक गई । अब तो यह केवल मनुष्य है । दुर्बल, असहाय, एकाकी ।

उसकी ओर से दुभाषिये ने कहा, “यह कुछ प्रलाप कर रहा है ।”

किन्तु जो यह जानना चाहता था कि वह क्या बक रहा है ।

दुभाषिये ने कहा, “यह कह रहा है कि मेरी माँ और स्त्री को यह समाचार भेज दिया जाय कि मैं युद्ध में वीर के समान मर गया हूँ । अंग्रेज शीघ्र आ जायेंगे । मैं भी छोड़ दिया जाऊँगा । फिर

सब लोग उसके चेहरे की ओर देखकर आश्चर्य करने लगे । थोड़ी देर बाद दम लेकर बन्दी फिर खर-खर करके काँपने लगा, और नदी पर बँधे हुए पीपे के पुल के बाँध पर अटक जाने की-सी चेष्टा करने लगा ।

बन्दी असहाय अवस्था में शत्रुओं के सामने खड़ा रहा । दुभाषिये से पूछा गया कि वह क्या बकवास कर रहा है ।

दुभाषिये ने कहा, “वह कहता है वानजाई, वानजाई । जय, सम्राट की जय । किन्तु हमारा क्या होगा ? छोड़ दिये जाने पर भी मैं अपने देश वापस न जा सकूँगा । बन्दी हो गया न । उधर लौट कर वापस कैसे जा पाऊँगा ।”

लौट कर वापस नहीं जाऊँगा, वापस नहीं जाऊँगा—यह बार-बार सुन कर सभी के मन में धक्का-सा लगा और वे अनमने-से हो गये ।

देवल ने यह जानने के लिये कि भोर होने में कितनी देर है घड़ी को निकट से देखा । कान के पास भी लगाया ।

किन्तु उमराव हो-हो करके हँस पड़ा “हाऊ रौमाण्टिक । अरे क्या हम लोग भी लौट सकेंगे ? फिर इतना सोच-विचार क्यों ?”

जो बोला, “तुम सर्वदा अपना झंडा ऊँचा रखो। हम निश्चय ही जीतेंगे। संभवतः सिंगापुर हाथ से जाने न पाये। जीत होकर ही रहेगी।”

रबीन ने कहा, “रात की लड़ाई तो समाप्त हो गई। इस बन्दी को जीवित रखना होगा। मगर अब आगे क्या होगा इसका कुछ पता नहीं।”

उमराव ने रबीन की बात को उड़ा दिया—“सब पता है। सब कुछ चला जायगा। यदि तुम ‘कोल्ड मटन’ की तरह टिक गये तो बाक़ी सब रुक जायगा। और यदि न टिके तो आगे जानने की ज़रूरत भी नहीं है। बस।”

दुभाषिये ने बन्दी की जेब से एक थैली और कुछ कागज़ निकाले। थैली के भीतर किसी बौद्ध मन्दिर की छाप वाले ढेर से गंडे और तावीज़ें निकले। उसी के साथ उस दिन का उन्तालीसवें डिवीज़न का आदेश-पत्र लिपटा हुआ मिला, जिसमें उस दिन के युद्ध की आज्ञा थी, “यदि तुम्हारा हाथ टूट जाय, तो पैर से जूझो। हाथ-पैर दोनों टूट जायें तो दाँतों से लड़ो। यदि देह में प्राण वायु बाक़ी न रहे तो अपनी प्रेतात्मा से युद्ध जारी रखो।”

चारों ओर प्रेतात्मा के समान भयानक नीरवता छाई हुई थी। दिन निकलने के साथ ही खाइयों के ऊपर भी नीरवता छा गई। यह क्या? सिर के ऊपर गोले नहीं छूट रहे थे, आकाश में बमवर्षी विमान नहीं थे, और न वास्तव में बारूद की गंध थी। एक बार खोज करना ज़रूरी हो गया। इस समय को निरापद समझ कर बाहर निकल कर सारा व्यापार समझना आवश्यक हो गया।

धीरे-धीरे जो ने अपनी आँखों पर फ़ील्ड टेलिस्कोप लगा कर देखा। यह क्या? क्या बात है? सिंगापुर के सब घरों के ऊपर यहाँ तक कि गवर्नर के प्रासाद की चोटी पर भी सफ़ेद झंडा क्यों उड़ रहा है? दूरबीन चारों ओर घुमा कर उसने देखा कि जिस पहाड़ के चारों ओर अँग्रेज़ों की सेना युद्ध कर रही थी उसके ऊपर भी सफ़ेद झंडा है।

यह अकस्मात् चारों ओर क्या हो गया।

धीरे-धीरे सब लोग पास आये। उमराव की बात ठीक निकली। ‘कोल्ड मटन’ अर्थात् देह का पिंजरखाना इस यात्रा में टिक गया। अब टिक कर यह कहाँ जायगा इसका पता हैडक्वार्टर से लगेगा।

बहुत दूर नहीं जाना पड़ा।

सफ़ेद झंडा उड़ाते हुए डिसपेच राइडरों के दल मोटर साइकिलों पर चक्कर लगा रहे थे। और सबको बता रहे थे कि ब्रिटिश ने आत्मसमर्पण कर दिया है। अतएव सिंगापुर में युद्ध बंद हो गया है। एक अंग्रेज़ राइडर के मुख पर अत्यन्त प्रसन्नता का भाव था।

उस दल के एक राइडर ने अंग्रेज़ को देखकर इंजिन रोक दिया। उन्हें सेल्यूट करके बोला—“सर, आप को दूसरी जगह जाना होगा। आप मेरे पीछे ‘पिलन’ पर बैठ जायें।

“इसका अर्थ” जो ने प्रतिसेल्यूट करके पूछा। “हम अंग्रेज़ और आस्ट्रेलियन युद्ध-बन्दी हैं। जापानियों के सम्मुख बिना शर्त के आत्मसमर्पण के लिए मेरे इन साथियों को भी तो मेरे साथ जाना होगा।”

राइडर ने थोड़ा हिचकते हुए कहा “नहीं, ठीक ऐसी बात नहीं। हम तो युद्ध-बन्दी हैं। अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के अनुसार हमें जापानियों ने बन्दी कर लिया है। किन्तु हमारे अधिवक्ता कर्नल हंट ने प्रबन्ध किया है कि भारतीय सैन्य और अधिकारियों को जापानियों के हाथ में सौंप दिया जाय।”

देवल ने आगे बढ़ कर और दृढ़ स्वरों में कहा, “इसका अर्थ ? हमारे साथ पृथक् व्यवहार किया गया ? अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के अनुसार युद्ध-बन्दी करने से जापानी हमें ठीक तरह से देखने-भालने के लिए बाध्य होते। किन्तु युद्धबन्दी होने के अधिकार से तुमने हमें वंचित कर दिया ?”

राइडर घबरा कर बोला, “हमारे लिये यही आज्ञा है।”

उमराव क्रोध से अस्थिर होकर आगे बढ़ा—“आज्ञा की बात छोड़ो जी।” क्रोध के मारे वह अंग्रेज़ी में बातचीत न कर सका। मुट्ठी कस कर और घूँसा तानते हुए वह बोला, “तुम ने हमें बिट्टे किया। चोर की तरह फँसा दिया।”

राइडर निःस्तब्ध खड़ा रहा।

उमराव फिर गर्ज कर बोला, “यू कावर्ड्स। यही तुम्हारी स्पोर्ट्समेनशिप है ? ब्रिटिश जस्टिस ? लायल्टी ?”

राइडर निःस्तब्ध खड़ा रहा।

उमराव और ज़ोरों से गला चढ़ा कर बोला, “तुमने जो लुक-छिप कर प्रबन्ध किया है, उसे हम नहीं मानते। हमारी इस सैनिक पोशाक की मर्यादा

की रक्षा सभी को करनी होगी। अंग्रेज हो या जापानी हमारी सैनिक-पोशाक को मानना ही पड़ेगा।”

राइडर ने इस बार उत्तर दिया, “अफसर, दुखी मत हो। मेजर फूजियारा न भरोसा दिया है कि भारतीय सैनिक ओर अधिकारी बन्दी नहीं किये जायेंगे। उन्हें छोड़ दिया जायगा। वे स्वाधीन भाव से रहेंगे।”

इस बार रबीन आगे बढ़ा ओर बोला, “अर्थात् हम भेड़-बकरी की तरह छोड़ दिये जायेंगे। सारे दिन मारे-मारे फिरने पर भी दाना-पानी नहीं मिलेगा। शत्रुओं के दायित्व में रहकर अंग्रेज तो मुक्ति पा जायेंगे और हम?”

उमराव हँस कर बोला, “जय बर्तानिया, जय निप्पन। शाबास, समझ-दारी खूब दिखाई।”

देवल दृढ़ स्वरो में बोला, “नहीं, इतनी मरलता से खेल समाप्त नहीं होगा, उमराव। आज अंग्रेजों ने अपनी गरज से हमें दासत्व से मुक्ति दे दी। अब जापानियों के प्रति हमारा कोई दायित्व नहीं है। अब हमें क्या करना है? इसका स्वाधीनभाव से विचार करने का पथ खुल गया है। किन्तु उसके पहिले हम अपना झंडा उड़ा देंगे—जय हिन्दुस्तान।”

राइडर यह बातचीत सहन न कर सका। उसने जो को सेल्यूट किया और मोटर माईकिल के पीछे सीट पर बैठ जाने का अनुरोध किया।

किन्तु जो कैसे जाय? उसके भारतीय साथी, इतने दिनों तक मरण-पथ के मगी, अपने आधीन अधिकारियों को वह कैसे छोड़ कर चला जाय? उसने सब की ओर देखकर कहा, “उमराव की बात ठीक है। तुम्हारी सैनिक पोशाक का सम्मान मैं रखूँगा। मैं तुम्हारे साथ हेडक्वार्टर्स में चलूँगा। वहाँ कर्नल हट को समझाऊँगा। उन के मत को बदलने की चेष्टा करूँगा।”

राइडर ने बाधा दी—“सर बेकार चेष्टा न करे। लिखा-पढ़ी करके सब प्रबन्ध कर लिया गया है। हमारे पाम आज्ञा है। आप हमारे साथ चले। आज्ञा है।”

तब भी जो तिल-भर नहीं हिला। उसने अत्यन्त व्याकुल होकर तीनों व्यक्तियों से एक साथ हाथ मिलाया। पागल की तरह वह बोला, “तुम नहीं जानते हो, किन्तु विश्वास करो कि मैं जबरदस्ती तुम्हारे साथ “मोत के मुँह” में पहरा देने के लिए गया था। आज्ञा केवल तुम्ही लोगों को भेजने की थी,

किन्तु मैंने वह आज्ञा नहीं मानी ।”

देवल ने उत्तर दिया, “किन्तु अब तो आपको आज्ञा माननी ही पड़ेगी, सर । आपके साथ हमने तो कोई गलती की नहीं । किन्तु अंग्रेजी साम्राज्य और हिन्दुस्तान का अलगाव प्रारम्भ हो गया है । कर्नल हंट को धन्यवाद दे दीजिएगा । ब्रिटिश के आधीन सब कर्त्तव्यों से आज हम मुक्त हो गये । स्वाधीन हो गये ।”

जापानियों के पंजे में प्रायः डेढ़ वर्ष बीत गया। इन डेढ़ वर्षों में न जाने क्या-क्या हो गया, किन्तु दिन काटे न कटते थे। जिन लोगों को छावनी में रोक रखा गया था उनका जीवन-बन्दी शिविर से भी गया बीता था। भारतीय सैनिकों को जापानियों ने न तो युद्ध-बन्दी ही बनाया और न साधारण लोगों की तरह रहने दिया। उनकी मुक्ति एक मात्र मृत्यु में थी।

जहाँ जवान और तगड़े आदमी रोग और भूख के कारण मक्खियों की मौत मर रहे हों, वहाँ समय का हिसाब कौन रखे। पहिले दो महीनों में सात हज़ार सैनिक पेचिश के कारण समाप्त हो गये। खाने के लिये दो मुट्ठी चावल और नमक मिलता था। जिस किसी दिन दाल मिल जाती थी, उस दिन ऐसा लगता था, मानो दावत खा रहे हों। नल का जल या आजकल की सैनिटरी टट्टी लोगों के लिए सपना बन चुकी थी। समय ने भी ठीक अवसर देख कर बेरी-बेरी भेज दी।

सैनिक डाक्टरों में अधिकतर बंगाली डाक्टर थे। उन्होंने चावल उबाल कर पतले कपड़े में छान कर शरबत बनाया, जिसका नाम उन्होंने रखा खमीरा शरबत। इसे शरबत कहने की इच्छा नहीं होती थी। मुँह में लगाना असम्भव था। इसलिए नींबू का पौधा खोजा गया। भाग्यवश यदि उसमें नींबू मिल गया तो उसकी दो तीन बूंदें उसमें निचोड़ दी गईं, एक रत्ती चीनी, और यदि चीनी न मिल सकी तो थोड़ा सा नमक। इसे पीकर यदि बेरी-बेरी भाग जाय तो भाग्य की सराहना करनी चाहिए।

एक दिन समाचार मिला कि अँग्रेज़ कैदियों ने एक प्रकार की घास खोज निकाली है। उससे सब्जी का काम चल सकता है। खोजते-खोजते खोजी भी तो घास। देवल ने लोगों के बीच खड़े हो कर कहा, “नहीं, कभी नहीं। मनुष्य का मूल्य तेरह आने है। मगर इसलिए हम भेड़ बकरी के दल में नाम नहीं लिखा सकते।”

“तेरह आन ? मनुष्य का मूल्य है डेढ़ आना।”

चारों ओर भारतीय बन्दी जड़वत् बैठे रहे।

देवल ने उन लोगों के बीच गले को तेज करके कहा, “भाइयो, इस शरीर के नष्ट हो जाने पर जो कारबननुमा पदार्थ बाक़ी बच रहता है, वैज्ञानिकों की राय में उसका मूल्य तेरह आने से अधिक नहीं है। खाना न मिलने से और रोग भोगने से हमारी दशा चूहे के समान हो गई है। इस प्राण के पिंजरे का मूल्य इतना कम हो गया है कि जापानी इसके लिए ६ आने की सीसे की गोली भी खर्च करना नहीं चाहते।”

“तब ? तब ? देवल भाई कहना क्या चाहते हो ?” प्रश्न किया एक गुजराती अधिकारी ने। असहाय मृत्यु के सम्मुख वे सब परस्पर अत्यन्त निकट आ गये थे। इसी से देवल को उसने गुजराती प्रथा के अनुसार देवल भाई कहकर पुकारा। वहाँ सभी भाई-भाई थे।

“मैं कहता हूँ, बहुत साधारण-सी बात है और काफ़ी महत्वपूर्ण भी। जापानी रोज़ ही हमें पेटू कहकर पुकारते हैं, और उनका विचार है कि हम लोग यहाँ बड़े सुख से हैं। वह यह भी जानते हैं कि हम लोगों का भोजन चावल, दाल, नमक, तेल, मिर्च और मसाला है। मगर क्या तुम्हें पता है कि एक दिन उन्होंने मिच देकर कहा कि हम लोगों का एक दिन का राशन हो गया। उसके बाद नोटिस दे दिया गया कि इसके बाद केवल तेल मिलेगा।”

सब सिर नीचा किये बैठ रहे।

थोड़ी देर बाद देवल फिर बोला, “उस दिन तुम कुछ खा न सके। तब भी मिर्च का राशन न खाने पर भी तुम्हारी सबकी आंखें मिर्च की तरह ज़ल उठीं थी। क्या इसका कारण यह है कि उन्हें हमारे खाने के बारे में कोई खबर नहीं है ? नहीं, ये हमें मनुष्यों में गिनते ही नहीं हैं ?”

भीड़ के बीच से धीरे-धीरे थोड़ी गुनगुनाहट सुनाई दी। इस बात का तो विश्वास ही नहीं किया जा सकता था कि इनमें-से कोई विश्वासघात करेगा। जापानियों का कोई गुप्तचर हो सकता है। लोग तिरछी दृष्टि से इधर-उधर ताकने लगे।

किन्तु देवल निर्भय खड़ा रहा। जीवन में और क्या देखना-सुनना बाकी रह गया है, जिसके लिए भय किया जाय ?

उसने फिर बोलना प्रारंभ किया, “तुम सब जानते हो, तब भी इस बात की आवश्यकता है कि ग़ौर से सोचा जाय। तुम लोग जिस दिन जापानी

पहरेदारों के सामने से जा रहे थे, तुम ने नियम के अनुसार उन्हें सलाम किया था, किन्तु उन्होंने हमारे अधिकारी के चाँटा मारा था। यह क्यों और किस लिये ? तुम्हारा प्रतिवाद भी उन्होंने नहीं सुना था। क्या वह बात तुम भूल गये ?”

एक आदमी ने बीच में बोलकर बाधा दी, “किन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि वह जापानी उस अधिकारी के कंधेपर दो सितारों के चिह्न देख न सका था और वाद में उसने क्षमा याचना की थी। क्या हम लोग भी अपने गाल चाटें खाने के लिए आगे कर देते ?”

देवल इतनी जल्दी हार मानने वाला न था। वह बोला, “बात क्या थी ? चाँटा तुम्हें पराधीन समझकर मारा गया था।”

“किन्तु अंग्रेजों की भी वे कम बेइज्जती नहीं करते हैं। ब्रिटिश बन्दी-शिविर पर पहरा भारतीय सिपाहियों से दिलवाया जाता है। हमारे नौ सौ गोलन्दाज भेजे गये थे।”

“अंग्रेज उनके शत्रु पक्ष के हैं। किन्तु हम क्या हैं ? केवल पराधीन। हमारी कोई पद-मर्यादा ही नहीं है। क्या वह बात भूल गये कि उस दिन इतनी कहा-सुनी के बाद वे हमारे रोगियों को दूध देने के लिए राजी हुए थे, किन्तु कहने लगे कि दूध नहीं देंगे, देंगे गाय। जो कुछ रूखा-सूखा हमें खाने को मिलता है, उसे यदि गाय को खिला दें तब दूध मिल सकता है। किन्तु इतना होने पर भी मिला क्या ? साँड़। जब हम ने आपत्ति की तो ऐसा लगा मानो वे आकाश से गिर पड़े हों। हमों से उल्टा मज़ाक किया—साँड़ से दूध निकालना सीखो।”

गुजराती ने कहा, “किन्तु देवल भाई, तुम्हारे कहने का तात्पर्य क्या है उसे खुलासा कहो।”

देवल ने ऊँचे स्वरों में कहा, “हमें अधिक कुछ नहीं कहना है। केवल इतना कहना चाहता हूँ कि तुम यहाँ युद्ध करने के लिए आये थे। मक्खियों की तरह मरने के लिए नहीं। इसलिए तुम्हें यहाँ अभी युद्ध जारी रखना होगा। इस बार युद्ध का कारण दूसरा होगा। और शत्रु भी दूसरा होगा।”

उपस्थितों में कई समझ गये थे कि मामला क्या है। सिंगापुर के पतन के दो-तीन दिनों के बाद ही इस विषय पर कथावार्ता शुरू हो गई थी। आई०

एन० ए० (भारतीय-राष्ट्रीय-सेना) तैयार हो चुकी थी। कप्तान मोहन सिंह ने बड़े परिश्रम एवं लगन से उसका थोड़ा-बहुत संगठन भी किया था। जापान से रासबिहारी बोस आगये थे। उन्होंने इंडियन इंडिपेंडेंट लीग बनाई थी। किन्तु उससे कुछ कार्य न हो सका। जिन्होंने उसमें योग नहीं दिया उन पर तरह तरह के अत्याचार करके उन्हें राज़ी किया गया। जो अन्त तक उसमें योग देते रहे, उनमें-से अधिकांश धीरे-धीरे समाप्त हो गये।

देवल बहुत-सी पुरानी बातें कहकर उनमें उत्साह व उमंग भरना चाहता था, किन्तु उसने देखा कि लोगों पर उसकी बातों का यथेच्छ प्रभाव नहीं पड़ रहा है। कुछ लोग तो धीरे-धीरे वहाँ से खिसक गये। किसी का विश्वास नहीं किया जा सकता। क्या पता कोई खुफिया आदमी बैठा हो। अप्रैल १९४३ में सिंगापुर की एक कान्फ्रेंस में रासबिहारी बोस ने सूचित किया था कि इस स्वाधीनता-युद्ध में भाग लेने के लिए जर्मनी से सुभाष बोस मलय आ गये हैं।

एक आदमी ने भीड़ से आगे आकर बाधा दी। वह बोला, “ये सब बातें हम-ने बहुत बार सुनी हैं। मगर केवल बातचीत ही से तो काम नहीं चलेगा।”

देवल ने तपाक से उत्तर दिया, “पहिले ठीक तरह से मन में सोचो तो। इतने बड़े दुःख की बात भी तुम्हारे मन में स्थान नहीं करती? क्या देश हमारा नहीं है? देश की स्वाधीनता के युद्ध को तुम केवल ब्रिटिश और जापानियों की दृष्टि से देखते रहे हो। उतनी दूर हमारे देशवासी खाली हाथों से स्वाधीनता के लिए युद्ध कर रहे हैं, जेल जा रहे हैं और मर रहे हैं, और तुम यहाँ आधे लाख सैनिक हो, सब प्रकार के आधुनिक अस्त्र-शस्त्र चलाने में प्रवीण हो। और तुम उसी स्वाधीनता के लिए कुछ भी नहीं करोगे। माँ का ऋण। माँ के ऋण के शोध के लिए क्या कुछ भी नहीं करोगे?”

रबीन एक मोढ़े पर खड़ा होकर ललकारता हुआ बोला, “बिल्कुल ठीक बात है। किन्तु केवल मातृ-ऋण ही नहीं, गुरु का भी तो ऋण है। जिन अंग्रेजों से हथियार चलाना सीखा है उन्हें उन्हीं के हथियारों से युद्ध में हराना है। महाभारत कहता है कि गुरु-ऋण शोध करने का यही मार्ग है।”

देवल ने फिर अपनी वक्तृता शुरू की, “जब तुम अपनी स्वाधीनता का युद्ध शुरू करोगे तो देखोगे कि जापानी भी तुम्हारा सम्मान करने लगेंगे।

उनकी दृष्टि में हम आज मनुष्य नहीं हैं। जो पराधीन है वे मनुष्य हो कर भी क्या कर सकते हैं ? हम उसी मनुष्यत्व का अर्जन तभी कर सकते हैं, जब स्वाधीन होने की चेष्टा करे। यदि जीवित ही रहना है तो मनुष्य की तरह जीवित रहो। घास-फूस खाने वाले भेड़ बकरियों की तरह नहीं।”

उमराव थोड़ा आगे आ कर बोला, “बिल्कुल ठीक कहते हो देवल। किन्तु हृदय पर हाथ रख कर बतलाओ कि अँग्रेज, सरकार के लिए युद्ध में जो शपथ ली थी उसका क्या करोगे ? आज यदि अँग्रेजों के प्रति की हुई शपथ को तुम भूल सकते हो, सैनिक के सब से बड़े धर्म को यो भूल सकते हो, तो कल तुम अपने देश के प्रति ली हुई शपथ को भी भग कर सकते हो। नीचता और बेईमानी जहाँ एक बार शुरू हुई फिर उसका कोई अन्त नहीं।”

अपने हृदय पर हाथ रख कर देवल बोला, “भाइयो, तुम सब मेरी तरह अपने हृदयों पर अपने हाथ रखो और देखो, वहाँ धडकता हुआ रक्त प्रवाहित हो रहा है। वह जवानी का रक्त है, मरदों का खून है। हृदय पर हाथ रख कर सैनिकों की जो शपथ तुम ने ली थी वह किसके लिए ली थी ? क्या वह माँ के लिए नहीं थी ? तुम्हारे निकट कौन बड़ा है ? किस की शांति और रक्षा के लिए तुम ने हथियार धारण किये हैं ? तुम सैनिक हो। माँ को छोड़ कर क्या अन्य किसी को मानोगे ?

सर्वत्र सन्नाटा छा गया। थोड़ी देर बाद उमराव ने जिज्ञासा की, “किन्तु वह माँ तो इस समय अँग्रेजी राज्य है। हम ने अँग्रेजों के लिए कसम खाई है।”

देवल इतने सहज में छोड़ देने वाला पात्र न था। उसने तुरत उत्तर दिया, “नहीं नहीं, हम ने देश और राज्य के लिए कसम खाई थी। राजा तो देश का राजा है। किन्तु देश यदि राजा को न चाहे, देश का स्वार्थ और राजा का स्वार्थ यदि अलग-अलग हो जाएँ तो राजा राजा नहीं रह जाता। हमारा राजा आज हिन्दुस्तान है। तुमने पिछले साल अगस्त में रेडियो पर सुना था कि देश ने अँग्रेज को राजा मानना अस्वीकार कर दिया है। वहाँ के लोग स्वाधीनता का युद्ध चला रहे हैं। निहत्थे हो कर लड़ रहे हैं और, निहत्थे ही मर भी रहे हैं। और तुम यहाँ सुशिक्षित सैन्य-दल के होकर बैठे हो। इसके अतिरिक्त अँग्रेज ही तो तुम्हें लावारिस-सा छोड़ कर चले गये और तुम युद्ध-बन्दी भी नहीं किये गये। अब तुम्हारे ऊपर कोई भी बन्धन

नहीं रह गया है।”

कुछ लोग चंचल हो उठे और बोले, ‘किन्तु हम भी तो क़रीब-क़रीब खाली ही है। युद्ध से लाभ क्या होगा?’

देवल ने एक बार घड़ी में समय देखा। उसके बाद बोला, “इसका उत्तर मैं नहीं दूँगा। उत्तर देंगे सुभाष बोस। संभवतः वे इस समय सिंगापुर के मैदान में यही बात सब को समझा रहे हैं। सुनो वे क्या कहते हैं।”

यह कह कर देवल ने रेडियो खोल दिया। ठीक ही तो है। सुभाष बोस ही का गला था, उन्हीं की वाणी सुनाई पड़ रही थी। स्पष्ट वीरत्वपूर्ण मानो असहाय मृत्यु आसन्न जाति के कानों में मृत-संजीवनी-मंत्र फूँका जा रहा हो।

“एक पराधीन जाति के लिए उसकी स्वाधीनता के संन्य-दल के प्रथम दल में होने से बढ़ कर अधिक सम्मान की, अधिक गर्व की और कोई बात नहीं हो सकती। किन्तु इस सम्मान के साथ एक दायित्व भी है। मैं उस दायित्व के सम्बन्ध में पूरी तौर से सचेत हूँ। मैं तुम्हारे नाम की शपथ खाकर कहता हूँ कि अंधकार और दिन के प्रकाश में, दुःख और सुख में, कष्ट भोगने में और आनन्द में मैं सर्वदा तुम्हारे साथ रहूँगा।”

“इस समय मैं तुम्हें क्षुधा, तृष्णा, कष्ट, निरन्तर मार्च करना, और मृत्यु को छोड़ कर कुछ नहीं दे सकता। किन्तु तुम यदि जीवन और मरण में, तथा सब समय हमारा साथ दोगे तो तुम्हें जय और स्वाधीनता की वेदी तक पहुँचा दूँगा। हम लोगों में कौन-कौन भारत स्वाधीन देखने के लिए बच रहेगा इस में कुछ आता-जाता नहीं है। देश स्वाधीन होगा और उसके लिए हम सब कुछ उत्सर्ग कर देंगे यही यथेष्ट है। इन्क़लाब जिंदाबाद! आज़ाद हिंद जिंदाबाद !”

इसके बाद दल-के-दल सिपाही आज़ाद हिन्द फौज़ में नाम लिखाने लगे। अधिकारी लोग मन ही मन पहिले ही से तैयारी कर चुके थे। अँग्रेजों शिक्षा ने उनके हृदयों में स्वाधीनता के भाव भर दिये थे। उनके मेस में ऊपर ही ऊपर समान और भद्र व्यवहार के नीचे से कभी-कभी अँग्रेजों के प्रति विद्वेष भावना फूट उठती थी। इस कारण आज़ाद हिन्द फौज़ की तैयारी बड़ी शीघ्रता से होने लगी।

देवल का काम ख़ूब बढ़ गया था। सबसे अधिक काम करने के कारण

नेताजी की दृष्टि उस पर थी। वह किसी काम में पीछे रहना जानता ही न था। उसे आजाद हिन्द रेडियो के वैदेशिक प्रचार विभाग में रखा गया। असैनिक भारतीयों में इस कार्य के लिए कई लोग थे। किन्तु वही इस कार्य के योग्य समझा गया। वह कितने दिनों तक मध्यवित्त शिक्षितों के बेकार जीवन की ग्लानि में रह चुकने के बाद सामरिक जीवन की सब अभिज्ञता प्राप्त कर चुका था। वही ऐसा था जो हिन्दुस्तान के चिन्ताजीवी लोगों के मन में आजाद हिन्द की वाणी अच्छी तरह पहुँचा सकता था। उसे रेडियो की योग्यता भी अच्छी थी और उसका ध्यान भी इस काम में खूब लगता था। बेकार बन्दी-जीवन के समय तबू में रहते समय भी वह रेडियो सुना करता था। देश के समस्त समाचार वह सुनता रहता था और सरकारी खबरें सबको बता देता था।

बर्मा और मलय जापानियों के हाथ में जाने के समय लाखों भारतीय वहाँ अटक गये थे। उनके पास उनके आत्मीय स्वजनो के समाचार पहुँचाने के लिए दिल्ली से आल इंडिया रेडियो ने एक प्रबन्ध किया। सप्ताह में दो दिन ठीक समय पर दिल्ली रेडियो के विदेशी विभाग द्वारा आत्मीय स्वजनो को अधूरे समाचार बर्मा और मलय भेजे जाते थे। विदेशों में अटके भारतीयों को अँग्रेज सरकार की इस दशा और विवेचना पर निश्चय ही मुग्ध होना पड़ेगा। केवल इतना ही नहीं। देश का “भारत छोड़ो” आन्दोलन ठण्डा पड़ गया था। अँग्रेजों का राज्य ठीक तरह से चल रहा था, उसका प्रमाण हाथों हाथ मिल रहा था। वहाँ की साधारण जनता तक यही कह रही थी।

दिल्ली-पंजाब ऑचल के ग्रामीण व शहरी लोगों के दल-के-दल इस रेडियो से समाचार भेजने की सुविधा के लिए आ रहे थे। देवल नियमित रूप से इन समाचारों को सुनता था और जहाँ तक संभव था, इन समाचारों को उनके आत्मीयजनो तक पहुँचाने का प्रबन्ध कर देता था।

इस समय रगून के आजाद हिन्द रेडियो के वैदेशिक विभाग से जो समाचार भेजे जाते थे, उनका सम्पादन भार उसी के हाथों में था। अँग्रेजों के हथियारों ही से उन्हें हराना था। आजाद हिन्द की ओर से बर्मा मलय के समस्त भारतीयों को कुशल-सवाद भेजा जाता था, और भारत में इधर के समस्त

समाचार भेजे जाते थे । भारत के लोग अपने सम्बन्धी सैनिकों के समाचार जानने के लिए लुक-छिप कर आजाद हिन्द रेडियो सुनते थे । स्वाधीनता की वाणी भी सुनते थे, और उसे इधर-उधर भेज कर प्रचार का पथ भी सुगम कर रहे थे ।

इसी उद्देश्य को सामने रख कर उसने बहादुरशाह की समाधि पर नेताजी की परेड और वक्तृता का वर्णन रेडियो से भारत की ओर प्रसारित किया ।

“हम रंगून से बोल रहे हैं—हम रंगून से बोल रहे हैं । हम आजाद हिन्द रेडियो से बोल रहे हैं । आज २६ जुलाई १९४३ की संध्या है । रंगून की आजाद हिन्द फौज के समस्त केन्ट्रिजेंट भारत के अन्तिम सम्राट बहादुर शाह की पवित्र समाधि स्थल पर एकत्रित होकर स्वाधीनता के युद्ध को नमस्कार करते हैं । लाखों असैनिक भारतीय व बर्मी भी यहाँ पर जमा हैं । नेताजी ने अभी सम्राट की कब्र पर एक बड़ी फूलों की माला का अर्घ्य दिया है । भारत के सब प्रदेश, सब जाति, सब धर्मों के मानने वालों के प्रतीक फूलों को लेकर यह माला हिन्दुस्तान के स्वाधीनता का प्रथम दान है ।

“ब्रिटिश ने हम हिन्दू-मुसलमानों में तरह-तरह के भेद-भावों को बढ़ाया है । हम लोग अपने स्वार्थवश उन झगड़ों को भूल न सके, किन्तु नेताजी की पुकार पर हम सब भेदाभेद को तिलांजलि देकर नये हिन्दुस्तानी नई आजादी फौज में एक होकर रह रहे हैं । देश के इतिहास में प्रथम बार हम हिन्दू-मुसलमान-ईसाई सब एक ही रसोईखाने में एक आदमी-द्वारा पकाया भोजन, एक साथ बैठ कर करते हैं । हम लोगों ने अंग्रेजों के सिखाये जाति-धर्म और प्रदेश के भेद को भूल कर एक ही ब्रिगेड बनाया है । हम लोग एक साथ ही खड़े होते हैं और एक साथ ही आगे बढ़ते हैं । नेताजी हिन्दुस्तान की ओर मुख करके हिन्दुस्तान के अन्तिम सम्राट का अभिवादन कर रहे हैं ।”

नेताजी की वक्तृता रेडियो से प्रसारित करने के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ । नेताजी ने सम्राट बहादुरशाह ‘जफ़र’ के इस शेर से वक्तृता समाप्त की :—

“शाज़ियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की,
तख़्ते लण्डन पर चलेगी तेरा हिन्दुस्तान की ।”

उस रात को देवल बहुत ही उलझा हुआ, हाथ पर सिर रखे बैठा था। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। न जाने कितना काम करने को था। युद्ध चल रहा था। देश की आज़ादी का प्रश्न था, किन्तु भीतर से वह अकेला—साथीहारा था।

साथीहारा! किन्तु अकेला नहीं। काम होने पर साथीहारा भी नहीं था। किन्तु उसका थोड़ा-सा समाचार पाने के लिए वह क्या कुछ न करता? ऐसा लगता मानो समस्त पृथिवी आनन्द से पुलकायमान हो उठी है। उसका थोड़ा-सा हाल जानने की कोई आशा नहीं दीखती। वह यदि पंजाब या दिल्ली में होती तो शायद दिल्ली रेडियो से किसी तरह कोई समाचार भेजने का प्रबंध कर ही लेती। किन्तु मिता की दृष्टि चारों ओर सूनापन देखती होगी। यों तो उसके जान-पहचान के लोग होंगे ही। फिर भी जापानियों के हाथ में पड़े हुए देवल को दिल्ली रेडियो से कोई समाचार मिलना संभव न था।

वह अपनी ओर से भी कोई समाचार न भेज सकता था। मिता का परिचय और ठिकाना देना होगा। अँग्रेज उस समाचार का न जाने क्या अर्थ लगावें। यह भी तो समझा जा सकता है कि वह कोई सांकेतिक समाचार हो। और फिर मिता के पीछे जासूस लगा दिये जायेंगे। उसका चलना-फिरना कठिन हो जायगा, छाया की तरह उस पर निगाह रखी जायगी। इन मामलों में अँग्रेज किसी बंगाली का विश्वास नहीं करते। और फिर जब वह उनके विद्रोही दल का और ऊपर से अस्त्रधारी हो।

इसके अतिरिक्त मिता के बारे में और भी एक बात है। उसकी नौकरी ऐसी है कि वहाँ सर्वदा नाना देश के सैनिक अधिकारी आया-जाया करते हैं। वहाँ के अधिकारी यूँही एक बंगाली स्त्री पर सन्देह की दृष्टि रखते होंगे फिर यदि मैं बीच में फाँद पड़ूँगा तब तो उस बेचारी पर मुसीबत ही आ जायगी। इससे कहीं अच्छा है कि मैं स्वयं दुःख सहता रहूँ, किन्तु उसे विपत्ति में न घसीटूँ।

मिता ! आशा है तुम सारी बातें समझ-बूझ कर सहन करोगी। मैं किस लिए नीरव हूँ तुम समझ सकोगी।

इतने में ही दिल्ली रेडियो से बर्मा मलय प्रवासियों के लिए आत्मीय संवादों का पाठ शुरू हुआ। नाम के बाद गाँव और ठिकाना और थोड़ी

सी खबरे । यह क्या, कौन-सी खबर ? पास ही बैठा स्टेनोग्राफर समाचारों को लिख रहा था । देवल सिर से हेड फोन लगाये बैठा था । एक के बाद दूसरे समाचार सुन रहा था । प्रतिदिन वह इसी तरह सुनता रहता था ।

अकस्मात् जैसे सारा ससार हिलने लगा । उसका सिर झनझना उठा, सास जोरो से चलने लगी, हृदय धडकने लगा । मस्तक पर हाथ रखे, कानों को चोकना करके देवल बिल्कुल हेडफोन के सामने सुन रहा था—देवल सिंह, देवल सिंह, कलकत्ता विश्व विद्यालय का एम ए. पास छात्र । मलय के रबर के बगीचो में नौकरी खोजने गया था । देवल सिंह के वर्तमान ठिकाने का पता नहीं । देवलसिंह से मिता कह रही है—गंगा के घाट पर तुमने मुझे जसा देखा था, उससे मैं अच्छी हूँ । तुम सोच-विचार में न रहना । अच्छी तरह भले चगे लौट आओ । मिता कह रही है, मिता कह रही है ।

हेडफोन को सिर के ऊपर से हटा दिया । कान इतने गरम हो गये थे कि उनसे और कुछ सुना जा नहीं सकता था । उसकी देह शिथिल हो गई, असीम आनन्द वेदना से वह भर गया । उसके नेत्र कही शून्य पर जा कर टिक गये और वह बड़ी देर तक सोचता रहा ।

बड़ी देर तक । बड़ी देर तक ।

चारो ओर नीरवता छाई थी । बाहर का कोई शब्द अन्दर नहीं आ सकता था । और न रेडियो की कथावार्ता बाहर जा सकती थी । किन्तु वह अपने हृदय की तेज धडकन को कैसे रोके ?

क्या यह उसके हृदय की धुक-धुक है या हाथ की घड़ी की टिक-टिक ? उसका समस्त शरीर इतना गरम क्यों हो उठा ? क्या पास बैठी प्रिया की उष्ण देह की छाया पड़ गई ? सारा वायुमण्डल मानो सुरभित हो उठा । मिता की प्रिय बकुल की सुगंध क्या रेडियो द्वारा आ गई ? उस गंध ने देवल के रोम-रोम को आच्छन्न कर दिया ।

शरीर इतना गरम क्यों हो गया ? क्या सुगंध के साथ साथ मिता की कोमल उँगलियों ने भी बेतार द्वारा उसके शरीर को थपथपा दिया । समय बीत चला । मन में आग उठ रही है और वह काम के प्रति उदासीन है । देवल के हृदय-यंत्र ने मानो मन के समस्त अभिभूत भावों को समय स्रोत में धीरे-धीरे प्रवाहित कर दिया । वह स्रोत बहते-बहते इरावती को पार कर गया-

सागर पार कर गया, और गंगा के तट पर जा पहुँचा। वैसा ही संध्या का अन्धकार, वैसा ही गंगा का निर्जन तट, वैसा ही व्याकुल विह्वल देवल। फिर, फिर ?

नहीं, कर्त्तव्य है। निरंतर काम करते रहना है। मन के खेल और कल्पना की उड़ान के ऊपर बहुत-से बड़े काम-काज हैं। शरीर को झटक कर देवल उठ खड़ा हुआ। मिता, तुम मेरे हृदय में मणि के समान रहोगी। मैंने जो विवश होकर कर्त्तव्य-पथ पकड़ा है, उसमें क्या तुम मेरे साथ चल सकोगी ?

उसने शीघ्रता से कानों पर हेडफोन चढ़ा लिया।

मिता, क्षमा करो। मुझमें जो यह अकस्मात् दुर्बलता आ गई थी इसके लिए क्षमा करना।

उसी रात देवल रवीन और उमराव से मिलने गया। बहुत दिनों से मिला नहीं था। वे दोनों पहले डिवीजन तीन नम्बर गुरिल्ला रेजिमेंट में थे। काम था युद्ध करना। उसके पहिले नये सैनिकों को युद्ध करने की शिक्षा देने का महान् आवश्यक कार्य था। इस बीच नेताजी के साथ रंगन से कई रेजिमेंट मलय आ गई थीं। लोगों में खूब उत्साह था।

तीनों मित्र थोड़ी देर चुपचाप बैठे रहे। उमराव ने देवल को ऊपर से नीचे तक देखा। उसकी पीठ पर एक हाथ जमाया और थोड़ी-सी शैतानी भरी मुस्कान से बोला, “क्यों देवल भाई, देखता हूँ तुम्हें रेडियो खूब पसन्द है। मुँह पर झेप देखता हूँ। बोलो बात क्या है ?”

लज्जा से नहीं, किन्तु आनन्द से उसका मुख चमक रहा था।

“हुँ, देवल भाई। तुम्हारे पेट में तो बड़े क्रिस्से भरे होंगे। फ़रासी कहानी जानते हो ?”

“कौन-सी कहानी। तुम्हारा तो जिस फ़्रांसीसी चीज़ से प्रेम है, वह है बोटल। और कुछ नहीं।”

उमराव हँस पड़ा। रवीन के शरीर पर एक हाथ धरता हुआ बोला, “रवीन जानते हो सिलीगोट किसे कहते हैं। बन्द बोटल को छिप कर खोलना पड़ता है। प्यूरिटन देवल के हाथ में पड़कर रेडियो की क्या अवस्था होती होगी, उसे सोचने ही में कष्ट होता है। इसीलिए फ़्रांसीसी खबर मंगानी पड़ती है। यदि किसी जटिल बात को ठीक तरह समझा न पाये तो उसमें

किसी नारी की चटपटी बात लगा दी। इसी से कहता हूँ कि किसी स्त्री की तलाश करो, 'सार्से ला फेम'। समझ कर देखो तो जीवन का कितना गंभीर तत्व इसके अन्दर छिपा हुआ है।"

रवीन यह सुन कर बड़ा प्रसन्न हुआ। वह बोला, "संसार की सृष्टि उमराव के लिए हुई है। बाबा उमराव, तुम हमें अपना चेला बना लो। मैं भी तुम्हारी तरह दाल और रोटी खाया हुआ मनुष्य हूँ।"

"अथवा अमानुष"—हँस कर उमराव ने उलट कर आक्रमण किया। "अरे, भात और मछली खाकर जो थोड़ा-बहुत प्राणों में रस आया था, वह दाल और रोटी के कल्याण से सब समाप्त हो गया। देखो न, नाचना सीखा रवीन पक्षी की तरह मन्द और मीठे स्वरों में बात करना भी सीखा, किन्तु प्रेम करना न आया।"

रवीन थोड़ा गरम होकर बोला, "इसलिए मैं असल बात कहता हूँ। रूखा-सूखा खाने वाले हिन्दुस्तानी को प्रेम करने का कोई अधिकार नहीं है। इसलिए सेना में भरती हो गये। विलायती लोगों का थोड़ा-बहुत संग साथ भी किया। यदि बाहु में ज़ोर नहीं होगा, तो उस बाहु से किसी नारी को अंक में नहीं भरूँगा। 'नन बट द ब्रेव डिज़र्व दी फेयर'। यदि वीर नहीं हो तो वर नारी के योग्य तुम नहीं हो। मगर देखो, इस बार जब विजयी होकर देश लौटूँगा...."

उमराव ने बात पूरी नहीं करने दी। हँस कर बोला, "देखूँगा, वीर-पूजा के लिए घायल नारी तुम्हारे पीछे-पीछे दौड़ेगी और तुम अपने को बचाने के लिए फाक्स ट्राट नाच के नियम के अनुसार पैर चलाओगे। मगर मैं जान कर ही क्या करूँगा?"

"जब देश में विजयी होकर जाऊँगा। देश में जब विजयी होकर जाऊँगा।" यह कहते-कहते देवल जड़वत् हो गया।

थोड़ी देर बाद देवल उमराव के निकट गया। वह क्या करता है, यह जानना आवश्यक था। उसने कहा, "जानते हो, जर्मनी से वहाँ के वैदेशिक मंत्री रिबन ट्राप ने स्वाधीन भारत सरकार को स्वीकार कर नेता जी को इस आशय का पत्र लिख कर अभिनन्दन किया है। इस समाचार में मैं विराट संभावना देखता हूँ।"

रवीन यह सुनते ही उछल पड़ा, "वाह, ईमन डिवेलरा और मुसोलिनी

के पास से भी ऐसे ही पत्र आये हैं। किन्तु यह ज़बरदस्त खबर है।”

आकाश की ओर दोनों हाथों को फैला कर जैसे समस्त संसार को बताना चाहता हो, इस भाव से उमराव बोला, “जर्मनी के समाचार से हम प्रसन्न हैं। मुझे संन्यासी मार्का हिन्दुस्तान पसंद नहीं हैं। आज्ञादी होने के साथ-साथ मैं हिटलर के दल में नाम लिखाऊँगा। शर्त केवल यह होगी कि मैं पेरिस में रखा जाऊँ। वहाँ योगायोग अधिकारो होकर। उस दशा में सांस्कृतिक योगा-योग ठीक हो सकेगा।” यह कह कर उमराव अन्यमनस्क-सा होकर रह गया जैसे कोई मुनि ध्यानमग्न हो किन्तु किस उर्वशी के लिए ?

रवीन और देवल चुप होकर रह गये। मेस का घंटा टन् टन् करके बज उठा। चारों ओर अंधकार था। इस शब्द से उमराव का ध्यान भंग हो गया। वह फिस-फिस करके रवीन से बोला, “किन्तु देवल के मन में कोई बात है। जानना चाहिए। एक डेपथ चार्ज दो न ?”

“ठीक कहते हो, बोलो देवल भाई, बेतार के तार में क्या मन जकड़ गया। हृदय फट रहा है, मगर मुँह नहीं खुलता। क्या नया प्रेम है ?”

देवल बोला, “मुझे यहाँ काम के अतिरिक्त और कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। तुम सब हिन्दुस्तान पर दखल करोगे, और मैं सैनिक अधिकारी होकर रंगून में रहूँगा।”

“किन्तु गाज़ी होकर मार्च करते कलकत्ते में अपनी प्रेयसी के सामने जाकर माला पहिनने के लिए सिर ऊँचा करने का अवसर मिलेगा, इसकी गारण्टी तुम्हें किसने दी ? उससे तो यही अच्छा है, यही रहो। सब ठंडा पड़ जाने पर एक बार आज्ञाद हिन्द रेडियो कलकत्ते में हाज़िर होंगे। शहीद नहीं होंगे। हूरेँ भी प्रतीक्षा करेंगी। उस पार नहीं, दुनिया के इस पार ही।”

“मुझे हूरेँ नहीं चाहिए।”

“ठीक ही है, तुम योगी महाराज हो। मगर भाई हमारा एक काम तो कर दोगे। हमें उनके साथ “इन्ट्रोड्यूज़” तो करा दोगे न ? परिचय कराने में कोई रिस्क नहीं है।”

“चुप रहो उमराव। तुम्हें हमेशा ही मज़ाक सूझता है। मैं यहां रहकर क्लान्त हो गया हूँ।”

“क्यों, क्या रेडियो से अपने घर की कोई खबर नहीं मिली ?”

उमराव के दोनों नेत्र अकस्मात् संवेदना से भर उठे ।

बातचीत रोककर रवीन बोला, “अरे जाने भी दो । मैं सब समझता हूँ । भाई देवल, तुम्हारा अभिनन्दन करता हूँ । इस महा सिन्धु के उस पार से कोई संगीत लहरी आ रही है ।”

नेता जी की वाणी उनके कानों में अभय मंत्र का काम कर रही थी ।

“आज़ाद हिन्द फौज भारत की मुक्ति का कारण होगी । मैं आश्वासन देता हूँ कि अन्त में हमारी ही विजय होगी । हमारा काम इस बीच में शुरू हो गया है । जब तक नई दिल्ली में बड़े लाट के प्रासाद पर राष्ट्रीय पताका नहीं उड़ती है, जब तक भारत की राजधानी के प्राचीन लाल किले में आज़ाद हिन्द फौज विजय का डंका नहीं बजाती है तब तक “दिल्ली चलो” कहकर हम परिश्रम करेंगे, युद्ध करेंगे ।”

चार फरवरी को उन्होंने भारत की मिट्टी पर पैर रखा । उस दिन से उनका उत्साह और भी बढ़ गया ।

“दिल्ली चलो, दिल्ली चलो”—इस ध्वनि से आकाश को कँपाते आज़ाद हिन्द फौज के दल ने यात्रा शुरू की । उनका अन्तिम लक्ष्य था दिल्ली । किन्तु पहिले कोहिमा और मणिपुर पर अधिकार करना होगा । अंग्रेज़ और अमेरिकनों का वहाँ पर बहुत बड़ा पड़ाव था । उसके बाद ब्रह्मपुत्र उपत्यका में शत्रुओं को बाधा देने की सुविधा न थी और पड़ाव भी न थे ।

सबसे बड़ी बात यह थी कि शत्रु-पक्ष के पास कोहिमा और मणिपुर में युद्ध का सरजांम और प्रचुर रसद थी । सामान इतना था कि आकाश को छू रहा था । शत्रु-पक्ष का विचार था कि इस बार बर्मा में पलट कर हमला करके जापानियों को वहाँ से हटा देंगे । किन्तु इस बात का उन्होंने विचार तक न किया था कि आज़ाद हिन्द फौज और जापानी पहिले ही से पहाड़ों में तथा जंगलों के भीतर घुस कर भारत के निकट पहुँच जायेंगे ।

महान आश्चर्य की बात तो यह थी कि भारतीय सैनिक एक मन का बोझा पीठ पर लाद कर दिन में कम-से-कम पच्चीस मील का फ़ासला तय कर लेते थे ।

‘शहीद-ए-भारत’ कप्तान के नेतृत्व में ‘परवाना’ नाम की एक कम्पनी तो एक दिन अड़तीस मील आगे बढ़ गई । बर्मा की सीमा के घने और बीहड़ जंगल तथा पहाड़ उनका गतिरोध न कर सके ।

इसके अतिरिक्त और कोई उपाय भी न था। रसद, युद्ध का सरजाम, घायल लोगों को ले जाने के लिए १ नं० गुरिल्ला रेजीमेंट अर्थात् सुभाष ब्रिगेड के पास केवल पाँच लारियाँ थीं। उनके लिए भी कोई कारखाना नहीं था, जहाँ उनकी मरम्मत की जा सके, या पुर्जे बदले जा सकें। खच्चरों का भी पूरा अभाव था। जापानियों के पास जो कुछ था, वे उसमें से कुछ भी देना नहीं चाहते थे। उनकी अपनी राय में उनके स्वयं के पास यान और वाहनों का अभाव था। ट्रेन-द्वारा रंगून से मांडले पहुँचने में पाँच दिन लगते थे। उसके बाद हेड क्वार्टर तक यातायात की लाइन इतनी अधिक लम्बी हो जाती थी कि जापानी कुलियों तक को लोहे के चने चबाने पड़ जाते थे। और सबके सब जापानी कुली भी इस काम में लगाये नहीं जा सकते थे। काफ़ी जोर डालने के बाद वे इस बात पर राज़ी हुए कि युद्ध आरम्भ हो जाने पर युद्ध के 'फ्रंट' पर वे दे दिये जायेंगे।

आज़ाद हिन्द के पास गरम पोशाक भी कुछ विशेष न थी। यह बात सर्व-विदित थी कि चीन के पहाड़ी इलाक़े के कालादान उपत्यका में शीत में बाघ भी काहिल होकर पड़े रहते हैं। ऐसे स्थान पर उनका संबल था, केवल एक गरम कमीज़ और एक सूती कंबल।

खाने-पीने के बारे में और भी बुरा हाल था। शायद ही कभी भर पेट भोजन मिल सका हो। 'इमरज़ेसी राशन' में केवल शकरपारा बिस्कुट दिये जाते थे। ये भी नेता जी ने रंगून के कारखाने में तैयार करा लिये थे। खाने पीने की इस मुसीबत में जब 'आज़ाद हिन्द फौज' को इन बिस्कुटों के बारे में पता चला तो वे बेचारे और उमंग और उत्साह से आगे बढ़ चले।

इधर केवल सिर के ऊपर ही नहीं, चारों ओर नगाड़े-सा शब्द करते डाइव बम बरस रहे थे। दाहिने, बायें, सामने, पीछे, झुण्ड-के-झुण्ड अनगिनती विमान गरजते हुए चक्कर काट रहे थे और थोड़ा नीचे आकर आकाश से बमों की वर्षा कर रहे थे। उनके पाइलट मलेरिया के मच्छर दल के समान थे। इस ओर सेना के पास ए. आर. पी. हेलमेट की बात तो बहुत दूर की है, साधारण मसेहरी तक नहीं थी।

"कुछ परवाह नहीं" रवीन जोर से बोल उठा। ब्रिगेड के सब जवानों का वह मनोरंजन करना चाहता था। "इन मलेरिया के मच्छरों से कहीं अधिक

गोले खाने की तैयारी हम लोगो ने कर ली है । फिर मच्छर हमारा क्या बिगाड़ेगे ?”

“एक दम साफ बात” उमराव ने राय दी । “मच्छरो से कटाते-कटाते बगालियो में इतना साहस भर गया है । केवल पटाखो को लेकर वे अगरेजो से लड़ते हैं । हम पहिले उस देश में अपना डेरा लगायेगे, फिर मच्छरो से कटाने का अभ्यास करेगे ।”

यह कह कर उसने आजाद हिन्द का मार्च-गान प्रारम्भ किया —

“कदम कदम बढ़ाये जा,
खुशी के गीत गाये जा ।”

गाना गाते गाते आजाद हिन्द दल आगे बढ़ रहा था । अकस्मात् ताल भग हो गई । लाइन के बीच में कुछ गिर पड़ा था जिससे पीछे के लोगो को चलने में बाधा हुई । तुरन्त ही पता लगा कि एक पदातिक सैनिक कृष्णास्वामी गिर पड़ा था । पतला रोगी चेहरा था, किन्तु देखने से कर्मठ जान पड़ता था । उसके नेत्र और मुख में बुद्धि का प्रकाश था । उमराव के सामने आते ही कृष्णास्वामी तुरन्त एक पैर से उठ खड़ा हुआ । और उस अवस्था में भी उसने पूर्ण सैनिक अभिवादन किया ।

“क्या हुआ सिपाही भाई” — उमराव ने जिज्ञासा की ।

कृष्णास्वामी ने उत्तर दिया, “कुछ नहीं, कुछ भी नहीं हुआ । सर, मुझे इस बात का बड़ा दुःख है कि मेरे कारण आज के मार्च में बाधा पड़ी । मुझे बहुत दुःख है ।”

उमराव ने थोड़ा झुक कर यह जानने की चेष्टा की कि उसे क्या हुआ । बचारे कृष्णास्वामी के एक पैर में एक बड़ा जगली काटा घुस गया था । मार्च करते समय उसने उधर ध्यान नहीं दिया और उसका पैर क्षत-विक्षत हो गया था ।

“तुम्हारे पास बूट नहीं है ?” उमराव ने जिज्ञासा की ।

फिर से सैल्यूट करने की कोई आवश्यकता नहीं थी । फिर भी कृष्णास्वामी ने सिर ऊँचा कर, सीना तान कर सैल्यूट किया, और उत्तर दिया, “नहीं सर, मेरे पास बूट नहीं है । मेरी यूनिट में किसी को भी बूट नहीं मिल सके । इससे हम लोग नगे पैर ही मार्च कर रहे हैं ।”

उमराव ने प्रश्न किया, “किन्तु तुम अधिक मजबूत नहीं हो। तुम कैसे नंगे पैर मार्च करने के लिए चल पड़े ? तुम्हारी हड्डियाँ कैसे यह सब सहन करेंगी ?”

दृढ़ स्वर में कृष्णास्वामी बोला, “निश्चय ही सहन करेंगी, सर। अंग्रेजों ने बंगाली मद्रासी को नानमार्शल जाति कह कर एक ओर रख दिया, और बदनाम किया कि हम लोग लड़ना नहीं जानते। हम लोगों को सैनिक परेड से वंचित रखा गया। किसी तरह के आधुनिक अस्त्र-शस्त्र दिखाये तक नहीं गये। हम लोगों की भरती तक नहीं की गई। किन्तु आज नेता जी उसी नानमार्शल जाति के हैं। हज़ारों की संख्या में बंगालियों और मद्रासियों ने क़लम छोड़ कर आज़ाद फौज के सैनिकों का बाना पहना है।”

उमराव सान्त्वना देता हुआ बोला, “भाई यह सब ठीक है। मगर केवल इसी के सहारे पतली हड्डियाँ लेकर नंगे पैर मार्च करना तो ठीक नहीं। मन के जोर से और बुद्धि के सहारे शरीर को कहाँ तक घसीटोगे। आगे के लिए तुम पैदल सेना में पैर के कण्ट से बच कर आर्टिलरी में काम करोगे।”

म्लानभाव से कृष्णास्वामी बोला, “हुकुमत आज़ाद हिन्द की जय। मैंने मशीनगन चलाना सीखा है। जापानी हमें मार्टर तक नहीं देते। मशीनगनों भी मीडियम साइज़ की ही हैं। वे ठीक हैं। चिण्डविन नदी के पूर्वी किनारे को पार कर जब हम वहाँ पहुँचेंगे, तब “चर्चिल सप्लाइ” के ऊपर क़ब्ज़ा करने में देरी नहीं होगी। जय चर्चिल।”

गुरिल्ला रेजिमेंट के तीन नये प्रमोशन पाये हुए लेफ्टनेंट कर्नल उमराव, रवीन और देवल तम्बू में बैठे बातचीत कर रहे थे। सच बात तो यह है कि अंग्रेज़ और अमेरिकनों की इतनी रसद, सामान, युद्ध के अस्त्र साज, सरज़ाम, अर्थात् ‘चर्चिल सप्लाइ’ लिये बिना और कोई गति नहीं थी। क्या दो एक बेतार के यंत्रों से और फ़ील्ड टेलीफ़ोन से गुरिल्ला युद्ध किया जा सकता है ? यदि नेता जी जापानी चीफ़ जनरल स्टाफ़ पर काफ़ी जोर न डालते तो आज़ाद हिन्द फौज को युद्ध का कोई सामान न मिलता।

उमराव ने खड़े होकर हाथ हिलाते हुए कहा, “समझ में नहीं आता कि इस युद्ध का क्या परिणाम होगा। हमारा मित्र पक्ष केवल जापान है। वह भी

किसी बात में हमारा विश्वास नहीं करता है। वरन् चेष्टा इस बात की की जा रही है कि हम लोग तितर बितर हो जायें और उनका काम निकले।”

रवीन ने कहा, “मैंने भी ठीक ऐसा ही सुना है। जनवरी में नेताजी जब बर्मा में जापानी सेनापति जनरल कयावेर से मिलने गये थे, तब जापानी जनरल ने नेता जी से ऐसा ही प्रस्ताव किया था।”

उमराव ने वह सब सुन रखा था। वह बोला, “हाँ, बड़े धूर्त है। पहिले तो खूब चिकनी-चुपड़ी बातें करते हैं। कहने लगे कि जब नेता जी हिन्दुस्तान जाना चाहेंगे, ठीक उसी समय जापानी हमारे देश पर आक्रमण कर देंगे। जानते थे कि ब्रिटिश बर्मा पर आक्रमण करने को तैयार है। अतएव नेताजी भी इसी समय हिन्दुस्तान जाना चाहेंगे। किन्तु मौखिक भद्रता को भूल जाना ठीक न होगा।”

देवल बोल उठा, “ठीक बात है। मुझे भी वह बात मालूम है, सिगापुर में मार्शल तेराऊची ने एक ऐसा ही प्रस्ताव किया था। किन्तु नेताजी राजी नहीं हुए। उन्होंने कहा कि हम भारत स्वाधीन करने चल रहे हैं। सबसे पहिले हम हिन्दुस्तान की मिट्टी पर पैर रखेंगे और देह का रक्त बहायेंगे। देश का जो भाग स्वाधीन कर लेंगे, वहा आजाद हिन्द की सरकार शासन करेगी; जापान की नहीं। अस्त्र, गोला बारूद, अन्यान्य रसद या अग्नेजों और अमेरिकनों का जो कुछ भी सामान हमारे हाथों में पड़ेगा, वह सब हम आजाद हिन्द के नाम से दखल करेंगे; जापान के नाम से नहीं। इसके अतिरिक्त नेताजी ने शर्त करा ली है कि कलकत्ते के निरीह असामरिक लोगो के ऊपर एक भी बम फेंकने नहीं देंगे। अपने देश के लोगो पर, जिनके लिए युद्ध किया जा रहा है, उन पर बम फेंक कर उन्हें अपना शत्रु नहीं बनायेंगे।”

“अवश्य अवश्य।” उमराव ममता से हाथ हिलाता हुआ बोला, “अवश्य ऐसा ही होगा। देश हमारा है, उसे स्वाधीन हम करेंगे। जानते हो, नेताजी का हुकुम मानने को जापानी भी बाध्य है। हिन्दुस्तान में जब हम जायेंगे तो वहाँ केवल आजाद हिन्द का तिरंगा झंडा उड़ेगा। इम्पीरियल निप्पन का झंडा नहीं। नेताजी ने हुकुम दे रखा है कि यदि जापानी सैनिक भूल से भी हमारे शरीर को हाथ लायें तो तुरन्त उन पर गोली चला दो। नेताजी की जय।”

रवीन सिर हिला कर बोला, “यह सब ठीक है। मगर इस पर भी सोचा

है कि हमारी दो अलग फौजें हैं। किन्तु हमारे सेनापति से मजर जनरल यामा-मोटे सीनियर जो कुछ कहेंगे, वही अन्त तक मानना पड़ेगा।”

उमराव बोला, “उसे रहने भी दो। उससे कुछ भी बनता बिगड़ता नहीं। जापानी हमारे फौजी नियम नहीं जानते, यह बड़ी अच्छी बात है। हमारे पक्ष की मांचू सेना, नानकिंग सेना, थाई सेना, सब जापानी नियमों से चलने को बाध्य हैं। केवल नेता जी की दूरदृष्टि के कल्याण से हम आई. एन. ए. एक्ट के अनुसार तैयार हुए हैं। और वे कभी भी आज्ञाद हिन्द फौज को जापानी सरकार के आइन के नीचे नहीं रहने देंगे।”

देवल बाधा देकर बोला, “मगर देखो तो इसी कारण नेता जी को किस तरह से पद-पद पर जापानियों के साथ झगड़ा करना पड़ रहा है। अन्त में झगड़ा टोकियो तक गया। टोकियो सरकार को नेता जी की बात मानने के लिए बाध्य होना पड़ा। उस समय जापानी सेनापति ने कहा कि वे लोग सैन्य दल में, साज सरजाम में, संख्या बल में तथा युद्ध इतिहास में हमसे बड़े हैं, इसलिए हमारे अफसर उनके अफसरों को पहले सलाम करने को बाध्य हैं। मगर वे राजी नहीं हुए। हिन्दुस्तानी जाति जापानियों से बड़ी है। इसलिए दोनों पक्षों में समान व्यवहार होगा। दोनों ओर के अफसर आमने सामने एक साथ परस्पर सलाम करेंगे। मित्रता और संधि स्थापना केवल बराबर वालों में ही होती है।”

उमराव के नेत्र यह सुनते ही चमक उठे—“यह तो बहुत बढ़िया बात हुई। सलाम तो एक साथ नहीं करेंगे, मगर यह भी जानते हो कि उस्ताद की मार रात बीत जाने पर होती है।”

“अर्थात्, अर्थात्?”

“बहुत साफ बात है। हिन्दुस्तान पर जब दखल हो जायेगा, तब यदि जापानी भी जोर करके देश पर दखल करना चाहें?”

हाथ की मुट्ठियों को जोर से कस कर देवल बोला, “वन्दे मातरम्! जैसे ही हम लोग अपने देश की मिट्टी पर पैर रखेंगे, देश के लोग हमारा साथ देंगे। बंगाल हाथों में केवल बम और टूटे फूटे रिवाल्वर लेकर लड़ा है। उसी बंगाल में हम “चंचिल सप्लाई” साथ में लेकर उपस्थित होंगे। आठ करोड़ लोग वन्दे मातरम् की जय ध्वनि करेंगे। आठ करोड़, समझे उमराव। आबाल

वृद्ध वनिता सब । और फिर हमारा साथ देंगे अड़तीस करोड़ । जनरल यामा-मोटो और उनके साथियों को भीरजाफ़री करने का कोई मौक़ा नहीं मिल पायेगा ।”

“और उस समय यदि तोजो और हिटलर चोर चोर मौसेरे भाई बन गये तो ?” उमराव ने यह कह कर तिरछी दृष्टि से रवीन की ओर भी देखा, मानों उसी से यह प्रश्न किया जा रहा हो ।

देवल उमी क्षण उत्तेजित हो उठा और बोला, “तो कुछ नहीं कर सकते । नहीं, कभी नहीं । नेताजी की महात्मा जी के प्रति की हुई वक्तृता मैंने देश में बेतार द्वाग़ भेज दी है । उसमें नेता जी ने कहा है कि ‘कंटकेनैव कंटकम्’ दुर्बलों की एकमात्र उचित राजनीति है । अंग्रेज यदि हाथ जोड़ कर अमेरिका से सहायता मांग सकते हैं तो असहाय भारत ने यदि जापान से सहायता ली तो उसमें कोई अन्याय नहीं हुआ । चाणक्य से जार्ज वाशिंगटन और इटली के गेरीबाल्डी तक सबने इस नीति की सहायता ली है । हम अड़तीस करोड़ लोग भी अमेरिका और अंग्रेजों के युद्ध के सरजाम से और शिक्षा से एक नई शक्ति हो सकते हैं । इसके अतिरिक्त जर्मन भी अपने को जापान से कमज़ोर देखने को राज़ी नहीं होगा । इसलिए हमारे कार्य में किसी ‘रिस्क’ या किसी भय की संभावना नहीं है । केवल एक बार यह कहो कि तुम्हारी मां पुकारती है । एक बार सब भाई मिल कर बोलो, ‘वन्दे मातरम् ।’”

किन्तु युद्ध में ऐसी गरमागरम वक्तृता का समय कहाँ से आ गया ? और सुविधा भी कैसे मिल गई ? बाहर अकस्मात् खट-पट की आवाज़ सुनाई पड़ी । हाथ गोला छोड़ने का धड़ाम शब्द सुनाई दिया । उसके साथ ही कई पदचापों का शब्द, और कुछ अश्लील गाली-गलौज भी सुनाई दी ।

आज़ाद हिन्द फौज के कई जवान एक टामी को पकड़ कर ला रहे थे । प्रत्येक के हाथों में संगीन चढ़ी बन्दूकें थीं । उनकी मुखमुद्रा से ऐसा लगता था कि यदि बन्दी भागने की चेष्टा करेगा तो उसे तुरन्त गोली मार दी जायेगी ।

उमराव सबसे पहिले आगे बढ़ा । उसने अच्छी तरह से आपाद मस्तक बन्दी को जाँचा और फिर अस्फुट स्वरों में बोला, “वाह, देखने से तो खूब हट्टे-कट्टे लग रहे हो । बोलो, टामी महाराज ! ‘विस्कट लव एक्स्ट्रा अडि-नेयार’ रोज़ खूब प्रेम से धमक के खाते हो, यह तो चेहरा देख कर ही मालूम

देता है। मगर हम अभागों के लिए भी कुछ अपने हैवर सेक में छोड़ा है।”

एक जवान सलाम करके बोला, “सर, यह टामी अँधेरे में एक रेडियो सेट लेकर चुपके-चुपके पहाड़ पर चढ़ रहा था। हमने इसे पीछे से झपट कर पकड़ लिया। इसके कुछ साथी भाग गये। कई गोले फेंके मगर अन्धकार में पता नहीं चल पाया कि भाग गये या मारे गये।”

ये फौज के ‘एडवान्सकालम’ में आगे आये थे। अपना काम-काज भी ठीक तरह से चल रहा है या नहीं, यह देखने के लिए रवीन उसी समय कुछ जवानों को लेकर चले गये। देवल रह गये। टामी के पेट से समस्त समाचार जानने थे। वह सामरिक-गोपन-समाचारों के तथ्यों को समझने वाला विशेषज्ञ था।

उमराव ने सोचा कि अच्छे खाने पीने की चीजों के नामों से जो हंसी की जा रही है, उसे जवान समझ न सकेंगे। फिर सामरिक अनुशासन के अतिरिक्त थोड़ा हँसी-ठट्ठा भी हो जायगा तो उसका मज्जा सभी मिल कर उपभोग कर लेंगे। यदि ऐसा नहीं किया जायेगा तो केवल हुक्मत के जोर ही से जवान किस तरह इतना कष्ट सह कर साहस दिखा सकेंगे ?

फौज में सबको लक्ष्य करके वह बोला, “क्यों ब्रिटिश राज्य के अग्रदूत ! क्या कुछ भी नहीं समझे ? क्यों पराये इलाके में चोर की तरह घुसे ? तुम्हारे अपने देश में तो आर. ए. एफ. ने आकाश में रह कर सब कुछ ठीक कर रखा है। बिस्कुट, चाकलेट, खजूर, किशमिश, पनीर, इन सबके टीन तुम्हारे खाने के लिए आकाश से फूल के समान बरसाते रहते हैं। एक बार वह वर्षा हमारे यहाँ भी करा दो।”

टामी चुप खड़ा रहा।

एक जवान खाने की चीजों का नाम सुन कर पागल-सा आगे आया और सलाम करके बोला, “कर्नलसाब, टामीगन के अलावा यह टामी सा.....किसी तरह बोलेगा नहीं। पहले इसे ठंडा पुलाव दिया जाय।”

यह सुनते ही टामी का सारा शरीर काँप उठा। किन्तु ओठ ज़रा भी नहीं खुले। सिर ऊँचा किये वह खड़ा रहा। उसके नीले नेत्रों में इस्पात का प्रकाश था।

उमराव ने हाथ से जवान को मना किया और कहा कि अंग्रेज़ बच्चे का

मुंह भय से नहीं खुलवाया जा सकता है। शायद यह हँसी-ठट्ठा करने से कुछ कहे। इसके बाद वह अंग्रेज़ से बोला, “वाह, साज पोशाक तो खूब फब रही है। बिल्कुल क्रिस्मस्टी की तरह। क्या बहारदार चमड़े की जाकेट है, केमल-हेयर का ओवरकोट। सर्दी किसी तरफ से घुस नहीं सकती। क्या बढ़िया फुल-बूट है? बैग में छुरी कांटा, चम्मच, काश्मीरी कम्बल तक मारा ज़रूरत का बढ़िया सामान है। वाह वा, यह कम्बल और बूट तो अपने कृष्णस्वामी के लिए दे दो। तुम्हारे नाती-नातियों को इनकी कोई ज़रूरत भी न होगी।”

उपस्थित सभी हा हा करके हँस पड़े। किन्तु टामी बिल्कुल निर्विकार खड़ा रहा। जैसे वह मनुष्य की भाषा, हाव-भाव कुछ भी समझता बूझता न हो।

उमराव ने उसे सूखे घास के ढेर पर बैठ जाने को कहा। स्वयं भी एक ढेर पर बैठ गया। उसके बाद सब जवानों को तंबू से बाहर जाकर पहरा देने के लिए कहा। उमराव और देवल ने जेबों में भरी रिवाल्वरें टटोल ली।

उमराव ने अपने स्वयं से खूब मैत्री और घनिष्ठता जताते हुए कहा, “देखो टामी, तुम्हारी सूरत शक्ल और आउटफिट की जो हमने हँसी उड़ाई, उसका मुझे खेद है। उस बात को मन में मत लाना। अपने अमेरिकन मित्रों के सुख के लिए तुम्हारे पास सब कुछ है, मच्छरों से बचने के लिए हाथ में लगाने के मलहम से ममहरी तक। हमारे पास तो केवल एक बोतल पानी है। आओ, उसी को तीनों लोग मिल बांट कर पियें। इसके अलावा हमारे पास और कुछ भी नहीं है, जिससे अपने अतिथि की सेवा करें।”

“पानी? ड्रिंक? तुम्हारे पास व्हिस्की ही है न?”—टामी अब पहली बार बोला।

“व्हिस्की? जानी वाकर मार्का है। १८२० में पैदा हुई और अभी तक ठाठ से चल रही है। वही व्हिस्की है जार्ज। मगर एक उलझन की बात है। हमारे ये क्वार्टर मास्टर सिन्हा बड़े मारलिस्ट हैं। इनके मारे हमें व्हिस्की, ब्रांडी आदि का स्वर्गीय सुधापान करने में बड़ी असुविधा होती है। तुम इन्हें समझा बुझा कर ठीक रास्ते पर लगाओ, जार्ज। इससे तुम्हें भी सुविधा होगी, और हमारा भाग्य भी खुल जायेगा। गला सूख कर काठ की तरह हो गया है।

“इवजेक्टिली सो, हमारी भी यही दशा है।” टामी का मुख यह कहते कहते करुण हो उठा।

उमराव बोला, “सिन्हा तो हमें बियर भी नहीं देता।”

“यह क्यों?” टामी अवाक हो गया। “तुम एक साथ रहते हो, एक यूनिट में, एक तम्बू में। तब भी एक तो पक्का पादरी है, और बाक़ी सब निर्दोष भाव से गला सीचने तक से वंचित रहते हैं। भारतीयों में इस तरह की काम-रेडशिप तो कभी न थी।”

“जार्ज ठीक कहते हो।” देवल ने इस बार प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए कहा। “देखो न हमारे मित्र की दाढ़ी कितनी बढ़ गई है। इनने ज़ोरो से बढ़ी है कि कुछ कहा नहीं जाता। मगर तब भी ये मित्र उसकी काट छांट करने को राज़ी नहीं होते। उसे यदि आप अपना शीशा दे दें तो उसमें वह अपना मुंह देख कर समझदार बन जाय। एक बार आप अपना शीशा उमे दे दें।”

“शीशा? मेरे साथ तो कोई शीशा नहीं है।”

“नहीं है? आह वड़े दुख की बात है। किन्तु आपको डिपो से मिला ज़रूर होगा। यह क्या बात हुई कि जिसका चेहरा मोहरा ऊपर से देखने में खराब लगता है, उसे न चाहने पर भी देखने के लिए शीशा दिया जाता है। मगर आपका तो शीशे में देखने योग्य चेहरा है।”

टामी ने धीरे से उत्तर दिया, “शीशा मुझे मिला था।”

“फिर ऐसा लगता है कि आपने उमे किसी पहाड़ी जंगली अपात्र को दान कर दिया। निश्चय ही यही किया है। मैं ज्योतिषी हूँ न? इसी से जान जाता हूँ और आपने अपने सिगरेट के पैकेट भी निश्चय ही उसे दे दिये हैं।”

टामी थोड़ा आगे झुक कर बोला, “तुम यह कैसे जान गये। मैं अपने सुवलटर्न को भी तो दे सकता हूँ।”

“जार्ज, ज्योतिषी न होने पर भी यह बता सकता था। चांदी से जड़े शीशे के रखने से आप राजा नहीं हो जाते। आप अपने साहब को प्रसन्न देख कर उन्हें दे डालना चाहते। अपनी ओर से खूब विनय दिखाते क्षमा याचना करते-करते कहते कि बहुत-बहुत धन्यवाद, सर, किन्तु शोक की बात तो यह है कि ऐसे समय में मुझे शीशे की कोई आवश्यकता नहीं है।”

उमराव ने दार्शनिक की तरह सिर हिला कर कहा, “बिल्कुल ठीक बात

है। पहाड़ी जंगलों में लड़ने के समय दाढ़ी मूँछ तक भीषण विलास है। इसको क्षमा नहीं किया जा सकता।”

देवल ने ज्योतिषी की तरह नाट्य किया। उसने इधर-उधर आँखें घुमा फिरा कर उँगलियों पर कुछ गिन कर कहा, “शीशा और सिगरेट नागा लोगों को देने से उनके प्रति सद्व्यवहार हुआ। शीशा ही क्यों, साबुन का टुकड़ा भी दिया जा सकता है। यहाँ उसका क्या काम। मगर नागा पहाड़ियों से साबुन, शीशा, फालतू मोझे, मफलर द्वारा कितना काम निकल सकता है?”

टामी को नागा लोगों के विषय में सुन कर बड़ा मज्जा आया। उत्साह से बोला, “भई तुमने खूब पता लगाया। मैंने वे सब चीजें नागा गाँव के एक बूढ़े को दे दीं। नागाओं का सरदार कैसी विचित्र पोशाक पहने था। घुटनों तक मोटा कपड़ा पहने था, किन्तु गले में मोटी माला झूल रही थी। सारा सामान कैसे ढंग से रखा था। जादू घर की तरह सारे बर्तन इत्यादि सँभाल कर रखे हुए थे। शराब की बोतलों की कार्क, बियर के टिन, बटन, सूत के गोले तक थे। कानों में सेफ्टीपिन झूल रहे थे और पैरों में हाथी की दुम के बालों को बट कर गोले डाले हुए थे।”

“वाह, खूब, नागाओं का चेहरा बड़ा रोमाण्टिक होगा।” देवल अमरीकन वृद्धा पर्यटकों की तरह आह्लादित होकर बोला, “हाऊ टपिंग, माइटी फाइन”, उसने अमरीकी विशेषणों और भाषा का व्यवहार करके अपने मन के उच्छ्वास को अच्छी तरह प्रकट कर दिया, जैसे मेघ को देख कर मयूर पुलकित हो उठता है।

ऐसा उत्साह देख कर टामी का मन भी खुल गया। उसने नागा गाँव के बूढ़े का चेहरा, उसका गाँव, यातायात के मार्ग इन सबका खूब मन को लुभाने वाला वर्णन किया। वह यह भूल गया कि शत्रु के हाथों बन्दी है।

“किन्तु उसने आपको इसके बदले कुछ भी नहीं दिया। सुना है कि वे लोग बड़े अतिथि-परायण होते हैं।”

“हाँ दिया तो कुछ भी नहीं। मगर वे बड़े सरल और विश्वासी लोग होते हैं। इसके अतिरिक्त हमारे खाने की जरूरत पर दाम भी नहीं लिए। यहाँ तक कि जहाँ उन्होंने चावल छिपा कर रखे थे वह जगह भी बता दी। कहने लगे कि जरूरत पड़ने पर समाचार देना। पहाड़ के पास रोडोडेन्ड्रेन

वृक्षों के झाड़ के पास एक गुफा है। छिपने का बहुत बढ़िया स्थान। नागा सरदार वास्तव में बहुत बढ़िया आदमी है।”

देवल ने प्रश्न किया—“वहाँ तो जरूर आपने अपने दल के साथ नागा लोगों की ठर्रा पी होगी।”

उमराव तुरन्त बात काटता बोला, “बड़ा चोखा माल है। उसके सामने तुम्हारी माल्टीयार क्या चीज है।”

देवल दीर्घनिश्वास छोड़ कर बोला, “उफ्, फार ए बाटल आव बियर। अहा, यदि एक बोतल बियर किसी तरह मिल जाती। तुम्हारी सफ़री बोतल में तो डेढ़ पाइण्ट ही जल आता होगा। भागते समय तुम्हारे आधे आदमी केवल जल से और बाकी आधे बियर से, बोतल भरते तो तुम्हारे साथ काफी बियर होती। हो सकता है सौ डेढ़ सौ पाइण्ट तक हो जाती। अहा, इंगलिश माल्टेड बियर। उसके आगे जर्मन पिलस्नार बियर भी कुछ नहीं। कम से कम डेढ़ सौ पाइण्ट।”

बियर के सुनहरे रंग और मधुर स्मृतियों से टामी प्रायः दिशाहारा हो गया ओर ओंठ चाटने लगा। थोड़ी देर तक अन्यमनस्क-सा बैठा रहा। फिर धीरे-से बोला, “मैं तुमसे कम बुद्धि नहीं रखता हूँ। उस तरह से आधी के करीब बियर की बोतल ला सकता था, मगर डेढ़ सौ पाइण्ट किसी दशा में भी नहीं। मगर वह भी बीस मील के मार्च में समाप्त हो जाती, बचती किसी तरह नहीं।”

“मुख पर धूप पड़ने से प्यास तो लगती ही है।”

देवल की इस प्रकार की दर्द भरी बातें सुन कर टामी ने उसे धन्यवाद दिया। देवल के दोनों नेत्र चमक उठे। उसने कहा—“ब्रेवो, ब्रेवो जार्ज। तुम वीर लड़ने वाले हो। मगर क्या तुम्हारे साथ अफ्रीका कोर के या गुरखा राइफ़िल्स के सैनिक भी बियर न ला सके? शायद वे राज़ी नहीं हुए।”

“राज़ी होने की बात ही नहीं उठी। हम रिकनयटार करने आये हैं। गुरखा या पंजाबी तो आँखें बन्द कर लड़ना भर जानते हैं। वे आँखें खोल कर कुछ कर ही नहीं सकते।”

“ठीक कहते हो जार्ज। यह बात बिल्कुल सच है। तुम बुद्धि से लड़ते हो।” इतना कह कर देवल ने अपने मन में सोचा—आँखें खोल कर रहते

तो क्या तुम्हारी ओर मे लड़ते ।”

इसके बाद देवल ने सिर उठा कर उमराव से कहा, “इस युद्धबन्दी को अभी पहरेवालों के हाथों में सौंप दो । एक मुहूर्त भी नष्ट करने का समय नहीं है ।”

उमराव अवाक् हो गया और बोला, “क्या बात है ? यकायक तुम जाग क्यों उठे ? इस टंडी रात में ?”

“मजे से कम्बल से सिर ढक कर सोने के लिए”, उमराव से इतना कह कर उसने अपने अर्दली को पुकारा और उसके साथ बन्दी को बाहर भेज दिया । फिर बहुत धीरे से उसने उमराव को सारी बातें समझाना शुरू की । उसने वहाँ एक मानचित्र भी खोल कर बिछा लिया ।

“नागा पर्वत के जंगलों में रोडोडेनडेन वृक्ष अधिक नहीं होते । शिलांग पहाड़ पर भी वे विशेष दिखायी नहीं पड़ते । यहाँ से पन्द्रह मील पश्चिम में ‘रिकनयटार’ करते-करते वे दिखाई पड़ते हैं । उस स्थान पर पहाड़ के निकट ही नागा लोग रहते हैं । उन्हें अंग्रेजों ने मामान देकर खुश कर दिया और उनकी मैत्री प्राप्त कर ली । इसके अनिश्चित बियर के परिमाण का हिसाब करने से ऐसा लगता है कि इक्कीस अंग्रेज इस समय भी वहाँ उपस्थित हैं । शत्रुओं में सभी अंग्रेज हैं । भाग्य अच्छे थे शायद इसी से देशी सैनिक वहाँ नहीं हैं । अफ्रीकन भी नहीं हैं । अत्र रात खाने की नहीं है । ऐसा लगता है कि वहाँ इनका असली डेरा है । संभवतः बीस मील दूर इनका ‘इगू डिपो’ और एक बड़ा अड्डा है । अड्डे में मारे गस्ते तक धूप पड़ती है । इस कंगस से इस जगह को देखो तो; अतएव”

“अतएव, देवल भाई, तुम्हारी जय हो । तुम्हारी बुद्धि और हमारे वाहु दोनों मिल कर शत्रु को समाप्त कर देंगे । जय हिन्द । जय हिन्द । इससे आज रात ही को”

स्वाधीनता के युद्ध के कुंड में आज प्रथम आहुति दी जायेगी । शुभ लग्न में देरी नहीं है । उत्साह से अस्थिर होकर उमराव शरीर झटक कर खड़ा हो गया और उत्तेजना के कारण फिस-फिस करके बोला—

“हाँ आज रात ही को ।”

उसी रात को ।

देवल के अन्दाज में ज़रा-सी भी भूल नहीं हुई । शत्रुओं के पिकेट नींद में झोंके ले रहे थे । पहाड़ की ठंडक में जिसके पास गरम आस्ट्रेलियन कंबल हो उसे इसके लिए दोष नहीं दिया जा सकता ।

चन्द्रमा के अस्त होने तक आज़ाद हिन्द की सेना पहाड़ की झाड़ियों और खड्डों में छिपी रही । उनके पास केवल आटोमेटिक और राइफलें थीं । अंधकार हो जाने पर उन्होंने शत्रुओं के गढ़ को चारों ओर से घेर लिया । और अकस्मात् उन पर आक्रमण कर दिया । पहरेदार दिशाहारा हो गये । मगर उनमें-से एक ने आकाश में लाल रंग का हवाई राकेट छोड़ दिया । समस्त स्थान लाल आलोक से उज्ज्वल हो उठा । नागाओं के गाँव में जितने अंग्रेज़ मैनिक् खा पीकर मौज की नींद ले रहे थे वे सब हड़बड़ा कर तैयारी करने लगे । किन्तु उतनी देर में समस्त पिकेट का सफाया कर दिया गया । इसके बाद असली मोर्चे से पाला पड़ा । गांव में जिस जगह उनका असली गढ़—हेड-क्वार्टर—था वहाँ सबने आश्रय लिया था । चारों ओर कटीले तार लगे हुए थे । आज़ाद दल के साथ टैंक नहीं थे । उस घेरे को उड़ाने के लिए भारी मार्टर भी नहीं थे । यदि उसे इसी दशा में तोड़ने की चेष्टा की जायेगी तो पता नहीं कितने लोग मारे जायेंगे । क्या किया जाय ?

उमराव कूद कर सामने आया, और अंग्रेज़ों से चिल्ला कर बोला, “क्या तुम लोग लड़ने आये हो ? ऐसा लगता है हाईलैंडर्स हो । फिर सामने आकर क्यों नहीं लड़ते । कावर्ड्स—कायर ।”

वास्तव में यह धर्मयुद्ध का युग नहीं है, सम्मुख युद्ध का भी नहीं । वृष्टि-धारा के समान उन्होंने भारी मशीनगनों से गोलियाँ बरसानी आरम्भ कर दीं । उमराव इसके लिए तैयार था । उसने पहले अपने आगे पत्थरों की दीवार बना ली थी और उसके बाद आगे आकर चेलेंज दिया था । तुरन्त ही झुक कर वह पत्थरों की दीवार के पीछे चला गया ।

इसके बाद कोई कहा सुनी नहीं हुई ।

निश्चित होकर हाईलैंडर्स गोले फेंकते-फेंकते आगे बढ़ आये ।

इतने दिनों तक जो पैरों के नीचे रहे, रौंदे जाते रहे, जिनके लिए अस्त्र चलाना सिखाया गया वे ही कावर्ड कह कर गाल बजा रहे हैं । जो साम्राज्य के जूते साफ़ करते रहे वे “कावर्ड” कह रहे हैं । अगर जापानी कावर्ड कहते तो दूसरी बात थी । निरुपाय होकर सिर नीचा करके सुन लेते । मगर यह अपमान एक भारतीय-द्वारा । नेवर—कभी नहीं, कभी नहीं ।

हाईलैंडर्स ने पागलों की तरह आगे बढ़ कर चार्ज किया । इस बार इन बन्दरों को सामने आने पर शिक्षा देनी ही होगी । रूल ब्रिटानिया, रूल दि स्लेव्स ।

इधर देवल निश्चित नहीं था । वह अपनी कम्पनी के साथ शत्रुपक्ष की उन जगहों से खोज कर जिधर उनका ध्यान न था, अच्छे अस्त्र शस्त्र जमा कर रहा था । जापानी अंग्रेजों के हथियार या गोला बारूद पाने पर भी उनका व्यवहार करना नहीं जानते थे । इसलिए वे उन्हें छोड़ देते थे और इसी से हाईलैंडर्स इस बात से निश्चित थे । देवल के दल के लोग इन प्राप्त की हुई राइफ़लों और गोलों का व्यवहार करना सीख गये थे । इन तीन वर्षों में अंग्रेजों के हथियारों का साइज़ और ढंग कुछ थोड़ा-सा बदल गया था । आज़ाद दल के पास पुराने अस्त्र थे और केवल उन्हीं का व्यवहार करना उनके लिए संभव न था ।

इधर हाईलैंडर्स आज़ाद सैनिकों पर गोली छोड़ते-छोड़ते आगे बढ़ आये । बीच-बीच में वे राकेट छोड़ कर उस स्थान में लाल उजाला कर देख लेते थे कि नीचे किधर, किस कोने में शत्रु छिप कर राइफ़ल चला रहा है । आज़ाद दल के पास राकेट नहीं थे । उमराव ने निर्देश दे रखा था कि गंगाजी की पूजा-गंगाजल से की जाय । जब राकेट का प्रकाश हो तभी अंग्रेजों पर गोली छोड़ी जाय ।

सयानों-सयानों में युद्ध भी भीषण होता है । कोई किसी को छोड़ता नहीं । हमारी मृतदेह के ऊपर पैर रखे बग़ैर शत्रु एक तिल भूमि भी नहीं ले सकता है । बिल्कुल दुर्योधन का प्रण ।

इतना सब होने पर भी थोड़े सैनिक और थोड़े हथियारों से कब तक लड़ा जा सकता है ?

यह हाल देखकर देवल ने अपनी कम्पनी को आज्ञा दी कि ३०३ नम्बर के बाल अम्यूनेशन से राइफल ग्रेनेड चलाओ। यह सुन कर सब अवाक् हो गये। ऐसा तो किसी युद्ध के नियम में देखा सुना नहीं। क्या विपत्ति पड़ने पर कर्नल माहब का सिर फिर गया है ?

मगर देवल की आज्ञा टल नहीं सकती थी। उसने फिर आज्ञा दी और सब के सामने हाइलैंडर्स पर पचास ग्रेनेड फेंके। हमारे पास व्यालिस्टाइट ग्रेनेड कार्तूस न होने से क्या शत्रु पार पा जायगा ? राइफल ग्रेनेड से अपने दो-एक आदमियों के हाथ अवश्य फट सकते हैं। किन्तु शत्रु को शत्रु के ही गोले से घायल करने में क्या कम आनंद मिलता है।

देवल गुरु-दक्षिणा देने लगा।

एक कप्तान ने उसका हाथ पकड़कर चिरौरी की—“आपकी दोहाई, आप जो कुछ कर रहे हैं वह केवल मुसाइड है।”

देवल ने तड़प कर उत्तर दिया—“हथियारहीन होने पर शत्रु के हाथों से मरने की अपेक्षा उसे संहार करते मरना अच्छा है। भाइयो और जवानो, जय हिंद।”

किन्तु हाइलैंडर्सों ने अभी हाल ही में जंगल-युद्ध की शिक्षा पाई थी। इसके अतिरिक्त यूरोपीय युद्ध शास्त्र में घेर लेने की एक पद्धति है। सामने लड़ते-लड़ते शत्रु को इधर-उधर से उलझा कर चारों ओर से घेर लिया जाता है। किन्तु आजाद दल के अदम्य उत्साह के सामने वे टिक न सके। परन्तु इसके साथ ही उनकी पेट्रोल पार्टी कुछ कम चालाक न थी। उसने थोड़ी दूर पर आजाद दल के पीछे एक टीले पर मशीनगन चढ़ा दी और राकेट से चारों ओर प्रकाश कर गोली चलाना शुरू कर दिया।

इस व्यवस्था में चोर के घर छिछोर वाला दांव ही काम आ सकता था। हाइलैंडर टीले पर से गोलियाँ चला रहे थे। आजाद दल दोहरी मार से समाप्त हो जायगा, यदि वह भी कोई सुविधाजनक मोर्चे पर दखल नहीं कर लेता है। देवल ने तुरन्त ही एक लेफ्टिनेंट को एक यूनिट देकर टीले पर दखल करने को भेजा। किन्तु सामने से चढ़ाई करके टीले को लेना असंभव था। ऊपर से शत्रु इतमीनान से गोली चला कर इनका प्रयास असफल कर सकते थे। अंधकार में टीले के नीचे से छिपते हुए लेफ्टिनेंट टीले के पीछे पहुँच कर

छिपते सरकते एक टीले की चोटी पर पहुँच गये । हाईलैंडरों के राकेट छोड़ने के साथ-साथ उनके ऊपर ग्रिनेड के ऊपर ग्रिनेड गिरने लगे । उन्होंने ऐसी उल्टी प्रतिशोध की आशा नहीं की थी । किन्तु जैसे ही उनकी समझ में यह बात आई, उन्होंने मशीनगन के मुँह आज़ाद हिन्द के दल की ओर फेर दिये । ग्रिनेड या मार्टर पहाड़ के ऊपरी ओर फेंकने से कोई लाभ न होगा । किन्तु मशीनगन में यह असुविधा नहीं थी ।

फिर भी आज़ाद दल की असुविधा कुछ कम ही थी । वे तड़ातड़ ग्रिनेड फेंकते नीचे की ओर एक-एक करके जाने लगे । जैसे भी हो वैसे पहाड़ से जंगल की ओर फेरी हुई मशीनगन का मुख बन्द करना ही होगा । वह हो जाने से आज का युद्ध जीत सकेगे ।

किन्तु, हाथ उनके पास होनी चाहिए थी उचित हिल आर्टलरी और काफी दूरी तक की मार करने वाली तोपों की सहायता । शत्रुओं के ऊपर वे गोले काफी दूरी तक जा कर मार कर सकते और उनके दल में भगदड़ मचा देते । जितनी दूरी तक गोलों की मार हो रही थी वहाँ तक सेना बिना बाधा अथवा बिना असुविधा के आगे बढ़ सकती थी ।

तोप का भी कोई सहारा न था । यह बात ज़रूर थी कि हृदयों में साहस भरा हुआ था और देश के प्रति असीम अनुराग था । यह कोई दूर विदेश में साम्राज्य बनाये रखने के लिये युद्ध न था । मनसूर आगे बढ़ा और टीले की चोटी में नीचे उतरने लगा । उसके दल के ऊपर वृष्टिधारा के समान गोलियाँ पड़ने लगीं । मनसूर के शरीर में तेरह गोलियाँ लगी । वह पेट के बल सरकने लगा । हाथ से राइफल खिसक गई । साथ के सैनिक उलझन में पड़ गये । दलपति गिर चुका था और मरने के निकट था । अब यहां का काम कौन संभालेगा । मनसूर को अपने दल की मनोदशा समझने में देर न लगी । उसके पैरों में इतनी शक्ति भी बाकी नहीं बची थी कि उठकर थोड़ी देर के लिए भी खड़ा हो सकता । मगर उसने साहस बटोर कर सिंह के समान गर्जना की, “भाइयो और जवानो, नेता जी की जय । चलो हमारे साथ” । इतना कहकर उसने फिर राइफल संभाली और उलटते पुलटते ढालू चट्टानों से नीचे सरकने लगा ।

सभी उसका संकेत समझ गये । और नीचे की ओर सरकने लगे । बीच-

बीच में ताक कर ग्रेनेड छोड़ते जाते थे, ओर नीचे उतरते जाते थे। शत्रुओं की ऊपर की ओर मुँह की हुई मशीनगन उनका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकती थी। उसकी गोलियाँ इधर-उधर पत्थरों में लग कर छिटक कर रह जाती थी। इधर से ग्रेनेड का निशाना बिल्कुल ठीक बैठता था। इस तरह युद्ध होते-होते सब मशीनगने निस्तब्ध हो गई। अन्त में जो थोड़े हार्डलेण्डर बाकी बचे उनकी दशा भी मृतको-जैसी हो गई। उनमें सगीनो का युद्ध छिड़ गया। किन्तु इसमें भी ऊपर से नीचे जाते आजाद दल के आगे शत्रु पक्ष टिक न सके। वे सभी मारे गये। नीचे लुढ़कती हुई मनसूर की मृत देह एक मशीनगन की गाड़ी से अटक गई। जय हिन्द।

इधर सामने की ओर उमरावसिंह का दल बड़ी कठिनाता में पड़ गया। ब्रिटिश पक्ष के कई टहलदारों ने इधर-उधर बहुत अच्छा प्रबन्ध कर रखा था। उन्होंने राकेट के प्रकाश और गोलियों की आवाज से यह जान लिया कि शत्रु ने हमला किया है। बेपरवाही से वे जीप नागा के गाँव की ओर से पगदड़ी पर चला रहे थे। उनकी शक्ति भारी थी। काफी मशीनगने आ गई थी। पूरी अग्नि की दीवार-सी खड़ी कर ली गई थी। और वह आगे बढ़ रही थी। उस दुर्भेद्य दीवार को कौन तोड़ सकता था ?

कही एक टैंक होता !

किन्तु टैंक को आजाद दल इतने दिनों तक भूले रहा।

उमराव वक्ष स्थल पर हाथ मारता हुआ बोला, “भाइयो ! जवानों के सीने इस्पात से भी अधिक मजबूत हैं, इसका आज प्रमाण देना होगा। मैं पंजाब के खेलकूद में गोला फेंकने में प्रथम आया था उसका प्रमाण देखो। यह कह कर उसने दोनों हाथों से दो ग्रेनेड ले लिये। इस समय वह साक्षात् यम के समान लग रहा था। पहाड़ के एक वक्ष की आड़ में जाकर उसने ताक कर वे सामने की जीप पर फेंके। जीप और उसके सिपाही निश्चित हो गये। “जयहिन्द, जयहिन्द। नेता जी की जय”।

इस तरह उसने सब को नये उत्साह से भर दिया। जीप पहाड़ी मार्ग में यकायक अपना रास्ता बदल नहीं सकती थी। जैसे वे टूट कर ककाल मात्र होती जाती थी। उनकी आड़ लेकर आगे का हमला शुरू हो जाता था।

इधर देवल और रवीन के दल भी काफी आगे बढ़ गये थे, किन्तु रक्षा का

कोई सहारा न था। जंगल के एक नाले में दो अंग्रेज अफसर लुके-छिपे बैठे थे। ये जहाँ युद्ध भीषण रूप में चल रहा था वहाँ सहायता देने के लिए भेजे गये थे। किन्तु दल के पाम न पहुँच सके। काफी देर से बैठे थे। उसी ममय आजाद हिन्द वाहिनी ने इनकी अग्रिम पवित को रोक दिया था। ये दोनों अंग्रेज मेजर जनरल विन्गट की तैयार की हुई 'चिनडिट' वाहिनी के पक्के लोग थे। जंगल युद्ध में ऐसे प्रवीण लोग कम मिलेंगे। बर्मा के भीतर चिन इलाके में अकस्मात् हमला कर युद्ध करने में प्रवीणता प्राप्त करने वालों का नाम था 'चिनडिट'।

ये दोनों 'चिनडिट' सरदार नाले में छिपकर मशीनगन से सधे निशाने लगा रहे थे। किसी को उधर का पता न था। और मशीनगन बराबर चल रही थी। आजाद हिन्द का एक सैनिक गोली से आहत होकर मिट्टी में गिर पड़ा। गोली शरीर के भीतर न जा सकी, क्योंकि जब के पाम जहाँ गोली लगी थी वहाँ एक लोहे का छोटा डिब्बा था, और इसमें गोली का जोर कम पड़ गया था। देवल ने तुरन्त ही चाकू से उस गोली को बाहर निकाल लिया। और उसे हाथ में हिला-डुला कर बोला, 'देखो तो, यह गोली है, टामसन मशीनगन की। इसका चलाने वाला दूर नहीं है, यही कहीं से चला रहा है, हाथ के पाम ही है। जय हिन्द।'

किन्तु आजाद दल के उन्हें खोजने से पूर्व ही एक अंग्रेज ने भी उम नाले में आश्रय लिया था। भय के मारे उसके ओठ जम कर एक हो गये थे, जैसे किसी ने आटे से चिपका दिये हो। उसका आधा पायजामा फट गया था। आजाद दल ने अकस्मात् चढाई कर दी थी इससे यूनीफार्म पहनने का समय तक न मिल सका था। पायजामा किसी वक्ष की टहनी में अटक गया था। बेचारे को भागते समय प्राणरक्षा की धुन में पायजामा सभालने का समय भी न मिला। उसके हाथ में बन्दूक थी, मगर गोलियों की पेट्टी एक भी नहीं थी। चारों ओर अपने दल का लाल प्रकाश देखते-देखते उसे केवल लाल ही लाल दिखाई देता था। उसका मुँह धूप में चलने से नहीं, किन्तु भय के मारे लाल हो रहा था।

एक अफसर बोला, "टोनी, मेरी बोतल से थोड़ी रम पियो। उसको पीने से साहस आयेगा।"

दूसरा बोला, “ठीक कहते हो, क्रिस । इस समय रम ही की जरूरत है ।”

मदिरा-पान के बाद धीरे-धीरे उनके मुख खुले । किन्तु उससे लाभ कुछ भी नहीं हुआ । उसने क्रिस से कहा : “यदि किसी तरह बच गये ; चारों ओर शत्रुओं से घिरे रहने पर भी बच गये तो हमें विक्टोरिया क्रॉस मिलना चाहिए ।”

क्रिस और टोनी तो इस तरह मन को समझा रहे थे, उधर टामी अकस्मात् आक्रमण के कारण भय में मरा जा रहा था । उसका दिमाग खराब हो रहा था । उसकी यदि और अधिक उपेक्षा की गयी तो वह अवश्य पागल हो जायगा ।

क्रिस बोला, “ठीक कहते हो । थोड़ी रम और दो । और ये गोलियाँ तुम्हारे लिए हैं । तुम बन्दूक छोड़ना शुरू करो । दुश्मन भाग जायेंगे ।”

टामी से और न रुका गया । वह बड़बड़ाने लगा—“किन्तु मैं तो यही मर जाऊँगा । मेरी जगह मेरे पिता को बी. सी. मिलेगा । हाय मैं उनकी एकमात्र सन्तान हूँ । उन्हें बी. सी. मिलेगा । विन्सटन पिता को अपने हाथ से मेडल देंगे ।”

अकस्मात् अंग्रेजों के दल ने पीछे से बहुत-सी ट्रेगार जला कर आकाश में उड़ा दी । शत्रु-पक्ष के लोग किधर-किधर हैं उन्हें अच्छी तरह से देखा जा सके । ये तीनों तुरन्त नाले में लंबायमान हो लेट गये । टामी कहने लगा—लाल जल-लाल जल मेरे सिर के ऊपर खबर के हौज पाइप से लाल जल छिड़का जा रहा है ।”

किन्तु यह सब प्रलाप सुनने का समय वहाँ किसे था ? इस लाल प्रकाश में इतमीनान से शत्रु को निशाना बनाना था । वे अपने काम में व्यस्त थे । चारों ओर गोलियों की आवाज सुनाई पड़ रही थी । कानों के पर्दे फट रहे थे । ऐसी दशा में कौन ठौर-ठिकाने की सोच समझ सकता था ।

अकस्मात् टोनी ने देखा कि टामी उकड़ूँ होकर नाले के ऊपर उठ रहा है । सर्वनाश । इस तरह से शत्रु अपने छिपने की जगह पा जायेंगे । फिर रक्षा का कोई उपाय नहीं रहेगा । टोनी ने उसके पायजामे की कमरबन्द पकड़ ली । और धीरे से बोला, “ब्लडी फूल । शत्रु अभी तुम्हें समाप्त कर देंगे । खबरदार” ।

टामी चिड़चिड़ाते लगा और भारी गले से बोला, “यू ब्लाडी अस्सिफार आई असलिडट यू। ब्लटी अस्सिफार, लेलमी गो”, टोनी ने खूब मजबूत स्वरों में कहा—“उनकार्क से समुद्र द्वारा भागते समय सबसे अधिक विपत्ति थी। तब भी इस नाले में लेट कर निरापद हो। तुम भी यहीं ठहरो।”

“छि: उनकार्क इसकी तुलना में एक सुन्दर बगीचा था। यू...।” एक अकथ्य गाली देकर टामी फिर उकड़ूँ होकर ऊपर चलने लगा।

त्रिम ने टामी के मुख पर एक भरपूर मुक्का रसीद किया। किन्तु उसने इसकी कोई चिन्ता न की। इस पर उसने उसके सिर पर एक बन्दूक का कुंदा मारा। इस बार टामी हतजान हो नाले की तह में जा गिरा। दोनों चुप होकर आगे की अपेक्षा करने लगे।

इधर युद्ध भी समाप्त हो चला था। अंग्रेज अन्त में पीछे हट गये थे। गन के अन्धकार में भागना होगा। यदि यह न कर सके तो आज़ाद दल के हाथों रक्षा नहीं हो सकती। आज़ाद दल अंग्रेजों के हेडक्वार्टर की ओर मुड़ा। शीत की रात्रि थी, चारों ओर गहरा कुहरा छाया था। ऐसा लगता था मानो पहाड़ भी ठंडक के मारे कम्बल ओढ़ कर सो गये हों।

रात्रि के उस अंधकार में उन्होंने अपनी खोज शुरू की। गाँव के सबसे ऊँचे स्थान पर तिरंगी स्वाधीन पताका फहराने लगी।

देवल ने अपने हेडक्वार्टर में बेतार से यह समाचार भेजा, “काफ़ी देर जूझने के बाद शत्रु के मोर्चे पर दखल कर लिया है। उन्होंने मोर्चा बहुत-से आदमियों के मरने के बाद छोड़ा। बहुत से फलों के टीन, मक्खन, जाम मिले हैं। बहुत-सा अस्त्र और गोला बारूद हाथ लगा है।

यह बेतार का समाचार जहाँ युद्ध का प्लान तैयार होता था वहाँ भी भेजा गया। वहाँ से आजा आई—“इस बार ब्रिगेड के साथ कोहिमा खाना हो जाओ। इस्फाल हाथ में आते ही शीघ्र ब्रह्मपुत्र पार कर हिन्दुस्तान के हृदय में पहुँच जाओ।”

“हिन्दुस्तान के हृदय में—हिन्दुस्तान के हृदय में।” देवल कूद पड़ा। और उमराव से लिपट गया। फिर रवीन से लिपट गया। बंगाल का हृदय फट पड़ना चाहता था। “उमराव तुम हमारे सरदार-ए-जंग हो।”

इस ओर फिर चारों ओर लाल प्रकाश आकाश में फूट पड़ा। ट्रेमर के बाल आकाश में फेंके गये। अंग्रेजों के कई बममार विमान आये थे। उन्हें पता लग गया था कि इस रात के युद्ध में हार हो गई है। किन्तु शत्रु निश्चय ही ग्राम के हेडक्वार्टर में जमा हो रहे हैं। उस स्थान पर बममारी करके उन्हें खतम करना है। किन्तु उसके पूर्व अपने छोटे हुए सैनिकों का पता भी तो लगाना है। इसी से वे बम न गिरा सके।

आजाद दल उस समय लौट रहा था। बचने का उपाय जंगली नाले में लेट रहना था। जापानी विमानों से आजादी दल के ऊपर रक्षाकारी हाथ रखने की कोई आशा न थी।

किन्तु इस सन्धानी लाल प्रकाश की सुविधा में अंग्रेजों की टाममन मशोन-गर्न लक्ष्य कर ली गई। उस समय नाले से अंग्रेज पक्ष के भारतीय सिपाही आगे बढ़े। वे उधर पहरा दे रहे थे।

दोनों ओर से बन्दूकें दगने लगीं। एक पेट भरने के लिए, पैसों के लिए लड़ रहा था, दूसरा देश स्वाधीन करने के लिए।

पहिला दल हार मान कर बोला, “हमें क्यों मारते हो। मत मारो। हम आप लोगों के भाई हैं। आप लोग क्या चाहते हैं?”

यह सुनकर उमराव झपट कर आगे आया और बोला, “अपनी बन्दूकें सौंप दो। लड़ाई बन्द करो।”

अंग्रेज दल का भारतीय सैनिकों का सरदार एक बी. सी. ओ. (वाइस-राय कमीशंड अफसर) था—वह बोला, “ठीक है, वही करेंगे, तुम चाहते क्या हो?”

उमराव आगे बढ़ने के लिए तैयार हुआ। देवल ने उसी क्षण बाधा दी और कहा, “आप सीनियर अफसर है। मुझे वहाँ जाने की आज्ञा दें।”

उमराव राजी नहीं हुआ। वह दृढ़ स्वरों में बोला, नहीं नहीं, “देवल मेरे आगे-पीछे कौन बैठा है। इस दुनिया में मैं बेकार सा हूँ, मेरे पीछे आँसू बहाने वाला भी कोई नहीं है।” इतना कहकर उमराव आगे बढ़ गया और नाले में कूद पड़ा। उसने चिल्ला कर कहा, “मैं तो केवल इन दोनों अंग्रेजों का खून चाहता हूँ। आपसे हमारी कोई लड़ाई नहीं है।”

इतना कहकर अपने कमरबन्द से पिस्तौल निकाल कर उमराव ने तीन

अचूक गोलियाँ छोड़ी । फट् फट् फट् ।

ऊपर की ओर से अव्यर्थ भाव से विमान नीचे जाकर बम वर्षा कर रहे थे । चारों ओर धड़ाम धड़ाम करते बम गिर रहे थे । कोई स्थान छूटा न था जहाँ बम-वर्षा न हुई हो । छोटे लोहे के टुकड़े, अग्नि की चिनगारियाँ, और बम का विश्वनाशी धक्का । मनुष्य का मांस, मशीन, कपड़ा, मंत्री, प्यार, भविष्य सभी कुछ बम ने एकाकार कर दिया । सभी कुछ ।

नेनाजी के हेडक्वार्टर्स से नया निर्देश आया है ।

इस तरह से युद्ध चलाने से कोई लाभ नहीं है । इन्टेलिजेस अर्थात् मामरिक गोपन तथ्यों की बातों पर और अधिक नजर रखनी होगी । आजाद हिन्द दल के पास अस्त्र-शस्त्र तथा युद्ध के साज सरजाम की बहुत अधिक आवश्यकता है । एक उदाहरण से इस बात का स्पष्टीकरण हो जायगा ।

फरवरी मास के अन्त में कर्नल शाहनवाज नेताजी के पास युद्ध की अवस्था जानने के लिए युद्ध के सीमान्त में हेडक्वार्टर्स लौटे । जिनके पास एंग्लेन नहीं है, उनके लिए फील्ड टेलीफोन का नहीं तो बेतार का प्रबन्ध करना होगा । इनके बिना युद्ध नहीं चल सकेगा । किन्तु आजाद हिन्द को यह सब बताया नहीं गया । एंग्लेन तो कही भी नहीं है । उस समय कर्नल सहगल कमांडर थे । पोपा पहाड की ओर से शत्रु को आगे बढ़ते जान कर उन्हें रोकने के लिए २ नम्बर की इन्फेन्ट्री रेजिमेंट भेजी गई । किन्तु उनके पास अस्त्रशस्त्र का हिसाब क्या था ?

उनके पास मुश्किल से तीन मार्टर और अस्सी राउंड गोलियाँ थी । भारी मशीनगन थी ही नहीं । जो मझोली मशीनगन थी उसके लिए चार मो के करीब गोलियाँ थी । प्रत्येक सिपाही के पास केवल इक्सठ गोलियाँ थी । बस इतने सामान से केवल दो घंटे तक युद्ध चल सकता था । इसके बाद का सहारा था हृदय में साहस और मुख में राम नाम ।

इम्फाल से १६ मील दक्षिणपूर्व पालेल ग्राम में अंग्रेजों का मजबूत अड्डा था । गांधी ब्रिगेड ने उनसे लोहा लिया । उनके पास मुश्किल से दस दिनों की रसद थी । साथ में किसी भी तरह का यानवाहन, बेतार यंत्र या टेलीफोन न था । कोई बटालियन जब लड़ने चला जाता था तो मानो अगस्त्य-यात्रा करता था । हेडक्वार्टर से उसका कोई योगायोग नहीं रह जाता था ।

इसी से इस बार नया निर्देश हुआ है कि युद्ध का कोई नतीजा नहीं दिखाई पड़ रहा है और सेना प्रायः एक ही जगह रुक कर रह जाती है ।

इसलिए अभी इन्टेलिजेंस के कार्य के लिए, देवल को कुछ मँजे हुए आदमियों को लेकर शत्रुओं की लाइन के पीछे चले जाना होगा। अंग्रेजों की लाइन को दखल करके बेतार के यंत्रों के 'मीटर बैंड' बदल कर उससे गोपन समाचार भेजना होगा।

इस कार्य के लिए देवल को तुरन्त तैयारी करनी होगी। अर्थात् जिस दिन बममार विमानों ने बम गिराये थे उसके दूसरे दिन ही। उनमें-से कुछ बम नाले के ऊपर भी गिरे थे। आकाश से अन्धकार में जब अग्नि बरस रही थी और आँखें चौधिया रही थी तब शत्रु मित्र का भेद नहीं किया जा सकता था। बम किसी तरह का पक्षपात नहीं करता। उमराव और उसके द्वारा मारे गये टानी और क्रिस को एक ही बम ने उड़ा दिया। किसी का कोई चिह्न न रहा।

उमराव नहीं रहा।

कोई बात ठीक तरह से समझ में नहीं आती थी। किन्तु मृत्यु तो चिरकाल से निष्ठुर है। सत्य से बिन्दुमात्र कम निष्ठुर नहीं। यह युद्ध एक दिन समाप्त हो जायगा। और कुछ दिनों बाद लोग इसे भूल भी जायेंगे। फिर निश्चिन्त मन में अपना घर संसार बसायेंगे। नये मित्र होंगे, नई हँसी कहानी उठेंगे से उनका संसार गूँज उठेगा। किन्तु उमराव नहीं होगा।

नये पथ पर खाना होने से पूर्व देवल एक बार उसी नाले के पास आ कर खड़ा हो गया। विगत रात्रि की बमबारी का धुँआ अभी तक साफ नहीं हो पाया था। चारों ओर मृत्यु के चिह्नों को देखते-देखते उसकी आँखें पथरा गई। इतनी मृतदेहों के बीच वह उमराव को खोज न सका।

देवल के हाथ में एक गुच्छा रोडोडेन्ड्रेन फूलों का था। इन्हीं फूलों की पहचान से उसने इस ग्राम में अंग्रेजों के अड्डे का पता लगाया था। और इसी स्थान पर महा आत्मबलि हुई थी।

लाल, खूब चटक लाल फूलों के गुच्छे को आकाश में सूर्य की ओर बढ़ा कर और फिर नमस्कार कर उसने उन्हें वहीं मिट्टी में फेंक दिया। थोड़ी देर वह वहाँ सिर नीचा किये खड़ा रहा। उसके बाद सिर ऊँचा करके स्वाधीनता युद्ध का सैनिक आगे चल पड़ा। "क्रदम क्रदम बढ़ाये जा" किन्तु "खुशी के गीत?" क्या उनका गाना संभव है?

हाय रे मानव हृदय—तुम्हारे लिए ठहरने का भी समय नहीं है। किन्तु रास्ता चलते-चलते उमराव की हँसी-ठट्ठे की बातें सारे समय याद आती रहीं। पैरों से जब चला न जाता तो तब मन को हल्का रखना अच्छा होता है। इसी से उसने सबको हल्का रखने का भार लिया था। वह केवल युद्ध का ही सरदार न था, सब के सुख-दुःख का साथी, सखा और समभागी था।

उसके समान योग्य यदि होना है और वैसा ही सहचर बनना है तो पता नहीं देवल को कैसे चलना होगा ?

यहाँ जो वाहिनी थी उसका सीनियर कर्नल देवल था। उस दल में बहुत से बंगाली थे। इस स्थान पर इन्टेलिजेंस अर्थात् सैनिक समाचारों को भेजने के लिए बंगालियों के पक्ष में एक सुविधा थी। नागा लोग मणिपुर के बंगालियों को दूर का आदमी नहीं समझेंगे, और कम सन्देह करेंगे। इसके अतिरिक्त नेताजी के विशेष रूप से भेजे दूत कहने पर विश्वास भी कर लेंगे। आसाम के सीमांत में बंगालियों को वेष बदल कर जाने में पंजाबी, मराठा या मद्रासियों की अपेक्षा अधिक सुविधा थी।

नेताजी के चुने हुए लोग कामकाज में खूब चौकस और विश्वस्त पात्र थे। नागापर्वत की राजधानी कोहिमा और मणिपुर की राजधानी इम्फाल को मिला कर एक सुन्दर रास्ता तैयार किया गया था। पहाड़ों के ऊपर टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता सर्प के समान चला गया था। केवल इसी मार्ग-द्वारा हिंदुस्तान से कोहिमा होता हुआ इम्फाल तक अंग्रेजों और अमेरिकनों की सेना का सामान और रसद पहुँचाया जाता था। आज़ाद हिन्द दल ने कोहिमा पर प्रायः दखल कर दिया था। उन्होंने पीछे से पहाड़ पर अक्समात हमला कर लिया था। कोहिमा के डिप्टी कमिश्नर पासी साहब सन १९१४ के युद्ध में मिलिटरी क्रॉस पा चुके थे। इस बार भी युद्ध में वे अपने बंगले के सामने अंग्रेजी सेना लेकर लड़े थे। किन्तु उसके बाद कहाँ छिप गये इसका किसी को पता न चला। न जापानियों को ही, न आज़ाद दल को।

उधर मणिपुर के अड़डे पर अभी तक दखल नहीं किया जा सका था। अंग्रेजी फौज़ खूब घिरी हुई थी। युद्ध चलता रहता था। वायुयान उन्हें आकाश से रसद और अस्त्र-शस्त्र पहुँचा रहे थे। जापान ने नेताजी से कहा था कि हिन्दुस्तान की भूमि पर पैर रखते ही जापानी एरोप्लेन आज़ाद

सैन्य-दल को आकाश-द्वारा सहायता पहुँचायेंगे । किन्तु जापानी 'जीरो' फ़ाइटर दल कहाँ चला गया ? उनके सूर्य के आलोक में झलमलाते स्पहले चेहरे कहाँ चले गये ?

नेताजी को बिना बताये हुए ही जापानियों ने अपने सब वायुयान अपने देश की रक्षा के लिए भेज दिये थे । यूरोप में हिटलर पीछे हटने लगा था । रूस वहाँ क्या कर बैठे इसका कुछ विश्वास न था । अमेरिका अनगिनती बममार विमान तैयार कर रहा था । किसी दिन भी जापान के ऊपर हमला हो सकता है । ऐसे समय क्या मित्र को दिये हुए वचन याद रखे जाते हैं ? सबसे पहिले अपनी जान बचाने की फिक्र की जाती है ।

आजाद दल के लिए सबसे जरूरी बात यह थी कि कोहिमा-इम्फ़ाल मार्ग पर दखल कर लिया जाय । कम-से-कम कड़ी नज़र तो रखनी ही चाहिए । और समय पड़ने पर बेतार के द्वारा अपने लड़ाकू दल को खबरें तो पहुँचानी चाहिये । इस समय यदि किसी तरह अंग्रेजों का दल कोहिमा के अड्डे को छोड़ कर 'रिड्न्फोर्ममेंट' अर्थात् और सिपाही साज सरंजाम इत्यादि, मणिपुर भेजने की चेष्टा करे तो रास्ते के पुल इत्यादि तोड़ कर उनका आना-जाना बन्द करना होगा ।

आजाद दल के इन्टेलिजेंस और सैपर एण्ड माइनर्स के सब काम एक ही आदमी करता था । ऐसा विशेषज्ञ और कहाँ होगा ?

अवन्मात् नीले आकाश के उस पार से कुछ पक्षी-से जाते हुए दिखाई पड़े । बाज़ के समान झपट्टा-सा मारते झुड बड़े चले आ रहे थे । साथ ही साथ जोरों में बो-ऊं बां-ऊं की आवाज़ें सुनाई पड़ने लगी, मानो यमदूतों का नारकीय गर्जन हो रहा हो । आकाश की छाती चीरते और गरजते हुए वे चले आ रहे थे । देवल का दल रास्ते के दोनों ओर नाले में लेट गया । चारों ओर धड़ाम-धड़ाम बम फटने लगे । डाइव बम गिराते हुए वायुयानों ने सब ओर मार करना शुरू कर दिया । किन्तु यह एक तरफ़ा मार थी । केवल एक तरफ़ा ।

अपना काम पूरा कर चुकने पर वायुयान फिर आकाश में मिल गये । आर्लपिन के मुख के समान अव्यर्थ निशाना मार कर उन्होंने रास्ते को छोड़ कर बम फेंके थे । कितने मरे या कितने मरने की तैयारी कर रहे हैं,

उसका हिमाव कोन रखे ।

जो कुछ आदमी बचे उन्हें देवल ने एक ओर जमा किया । जो अभी तक मर नहीं सके थे, उनके मुख में जल डालने की चेष्टा की गई । एक मिख सिपाही की पगड़ी को ताक कर वायुयान ने खूब निशाना बनाया । उसका सारा शरीर गोलियों से छलनी हो गया । बड़े कांट से किमी तरह मिर उठा कर उसने देवल से कहा “साहब, मुझे किसी जापानी के नाम मत गाड़ना । नेताजी की जय । भारतमाता की ” ।”

ठहरने का समय नहीं था । उन्हें आगे आगे चलना था । इस बार रास्ते को छोड़ कर जंगल से छिपते हुए जाना था । एक व्यक्ति बोला, “सर, इस लडार्ड में कोई “ग्लेमर”, कोई चटकीलापन नहीं है । पहिले की तरह न तो व्यूह रचना करके सैन्य-संचालन किया जाता है न ‘केबेलरी’ चार्ज ही होता है । बस बम से मरना भर रह गया है । सामने एक-दो हाथ हो जाने पर मर्दानगी का पता लग जाता ।”

देवल ने कहा, “सावाश । यह मरदों की बात है । लकटपन में गली के मोड़ पर दल साथ कर जास्तोने चटा कर जम्मर चीखें होंगे—कमबख्त एक बार निकल तो आ । हाथों के रहने मुँह से क्या बकता है ?”

इस मुख में भी सुवलटर्न (नीचे का अफसर) हँस पड़ा और बोला—“एक बात है सर, किन्तु कमबख्तों का दल था केयर हर्डियो का दुगला-पतला हिन्दुस्तानी। साठ का शोरवा पीकर ताकतवर अमेज का प्रवृत्ता नहीं ।” देवल मान्दवना देता हुआ बोला, “भाई, तुम भी तो उन दिनों के हिन्दुस्तानी नहीं हो । तुम आज पूरे मरद हो गये हो । तुम्हारी तुलना में आज अमेज नहीं ठहर सकता । उन दिनों के हिन्दुस्तानी की बात जाने दो । आज तुम उनसे बढ-चढ कर हो, बल में, चरित्र में, त्याग में ।”

थोड़ी देर बाद देवल फिर हँस कर बोला, “उनके शरीर के रंग को कपूर के समान बना कर भगवान ने सार्थक कर दिया । इतने दिन हम उनके अधीन रहे । आज मैं देख रहा हूँ कि कपूर के समान भय उड़ा जा रहा है । हमारा नया जन्म हुआ है ।”

इतने में कुछ लोग अपने केश और दाढ़ी खुजलाने लगे । कड़ी धूप थी । सर्वांग में पसीना बह रहा था । कई दिनों से किसी की दाढ़ी नहीं बनी थी ।

देवल की दृष्टि से कोई बात छिपी नहीं थी। किन्तु साथ के सैनिकों की रीढ़ सीधी रखनी थी। उनके 'मारेल्' को ठीक रखना दलपति का कर्तव्य है। इसी में उनकी बहादुरी है।

इस दशा में उमराव क्या करता ?

नहीं, उमराव के बारे में अधिक सोच कर मन को खराब करना ठीक नहीं, उसकी स्मृति से नवीन प्रेरणा लेनी होगी।

देवल सँहँकर सबसे बोला, "जानते हो कर्नल उमरावसिंह ने दाढ़ी न बनवाने के पक्ष में एक बार क्या कहा था ? उसने कहा था कि यदि जंगी कानून में दाढ़ी बनवाने का आजकल नियम हो, तब भी तीन ऐसे पक्के कारण हैं कि दाढ़ी जरूर रखनी चाहिए। नम्बर एक—दाढ़ी का साज सरंजाम लेकर चलने से फुरसत। नम्बर दो—जंगल की लड़ाई में मच्छर पिस्सू के हमले से मुँह को बचाने के लिए हाथों की कतई जरूरत नहीं। नम्बर तीन—और जो सबसे बड़ी बात है कि दाढ़ी दुनिया में बड़ी 'केमापलाज' है। हा: हा:। तुम्हारे दुश्मन तुम्हें पहचान नहीं सकेंगे। कोई भी हालीवुड फ्रैशन मार्का क्रीम चेहरे को इस सफाई से बदल नहीं सकती। इस सबके अलावा यह बिल्कुल पक्का बन्दोबस्त है। ज़रा सोच कर देखो तो कितने बड़े तत्व इस दाढ़ी में छिपे पड़े हैं।"

मत्यु का मंत्र जपते-जपते उनमें नये प्राण पड़ गये। दाढ़ी न बना सकने की क्षतिपूर्ति और कैसे की जाय ?

किन्तु ठहरने का बिल्कुल समय नहीं था।

एक संग दल बाँध कर चलने का भी उपाय नहीं था। शत्रुपक्ष के वायुयान उनका पता पा चुके थे। बेतार से यह खबर चारों ओर फैल चुकी है। कोहिमा से यदि उनका कोई दल मणिपुर जायगा तो पेराशूट से कुछ टहलदार अवश्य ही नीचे उतारे जायेंगे। इसके अतिरिक्त उनका ओ. पी. अर्थात् चौकसी रखने का अड़्डा इधर-उधर कहीं जरूर होगा।

इसलिये छोटी-छोटी टुकड़ियों में दल को बांट कर चलना होगा। सारा काम जल्दी करना है। किन्तु इसके बाद किस स्थान पर इकट्ठा होना होगा, इसकी भी व्यवस्था करनी है। देवल ने मानचित्र खोल कर सबको दिशाओं का ज्ञान करा दिया। दूर-दूर पर छोटे गाँव बीच-बीच में

मिलेंगे। किन्तु अधिकांश भाग जनमानवहीन जंगल है। अच्छी तरह से उन्हें बता दिया गया कि वे कहाँ हैं। सांकेतिक कोड भी अच्छी तरह से समझा दिये गये। हेडक्वार्टर और रेजिमेंट्स के बीच रेडियो बैंड का हिसाब ठीक कर लिया गया।

किन्तु खाना ? उसका क्या प्रबन्ध किया जाय। युद्ध के भय से लोग गाँव के गाँव खाली कर भाग गये थे। जिनके भागने का या कहीं और आश्रय का या खाने-पीने का कोई उपाय नहीं था वे ही किसी तरह पीछे पड़े रह गये थे। देवल ने फिर भी सबको सावधान कर दिया था। “इस बात को मत भूल जाना कि इन लोगों की सहानुभूति या सहायता के बिना तुम एक पैर भी आगे नहीं बढ़ा सकोगे। कर्नल कियानी की बात मत भूल जाना। वे दो सौ वर्गमील इलाके के गवर्नर थे, जिसे अब स्वाधीन कर लिया गया है। रसद के अभाव में वे लौटने को बाध्य हुए। किन्तु नागा कछार के गाँव के लोगों ने उन्हें लौटने नहीं दिया। उन्होंने कहा कि चाहे उन्हें खाने को न मिले किन्तु जिन्होंने उन्हें स्वाधीनता दिलाई है उनके खाने-पीने का प्रबन्ध वे अवश्य करेंगे। जो कुछ भी हो तुम्हें खाने को मिले उसे लूट कर मत लेना। बिना पैसा दिये मत लेना।”

थोड़ी देर रुक कर वह फिर बोला, “और हाँ—ये रुपये अंग्रेज सिपाहियों की जेबों में पाये गये थे, इन्हें खाने के मूल्य में दे देना। यहाँ ‘मिकी माउस’ करेंसी मत देना।”

“मिकी माउस करेंसी” अर्थात् जापानी छपे नोट।

घना अन्धकार।

आँखों में फ़ोल्ड टेलिस्कोप लगा कर देवल ने ग़ौर से सब तरफ़ देखा। कहीं-कहीं पर बहुत हल्का-सा प्रकाश दिखाई पड़ रहा था। छत के ऊपर बरसाती के समान एक छोटा-सा घर था। जंगल की लकड़ी और टहनियों से कुछ आसामी घर ऐसा बना रखा था—ठीक टीले की चोटी पर।

उसे देखते ही उसके मन में बहुत-सी बातें आयीं। कोई हड़बड़ी नहीं थी। हाथ में काफी समय था। देवल को अपने घर की बातें याद हो आयीं। मां की नज़र बचा कर अमृतबान से वह नींबू का अचार और अमरस चुरा कर उसी बरसाती में बैठ कर खाता था। उसके बाद स्कूल की पढ़ाई के

नाम पर सस्ते उपन्यासों की पढ़ाई वहीं होती थी। अन्त में उसे वहाँ सिने तारिकाओं की छवि के कलेण्डर सजाने की याद आई।

और ?

और क्या कुछ नहीं ?

क्या ? उस ट्राम से उतर कर चुपचाप उसी बरसाती में जाता था। और अधीर हाथों से सादे कागज़ पर पेंसिल से किसी की छवि खींचने की चेष्टा करता था।

देवल ने बार-बार चेष्टा की। किन्तु जीवन में कुछ भी खींच न सका। उसे पता ही न चला कि एक अनजान परिचयहीन महिला उसके मन में, अस्तित्व तक में इस तरह से समा गयी है। वह बात किसी से कही भी नहीं जा सकती थी। न उसकी आलोचना ही की जा सकती थी। उसकी छवि नेत्रों के आगे नाचती रहती थी। जान-पहचान और परिचय से दूर— उसमें कितनी ज्वाला और कितनी शान्ति थी।

अनमना होकर वह कागज़ पर छवि के स्थान पर चील बिलौटे खींचता-खींचता विश्व साहित्यकार मेटर्लिक का एक भाव लिख बैठा—“एक ऐसा समय आयेगा, उसके आने में देरी भी नहीं है, जब मनुष्य की आत्मा देह का सम्बन्ध छोड़ कर भी परस्पर अस्तित्व का समाचार पाती रहेगी।”

मगर देवल के मन में यह बात इस समय कैसे आई ?

समाचार ? समाचार की याद आते ही मन को एक धक्का लगा। नहीं। यह समय भावविलास का नहीं है। हेडक्वार्टर को यदि कोई खबर भेजनी हो तो देख लेना चाहिए।

किन्तु भेजने के लिए कोई खबर न थी। इस छोटी-सी कोठरी को अच्छी तरह से जांच कर देखना चाहिए। भीतर प्रकाश है। पर्दों की संधि से वह दिखाई पड़ता है। उसके भीतर निश्चय ही शत्रुपक्ष के लोग हैं। नहीं तो बममार विमानों के डर से वे अँधेरा रखते या पर्दों को अच्छी तरह खींच कर रखते। अंधकार में देवल ने, जहाँ बेतार का यंत्र छिपा कर रखा था उधर ताका, जैसे अंधकार में हीरा मणि की ज्योति ने उसे साहस दिया। भय काहे का, आगे बढ़ो। मैं पीछे पहरा दे रहा हूँ।

सामरिक पोशाक में पीछे की जेब में छिपी रिवाल्वर को देवल ने टटोला।

इस पोशाक में छिपने की सुविधा न थी। शत्रुपक्ष की पोशाक का लेना बाक़ी रह गया था। टीले के नीचे एक हवलदार को पकड़ कर उसके हाथ-पैर मुँह बांध कर डाल दिया गया था। किन्तु उसकी पोशाक पहनने को देवल की प्रवृत्ति नहीं हुई।

खूब धीरे-धीरे चारों ओर की निस्तब्धता को परखता हुआ देवल कुटीर की ओर बढ़ा। पेड़ के पत्तों से ढक कर टीले के ऊपर के घरों को रंग-बिरंगा कर 'केमाफ़लाज' बना दिया था। दूर से देखने पर कोई भी उसे मनुष्यों के रहने का स्थान नहीं समझ सकता था। रात के घने अंधकार में मिट्टी के तेल की कुप्पी रखी थी। उसने सोचा कि किसी मतलब ही से इस तरह प्रकाश का प्रबन्ध किया गया है। इसलिए और अधिक सावधान रहने की आवश्यकता है।

पर्दा थोड़ा खिसका कर देवल भीतर देखने लगा। एक कोठरी नहीं थी। कई छोटे-छोटे दर्बेनुमा कोठे थे। हर एक में मनुष्य थे, और उनमें तरह-तरह के यंत्र पुर्जे थे। कईयों को तो देखते ही वह पहचान गया—नये बेतार के यंत्र थे। कई तरह के कल-पुर्जे साज सामान थे। सारी आधुनिक व्यवस्था थी। मानचित्र, बैटरी, और बेतार टेलीप्रिंटर बिखरे पड़े थे। यदि कहीं ये सब हस्तगत कर लिये जायें तो गुरु-दक्षिणा अच्छी तरह चुकाई जा सकेगी—देवल वहाँ खड़ा-खड़ा सोचने लगा।

कुछ और बातों का पता लगाने के लिए देवल खिड़की से घूर-घूर कर देखने लगा। यह क्या—यह तो वैकाइयों की खाकी पोशाक दिखाई पड़ रही है। कहीं यह रात्रि की माया तो नहीं है? पहिले अवश्य कामरूप कामाख्या के देश में यह सब संभव था। किन्तु न वह युग रहा न वह देश। ऐसी कल्पना और चाहे जो कोई कर ले, आज़ाद हिन्द फौज का इण्टेलिजेंस अफ़सर कर्नल देवल नहीं कर सकता।

उसने अपने मन को इस चिन्ता से हटाना चाहा। पीछे की पाकेट में पड़ी रिवाल्वर को छू कर देखा।

अकस्मात् यह मन को क्या हुआ। एक बार कलाई में बंधी घड़ी को उसने देखा। अंधकार में कुछ भी दिखाई न पड़ा। किन्तु वह ठीक चल रही थी—टिक टिक टिक।

एक खिड़की के भीतर की सिटकिनी को टटोला। पाकेट से इलास्टिक रिंच बाहर निकाल कर उसने बाहर से सिटकिनी को खोल लिया। खूब चुपचाप धीरे-धीरे उसने खिड़की के अन्दर अपना मुंह किया, उसके बाद थोड़ा शरीर। उसके बाद सब।

एक कोठरी में—हाँ इसी कोठरी में मनुष्य की आवाज़ सुनाई दी थी। कितने लोग होंगे? सांस रोक कर देवल आवाज़ और इशारे की अपेक्षा करने लगा। नहीं, केवल एक ही आदमी है। उसके हाथ में कोई हथियार नहीं है? देवल ने हाथ में रिवाल्वर लिया और दबे पैरों से आगे बढ़ा। बीच का परदा खिसका कर तुरन्त कोठरी के बीच में चला गया। मिट्टी का फ़र्श था। उस पर शतरंजी बिछी थी। उस पर कैबिश की फोर्लिंग कैम्प चेयर पर पीठ किए हुए एक वाकाई बैठी थी।

देवल ने दृढ़ स्वरों में आज्ञा दी—“हैंड्स अप”।

साथ-साथ दो स्त्री हाथ सिर के ऊपर उठ गये।

देवल ने और आज्ञा दी—एबाउट टर्न—हमारी ओर मुख करो—किन्तु हाथ सिर के ऊपर ही रखना। खबरदार। नहीं तो गोली मार दूंगा।”

सिर ऊंचा किए द्रष्टभंगी से स्त्री घूम गई। दोनों हाथ सिर के ऊपर थे। यह क्या? यह क्या? देवल के मुख से एक दबा हुआ आर्तनाद बाहर निकल पड़ा।

और वह कुछ भी बोल न सका। ओठों के बीच से यदि कोई शब्द निकला भी हो तो उसे वह सुन न सका। कब ऊँची उठी हुई रिवाल्वर नीचे हो गई, कब सीधा खड़ा न हो सकने के कारण उसने लकड़ी की दीवार का सहारा ले लिया, यह वह जान न सका।

देवल को होश तब आया जब वाकाई ने उसे ग़ौर से देख कर पुकारा—तुम? देवल तुम? आई. एन. ए. के कर्नल?

आई. एन. ए. के कर्नल? जैसे धक्का खाकर देवल जाग उठा। उस रात को आकाश से बम वर्षा होने पर भी उसने ऐसा धक्का नहीं खाया था।

दोनों एक दूसरे की ओर ताकते रह गये। देवल और मिता। दोनों शत्रु-पक्ष के।

“तुम ? देवल ?”

“मिता ?”

प्रश्न किये जा रहे थे या उत्तर दिये जा रहे थे कुछ समझ में न आया । देवल का गला जैसे किसी ने दबा दिया हो । ऐसा लगता था, मानो उसी का रिवाल्वर किसी ने उसी के सिर पर रख दिया हो ।

हाथ की घड़ी टिक-टिक करती चल रही थी कि नहीं इसे भी देवल देख न सका । वहाँ गरमी नाम को भी न थी । किन्तु उसके मस्तक पर पसीने की बूँदें झलक उठीं । कैंबिश की फोल्डिंग कैम्पचेयर की ओर से मिता उसकी ओर बढ़ी ।

उसके बाद मिता ने चौकन्नी होकर बाहर चारों ओर देखा । बराबर की कोठरी से बाहर जाकर उसने भीतर का दरवाजा अच्छी तरह से बन्द कर लिया । फिर फुसफुसा कर जिज्ञासा की, “क्या पहरे पर हवलदार नहीं मिला ? या उसे समाप्त कर दिया ?”

शत्रुपक्ष के किसी आदमी को समाप्त कर देने की बात सुनकर देवल को होश आया । उसने उसी तरह उत्तर दिया, “उसके हाथ पैर मुँह बांध दिये हैं ।”

किन्तु इतने यन्त्र पुर्जों के बीच में यूनीफार्म पहने हुए जो वाकाई खड़ी है—मिता—वह भी तो शत्रु पक्ष की है ।

दोनों एक-दूसरे को देखते रहे ।

मिता ने जस्ते की बोतल से जल, थोड़े ‘चक’ बिस्कुट और पतले कटे मांस के टुकड़े देवल के सामने रख दिये । अत्यन्त शान्त भाव से और अधिकार के स्वरों में वह बोली—“जल्दी से यह सब खा तो लो । चाहो तो ब्रांडी भी मिल सकती है । और इसे अपनी जेब में रख लो । बीच-बीच में खाते रहना । विटामिन सी का अभाव तुम्हारे मुख पर साफ दिखाई देता है ।”

हाय ! देवल इस समय अपने सामने किसे देख रहा है । इतने दिनों का

स्वप्न, तने दिनों की प्रत्याशा। इतने दिनों के बाद मिता ने उसके मुख पर केवल विटामिन का अभाव ही देखा। देवल के ओठ सूख गये। उसने ऊपर का ओंठ जीभ से तर किया। फिर उसने नीचे के ओठ को तर करने की चेष्टा की। मानो मरुभूमि की ज्वाला को एक बूँद जल से बुझा देना चाहता हो।

मिता ही ने फिर बात शुरू की, “तुम्हारे पास अधिक समय नहीं है, देवल ! हमारे ओ. पी. के लोग दूसरी ओर पाँच मील दूर कहीं गये हैं। वहाँ एक नया ओ. पी. खोला जा रहा है। बेतार-द्वारा वहाँ से अभी बात-चीत हुई है। वे अभी रवाना होंगे। रवाना होने का संकेत शब्द भी वे अभी बता चुके हैं।”

मिता इतनी जल्दी, गले को दबाकर, व्यस्त भाव से बातचीत कर रही थी कि पता नहीं देवल यह सब सुन भी सका या नहीं।

वह केवल हतप्रभ होकर मिता की ओर देखता भर रह गया। मिता के मुँह, उसके नेत्र और उसकी यूनीफार्म की ओर।

मिता सब कुछ समझ गई। वह बोली, “खूब अवाक् होकर रह गये, यही न ? किन्तु सुनो देवल। तुम्हारे पास एक मूहूर्त का भी समय नहीं है। तुमने आई. ए. एन. में क्यों योग दिया, यह मैं जानती हूँ। मगर तुम निश्चय ही यह नहीं जानते हो कि मैं क्यों वाकाई में जूनियर कमांडर होकर यहाँ आई हूँ।”

देवल ने किसी तरह मुँह खोल कर उत्तर दिया, “क्या तुम भी मेरी तरह . . . तुम्हें देखने से . . .”

अत्यन्त व्यस्त भाव से मिता ने देवल की बात में बाधा दी और बोली, “नहीं नहीं, तुम भूल कर भी यह मत सोचने लगना कि अकस्मात् तुम्हें देखने की आशा लेकर मैं इस लड़ाई के इलाके में आई हूँ। मैं देश को स्वाधीन कराने के लिए भी नहीं आई हूँ। जापान के हाथों से देश को बचाने के लिए भी नहीं आई हूँ।”

“तब-तब—तुम वाकाई में क्यों आई ? क्यों इस घोर विपत्ति में पशुओं के समान सैनिकों के बीच में आई ? मिता, यह तुमने क्या किया ?”

अस्थिर होकर मिता के दोनों हाथों को देवल ने पकड़ लिया। हाथों की शिरा-शिरा में रक्तधारा तीव्रतम गति से बहने लगी। लाखों बातें कहने की

प्रबल इच्छा उमड़ पड़ी ।

मिता ने हाथ छुड़ाने की कोई चेष्टा न की । सम्मोहित के समान देवल को देखती रह गई, मानों रात को गहरी नींद से किसी ने उठा कर खड़ा कर दिया हो । मिता आधा पग पीछे हटी; बिना सोचे-विचारे, बिना चेष्टा के, बिना इच्छा के । प्रत्येक बार पीछे हटती थी, और आगे बढ़ आती थी । फिर एक बार हटी, मानों वे सब तार और बेतार के यंत्र मिता के पदक्षेप को नाप रहे हों और उन्हीं के नियंत्रण से वह पीछे हट रही हो ।

देवल अब तक चैतन्य हो गया था । विस्मय नहीं था, वेदना थी ! उसने गंभीर भाव से मिता के नेत्रों में अपने नेत्र डाल दिये । ऐसा लग रहा था मानों अतलान्तक महासागर के जल की गहराई नाप रहे हों । मिता के नेत्र असहाय एवं व्यथा के मारे चंचल हो उठे, भीरु छटपटाती वन-हरिणी के समान हो गये । वह मौन होकर रह गई । और प्रतीक्षा करने लगी कि देवल कुछ बोले ।

व्याकुल होकर देवल ने फिर जिज्ञासा की—“बोलो, मिता उत्तर नहीं दिया ?”

मिता और अधिक व्याकुल होकर बोली, “सब कुछ बता दूंगी । मगर वचन दो कि ठीक आधे घंटे बाद चले जाओगे । वे लोग डेढ़ घंटे के भीतर ही आ जायेंगे । नीचे हवलदार बँधा पड़ा है । तुम्हें ढूँढ़ने में देरी नहीं की जायगी । यह क्या सर्वनाश किया तुमने देवल ?”

“न—नहीं तुम्हें छोड़ कर मैं नहीं जाऊँगा, कहीं नहीं जाऊँगा । इतने वर्षों बाद तुम्हें देखा है । अब तुम्हें छोड़ कर जा न सकूँगा ।”

मिता विद्रूप हो उठी, “हाऊ रोमाण्टिक आर यू, देवल । चमत्कार । तुम इतना प्यार करते हो, कि जिसके लिए मन में इतना प्यार है, उसे नेत्रों के सामने हाथ के निकट पेड़ में झूलते देखे बिना शांति नहीं मिलेगी ।”

देवल चुप रहा ।

मिता ने व्यंग की मात्रा और बढ़ा दी—“या ऐसा लगता है कि जिसे प्यार करते हो, उसे ही फँसाना चाहते हो । जीवन में प्यार इतना बढ़ा हुआ लगता है कि सोचते होगे कि मरने में भी यदि सहमरण नहीं होगा तो उस की कीर्ति कैसे रहेगी ?”

दुःख के मारे देवल का मुख काला पड़ गया । वह बोला, “तुमने मेरी

कोई बात नहीं सुनी, भगाने ही में व्यस्त हो ।”

“हाँ, यह ठीक है । तुम्हारे अपने लिए नहीं, तुम्हारी आई ए एन के लिए, तुम्हारे नेताजी के लिए । सामरिक अफसर हो न ?”

देवल को याद आया कि एक दिन मिता ने अपने दोनों नेत्रों से उस की ओर देखा था—भरी पूरी दृष्टि से, बिल्कुल आत्मने-सामने होकर । उस दिन मिता के नेत्र, उसके हृदय में विन्चेस्टरराइफल की गोली के समान लगे थे । आज भी ठीक उसी तरह से मिता परिपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देख रही है ।

आई एन ए का कर्नल और बाकाई की जूनियर कमाण्डर । केवल देवल और मिता यही तो उनका सम्पूर्ण परिचय नहीं है ।

धीरे-धीरे देवल ने हृदय को मजबूत कर सिर ऊपर उठाया । उसने कहा, “तुम ठीक कहती हो मिता । मैं केवल देवल ही नहीं हूँ । उसके बाद मैं मिलिटरी अफसर हुआ । नेताजी की जय हो ।”

कागज के गिलास से जल पीकर देवल ने फिर जिज्ञासा की, “क्यों तुमने अपनी बात नहीं बतलाई ?”

“बतलाऊँगी । किन्तु पहले तुम कुछ खालो । तुम आई एन ए में क्या खाते हो, इससे मैं अनजान नहीं हूँ ।” यह कहकर खूब शांत मन से मिता ने एक टीन में भात गरम किया और उसके साथ थोड़े मास की तरकारी लेकर आई । अंग्रेजों की ओर से भारतीय सैन्य के लिये सब तरह का प्रबन्ध जापानी युद्ध के इलाके में सन् १९४४ से किया जा रहा था ।

कुछ मिनटों तक देवल चुपचाप मिता की ओर देखता रहा । वैसी ही सुन्दर गठी हुई पतली देह है । साफ सुथरी यूनिफार्म में उसकी कोमल सुडौल देह बड़ी सुन्दर दीख रही थी । केवल श्यामल रूप ही नहीं, मिता का व्यक्तित्व भी झलमला रहा था । इतने दिनों तक जगलो-पहाड़ों की धूल छानते-छानते देवल की नाक में पेड-पत्तों की गंध बस गई थी । आज वह गंध नहीं है । मिता को जो सौरभ घेरे हुए है, वही मानो देवल के मरण अभियान का साथी होकर रह जायगा । मिता जिस समय झुक कर कागज की हल्की प्लेट में मास डाल रही थी उस समय की उसकी बकिम भगिमा पृथ्वी के समस्त शिल्पियों की कल्पना को लजा रही थी । उसके हाथ कितनी फुर्ती

से और सुन्दर ढंग से चल रहे थे। वह जब देवल की ओर चकित होकर देखती थी तो ऐसा लगता था मानो समस्त अंधकार मिट गया हो। उसके चलने पर पैरों में ऊँची एड़ी के जूतों की गति गान के छंद रचते थे। वीर नारी; मिता केवल वरनारी नहीं थी।

जल्दी से मिता ने एक साउंड डिटेक्टर-यंत्र की चाबी खोल दी। बहुत सी जगहों में जो कुछ आवाजें होती हैं, उनकी हल्की प्रतिध्वनि इस यंत्र में सुनाई देती है। कौन जानता है कि लड़ाई के समय केवल जाना-पहचाना दल ही इस ओर आयेगा। इसका कोई ठीक ठिकाना नहीं। कोई अनजान टहलदारी दल भी तो आ सकता है।

किन्तु मिता जैसे एक यंत्र ही हो गई हो। यंत्र के समान वह सब कुछ चटपट कर रही थी। वह एक बार भी देवल की ओर देखने को नहीं रुकी। इधर देवल एक दृष्टि से उसे देख रहा था; उसकी दृष्टि उसके साथ-साथ घूम रही थी। वह सोचने लगा कि इतने वर्षों तक वह बचा नहीं रहा। यह बचना नहीं, मृत्यु है। प्रतिदिन के प्रति निमेष के सब कामों के बीच भी जीते जागते मृत्यु है।

मिता कागज़ की प्लेटों को एक बेंत की मेज़ पर रखकर आगे आई। देवल का स्वप्न भंग हो गया। जीवन कहाँ है, मृत्यु कहाँ है, स्वप्न कहाँ है। इस मुहूर्त्त में मिता ही एकमात्र सत्य है। मिता का हाथ धीरे से पकड़ कर अलग हटाता हुआ वह बोला, “अब अपनी बात कहो, मिता।”

“अपनी बात?” म्लान हंसी हँस कर मिता बोली—“अपनी बात कहने को है ही क्या? तुमने खाया नहीं। तुम्हें अभी भागना पड़ेगा।”

“खाता हूँ। तब भी तुम्हारे बारे में जानना चाहता हूँ। मिता शीघ्र बताओ। मुझसे सब कुछ कह दो। मेरे मन को संशय में झुला कर मत रखो।”

“तब मेरे बारे में सुनो। तुम भी तो प्रायः आज्ञाद हिन्द रेडियो से वक्तृता देते थे। मैं तुम्हारा गला पहचान लेती थी।”

मारे खुशी के देवल ने खाना छोड़ दिया और कस कर मिता के हाथ पकड़ लिये। धीरे-धीरे मिता ने अपने हाथ छुड़ा लिये। इशारे से जल्दी खाने के लिए कहा।

“तुम जब आज्ञाद हिन्द रेडियो में थे तो देश की सब खबरें जान लेते थे।

जापानी आ जायेंगे इस भय से शासकों ने बंगाल-देश के सब धान-चावल नष्ट कर दिये थे। समस्त नावें डुबो दी थीं। बस और लारियों को ज़ब्त कर लिया गया था। देश के सब आदमियों को एक साथ तो गोली मारी नहीं जा सकती थी। इससे उन्होंने धीरे-धीरे खाना बन्द कर बिल्कुल कमज़ोर कर दिया और उसे नाम दिया डिनायल पालिसी का। वह धोखा जापानियों के लिए था या बंगालियों के लिए इसका हिसाब किसी ने नहीं रखा। जानते हो, बंगाल में तीस लाख लोग खाना न पा सकने के कारण मर गये।”

“नहीं जानता, नेता जी ने तो बर्मा और श्याम से जहाज़ भर कर बिना दाम चावल भेजे थे। शत्रु अंग्रेज़ ने उसे जाने ही नहीं दिया।”

“दिया तो नहीं, किन्तु राशन का बन्दोबस्त उन्होंने ऐसा किया कि युद्ध चालू रखने के लिए जो दफ़्तर, गोदाम, कल-कारखाने थे, उनके अतिरिक्त जो लोग और जगह काम करने जाते थे, उन्हें राशन नहीं मिलता था। झुंड के झुंड लोग सरकारी आफिस में, अस्त्र तैयार करने के कारखानों में या सैनिक दल में, केवल राशन का चावल दाल कोयला पाने के लिए भरती हो गये। सब यह प्रार्थना करने लगे कि अंग्रेज़ों का राज्य स्थिर रहे, जिसमें बंगाल बच जाय। नहीं तो यह राशन भी बन्द हो जायगा।”

“तुम भी यही समझती हो ?”

करुण वेदना से देवल का गला रुद्ध हो गया। वह अपनी बात पूरी न कर सका।

“हाँ ठीक यही। कुछ दिन क्लब के मिलिटरी मेम्बरों के धन से राशन का प्रबन्ध हुआ। किन्तु वे उसका मूल्य करना चाहते थे खैर ये सब बातें रहने दो। इसके अलावा वे और अधिक सुविधाजनक रिसेप्शनिस्ट चाहते थे। क्लब की शकल, सूरत जल्दी बदल देना चाहते थे।”

“किन्तु तुम वाकाई क्यों हो गईं? वह सब तो मैं पूछ नहीं रहा हूँ।” अधीर होकर देवल ने प्रश्न किया।

मिता थोड़ी देर चुप रही। फिर धीरे-धीरे बोली—“मैं स्मार्ट थी, अंग्रेज़ी पढ़ी लिखी आधुनिका भी थी, किन्तु मेरे पास युनिवर्सिटी की कोई डिग्री नहीं थी। मां-भाई-बहन के लिए भोजन जुटाने के लिए सरकार के सप्लाई दफ़्तर की किरानी बनने के अतिरिक्त और कोई रास्ता न था। किन्तु उससे

भी इन अकाल के दिनों में इतने आदमियों का पेट कैसे भरता ।”

“किन्तु तुम्हारी जान पहचान इतनी थी कि किसी अफसर की प्राइवेट सेक्रेटरी तो हो ही सकती थीं । वह भी काफ़ी सम्मानित होता ।”

मिता और धैर्य न रख सकी । क्रोध से बोली—“डोण्ट बी ए कैड, देवल । खाना न मिल सकने के कारण रास्ते के दोनों ओर कतार की कतार भरे आदमियों की पड़ी रहती थी । चावल और कोयले की दूकानों में लोग अंधेरे में लाइन लगाये खड़े रहते थे । लड़कियाँ रास्तों में चल नहीं सकती थीं, उनके पास पहनने के कपड़े नहीं थे । उनके लिए निरापद सम्मानपूर्वक चलने का कोई रास्ता नहीं रह गया था । और तुम ने वक्तृता देना शुरू कर दिया कि किस काम में इज्जत है और किस में नहीं । नरक में जाय तुम्हारी जाति और इज्जत ।”

।।कुल भाव से देवल ने प्रश्न किया, “तब भी, तब भी कोई और रास्ता न पा सकने के कारण ही इस काम में आई हो, इस पर भी तो विश्वास नहीं होता । जीवन-संग्राम में तुम डूब जाओगी ऐसा भय भी तो नहीं है ।”

“तैरती ही रहूँगी ऐसा भरोसा तुम्हें किसने दिया देवल ?” करुण स्वरों में मिता ने उत्तर दिया ।

“नहीं, तब भी ऐसा लगता है कि इसमें कुछ और बात है ।”

मिता थोड़ी देर चुप बैठी रही । थोड़ी देर सोचती रही । फिर बोली, “तब सुन ही लो सारी बातें । तुम्हें कोई सुख न होगा, फिर भी जब सुनना ही चाहते हो तो सुनो । मैं जहाँ रहती थी वहाँ के करीब करीब सब मकान मिलिटरी ने चौबीस घंटे की नोटिस देकर रिकूजीशन कर लिये । कुछ थोड़ा-सा रुपया दिया । किन्तु कलकत्ते में रुपये से पत्नी मिल सकती है, मकान एक भी नहीं मिल सकता । जिस बस्ती में मैं उठ कर गई वहाँ पुराने मकान और छोटी तबीयतों के लोगों के अड्डे थे । काले अफ्रीकी सैनिक रोज़ रात को वहाँ चक्कर लगाते थे । दिन में रोज़ गंदी औरतें लाइन लगा कर खड़ी हो जाती थीं और ऐसे ताकती थीं जैसे, निगल ही जायेंगी । मनुष्य जाति से घृणा हो गई । युद्ध तो विदेश में हो रहा था । किन्तु देश में तो जाति का चरित्र ही समाप्त हो गया ।”

अत्यन्त मृदु स्वरों में सिर नीचा करके देवल ने कहा, “किन्तु घृणा

करके हार स्वीकार करने वाली तुम हो नहीं मिता ।”

“नहीं, वैसी तो नहीं हूँ । इसी से एक दिन गली में वाकाई की यूनी-फ़ार्म और ऊंची एड़ी का जूता पहन कर खट खट करती निकली । जूनियर कमाण्डर बनकर । मिस साहबा को सलाम करने के लिए भीड़ जमा हो गई । और क्या चाहिये बताओ ?”

धीरे-धीरे देवल ने सिर ऊँचा किया, “उहूँ, आँखों में क्रोध भर कर मिट्टी में भात खानेवाली तुम हो नहीं, मिता ! तुम इस सब से बहुत ऊपर हो, बहुत बड़ी हो ।”

ओठों को टेढ़ा करके हंसती हुई मिता बोली—“हाँ, ऐसा सोचने में सान्त्वना तो मिलती ही है ।”

“और सुख ?” देवल ने यह प्रश्न कर तो दिया, किन्तु उसके मन न पहिले ही से इसका उत्तर दे दिया ।

थोड़ी देर बाद देवल ने नीरवता भंग की और कहा, “किन्तु मिता, इस सबके पीछे भी कोई बात है जरूर । कोई व्यथा हो सकती है । कोई...”

देवल की बात काटती हुई मिता बोली—“तुम ठीक समझे देवल । एक और मनुष्य है । उसके बारे में आज कुछ नहीं बताऊँगी ।”

“ए... क... औ... र... म... नु... ष्य ?” ऐसा लगा जैसे किसी यंत्र ने इसकी पुनरावृत्ति की हो ।

“हाँ, वही । किन्तु उसके कारण तुम अपने मन को उलझाओ मत देवल ! भूल जाओ, वे सब बातें भूल जाओ । आज तुम आई. एन. ए. के कर्नल हो और मैं केवल “एलाई” दल की एक जूनियर कमाण्डर हूँ । अब थोड़ी देर बाद यही परिचय रह जायेगा । मन को चंचल मत करो देवल । फ़ार ओल्ड टाइम्स सेक ।”

टाइम ? समय ? वह तो अक्षय होकर देवल की कलाई में बँधा हुआ है । अनजाने देवल की दृष्टि अपनी कलाई में बँधी घड़ी पर पड़ी ।

मिता की दृष्टि से वह छिपा न रह सका । वह उठकर देवल के पास आई । उसके कंधे पर हाथ रख कर सन्त्वना भरे शब्दों में वह बोली, “किन्तु देवल, मैं बिल्कुल असहाय थी, बिल्कुल निरुपाय थी । उसी के लिए मुझे यह सब करना पड़ा । वह इस आसाम-बर्मा-फ्रंट पर भी आया है । वह तुम्हारे

विरुद्ध लड़ भी रहा है। उससे ...”

“समझा, समझा मिता। तुम ! और तुम ... हाय आज मैं तुम से मिला ही क्यों ?”

देवल ने उठकर खड़े होने की चेष्टा की। किन्तु उठ न सका। उसके दोनों पैर अवश हो गये थे। ठीक उसके मन की तरह।

मिता अत्यन्त करुणस्वरों में बोली, “देवल, क्षमा करो। मुझे क्षमा करो। मैं आज तुम्हें कुछ भी बताना नहीं चाहती थी। तुमने बार-बार पूछा, इसी से न जाने कैसे कह बैठी। मगर तुम निरुत्साहित मत हो। तुम वीर हो।”

वीर ? अकस्मात् देवल के मन को यह शब्द सुनते ही धक्का लगा। वीर ? हाँ इसी शब्द से गंगा तट पर मिता ने उसे संबोधन किया था। केवल वीर नहीं। मेरे वीर। वीर तो है ही। किन्तु जिसके नेत्रों में उसे वीर बनने की साधना है, उसका क्या वह आज कोई नहीं है ?

देवल उत्तेजित होकर उठा। वीर ? वीर ? वीर क्या कहीं दुर्बलों की तरह असहायों की तरह हार वरण करते हैं। वे मन के क्षेत्र में प्यार के युद्ध म भी वीर होते हैं। और मिता का मन हरण कर लेते हैं।

दृढ़ कंठ से वह बोला, “एक दिन तुमने मुझे कहा था—मेरे वीर। आज वह ‘मेरे’ कहाँ चला गया। मैं उसे ही ठीक करने का सुयोग चाहता हूँ। तुम मेरी ही रहोगी मिता, केवल मेरी ही। और किसी की नहीं।”

“वह कसे संभव हो, देवल ?”

इस बात को बिना सुने ही देवल बोला, “कुछ महीनों पहिले तुमने बहुत सोच समझ कर आल इंडिया रेडियो से मेरे पास खबर भेजी थी। क्यों भेजी थी ? क्या विपत्ति में दिमाग खराब हो जाने के कारण ? वह केवल मेरे प्यार के कारण ही तो। नहीं, मैं तुम्हारी किसी बात का भी विश्वास नहीं करूँगा। तुम हमें ही प्यार करोगी। तुम्हारी आज की बनावटी बातें भूल न सकूँगा, मिता।”

“प्यार ? यह तो बहुत बड़ी बात हो गई देवल ! तुम अभी निरे बालक ही हो। रेडियो से खबर मैंने इस लिए भेजी थी कि तुम्हारे मन को भरोसा हो। उसमें प्यार की तो कोई बात न थी। तुम्हें संसार का कुछ भी ज्ञान नहीं

है। कितना जटिल होता है मनुष्य का मन।”

सिर को झटक कर देवल आपत्ति करता हुआ बोला, “उसे होने दो। फिर भी प्यार एक सीधी और सरल-सी बात है। या तो प्यार होता है या नहीं होता है। इनके बीच में तुम्हारी सरीखी ‘आनेस्ट’ स्त्रियों के लिए कोई गांठ या खाई नहीं होती है।”

मिता म्लान मुसकाई। जैसे आसाम सीमान्त पर्वतों की चोटी पर सूर्यास्त की अरुण आभा हो। वह धीरे-से बोली, “मैं बिल्कुल ‘आनेस्ट’ भाव से बोल रही हूँ देवल। मैं तुम्हें प्यार नहीं करती। प्यार करने की बड़ी चेष्टा की। किन्तु मन को तुम्हारी ओर फेर न सकी। विश्वास करो देवल!”

देवल थोड़ा चीख कर बोला, “मैं सब समझता हूँ, सब समझता हूँ। मैं जिसमें फिर तुम्हारे पास आने की चेष्टा करके विपत्ति में न पड़ जाऊँ, इसी से ऐसी बातें कह कर तुम मुझे भुलावे में रखने की चेष्टा कर रही हो। किन्तु मिता, तुम्हारी दोहाई, मैं तुम्हारे पास आने की चेष्टा नहीं करूँगा। केवल एक बार कह दो कि मुझे प्यार करती हो।”

मिता चुप होकर रह गई।

जो इतना सरल है, इतना विश्वासी है, उसे ऐसी मिथ्या सान्त्वना देकर निश्चित मृत्यु के मुख में मिता कैसे भेज दे?

प्यार मनुष्य को उद्भ्रान्त कर देता है, मन को चंचल कर देता है। आज यदि देवल को ऐसी आशा देकर अंधकार के बीच में छोड़ दिया जाय तो—आनन्द, मिथ्या आनन्द की दलदल में असावधानी से उसके पैर फँस जायँगे। परन्तु यदि उसे शून्य मन से वापस कर दिया जाय तो उसके मन को आक्रोश होगा, सम्भवतः वह भाग्य को संभालने की चेष्टा करे। और शायद वह सावधान होना सीख जाय। शत्रु की दृष्टि बचा कर अपने को बचाने की चेष्टा करे”।

मिता को देवल से बहुत आशायें थीं। उसे आशा थी कि मिलिटरी से आने के बाद उसका मन पहिले से अधिक शक्त हो जायगा। नरम मिट्टी युद्ध की आग से पक कर मजबूत हो जायगी। वेदना की बातें सुनते ही वह टूट नहीं जायगा।

मिता के सामने देवल खड़ा था। गले के स्वरो में न कंपन था न

दुर्बलता। मिता के नत्रों में नेत्र डाल कर उसने पूछा, “तब तब, इतने दिनों तक मुझ झूठी आशा क्यों दी ? प्यार का स्वांग क्यों भरा।”

“आशा तो तुम्हें कभी नहीं दी थी देवल ! मैंने अपने लिए आशा की थी। सोचा था कि अपने मन को दबा दूंगी। तुम्हारे साथ के लिए अपने को भुला कर रखा था। प्यार करने की चेष्टा भी की थी। मैंने की चेष्टा और तुम गये डूब। उसे भी समझ गई।”

‘तब ?’ देवल शरीर के रोयें-रोयें से उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

“आशा की थी कि तुम्हारी तरह मैं भी सब कुछ भूल जाऊँगी, और परित्राण पा जाऊँगी। किन्तु अपने मन को लेकर तुम इतना अधिक तन्मय हो गये कि मेरे मन में उठ रहे द्वन्द्व को तुम ज़रा भी जान न सके। उसका सुयोग भी नहीं मिला। परन्तु यह आशा अवश्य की थी कि तुम्हें किसी दिन वास्तव में प्यार कर सकूँगी।”

“किन्तु... मिता तुम्हें मैं तो प्यार करता था। क्या यह भी मिथ्या है ?”

“...प्यार सहज है देवल। किन्तु बहुत प्यार पाने के लिए बहुत बड़ा भाग्य होता है।”

देवल कठोर होकर बोला, “ओ : तुम्हारी अभिज्ञता समझा ?”

सिर नीचा कर मिता ने उत्तर दिया—“वह ठीक है। मैंने पहिले एक मनुष्य को प्यार किया था। किन्तु उसके बारे में तुम्हें कुछ भी बता न सकी। उसकी नई जर्क-बर्क मिलीटरी यूनीफ़ॉर्म, नये क्रायदे के साथ गोरे अफ़सरों के साथ घूमना, क्लब में डिनर, डांस और स्त्रियों के साथ उड़े-उड़े घूमना इन सब ने मेरी आंखों को चौंधिया दिया। मेरा मन उसमें रंग गया। अब तुम पूछोगे कि मैं क्यों उस क्लब में काम करने गई, क्यों वाकाई होकर यहाँ आई।”

“...किन्तु मैं ?” देवल इतना बोल कर चुप हो गया। जैसे उसके पास कहने के लिए कुछ भी रह न गया हो।

मिता ने उत्तर दिया, “विश्वास करो देवल, मैंने तुम्हें प्यार करने की बड़ी चेष्टा की। अनेक बार चेष्टा की। मन के साथ बड़ी ज़ोर ज़बरदस्ती की। तब भी, तब भी... उसी को प्यार कर सकी... अभी तक।”

देवल चुपचाप सुनता रहा। उसका गला सूख गया। उसकी समझ में न आया कि उसके जीवन में कहाँ से ऐसा मर्मन्तिक आविष्कार हो गया। वह केवल मूर्तिवत् चुपचाप बैठा रह गया।

किन्तु चारों ओर युद्ध का वातावरण था, मृत्यु का निमंत्रण था। इस सब के बीच में एक योद्धा को जीवन के साथ अभिसार करने का समय कहाँ था ? देवल ने अपने को संभाल लिया और समवेदना के स्वरों में जिज्ञासा की—“किन्तु यहाँ उसके कारण रह कर कौन सा आराम उठा रही हो ?”

सिर नीचा झुकाये मिता ने उत्तर दिया, “मैं जानती हूँ कि वह मुझे जानता है, किन्तु प्यार नहीं करता। किन्तु प्यार करना ही यथेष्ट है। मैं भगवान् से प्रार्थना करती हूँ कि मेरा यह सौभाग्य अक्षुण्ण रहे। मैंने दयामय से कभी प्रतिदान की आकांक्षा नहीं की। प्यार—यही यथार्थ तत्त्व है। प्रतिदान न मिलने से कोई क्षति नहीं।”

“अब समझा कि तुम ने मुझ से यह बात पूरी तौर से खोल कर क्यों नहीं कही ? मेरा स्वप्न भंग करना नहीं चाहती थीं ?”

“हाँ, यही एकमात्र कारण था। मैंने देखा कि तुम्हारा मन कैसे जल पाकर धीरे-धीरे चारों ओर फूलों से भरे पौधे के समान लहलहा उठा। तुम्हारा व्यक्तित्व और मनुष्यत्व विकसित हो उठा। उसमें बाधा देना, रोक रखने की चेष्टा करना भी पाप है। जो वस्तु मेरे अन्तर को दहन कर रही थी, वही तुम्हें उज्ज्वल कर रही थी। उस आलोक को रोकना, उसे गुल कर देना, किस अधिकार से संभव था, देवल ?”

यह कहते-कहते मिता इतने धीरे-धीरे फुसफुसा कर बोलने लगी कि उसके स्वर ठीक तरह से सुने नहीं जा सकते थे। देवल की कलाई की घड़ी की टिकटिक उसके स्वरों से तेज सुनाई पड़ रही थी।

देवल के कान उसी ओर गये। उसने तुरन्त उसे खोल लिया। मिता समझ गई। वह बाधा देकर बोली—“नहीं ठहरो। वह तुम्हारे हाथ ही में रहेगी। मेरी बात सुनो—तुम अच्छी तरह भले-चंगे होकर लौटो। तुम इसके कारण अपनी चिन्ता करना। इच्छा से कभी भी निरर्थक विपत्ति में मत पड़ना। मुझे वचन दो—वचन दो देवल। मुझ से बोलो।”

“अच्छा, वचन देता हूँ, मिता। मगर कह कर भी उसे पूरा कर सकूंगा

इसका क्या ठीक ? इस युद्ध में हम लोग मशीन के सामने खड़े होने वाले पुतले हैं। किन्तु तुम भी वचन दो कि इस फ्रन्ट से अभी वापस लौट जाने की चेष्टा करोगी ? जिसे तुम प्यार करती हो, उसके लिए तो तुम्हें निरापद रहना ही चाहिए। फिर एक दिन उसे पा भी सकोगी।”

म्लान भाव से मिता बोली—वह नहीं होगा, देवल। मैंने इन यंत्रों की चलाने की स्पेशल ट्रेनिंग ली है। इसी से इस फ़ारवर्ड एरिया में, आग के इलाके में आ सकी हूँ। दूसरी वाकाई यदि वापस जाना चाहेंगी तो जा सकती है। किन्तु मैं किसी कारण से लौट नहीं सकती। तुम्हारे पीछे हट जाने तक वह बात ही नहीं उठती। किन्तु तुम हार जाओ यह प्रार्थना किस हृदय से करूंगी ?”

मिता ने जिस यंत्र की चाबी खोल दी थी, उसमें-से शब्द सुनाई दिये। “दुश्मन, मेमसाब, दुश्मन ने मेरे हाथ पैर बांध कर पकड़ रक्खा है। दुश्मन ! हौशियार !”

“अरे ! हवलदार ने मुंह खोल लिया है। जाऊँ उसे बन्दूक के कुन्दे से बेहोश कर आऊँ।”

यह कहते-कहते देवल उठ कर चलने को हुआ। मिता झपट कर उसके सामने आकर रास्ता रोक कर बोली, “खबरदार भूल मत करो। वह तुम्हें पहचान जायेगा। और फिर सब को मालूम हो जायगा कि तुम यहीं कहीं छिपे हुए थे। आधा घंटा हो भी गया। अब तुम जल्दी से चले जाओ। देर मत करो।

यह कह कर उसने देवल की पाकेट में कुछ खाने की चीजें रख दीं। और एक पानी की बोतल। “भगवान् तुम्हारा भला करे, देवल ! मंगल करे। मेरी बात याद रखना। जाओ, अब जाओ।” अपने हाथों से देवल को मिता ने अंधकार में ठेल दिया। अंधकार ऐसा था कि हाथ को हाथ दिखाई नहीं देता था। नेत्रों से कुछ भी देखा नहीं जा सकता था। वह अंधकार समस्त जीवन में छाया हुआ था। सारे मन को ढके हुए था। उसी अंधकार में मिता पीछे खड़ी रह गई।

और रह गये उसके नेत्रों में आँसू। मन का रुदन।

किन्तु रोने का भी समय कहाँ है ?

मिता को देवल वचन दे आया था कि निरर्थक विपत्ति में नहीं पड़ेगा । इस कारण उसे मिता से दूर चले जाना होगा । केवल दूर ही नहीं । यहाँ रहने के समस्त चिह्न भी उसे इस तरह मिटा देने होंगे कि मिता के दिल को किसी बात का ज़रा-सा भी पता न चल सके । शत्रु इस घाटी में है, इसका प्रमाण संत्री के पास है । किन्तु इस बात पर ओ. पी. अड्डे के लोग ज़रा-सा भी विश्वास नहीं करेंगे कि शत्रु संत्री को केवल बांध कर ही चला गया है । अवश्य मिता पर संदेह करेंगे । सारी बातें सुनना चाहेंगे, पूछ-ताछ भी खूब करेंगे । बंगाली स्त्री है न !

देवल थोड़ा धीमा पड़ गया । ऐसी दशा में मिता का समाचार जाने बिना जाया भी तो नहीं जा सकता ।

किन्तु वे यदि उसे ही पकड़ लें ?

फिर क्या उसके साथ मिता के योगायोग का संदेह नहीं होगा ? मिता को यदि अंग्रेजों ने विपक्ष का फ़िक्थ कालम, शत्रु-पक्ष का गुप्तचर, होने का संदेह भी किया तो सर्वनाश हो जायगा । प्रमाणों का अभाव नहीं होगा । अंग्रेजों का इमरजेंसी कमिशनर्ड अफसर देवल और आई. एन. ए. का देवल एक ही है, यह बात सहज ही में मालूम हो जायगी । देवल के पास रेडियो से मिता ने ख़बर भेजी थी । उसके बाद इस कलाई-घड़ी के बारे में उसका कितना हाथ है, क्या यह बात औरों को मालूम न होगी । इन सब के अतिरिक्त सबसे बढ़कर यथेष्ट प्रमाण तो यह है कि हम दोनों बंगाली हैं ।

नहीं । देवल को शरीर छिपा कर भागना होगा ।

किन्तु मन ? मन को कैसे छिपाया जायगा ?

ग़ला सूख गया । मिता की दी हुई बोतल को मुँह लगा कर उसने तुरन्त गट-गट कर थोड़ा-सा पानी पिया । प्यास बुझाने का पानी । मिता तुम्हीं मेरी प्यास का जल हो ।

टीले से उतरते समय देवल ने अपने को संभाल लिया । नहीं, मिता उसकी प्यास का जल नहीं है । वह प्यासा ही रहेगा । किन्तु मिता ने उसके लिए तो जल बचा कर रखा नहीं था । जिसके लिए रखा था, वह तो किसी दिन भी उस जल की ओर फिर कर देखने नहीं आया और न शायद आयेगा ; पीना तो बहुत दूर की बात है । या जो उस जल की ओर देख कर उसके लिए चिरपिपासित होकर बैठा रहता है उसके लिए वह जल केवल मरीचिका है ।

मिता की सान्त्वना की बातें याद हो आईं । मिता ने देवल के आलोक को रोका नहीं, गुल नहीं किया । उसके फले फूले व्यक्तित्व को विकसित होने की प्रेरणा दी । मिता ने केवल इतना ही किया । इससे अधिक और कुछ नहीं । केवल माया, केवल छाया, काया नहीं । मिता उसकी जाया नहीं होगी ।

किशोरावस्था में पढ़ी एक कविता याद हो आई :—

—नहीं तोड़ने की अभिलाषा

पुष्प खिलें यह चाव ;

वही सुरभि मिल जाय मुझे

औ अतनु अतल का भाव ।

इतनी विपत्ति और उत्कंठा के बीच में भी देवल हँस पड़ा । सत्य है मिता ठीक कहती है—केवल असंभव प्रकार का रोमाण्टिक है । 'फनी' हो जाता है । 'अतनु अतल का भाव' । हाय रे, कविता के भाव-विलास को तुम्हें सजा कर ढक कर रखना होगा । उसे बाहर लाने का तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है । अतनु । तपस्या में लीन महादेव के चांचल्य को जगाने के अपराध में मदन भस्म हो गया था ; इसी से उसका नाम पड़ा अतनु । यह सोचते ही देवल के मन में अग्नि की ज्वाला धधक उठी । ऐसा लगा कि उस अग्नि से मदन भस्म हो सकता है । देश के लिए तुम देह उत्सर्ग करते हो । किन्तु प्रिया के लिए केवल मन देते हो ।

नहीं, तुम वह भी नहीं कर सकते । देश के लिए सब कुछ देना होगा । सब कुछ रोक कर मन को संभालना होगा । इस आदर्श में भागाभागी नहीं चलेगी । और न कोई विचार, न कोई वितर्क चलेगा ।

शीघ्रता से देवल जंगल में घुस गया। टीले की तलाश म जाते समय जिस यंत्र को छिपा कर रख गया था, वहीं पहुँच गया। क्या वह बेतार से अपने हेडक्वार्टर को समाचार भेज दे कि 'यहाँ से पाँच मील दूर एक सन्धानी अड्डे में शत्रु हैं ?'

किन्तु उस अड्डे में मिता भी तो है। उसकी मिता न सही, किन्तु फिर भी मिता तो है ही। कैसे खबर भेज सकेगा ?

एक ओर वह है, उसका दल है, आज़ाद सैन्यदल है, देश है। दूसरी ओर मिता है... केवल मिता। उसकी मिता नहीं। फिर भी मिता।

सिर के ऊपर अनन्त आकाश अंधकार से भरा था। क्या कोई तारा इशारा दे रहा है। कैसा प्रकाश ? केवल एक उल्का किसी ओर आँखों के सामने से जाकर लुप्त हो गयी।

इस रात्रि में भी देवल के पसीना निकल आया। भगवान्, भगवान्, रास्ता दिखाओ। बताओ क्या करना ठीक है। कौन बड़ा है ? किस के लिए इस समय विश्वासघातकता करूँ ? विश्वासघातकता ? वह तो एक पक्ष के प्रति ही की जा सकती है। उसने आज़ाद हिन्द सैन्य की आईन में शपथ ली है कि देश को स्वाधीन करना होगा। मिता के शरीर को छू कर तो उसने किसी दिन शपथ नहीं ली है कि उसके सुख-दुःख में, जीवन-मरण में, देखने-सुनने का भार उसका है। इस तरह का दायित्व लेने के लिए मिता ने उससे किसी दिन कहा भी नहीं। ऐसी बात कहने वाली वह है भी नहीं। देवल के कर्तव्य का पथ केवल एक ओर है। मिता के प्रति किसी तरह के विश्वास को वह नष्ट नहीं कर सकेगा।

तब भी.....

देवल ने मन को समझाने की चेष्टा की। मिता केवल मिता ही नहीं है। वह शत्रुपक्ष की वाकाई है। केवल उसकी सहचारिणी नहीं। साधारण वाकाइयों की अपेक्षा युद्ध में उसका काम-काज बहुत ज़रूरी है। युद्ध के संबंध में उसका काम कई सेना व अफ़सरों से भी बड़ा है। उसके कामकाज पर शत्रुपक्ष की गतिविधि निर्भर करती है। केवल मिता नहीं। वह शत्रुपक्ष की है। केवल देवल की नहीं, देवल के देश की शत्रु।

तब भी.....

देवल ने फिर अपने को समझाया। एक मिता के चले जाने से अंग्रेजों के हजार आदमी बेतार के लिए आ जायेंगे। किन्तु देवल के चले जाने से आज़ाद दल को फिर देवल नहीं मिलेगा। बेतार को घर बाहर ठीक तरह से व्यवहार करने की शिक्षा तो किसी को नहीं मिली। यदि कहीं बेतार का यंत्र खो जाय तो उसके कारण समस्त टहलदार दल बेकार हो जायगा। मिता के ऊपर निरापद रहने से अंग्रेजों या अमेरिकनों का कुछ भी आये जायेगा नहीं। किन्तु यदि कहीं देवल पकड़ लिया गया या वह अपना कर्त्तव्य ठीक तरह से पालन न कर सका तो समस्त अभियान समाप्त हो जायगा। बैटरी के साथ बेतार के तार ठीक तरह से लगे हैं या नहीं देवल यह देखने लगा। युद्ध में द्विविधा की दशा सर्वनाश कर देती है। गोली छोड़ते वक्त उसके वज्रन की चिन्ता नहीं की जाती है। तर्क से सैनिक नहीं बना जाता। देवल वीर है, वीर की तरह कर्त्तव्य करेगा। उसमें यदि वह पकड़ा जाय या मारा जाय तो उसका दुःख क्या ?

पकड़ा जाय ? क्या मिता उसे पकड़वा नहीं सकती है ? अभी इच्छा करने से वह अपनी कोठरी से एक बार आधुनिक यंत्रों की सहायता से देवल के चारों ओर खोज करने के लिए आदमी भेज सकती है। देवल जानता था कि मिता वैसा नहीं करेगी। इसके लिए मिता के प्रति उसकी कृतज्ञता भी है। एक सैनिक की दूसरे सैनिक के प्रति सम्मानजनक व्यवहार की एक अलिखित रीति है। अपना ईमान और अपनी मर्यादा को बनाये रखना, फौज में सबसे बड़ी बात है। 'कोड आव आनर'।

ज्वाला बड़ी, कम नहीं हुई। एक ओर सैनिक के हिसाब से अपना कर्त्तव्य है, दूसरी ओर सैनिक के हिसाब से अपना ईमान है। मिता की बात छोड़ देता हूँ। अपने हृदय की बातचीत में उसे नहीं आने दूँगा। केवल स्वार्थ की ओर, केवल कर्नल देवल सिंह की ओर से सारी बात देखूँगा। सोच रहा हूँ। तब भी कोई किनारा नहीं मिलता।

इसके बाद देवल तुरन्त ठीक जगह जा कर खड़ा हो गया। इस बार.... इस बार....

अच्छा यदि मैं इस समाचार को भेजूं तो ऊपर टीले का साउंड डिटेक्टर इसे पकड़ लेगा। मिता ने उस यंत्र को देवल को बचाने के लिए ही खोल कर

रखा था, जिससे अकस्मात् कोई मनुष्य या दल टीले के निकट अनजाने न आ पड़े। अपनी रक्षाकारिणी को विपत्ति में डालने के लिए यह समाचार वह कैसे भेज सकता है ? मिता क्या सोचेगी ? मिता का मुख कैसा हो जायेगा । “मेरे वीर ।”

हाँ, अवश्य ही वीर । अपने देश के लिए अपने आदर्श के लिए जो अपनी प्रिया की बलि देने को तैयार हो जाय, उससे बढ़ कर वीर इस संसार में कौन होगा ?

ठीक बात है । इसी तरह सोचने से देश बड़ा होगा, स्वाधीन होगा । अपनी सुख-शांति उत्सर्ग करने पर ही जाति ऊँची उठेगी । दधीचि ने भी अपनी अस्थियाँ अपनी जाति को युद्ध जीतने के लिए दे दी थी । देवल तैयार हो जाओ । समझ लो कि तुम मनुष्य नहीं हो, मशीन हो ।

किन्तु मशीन चल न सकी । दूर पर एक प्रकाश का चिह्न दिखाई दिया । पहिले उसे किनारे लगाना होगा । थोड़ी दूर पर जंगल के उस ओर मड़-मड़ करती कुछ आवाज़ सुनाई दी । मनुष्य के पैरों की आवाज़ । सूखे पेड़ के पत्ते, बांस की झाड़ियाँ ये सब किसी के भारी चापों से जैसे पिसी जा रही हों । यहाँ बेतार का काम शुरू करना ठीक न होगा । मिट्टी से चिपट कर देवल खूब सावधान हो कर उप आवाज़ की ओर लक्ष्य करके देखने लगा ।

थोड़ी देर बाद देवल समझ गया कि कुछ विशेष गड़बड़ घोटाला होने वाला है । जंगल के उस पार एक बहुत छोटा-सा मणिपुरी ग्राम है । उधर से एक सिपाही आ रहा है । पोशाक देखने पर साधारण पदातिक सिपाही लगता था । शरीर को ढक कर उधर से आ रहा था । बहुत सावधानी से लुक-छिप कर । अर्थात् किसी बुरे मतलब से ।

ऐसी अवस्था में देवल का और पीछे हटना ठीक न होगा । वह यदि किसी खराब मतलब से आ रहा है तो उसमें बाधा देने से देवल का या आज़ाद दल का कोई लाभ न होगा । बल्कि वह जितना खराब प्रमाणित होगा, उतनी ही देवल को सुविधा होगी । इसके अलावा यदि देवल बाधा दे भी तो भविष्य में किस का लाभ होगा ? उस गाँव के लोग यदि उसे पकड़ लें और शत्रु के हाथों में सौंप दें तो निश्चय ही मोटी रकम की बखशीश मिल

सकती है । यह भी हो सकता है कि अकेला छिप कर आई. एन. ए. की सहायता करना चाहता है, इसी से पकड़े जाने के भय से साधू बना हुआ है । यहाँ ब्रिटिश दल कर्ताधर्ता है ; राजा के प्रति प्रजा को अनुगत और भक्ति दिखानी ही होगी । ऊपर से बखशीश मिलेगी । नहीं, देवल से कच्ची बातें न होंगी ।

तब भी वह प्रतीक्षा करने लगा । सिपाही को रातोंरात वापस फिरना होगा । शायद इधर ही आवे । इस जंगल में आने-जाने के लिए उसकी यूनी-फ़ार्म की बड़ी ज़रूरत पड़ेगी । अभी तक शत्रुपक्ष का एक भी यूनीफ़ार्म मिल नहीं सका है । इसके अलावा नये माडल की रिवाल्वर और कुछ गैलियाँ पा जाने की भी संभावना है ।

किन्तु यह राहजनी गांव के पास ही करनी होगी । टीले के हवलदार के साथ इसकी कहानी एक साथ मिला कर इसे कोई आई. एन. ए. या जापानी की समझेगा । अभी इसे गांव के किनारे ही पकड़ लिया जायगा । उसके लिए बहुत बड़ी खाना तलाशी भी शुरू होगी ।

गांव के किनारे ऐसा करने से लोग यह समझेंगे कि यह बदमाशी गाँव के आदमियों ने ही की होगी । और तुरन्त इस बदनामी की बात को दबाने की चेष्टा करेंगे । एक बात और भी है—भविष्य में आज़ाद दल की दोनों हाथों से अभ्यर्थना करने के लिए एक इलाका मन ही मन में तैयार भी हो जायगा ।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि मुझे उसका यूनीफ़ार्म चाहिए । उसके न होने से इस शत्रु-प्रदेश में किसी समय भी पकड़ा जा सकता हूँ । उसके पूरे माल के साथ कब्ज़ा करना होगा ।

इन विचारों के साथ उसे यह भी ध्यान आया कि टीले के ओ. पी. के बारे में अभी तक कोई खबर भेजी नहीं गई है । उसी समय देवल का सिर ठंडा हो गया । दो एक ओ. पी. कहाँ पर हैं यह क्या बहुत बड़ी खबर है ? खमस्त शत्रु इलाके में ऐसे ओ. पी. कई जगह होंगे । यह स्वाभाविक ही है । ऐसी छोटी और बेकार की खबर देकर बेतार की बैटरी खर्च करने से कैसे काम चलेगा । बैटरी और चार्ज करने के लिए यंत्र आई. एन. ए. फ़ार-वर्ड यूनिट के साथ भी नहीं हैं । जहाँ काम की ज़रूरत हो वहाँ, तो बचाने से

काम नहीं चलेगा। किसी बड़ी सेना के आने-जाने की खबर भेजने के कुछ मानी भी हो सकते हैं।

दो-एक संधानी अड्डों की खबर हेडक्वार्टर भेजने से लाभ क्या होगा ? अमेरिकनों का लिबरेटर वायुयान तो है नहीं, जो साथ-साथ रहता है और ऊपर से रसगुल्लों के समान बमों की धड़ाधड़.....

यह सोचते ही देवल सिहर उठा, मानो कोई सांघातिक चिन्ता हो। मिता मिता।

देवल के सम्मुख इस समय जो कार्य था उसका प्रकृत रूप खड़ा था। मिता के शत्रुपक्ष की होने के कारण यह ओ. पी. उसकी दृष्टि में इतनी विषम और भावनामय हो गई थी। उसके मन में जो इतना बड़ा द्वंद हो रहा था, उसके मूल में मिता थी। केवल एक ओ. पी. की खबर बेतार से भेज देने में आई. एन. ए. का क्या लाभ होगा। देवल का मन शांत हुआ। जंगल के किनारे शिकारी बाघ की तरह देवल उकड़ू बैठा रहा। उसके पास शिकार आये तो। उसके बाद इतमीनान से खबर भेजना संभव हो सकेगा।

अकस्मात् एक तीव्र चीत्कार सुनाई पड़ा। स्त्री का गला। किन्तु उस चीत्कार को पूरी तीर पर समझने के पूर्व ही गला बंद हो गया। निश्चय ही स्त्री का मुंह बन्द कर दिया गया है। देवल तीर की तरह सामने लपका। स्त्री को बचाना ही होगा। पीछे पड़ी रह गई सोच समझ कर और सावधान हो कर नाप-नाप कर पैर रखने की भावना।

अंधकार में इस छोटे गाँव में देवल कुछ भी समझ न सका। उसे ऐसा लगा कि घरों में कोई भी नहीं है। संभवतः यहाँ टीले पर मिलिटरी के रहने के कारण भय के मारे वे कहीं भाग गये हों।

शायद यह असहाय स्त्री भाग नहीं सकी।

किन्तु क्या उसके कोई आत्मीय स्वजन भी नहीं थे। न होने ही से तो एक सिपाही मकान तोड़ कर इस तरह का अत्याचार करने की चेष्टा कर सका ?

मगर इन सब बातों के सोचने का समय नहीं है। सिपाही तेजी से देवल की ओर लपका। उसके हाथ में टामीगन थी। देवल ने उसकी बंदूक की नली पर धड़ाम से एक कुन्दी खींच मारी। बंदूक का निशाना खाली जाने के साथ

ही अपनी ओर तेजी से आते हुए सिपाही पर उसने आक्रमण कर दिया । दोनों में भीषण गुत्थम-गुत्था शुरू हो गई ।

दिन के बाद दिन आधा पेट भोजन खाये हुए तथा लुक-छिप कर मार्च करने वाला देवल एक ओर और दूसरी ओर सामरिक नियम से राशन और विश्राम पाया हुआ ताजा हृष्ट-पुष्ट सिपाही । दोनों का मलयुद्ध देर तक चल ही नहीं सकता था, किन्तु देवल ने जापानी-बन्दी-शिविर में रहकर जापानियों से जो जुजुत्सू सीख लिया था, उसी की कृपा से अन्त में उसने सिपाही को मिट्टी में फेंक दिया । किन्तु उससे निस्तार नहीं हुआ । सिपाही ने तुरन्त उठ कर देवल को पकड़ लिया और भीषण रूप से धर दबोचा । दोनों लड़ते भिड़ते टामीगन के पास पहुँच गये । देवल ने फिर जुजुत्सु का पेंच मारा और सिपाही को गिरा कर टामीगन उठा ली । फट् फट् ।

पलक मारते ही सारा व्यापार हो गया । किन्तु इतने ही में खातमा नहीं हुआ । शरीर को धीरे-धीरे आगे बढ़ाता वह गाँव के सरोवर के किनारे आया । जिस यूनीफार्म की उसे इतनी आवश्यकता थी वह ले न सका । गाँव में जब वह यूनीफार्म ले जाते हुए पकड़ा जायगा तो अपने खूनी होने का हाथों-हाथ प्रमाण दे देगा । एक यूनीफार्म गई ।

खून की साक्षी रह गई स्त्री । यदि उसके बचाने के लिए खून किया गया है तो उसे इस स्थान में ऐसे असहाय छोड़ कर जाना ठीक नहीं । न उसी के पक्ष में, न अपने पक्ष में ।

इस बार भागने से पाला पड़ा ।

देवल स्त्री का हाथ पकड़ कर जब एक ओर आया, तब उसकी सांस तेजी से चलने लगी । किधर भागे पता नहीं, संपूर्ण इलाका अनजान है । किन्तु भागना तो है ही, उसे ही नहीं इस स्त्री को भी । नहीं तो रक्षा नहीं होगी । टीले से यह जगह कुछ दूर नहीं थी । उस दूर के ओ. पी. से लोगों के वापस आने में देरी नहीं है । उसके बाद मरे सिपाही की खोज यहीं से शुरू होगी और फिर हवलदार को बांधने वाले शत्रु की भी । यहाँ के समस्त टहलदार मार दिए जायेंगे ।

“आ: छोड़ो, छोड़ो बाबा ।”

स्त्री असहाय भाव से चिल्लाने लगी । क्या कह कर चीख रही है, उसे

सुनने की देवल के मन की अवस्था नहीं थी। किन्तु उसे इस तरह चीखने तो नहीं दिया जा सकता। देवल ने जोर से उसका मुख बन्द कर दिया।

स्त्री ने अपने को छुड़ाने के लिए हाथ-पैर चलाने शुरू किए। देवल ने उसकी साड़ी का आंचल उसके मुँह में ठूस दिया और उसे उठा कर भागा। गांव से बाहर जंगल में छिपने की जरूरत थी। उसके बाद सारी बात समझ-बूझ कर ठीक करके चला जायगा।

देवल जंगल में काफ़ी दूर चला जा चुका था। उसके साथ की स्त्री मूर्च्छित हो गई थी। यह नई विपत्ति आई। ऐसी अवस्था में इसे यहां छोड़ कर जाया भी नहीं जा सकता है। और यहाँ जितनी देरी होगी, पकड़े जाने की संभावना उतनी ही अधिक होगी।

किन्तु स्त्री की मूर्च्छा दूर करनी होगी। जल चाहिए। मिता के लिए जल की ओर उसने एक बार देखा। असमंजस में पड़ गया। मिता का दिया हुआ जल। मिता उसकी कोई नहीं है। फिर भी उसका दिया हुआ जल। अन्तहीन प्यास के लिए अमृतवारि। सोच-समझ कर उसने मन को ठीक किया और स्त्री की आँख और मुख पर छींटे मारे। उसके बाद बोतल में और जल भर कर लाया। थोड़ी देर बाद स्त्री होश में आते ही रोने लगी।

देवल की समझ में न आया कि क्या करे। उसने सोचा कि सबसे अच्छी बात तो यह होगी कि वह चला जाय। इससे कौन-सी भाषा बोले। स्त्री मणिपुरी थी या बहुत होगा तो आसामी होगी। इससे बंगाली बोलना चाहिए—मैं जाता हूँ।

• वह हिचकी ले कर और जोरों से रोने लगी। देवल और भी हतज्ञान हो गया। उसने कहा, “रोना बंद कर फिर बोलो। तुम मुझसे डर रही हो इसी से जाना चाहता हूँ।”

मुख फेर कर वह केवल रोती रही। देवल अस्थिर हो उठा—“यहाँ क्यों रो रही हो बाबा? यदि मेरा इतना भय है तो मैं जाता हूँ। और अगर जंगल में रहने से भय लगता है तो भाग चलने से क्यों घबड़ाती हो? तुम्हें यह नहीं मालूम कि तुम कितनी नाजुक हालत में हो।”

देवल ने देखा कि उसकी बात का कोई असर नहीं हुआ तो वह चलने को तैयार हुआ। किन्तु स्त्री के सामने मिट्टी से बेंतार के यंत्र को बाहर

निकालना क्या ठीक होगा ? कुछ सोच समझ कर स्त्री को अच्छी तरह देखने के लिए वह थोड़ा झुक कर अपना मुख उसके निकट ले गया ।

कृष्णपक्ष का चन्द्रमा उसी समय आलोक बिखेरता उदित हुआ । स्त्री ने धीमे स्वरों में पूछा, “आप बंगाली हैं ?”

“हाँ, मैं बंगाली हूँ । किन्तु खबरदार । मेरी कोई बात जानने की इच्छा मत करना । केवल किस निरापद स्थान में भाग सकती हो यह सोचो । आप मणिपुरी हैं ?”

“हाँ, मैं मणिपुरी हूँ ।”

“तब आपके भागने की जगह कहीं-न-कहीं होगी ही । आपको आगे करके ही मैं चलूंगा ।

थोड़ा आश्वस्त होकर और आंसू पोंछ कर स्त्री ने जिज्ञासा की, “आप निश्चय ही इंडियन आर्मी के नहीं हैं । किन्तु देखती हूँ कि यूनीफार्म तो पहने हैं ।”

देवल ने अपने को बचाते हुए एक अत्यन्त संक्षिप्त उत्तर दिया, “नहीं ।”

किन्तु इतने सहज छुटकारा नहीं मिला और प्रश्न हुआ “किन्तु यूनीफार्म तो पुरानी उतारी हुई सी लगती है । हिज़ मेजस्टीज़ फोर्स या जी. आई. में ऐसी पोशाक कोई नहीं पहनता ।”

जी. आई. अर्थात् अमेरिकन सैन्यदल ।

देवल चुप रहा । किन्तु फिर उसने प्रश्न किया, “उहूँ, ‘आकजीलियरी फ़ोर्स’ या ‘चिनडिट’ में भी ऐसी दुरवस्था नहीं है ।”

जनरल वानगेट बर्मा सीमान्त में चिन जाति के इलाके में जापानियों पर दृष्टि रखने के लिए एक दल को तैयार कर वहाँ ले गये थे । लुक-छिप कर बड़े कष्टों से खबरें वे अंग्रेजों को भेजते थे जिससे युद्ध की कई कठिनाइयाँ दूर हो जाती थीं । विन के अंचल के बैण्डिट अर्थात् डाकू—इसी से उनका नाम पड़ा चिनडिट । किन्तु जो ये सब खबरें और नाम जानती है वह साधारण गाँव की स्त्री नहीं हो सकती । इसके अलावा सिपाही का खून कराने में यह स्त्री एक हिसाब से फँस गई थी । देवल समझदारी से सोचने लगा ।

“मैं समझती हूँ, आप फिर आइ. एन. ए. में हैं ।”

अब चुप रहने से कोई लाभ नहीं। मन ही मन देवल तैयार हो गया। अब यह स्त्री और क्या कहती है इसकी प्रतीक्षा करने लगा।

“अच्छा फिर इससे आप को विपत्ति में रहने देना ठीक न होगा। मैं गांव लौटी जा रही हूँ। आप अपना रास्ता देखें। सावधानी से जाइयेगा।”

देवल तुरन्त उसके निकट खड़ा हो गया—“देखिए, आप अभी गांव वापस नहीं जा सकती है। रास्ते ही में विपद होगी। जानती तो होंगी कि सिपाही इस अवस्था में कितने भीषण हिंस्र हो उठेंगे।”

“क्यों? कल सबेरे मैं भी उधर खोज करने जाऊँगी। और कप्तान से सब कुछ जान लूँगी। मिलिटरी पुलिस कलकत्ते में कैसे अत्याचार बन्द करती है।”

“किन्तु यहाँ तो रक्षक ही भक्षक हो गये हैं। आप कलकत्ते रह चुकी हैं, वह दूसरी बात है। किन्तु आप पानी में रह कर मगरमच्छ से बैर कैसे कर सकती है?”

“किनारे भी तो बाध को छोड़ कर और कुछ नहीं है।”

“इसका मतलब?”

“इम्फल में थी। कलकत्ते में बम पड़ने के भय से पिता अपने देश ले आये। इम्फल में उन्होंने अपने तम्बू गाड़ दिये। आपने भी हमला किया। और लोगों के साथ मैं भी गांव जंगल में रहने चली आई। इधर भी सिपाही चढ़ आये। आप भी जब हाज़िर हो गये हैं, तो यहाँ भी लड़ाई होगी, कहाँ जाऊँगी? बोलो?”

“मैं भी वही बात पूछ रहा हूँ। और चाहे कहीं जाओ, गांव में फिर कर मत जाओ। नहीं तो कोई आशा नहीं है।”

“रास्ते का क्या भरोसा?”

“भरोसा नहीं। तब भी थोड़ा सोचो-विचारो। इस स्थान को उन्होंने अभी तक छोड़ा नहीं है। इसी से हम आ नहीं सकते। यह समझ लो कि इम्फल और कोहिमा दोनों स्थानों में हमने घेरा डाल दिया है। बीच में इस इक्कीस मील की जगह में आप कोई-न-कोई लुकने का प्रबन्ध कर लेंगी। सिपाही की लाश खोज पाने पर भी आपके साथ उसकी मृत्यु का कोई संबंध खोजा न जा सकेगा। इससे आप पूरी तौर से निरापद हैं।”

“और आप ?”

“मैं तो विपत्ति में फ़ांद पड़ा हूँ। मेरी बात और है—देवी !”

“उत्तमा, मेरा नाम उत्तमासिंह है। इससे आप भी चलो न मेरे साथ। आपको भी तो निरापद रखना जरूरी है।”

“बहुत धन्यवाद, उत्तमा देवी। आप पहिले अपने आत्मीय स्वजनों की चिन्ता करें। मैं अपना पथ स्वयं चलूंगा। केवल मुझे पोशाक बदलने की जरूरत है।”

उत्तमा चट पट उठ कर बोली, “ठीक बात है। अभी तक मैं आपके बारे में कुछ भी न जान सकी। मेरे साथ चलिये। सब घर खाली है। किसी न किसी घर में एक धोती और कुरता निश्चय ही मिल जायेगा। कोशिश से मिल जायेगा।

देवल ने प्रश्न किया, “और आपके घर में ?”

व्याकुल कंठ से उत्तमा बोली, “नहीं, नहीं, वहाँ से नहीं। पिता जी कल शाम को बाहर गये थे, अभी तक लौटे नहीं हैं। हमारी कल सबेरे ही चले जाने की बात थी। आज रात को यह काँड हो गया, कैसी विपत्ति में मैं घिर गई।”

थोड़ी देर ठहर कर बोली, “पिता जी को खोजू या चली जाऊँ। उनकी जगह आप पोशाक बदल कर चले जायें। मैं उनकी खोज करने के बाद भाग जाऊँगी।”

इससे तो देवल के नये तैयार प्लान बिल्कुल भंग हो जायेंगे। वह चटपट उत्तमा को समझाने लगा, “नहीं नहीं, उत्तमा देवी ! स्वप्न में भी वैसा नहीं करूँगा। आपके पिता निश्चय ही निरापद हैं। वह यदि लाश को खोज कर बाहर करें, तब भी आपके पिता का कोई नुकसान न होगा। कोई कारण नहीं है, कोई प्रमाण नहीं है। और इस मामले में हाथ होने से वे गाँव लौट कर नहीं आयेंगे।”

“जब वे लौटेंगे तब इस सिपाही के संबंध में उनसे बड़े जोरों से “इन्ट्रोगेशन” होगा। और कुछ करने का साहस नहीं होगा। किन्तु आप यदि उनकी नज़रों में फिर पड़ गईं, तो विपद है। आप भी पड़ेंगी और आपके पिता भी।”

म्लान भाव से उत्तमा बोली, “यह ठीक है। किन्तु उससे जानना भी तो जरूरी है, इसी से जाना चाहती हूँ। और निरापद जाऊँगी।”

उसके साथ देवल ने उसे आश्वासन दिया, “ऐसा मत सोचो, निश्चय ही घर में सब ठीक ठाक हैं, यह देखने वे जायेंगे और समझ जायेंगे कि आप किसी भले आदमी की सहायता से निरापद हैं। आपके साथ न होने से उन्हें भागने में आसानी होगी।”

देवल ग्राम के अन्धकारमय प्रांत में प्रतीक्षा करने लगा।

उत्तमा तुरन्त एक खाली घर से एक मणिपुरी धोती और कुरता ले आई। कुरता मणिपुरी छींट का था। बदन पर बिल्कुल ठीक नहीं बैठता था। किन्तु उत्तमा ने प्रसन्न दृष्टि से उसे देख कर अभय दिया, “इस युद्ध में बहुत-से लोग दरजी से सिले सिलाये कपड़े ले लेते हैं, यह थोड़ा ढीला है।”

देवल हँस कर बोला—“ठीक मणिपुरी तो लगता है न ? एक चन्दन के टीके की व्यवस्था और सुनी गई है।”

इस असमय में इस हँसी को उत्तमा ने तुरन्त उड़ा दिया, “आजकल के छोकरे चन्दन-टन्दन के टीके पसन्द नहीं करते हैं। आपकी अवस्था अधिक है, इसी से पूछ रहे हैं। खाने का ठिकाना नहीं, चाहिए सोने का पलंग।”

इसी बीच जंगल के उस ओर बहुत-सा प्रकाश, टार्च की रोशनी, थोड़ी भरभराती आवाज़ से ऐसा लगा कि कोई दल अधिक दूर नहीं है। अभी सांस रोक कर शरीर छिपा कर भागना होगा। अब तक बड़े यत्न से बचाई यूनीफार्म को छिपाने का भी समय नहीं है। उसे जला कर भागना होगा।

हाथ पकड़ कर भागती-भागती उत्तमा बोली, “याद रखना। तुम्हें मैं कलकत्ते में पढ़ते समय से पहिचानती हूँ। तुम कलकत्ते के लोग हो। युद्ध के समय किसी कन्ट्रैक्टर के पास काम मिलने की आशा में मणिपुर आये हो। और विनती कर कहती हूँ कि मुझे भी अपने निकट देश के लिए सहायता करने का एक सुयोग दो।”

“किन्तु, किधर चल रही हो, यह तो बताया नहीं ?”

“जिधर जाऊँगी, उसे जाते-जाते ठीक कर लूँगी। अन्त में जिस गांव में रासलीला होगी, वहाँ जाने की चेष्टा करूँगी। वे सब ग्राम आजकल निरापद हैं। लोग सन्देह कम करेंगे। बहुत से लोग होंगे। बहुत-से फालतू लोग भी मज़ा देखने, और पैसा कमाने आयेंगे। मणिपुरी नाच तो जानते हो न ? भक्तिरस

से सराबोर नृत्य है। एक बार में ही तन्मय हो जाओगे। उसके रहते कोई पकड़ न सकेगा।”

विपद ने उन दोनों के हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींचा। आई. एन. ए. के कर्नल और मणिपुरी तरुणी को।

यह कोई गुप्तचर का अड्डा तो नहीं है ?

अन्धकार में वे चलते-चलते यकायक रुक गये ।

यदि गुप्तचर न भी हो तब भी यह बात तो निश्चित ही लगती है कि किसी सन्धानी अड्डे के लोगो ने वहाँ अपना गोपन अड्डा कायम किया है । चारो ओर अंग्रेज और अमेरिकन सैनिको की छावनी है । और काफी चहल-पहल भी है । इन सब उलझनो से अपने को बचाते हुए किसी तरह देवल और उत्तमा निर्जन जंगल में आगे बढ़ते चले जा रहे थे । लेकिन यहाँ भी उजाड़ गाँव के रास्ते पर जब उन्हें टीले पर हल्का प्रकाश दिखायी दिया तो उसका अनुसंधान करने की आवश्यकता उन्हें प्रतीत हुई ।

देवल छिप कर भागा हुआ था । किन्तु तब भी युद्ध का काम तो करना ही है । इस निर्जन घाटी में वह शत्रुओ का कोई ब्रेतार का यत्र छीनने में सफल हो सकता है । उससे उसे अपने हेडक्वार्टर में समाचार भेजने की सुविधा हो सकती है । उसे एक आधुनिक जोरदार यत्र चाहिए । शत्रु के हथियार से ही शत्रु से लड़ना होगा ।

इसी से टीले के ऊपर कमरे की तलाशी उसे तुरन्त ही लेनी होगी । किन्तु टीले पर चले जाने से ही तो काम नहीं चलेगा । वह निरस्त्र है । यदि वह अपनी यूनीफार्म में भी होता, तब भी उसे थोड़ा-बहुत साहस होता । किन्तु क्या इसी कारण से स्वाधीनता-युद्ध का मैनिंग पीछे हटेगा ?

अन्धकारमयी रात्रि में अकस्मात् तारे के समान टिमटिमाता प्रकाश का कण दिखाई पड़ा । उस जंगल में शाल वृक्ष की आड़ से देवल और उत्तमा ने उस प्रकाश को अच्छी तरह से देखा भाला । यद्ध और भय के कारण उस इलाके से सभी लोग घरो को छोड़ कर भाग गये थे । इससे उन्हें ऐसा लगा कि वह निश्चय ही शत्रु का अड्डा होगा । जैसी जो कुछ वहाँ की अवस्था थी, उसे देखते हुए सिवाय शत्रु के वहाँ और किसी का होना संभव नहीं था ।

उत्तमा अड्डे के ऊपर जाकर सारी बात स्वयं देखना चाहती थी ।

यदि वहाँ काफी सैनिक होंगे तो एक मणिपुरी कन्या को देख कर विशेष सन्देह नहीं करेंगे। अधिक-से-अधिक यही समझेंगे कि कोई गाँव की लड़की भूले-भटके उधर आ गई है।

किन्तु देवल से यह कैसे हो सकता था कि उत्तमा को ऐसे भयानक स्थान पर भेज दे। विशेष कर युद्ध के इलाके में जहाँ मनुष्य, सभ्यता एवं मानवता का विनाश हो रहा हो, और उसे बिल्कुल भुला दिया जाय।

किन्तु उत्तमा ही देवल को टीले पर कैसे जाने दे। वहाँ के सिपाही देवल को देखते ही तुरन्त समझ जायेंगे कि वह वहाँ का आदमी नहीं है। मणिपुरी पोशाक पहने रहने पर भी मणिपुरी उच्चारण ठीक तरह से नहीं कर पाता है। और यह काम सज्ज है भी नहीं। यदि वह विदेशी है तो उसका परिचय-पत्र (आइडेंटिटी कार्ड) कहाँ है? इन सब बातों के न होने से सेना के बीच उसका जाना उचित नहीं है।

“किन्तु वहाँ सीधे-सादे मणिपुरी लोग भी तो रहते होंगे?”

“इसी से मेरा जाना निरापद है। तुम्हारे ऊपर सन्देह भी हो सकता है और जिरह भी की जा सकती है।”

“वह मैं सम्हाल लूँगा। सिपाही के सामने होऊँ, या साधारण लोग के सामने, उसके कोई मानी नहीं। मैं आड़ में छिप कर सारी बात देख समझ लूँगा। इतने दिनों से यही कर रहा हूँ। इसलिए इतना सोच विचार बेकार है।”

“तुम्हें केवल अपने बारे ही में तो नहीं सोचना है?”

देवल ने उत्तमा की यह बात सुन कर उसकी ओर देखा। उत्तमा—हाय उत्तमा। वह जो कुछ कहना चाहती है, देवल उसे अच्छी तरह समझता है। किन्तु समझने ही से तो इच्छायें पूरी नहीं हो जातीं।

ऐसा लगा मानों देवल ने उसकी बात सुनी ही नहीं। उसने तुरन्त अपना दायित्व प्रकट किया। वह एक सामरिक अफसर है। देवल अड़्डे पर शाल वृक्ष की आड़ से जायगा। और उत्तमा नीचे जंगल में अपने को छिपा कर चारों ओर चौकसी करेगी। यदि कोई शत्रुपक्ष का सिपाही दिखाई देगा तो वह संकेत कर देगी। यदि कोई गाँव का आदमी दिखाई पड़ेगा तो और होगियारी से छिप जायगी। किन्तु यदि गाँव का कोई आदमी टीले पर जाता दिखाई देगा, तब भी संकेत कर देगी।

किन्तु संकेत कौन-सा किया जायेगा ?

टीला बहुत छोटा है, स्थान निर्जन है। इससे टार्च के दिखाने से अथवा चिल्लाने से काम नहीं चलेगा। केवल जोर से मुँह से सीटी बजाई जा सकती है। किन्तु उसे भी लोग जान जायँगे। फिर ?

अन्त में सोच-विचार कर देवल बोला—“किसी पक्षी की बोली की नक़ल कर सकती हो ? उल्लू या तीतर की ?”

“कौए की बोली की नक़ल कर सकती हूँ।”

“किन्तु कौआ तो इस समय बोलता नहीं।”

“हाँ, याद आया ; कर सकती हूँ, कर सकती हूँ। पपीहे की बोली की नक़ल कर सकती हूँ। इधर खूब सुनाई देता है।”

देवल ने पपीहे की बोली सुनी न थी। कलकत्ते में पपीहा कहाँ बोलता है। शायद बोलता हो, किन्तु देवल ने कभी उस ओर ध्यान नहीं दिया। इसी से वह सुनना चाहता था।

“पिउ कहाँ ! पिउ कहाँ !!”

देवल ने उत्तमा से तुरन्त कहा कि दो बार बोलने से काम नहीं चलेगा। ऐसा भी तो हो सकता है कि वास्तव में कोई असली पपीहा ही बोल पड़े। इससे यदि सावधान करना हो तो तीन बार बोली बोलनी होगी। और आधे मिनट के बाद फिर तीन बार। यदि कोई विशेष आवश्यकता आ पड़े तो चार बार बोलना होगा। और कोई भी पपीहे की बोली सुन कर समझ न सकेगा। इससे एक बार अधिक बोलने पर संदेह भी नहीं कर सकेगा।”

देवल ने कमर से छोटी रिवाल्वर निकाल कर उसका निशाना अच्छी तरह से देख कर रख लिया। उसके बाद वृक्ष की आड़ से होकर टीले पर चढ़ गया।

कोई अनाड़ी चित्रकार लगता है। अपने मन से तसवीरों पर तसवीरें बना कर दीवार पर टाँग रखी हैं। दीवार भी कैसी। हल्के-फुल्के बेंतों के ऊपर पलस्तर देकर घर-सा बना लिया गया है। सिर के ऊपर छांजन की जगह टीन पड़ा है। ऐसा लगता है कि इसके मालिक के पास दो पैसे हैं। दरवाज़े और खिड़कियों से चोर आसानी से घुस सकते हैं। दरवाज़े में शीशे लगे हैं। मगर चोर या डाकू को हंगामा होने पर पकड़े जाने की कोई

संभावना नहीं है ।

रहने वाला कोई बुद्ध, पागल या कवि ही हो सकता है । किन्तु गुप्तचर नहीं है, इसका क्या प्रमाण । देवल ने अन्दर जाकर रिवाल्वर ऊँची की और पुकारा—हैंड्स अप । किन्तु उसके मुख पर कोई भय का चिह्न नहीं दिखाई दिया । वह केवल ताकता और घूरता रहा । ऐसा लगता था कि मुह की सारी बातें आँखें कह रही हो ।

किन्तु, देवल के पास नष्ट करने को समय नहीं था । उसने फिर कहा—
“हैंड्स अप, नहीं तो गोली मार दूँगा ।”

प्रौढ भद्रजन ने खूब शात भाव से कहा, “मेरे हाथ में इस कूची को छोड़ कर और कुछ भी नहीं है । हाथ उठा कर आपको दिखाऊँगा क्या ?”

किन्तु देवल के हाथ सामरिक शिक्षा में खूब पके हुए थे । वह उन बातों को भूल नहीं सकता था । उसने तुरन्त जल्दी मकान का कोना-कोना दृढ़ डाला । सारी अल्मारियों, मेजे दराज इत्यादि । फिर उसने जिज्ञासा की, “आप इस युद्ध के इलाके में यहाँ क्यों आ गये ? मैं सादे कपड़ों में यहाँ क्या करने आया हूँ यह आप अवश्य जानना चाहेंगे । ब्रिगेड के मिलिटरी इन्टेलीजेस विभाग को आपके बारे में खबर देना है ।”

आहत अभिमान भरे स्वरों में प्रौढजन बोले, “मैं निरीह शिल्पी हूँ । इस टीले के मकान में रह कर कुछ समय इतमीनान से काटना चाहता हूँ । अपने मन में बसी छवि को अकित कर रहा हूँ । गुन-गुन करता हुआ जगल में परिभ्रमण करता हूँ । मेरा समाचार जानकर ब्रिटिश आर्मी क्या करेगी, समझ में नहीं आता है ।”

देवल दृढ़ स्वरों में बोला, “गाँव के सभी आदमी यहाँ तक कि आपके नौकर तक भाग गये । आप अकेले किस कारण से रुक गये । मेरी आखों में धूल झोंक कर आप जापानियों को कोई खबर देते हैं ।”

भद्रजन विचलित नहीं हुए । बोले, “आपका चेहरा और बोली सुन कर ऐसा लगता है कि आप बंगाली हैं ।”

देवल क्रोध के मारे लाल हो उठा । “मैं बंगाली होऊँ या किसी अन्य देश का होऊँ, अपनी बात का जवाब चाहता हूँ । नहीं तो आपको पकड़ने के

लिए बाध्य हो जाऊँगा। यदि आप देखना चाहते हो तो मिलिटरी वारंट दिखाऊँ।”

प्रौढजन के नेत्र चमक उठे। “भाई, आप बंगाली है। जो बात आप समझ सकते हैं, दूसरे नहीं। शिल्पी के मन की बात एक सैनिक नहीं समझ सकता।”

थोड़ा ठहर कर वे फिर बोले, “इम्फल में माधुर्यमयसिंह का नाम बहुतों के जानते हैं। मैं इस निविड स्थान में, अपने बनाये घर में अपने मन की छवि आँका करता हूँ। इसे भी काफी लोग जानते हैं। किन्तु इस स्थान में चारों ओर से सेना का आना-जाना है, विमान बम गिरा कर मार सकता है, फिर भी एकाकी बयो रहता हूँ, इसका कारण कोई नहीं जानता। और मिलिटरी वाले तो समझ ही नहीं सकते। फिर भी मेरे भाग्य अच्छे हैं कि आप बंगाली हैं। आप समझ सकेंगे।”

माधुर्यमयसिंह ने अपनी वार्ता जारी रखी।

“उस रात को घर के भीतर एक महिला हाजिर थी। आपकी तरह वह भी उद्धत और असहिष्णु थी। उसकी भगिमा में असहाय विनती थी।”

“उसका नाम बताने में आपका कोई लाभ न होगा। किन्तु वह भी आपके देश की थी। कोहिमा में आई एन. ए. में उसका स्वामी लापता हो गया था। मारा गया या भाग गया, कुछ पता नहीं। दल-के-दल विदेशी लोग कोहिमा से इम्फल भागने की चेष्टा कर रहे थे। मिलिटरी और माल लाने वाले पक्के रास्ते पर वह भी चल पड़ी। असामरिक लोग गाँव से होकर भाग रहे थे। उन्हीं में एक यह नारी भी थी।”

“हरीकेन के हल्के प्रकाश में मैंने बन-हरिणी का मुख देखा। उसके कानों के बन फूलों में एक ‘म’ का अक्षर हिल रहा था। कमल के देश मणिपुर में रहते-रहते मैंने उसका नाम रखा मणिपद्मा।”

“उसके असली नाम को न जान कर आपने उसे यह नाम दिया। शायद इससे वह कोई बातचीत करे।” अविश्वास के स्वरो में देवल ने कहा।

माधुर्यमयसिंह इससे विचलित नहीं हुए। वे बोले, “नीचे गाँवों में खूब छीना-झपटी चल रही थी। इसी से अधिकार में साहस कर वह इस टीले पर

भाग आई। उसे यह आशा थी कि इम्फल की रेजीडेसी में पहुँच जाने से सरकारी कर्मचारियों की स्त्रियों को एरोप्लेन-द्वारा कलकत्ता पहुँचाया जा सकेगा। वह यहाँ केवल एक रात भर का आश्रय चाहती थी। कुछ समय बाद लोगो के साथ चली जायगी।”

“अपने सबध में उसने कोई बात नहीं बताई। भाग्य के विरुद्ध उसने कोई अभियोग नहीं किया। किसी असुविधा की बात भी उसने नहीं कही। वह अपने मन की महिमा मोन भाव से इस कुटी में छोड़ गई। मेरा यहा का आश्रमवास, यह घर सार्थक हो गया। किसी दाते या लिउनादों या विची को भी इतना मिल सका होगा, यह मुझे नहीं मालूम।”

“इसे बैठकखाना कहिए, स्टूडिओ कहिये, स्टडी कहिए, मगर उस रात को वह यही रही। बराबर के कमरे में जागती रही। मैं यहाँ बैठा बैठा मानो उसका पहरा देता रहा। किन्तु लगातार उसके विषय में सोचता रहा। कभी-कभी बीच की दीवार के बारे में भी सोच लेता था। किन्तु मेरा वह बीच का व्यवधान भी समाप्त हो गया।”

देवल उसकी इन बातों पर विश्वास नहीं करना चाहता था। चारों ओर प्राणों की बाजी लगी हुई थी। वह किसी समय भी पकड़ा जा सकता था। उसके जीवन का सब कुछ समाप्त हो जायगा। उसे इन सब कथा-कहानियों के सुनने समझने का समय कहाँ था।”

किन्तु क्या यह केवल कहानी भर है।

नहीं। कहानी न भी हो तो भी सुननी तो पड़ेगी ही।

अत्यंत सहानुभूतिपूर्ण स्वरो से उसने जिज्ञासा की, “क्या प्रथम दर्शन ही में आपका प्रेम नहीं हो गया?”

माधुर्यमय उदास कठ से बोले—“अब मेरी उम्र प्रेम करने की नहीं है। एक अपरिचित सपन्न विदेशिनी को एक रात ही तो देखा। प्रेम में तो नहीं पड़ा, किन्तु पड़ सकता था। सोचा कि इस सिंहद्वार को बहुत दिन हुए पार कर चुका हूँ। किन्तु यहाँ देखा कि मनुष्य के लिए तो चिरकाल से स्वर्ग-द्वार खुला आ है।”

“उससे आपने क्या अपने नवीन जागृत प्रेम की बातचीत की? कोई आभास दिया? कोई आश्वासन मिला?”

जैसे महासागर के उस पार से कोई बोल रहा हो, ऐसे गले से प्रौढ़जन बोले, “जब इशारा ही नहीं किया, तब उधर से जवाब क्या मिलता ?”

“वाह, सारी रात तो वह आपके घर में रही !”

“तुम युवक हो, वह बात समझ नहीं सकोगे । जिससे प्यार होता है, उसको दिन के बाद दिन, महीने के बाद महीने, ऋतु के बाद ऋतु में, कभी जान बूझ कर, कभी छिप कर, और मन को राग से रंग कर प्यार किया जाता है । और मैं ? समस्त जीवन भर एक छोटी-सी रात के लिए सोचता रहूँ ?”

थोड़ा इतस्ततः करके देवल बोला, “भौर की बेला में, विदा के समय थोड़ा आभास तो देते ।”

सिर नीचा कर उन्होंने उत्तर दिया, “कैसे देता । जिसने एक रात मेरे यहाँ आश्रय ले लिया, उसका प्यार भी तो मेरा ही हुआ । उसके मन को अपनी बात कह कर क्या भारी कर देता ?”

“यह बात तो बिल्कुल ठीक है । आप ठीक कहते हैं । किन्तु उसका नाम ठिकाना तो जान लेना उचित था । शायद उसकी किसी तरह और सहायता कर सकते ।”

“वह समस्या मेरी तो नहीं है । उसके लिए उसका समाज है, संसार है । प्रार्थना करता हूँ कि उसका स्वामी भी जीवित हो । उसके अनजाने में मुझे जो कुछ मिला, वह मेरा अपना ही है ।”

थोड़ा ठहर कर वे फिर बोले, “तब भी उसी आशा से यहाँ रह रहा हूँ । सुना है कि इम्फल में आई. एन. ए. ने हमला कर दिया है । तब भी वह इसी पथ से लौटेगी ।”

अन्धकार में आकाश की छाती को चीरती दबी, और गुनगुन करती आवाज़ सुनाई दी । ऐसा लगा कि कोई बममार विमान आ रहा है । उसकी आवाज़ सुनते सुनते देवल का मन कठोर हो गया । उसने तुरन्त लपक कर लालटेन बुझा दी । फुसफुसा कर उसने जिज्ञासा की, “ऐसा लगता है इसीलिए आप यहाँ रहते हैं और उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ।”

किन्तु माधुर्यमय के गले में कोई परिवर्तन नहीं हुआ । वे केवल इतना बोले, “तुम निरे बच्चे हो । यह सब क्या समझ सकोगे । जिसका सब कुछ

शुरू ही से समाप्त हो गया, वह क्या फिर वापस आ सकता है। जिसकी थोड़ी थोड़ी छवि मैं आँक रहा हूँ, और जो मेरे मन के बीच में बसी है, क्या उसका रूप कभी मुझमें खिल न उठेगा। उसका चेहरा भी ठीक तरह से देख न सका। तब भी मैंने सब कुछ देख लिया। शुरू से ही, जिसका समस्त मैंने प्राप्त कर लिया, वही मेरे लिए कितना बड़ा भाग्य है।”

गुम गुम गुम। झुण्ड-के-झुण्ड अमेरिकन लिबरेटर प्लेन सिर के ऊपर से चले गये। समझ में आया कि यहाँ युद्ध का कोई परिणाम निकलना है। जिसके सिर के ऊपर एरोप्लेन की छाया नहीं है, वह कोहिमा को दखल करके भी रख नहीं सकता। तब भी अन्त तक लड़ना तो होगा ही। वीरो के शास्त्र में पीछे हटा नहीं जाता।

देवल भी पीछे नहीं हटा। उस रात को वह और उत्तमा उस गाँव की ओर चल दिये जहाँ रास होता है। रास्ते में माधुर्यमय की कहानी की आलोचना करते जाते थे। वह मरणमय समार में प्रेम के बीच में जीवन को नवीन करने की कहानी थी।

देवल के कान आकाश की ओर लग थे। मानो कहीं आकाश से ऐरो-प्लेन आना चाहता हो। जितने ऐरोप्लेन अभी गये थे, वह उनकी सख्या का अनुमान करने लगा। यदि कहीं वह इसका समाचार भेज सकता तो कितना अच्छा होता।

अन्यमनस्क भाव से वह बोला, “भद्रजन गुप्तचर नहीं है। इस बारे में मुझे कोई सन्देह नहीं है। तब भी केवल शिल्पी या कवि भी नहीं है। किसी अजीर्ण रोग का रोगी है।”

किन्तु उत्तमा अजीर्ण की बात सुन कर क्रोधित हो गई। कहने लगी, “तुम पत्थर हो। क्या लड़ाई में जाकर मनुष्य दूसरे के मन की समवेदना समझ ही नहीं सकता है?”

देवल लज्जित होकर बोला, “केवल एक रात को थोड़ी देर देख कर।”

गभीर स्वरो में उत्तमा बोली, “वही यथेष्ट है। किसी-वि सी का निमिष भर में प्रेम संपूर्ण हो जाता है। यह तुम कैसे जानोगे? आशा है कि तुम्हारा भाग्य अच्छा है। किन्तु जिसका सौभाग्य क्षण काल ही में फूट जाय, उसकी बात भी मत भूलो।”

बोलते-बोलते उत्तमा का मुँह विवर्ण हो गया। अन्धकार क्रमशः भोर में परिणत हो रहा था। एक पक्षी कहीं से पुकार उठा—पी कहाँ, पी कहाँ।

देवल चौकन्ना हो कर खड़ा हो गया। गत रात्रि का यही संकेत था। मन में समस्त बातें याद हो आई क्या। इस पुकार का कुछ अर्थ है? क्या इसी से तो उत्तमा ने विशेष भाव से इस संकेत की तैयारी नहीं की थी?

देवल की कलाई में बँधी घड़ी टिक-टिक करती चल रही थी।

मणिपुरी रास । नाच और गान का आत्महारा उत्सव ।

“क्या होगा उपाय प्रिय सजनी ।’

नहीं । देवल ने असहाय अवस्था में पड़ी उत्तमा से इस बात की जिज्ञासा नहीं की ।

प्रश्न किया श्री राधा की सखी वृन्दा ने अपनी प्रिय सजनी ललिता से । मुख भंगी, उँगलियों के इंगित और मधुर संगीत ने इस आकुल प्रश्न को सबके मनो के ऊपर छा दिया ।

अब मणिपुरी रास की गोपन कथा होगी । जो नाचते हैं या गाते हैं, केवल वही नहीं, किन्तु जो देखते हैं और सुनते हैं, वे सब रास के भाव में विभोर हो जाते हैं । एक ओर अभिमान में मुँह फेरे श्रीकृष्ण खड़े हैं । दूसरी ओर श्री राधा बंकिम भंगिमा से देख रही हैं, जैसे कुछ भी नहीं हुआ । बाहर से देखने पर बड़ा शांत भाव लगता था । श्रीकृष्ण चले जायेंगे तो जाते क्यों नहीं ? हमारा उससे क्या आता-जाता है । किन्तु मन ही मन में वह अस्थिर और व्याकुल हो रही है । मृदु चरण के नृत्य चालन से वह अधीरता संभाली जा रही है । बीच में पांच-छः सखियाँ ह । उन्हें ही व्याकुलता दिखाई पड़ती है । वे ही इस मान-अभिमान के अभिनय में विह्वल हैं । वे ही अपने नाचने और गाने में दोनों जनों के इस मान-भंजन के लिए चेष्टा करती हैं । व्याकुल होकर एक दूसरे से जिज्ञासा करती हैं :—

“क्या होगा उपाय, प्रिय सजनी ?”

देवल तन्मय होकर क्या देख रहा है ? क्या सुन रहा है ? बंगाल में जो रास लीला होती है, उसमें मान-अभिमान का इतना प्रदर्शन, इतनी एक के बाद दूसरी छिपी मनस्तत्त्व की बातें नहीं होतीं । वहाँ दो घंटे के नाच में सब कुछ समाप्त कर दिया जाता है । मणिपुर की तरह सारी रात भर का कारबार वहाँ नहीं होता । इसी से क्या देवल इस नाच का आनन्द लेने आया ह ।

किन्तु वह गौर से किसे देख रहा है ? इस आवेग और उच्छ्वास से उज्ज्वल मुख भंगिमा को ? नहीं, भीनी मन्द-मुग्ध सुगंध बिखेरती चंपा पुष्प सदश अंगुलियों की मुद्रा को ? नहीं, नूपुर जड़ित सुन्दर चरणों की चंचलता को ?

देवल सब कुछ सहज स्वाभाविक चाहना से देख रहा है। किन्तु अकस्मान् यदि अन्यमनस्क भाव से चारों ओर झुण्ड-के-झुण्ड भीड़ किये बैठे हुए सिपाहियों के ऊपर उसकी दृष्टि जा पड़े तो क्या किया जाय ?

तुरन्त देवल की जांघ में एक उँगली का स्पर्श हुआ।

मणिपुर की स्त्रियों में परदा नहीं है। तब भी मन्प्य और स्त्रियाँ अलग अलग बैठते हैं। बड़ी भीड़ थी। इतने ठसे हुए लोग बैठे थे कि एक जगह पर स्त्री-पुरुषों की अलग करने वाली लाइन मिट गई थी। उसी जगह देवल और उत्तमा बैठे थे।

बातचीत में रासमंडली कही जाती है; हँसी-ठट्ठे में उसे रासमंडली कहते हैं। राधाकृष्ण के प्रेम को एक मण्डली ने तैयार कर बनाया है। सभी जैसे एक मन प्राण होकर भाव रास में डूब गये हैं। यह केवल नाच गान ही नहीं है, पूजा भी है।

और सिपाही मंडली भी तैयार थी। कई श्रेणियों के सिपाही रासमंडली को चारों ओर से घेर कर बैठे थे।

अवश्य ही इसमें उनका कोई खराब मतलब न था। गाँव के लोग भी निर्भय होकर बैठे थे। गांव की स्त्रियाँ भी। सबके एक साथ मिल कर बैठने से विपत्ति कम रहेगी। सिपाही बहुत ज़ोरों से हा हू करते हुए सबके सामने ताक रहे थे। इसके अतिरिक्त उनकी छावनी भी आस पास ही थी। इसीसे सब लोग भद्रभाव से नियम कायदा मान कर चलते थे। कोई किसी की चीज़ में हाथ नहीं लगाता था, न कोई किसी के घर में घुसता था। युद्ध के बाज़ार में जो युद्ध पर नहीं थे, उनके लिए यहाँ सबसे अच्छा प्रबन्ध था। इसके अतिरिक्त उन्हें खाने पीने को इतना अधिक मिलता था कि दो पैसे पैदा कर लेने का रास्ता भी खुला हुआ था। बाहर से आये बहुत से फालतू विदेशी लोग भी रहते थे। मिस्त्री, ठेकेदार, रसद इत्यादि का प्रबन्ध करने वाले लोग मणिपुर के लोगों का दिन रात मनोरंजन किया करते थे और उन्हें रसमग्न

रखते थे। सिपाही रुपया खर्च कर देखने आते थे। वे गाँव के लोगो से खुश भी खूब थे। रास देखने में वे निरापद थे विशेष कर जिसके साथ कोई महिला हो। मणिपुर में स्त्रियों का सम्मान बहुत अधिक किया जाता था।

पहिले जब भावभगी दिखाते हुए नाच शुरू हुआ तब सब गा उठे—“नाचत नागर नागरी साथ” तो उसका बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। देवल और उत्तमा आकर चुपचाप बैठ गये। किसी ने देखा भी नहीं।

उत्तमा की समझदारी की प्रशंसा करनी ही होगी। देवल मन ही मन भावमग्न हो सोचने लगा कि कैसे चमत्कारिक ढंग से इसने सारे सदेहो को दूर करते हुए वेश बदलवा कर यहाँ रात काटने का प्रबंध किया है। इस रास के उत्सव में सन्देश की आशंका कम है। ऐसी जगहों में सहज ही कोई सदेह नहीं उठता। किन्तु एक बार सदेह की सृष्टि हो जाने पर भयानक विपत्ति आ सकती है। फिर भागने का कोई रास्ता नहीं मिलेगा। एक बहुत दूर जगली रास्ते में बेतुकी सी जगह मिलिटरी अड्डा है। बाहर जाने में या भीतर आने में बड़ा हंगामा होना है, बड़ी छानबीन और जिरह की जाती है। ब्रिटिश सिहो का दल अड्डे पर चौकस जमा रहता है।

किन्तु ये बातें कहते हुए उत्तमा ने उसे सावधान कर दिया था—“खबरदार, वैसी बड़ी और भयानक बातों को मन में जगह भी मत देना। नहीं तो कहीं कुछ बेमतलब बात मुँह से निकाल ही बैठोगे। और होगा यह कि यहाँ लोग तुम्हें समझने में गलती कर बैठेंगे।”

“तो चन्द्रमा में भी तो गलती है।” खूब निश्चिन्त भाव से देवल ने उत्तर दिया।

“ठहरो, किन्तु चन्द्रमा को लेकर कारबार करते हैं केवल कवि।”

बाधा देता हुआ देवल हँस कर बोला—“और क्या कहना है?”

उत्तमा बोली—“तुम बोलो मत। तुम्हारी जाति है कवि और प्रेमिकों की। पागल भी इसी में होते हैं। मगर विशेषकर प्रेमिक।”

सिर हिलाता हुआ देवल बोला, “उहूँ, नहीं मानूँगा। यह मानता हूँ कि तुम कलकत्त में रही हो, इससे तुमने बहुत-से कवि देखे होंगे। कवि पागल भी हो सकते हैं। किन्तु प्रेमिक? यह कहाँ पा गई? बोलो तो?”

“क्यों, क्या ईर्ष्या होती है? सुनते ही?”

“नही, दबी ! केवल जिसके ऊपर मेरी ईर्ष्या है, उसके प्रेम में मैं मरूंगा नहीं। वह लड़ने वाला दुश्मन का सिपाही है।”

“चुप ! चुप ! पेड़ पत्तों के भी कान होते हैं।”

“वे निश्चय ही प्रेम की बातें छिप कर नहीं सुन सकते हैं। मगर ऐसा लगता है कि उनका मनोयोगपूर्वक छिप कर सुनने के कारण ही कई दिनों से तुम्हारी आलोचना में थोड़ा रस आ रहा है।”

उत्तमा स्वीकार करती हुई बोली, “इसके अतिरिक्त और भी कोई बात हो सकती है। ‘वेदर डिसकशन’ क्या चौबीस घंटे चलता रहेगा ?”

देवल हँस कर बोला—“समझ गया। तुमने एक ऐसा विषय चुना है, जिसमें कोई विपत्ति नहीं। और उस विषय को कलकत्ते में रहते समय तुमने खूब सोचा-समझा है। तुम भाग्यवती हो। देखता हूँ कि कलकत्ते का तुम्हारा कालेज का जीवन बहुत अच्छा कटा है।”

“तुम्हें निराश करूँगी देवल, मोटे तौर पर वैसा नहीं हुआ। ‘कोएजु-केशन’ के कालेज में पढ़ने से भी कोई लाभ नहीं हुआ। तुम्हारे बगाली बालक कविता पढ़ लेते हैं, किन्तु कविता कर नहीं सकते।”

“बातचीत कुछ ठीक समझ में नहीं आ रही है।”

“नहीं। बहुत साफ बात है।” सिर हिला कर उत्तमा ने प्रतिवाद किया।

“कलकत्ते में कई लाख बगाली हैं। किन्तु ऐसे हैं कितने, जिन्हें देख कर उनके साथ प्रेम में पड़ने की इच्छा होती है ? या उन्हें बुला कर काव्य आलोचना करने की ?”

इस भावना के बीच भी देवल हँस पड़ा और बोला, “सचमुच तुम्हारे लिए मेरे मन में बड़ा दुःख है उत्तमा। कालेज में लड़कों के साथ साथ पढ़ने पर भी उनमें से तुम एक तरुण को भी खोज न सकी ? मुझे उनके लिए बड़ा दुःख है, तुम्हारे लिए नहीं।”

“क्यों ? क्यों ?”

“वाह, वे तुम सरीखी तरुणी-रत्न के निकट आये और उसे जान न सके।”

देवल ने उत्तमा में ऐसी कौन-सी नारी का सधान पाया जो साधारण नहीं है। जिसका सग पाकर, मनोयोग पाकर, भाग्य भी कुछ कहना चाहता

है। उत्तमा क मन मे जैसे ज्वार आ गया हो। वह भी तो साधना का धन, अपनी खोज के योग्य रत्न है। किन्तु किसके लिए वह आविष्कृत होना चाहता है।

किन्तु ये सब बातें मन ही मन में रही।

उसे चुप बैठे देख कर देवल फिर बोला, “क्या तुम मेरी बात ठीक नहीं समझती ?”

नीरवता तोड़ती हुई उत्तमा बोली, “तुम्हारे मन में जितना मधु है, हृदय में भी उतना ही साहस रहना उचित है।”

सिपाहियों की ऐंठी मूँछों को देखते देखते देवल सोचने लगा। आज सब बातें उत्तमा के साथ परामर्श करके ठीक कर लेंगे कि किस तरह इस गांव से सामरिक खबरे जानने का काम शुरू करना होगा। यहाँ उनका बहुत बड़ा अड्डा है। ठीक लड़ाई का इलाका न होने से सिपाही खूब निश्चिन्त हैं। और रोज ही सैन्य दल का यातायात चलता है। मुखबिरी करके खबर बाहर भेजने की खब सुविधा है। उधर कोहिमा से लेकर इम्फल तक आजाद हिन्द दल कितना बड़ा है, इसका क्या पता ?

चारों ओर सिपाही घेर कर बैठे हैं और तन्मय होकर रास-नृत्य देख रहे हैं। इन्हें अपना जीवन युद्ध में उत्सर्ग करना है इसी से इस नाच को देख कर सार्थक हो रहे हैं। किन्तु स्थानीय लोग बीच-बीच में फुस-फुस करते हुए थोड़ी बहुत बातचीत भी कर लेते हैं। बरतन के बेचने से प्राप्त आमदनी की बातें भी साथ-साथ चल रही हैं। केवल देवल चुप है।

उसकी जाँघ पर उगली का एक मृदु स्पर्श हुआ।

चौक कर देवल उत्तमा की ओर देखने लगा। इतनी देर वह जो चुपचाप बैठा था वह केवल नृत्य रस का अच्छी तरह उपभोग करने के लिए ही।

उत्तमा फुस-फुस करती हुई बोली, “लोग अवाक् होकर देख रहे हैं कि एक बगाल हार्डकोर्ट देख रहा है।”

देवल ने उत्तर दिया, “किन्तु उसके बदले यदि वे बगाल को देखना शुरू कर दें तब क्या हार्डकोर्ट छोड़ने की बातें कहेंगे ?”

उत्तमा ने सिर हिलाया, “नहीं, वह भय तो नहीं है। कइयों को बताया है कि तुम्हारे साथ कलकत्ता कालेज में पढ़ते समय की जान पहचान है। तुम ठेके की तलाश में यहाँ घूम-फिर रहे हो। सब लोग अपनी-अपनी

चिन्ताओं में पागल हैं। इसी से कोई अधिक गौर से नहीं देखेगा। और देखो, कथावार्ता में दो चार पदावली भी होती जायें।

“निश्चय ही; अहा यदि वे यह गाते—

“अँगना आवें जब रसिया”।

आश्वासन देती हुई उत्तमा बोली, “गायेंगे, किन्तु देखो रास के रस में डूब जाना, किन्तु बहना मत।”

देवल ने उत्तर दिया, “डूबा ही रहूँगा।”

किन्तु बह गया एक तोंदल सिख सूबेदार मेजर। मण्डप के ठीक उस ओर देवल के सामने वह बैठा था। उसके मुख पर जाली से चिपकी दाढ़ी और मूँछ शोभा पा रही थी। परम आनंदित हो ताल देते हुए वह नाच की प्रशंसा करने लगा।

एक हाथ से वह अपनी जांघ पर ताल देने लगा। कभी-कभी उसकी ताल लक्ष्य भ्रष्ट हो जांघ के दायें-बायें भी पड़ जाती थी। उसकी लालसा भरी तिरछी दृष्टि बीच-बीच में नृत्य करती सखी के सुन्दर मुख के अतिरिक्त इधर-उधर और अंगों पर भी पड़ जाती थी।

समस्त मण्डप दस बारह ‘डैलाइट’ बत्तियों के प्रकाश से जगमगा रहा था। मण्डप के चिकने काठ के खंभे बहुत सुन्दर कागज के फूलों से सजाये गये थे। बत्तियों का प्रकाश सर्वत्र था। नाचने की जगह गोलाकार लकड़ी की सुन्दर और बारीक काम की हुई रेलिंग से घिरी थी। उसके बाहर चारों ओर घेर कर सब लोग बैठे हुए थे। सभी भक्ति में सराबोर थे।

मण्डप के बीच में सखियाँ नाच रही थीं। घेरे के पास बैठी दो प्रवीणा गा रही थीं। बराबर में रासधारी थिरकथिरक कर मृदंग बजा रहे थे।

“अच्छा, मृदंग क्यों?” फुस-फुसाते हुए देवल ने उत्तमा से जिज्ञासा की।

“वाह अच्छे रहे, इतना भी नहीं जानते कि मृदंग के बिना रास नहीं हो सकता। ठीक जैसे चन्दन के बिना दुल्हन नहीं सज सकती।”

“किन्तु देखता हूँ कि तुम्हारे देश में लड़के भी चन्दन का टीका लगाने का क्रमूर नहीं करते हैं।”

“आ: हा:। हमारे यहाँ के लड़के, लड़कियों का इशारा समझते हैं।

श्रीकृष्ण की तरह निष्ठुर या भोले बन कर सेज पर नहीं बैठते ।”

“यद्ग तो बड़ी आशा देने वाली बात है, इसमें सन्देह नहीं”, देवल ने कहा । और यह कहते-कहते उसने हवलदार मेजर की ओर एक बार चोर-दृष्टि से देखा ।

उत्तमा जल्दी से देवल के निकट खिसक आई और बोली, “विशेष आशा तो अवश्य नहीं है । असली बात तो नाच की जगह है । उसके बाद जो जिसका मार्ग हो उस पर चले ।”

“वही ठीक है । क्या तुम चाहती हो कि कोई रास्ते की बालू में अटक जाय ?”

“आहा, बालू कहाँ से होगी ? पक्की सड़के चलने को है ।”

“तुम चाहती हो कि सड़क छोड़ कर सजे-सवारे फाटक देख कर उनके बीच आश्रय लेना ठीक है । किन्तु घुमक्कड़ कहाँ जायेंगे ?”

“क्यों ? फाटक के भीतर भी भटकोगे ।”

“फाटक में भी तो कैद हो सकता हूँ ।”

उत्तमा के कान में खट से कुछ बजा । मन खराब हो गया । इतने लंबे नाच में देवल से थोड़ी देर बाते करके जी उबा देने वाले भाव में कमी कर लेती थी । जी तो ऊब ही रहा था । कारण यह था कि वह रास में मग्न सिपाहियों को भुला न सकी थी और न देवल के मन ही से सिपाही दूर हो सके थे ।

देवल ने यह भी लक्ष्य किया कि सूबेदार मेजर की ताल बीच-बीच में बेताल हो जाती है । इसके क्या अर्थ ? क्या नाच में बहुत अधिक मशगूल हो गये हैं ? या कोई और मतलब है ? या कोई संकेत है ?

चोर की दाढी में तिनका । देवल बार-बार इसी दिशा में सोच रहा था । सूबेदार मेजर को छोड़ कर और कोई सिपाही या अफसर उसकी ओर इस तरह से नहीं देखता । उसके मुँह के भाव काफी लिपे-पुते थे । इसी से उसने भी साहस करके सूबेदार मेजर की ओर एक बार अच्छी तरह से भरपूर नजर डाली । फिर हँस कर उत्तमा से बोला, “देखती हो, हमारे सूबेदार मेजर को नाच बहुत अच्छा लग रहा है । कैसी तारीफ करते-करते ताल दे रहे हैं । अच्छा अकस्मात् इतने लोग रोते-धोते लोट-पोट क्यों हो गये ?

उत्तमा ने परामर्श दिया, “जाओ, तुम भी आँखें पोंछते-पोंछते उस सूत्र-धारी के पास जाकर प्रणाम कर आओ ।”

देवल इस उपदेश का तात्पर्य न समझ सका । क्या जाने सब की दृष्टि छन्न ओर पड़े । उसने कहा, “ऐसे उत्तम नाच के साथ इतना रद्दी गाना गाया गया । यह क्यों ? बुढ़िया तो बहुत बुरी तरह से रो रही है ।”

थोड़े रूखे भाव से उत्तमा बोली, “जो कहती हूँ वह करो । तुम्हारे मन में इतनी भक्ति है फिर उसे दिखाने में इतनी लज्जा । और लौट कर थोड़ी दूर बैठना ।”

उसकी बात समाप्त होने के साथ ही देवल सिर नीचा करके और आँखें पोंछते-पोंछते गोल बाड़े के पास गया और सूत्रधारी के सामने अत्यन्त भक्ति भावमय साष्टांग प्रणाम किया ।

लौट कर वापस आते समय भी उसने अपनी आँखें अच्छी तरह से पोंछना शुरू कर दिया । केवल आँखें ही नहीं, उसका समस्त मुख भावविभोर हो रहा था और वह बार-बार पोंछ रहा था ।

लौट कर उत्तमा के पास बैठना क्या ठीक होगा ? पहिले जहाँ बैठा था वहाँ किसी की दृष्टि अधिक नहीं पड़ रही थी । उस समय सभी भंगिमा नृत्य में तल्लीन थे । यहाँ नशा कुछ फीका है और नाच कुछ हल्का हो गया है । बहुत-सी लड़कियाँ उत्तमा की तरह आधुनिका नहीं हैं । वह साड़ी के स्थान पर ‘फानूक’ पहन कर लड़कों से थोड़ी दूर हट कर बैठी हैं । वह वक्ष से पैर तक इस रंगीन डोरिया कपड़े में बड़ी सुन्दर लग रही हैं । किन्तु उसे देखने पर ऐसा लगता है कि अजन्ता स्टाइल की सुन्दरी के पास आजकल के फैशन की युवतियाँ बैठना पसंद नहीं करेंगी ।

उसके बैठते ही एक मणिपुरी भद्रजन ने देवल से बातचीत करना शुरू कर दिया । वह बोला, “इस भद्र महिला ने आपका परिचय दिया है । आप बंगाल से अभी हाल ही में आये हैं । और अवसर खो बैठने के कारण यहाँ रुक गये हैं । बड़े दुःख की बात है । फिर भी कुछ सोचिये मत । हमारे इस गाँव में आपको कोई असुविधा नहीं होगी । मैं बंगाली जानता हूँ; आवश्यकता पड़ने पर सहायता करूँगा ।”

देवल तुरन्त बोला, “नहीं-नहीं, कोई असुविधा नहीं है । यहाँ सब जगहों

से अधिक ठंडक है और लड़ाई का हंगामा भी नहीं है।”

भद्र जन ने कहा, “नहीं, वह तो नहीं है। मगर बनों और जंगलों में बड़े जोरों की खाना तलाशी हो रही है। सुना जाता है कि एक जापानी या उसके दल का एक हिन्दुस्तानी सिपाही उसमें घुस गया है। अब तक पकड़ लिया गया होगा। जापानी शत्रु क्या मणिपुर में छिप कर रह सकता है ? चेहरे से ही पता चल जायगा। आसामी या बंगाली पहचाना नहीं जा सकता।”

“आप ठीक कहते हैं, बिल्कुल सच बात है। किन्तु आश्चर्य तो इस बात का है कि एक आदमी गाँव में छिप कर करेगा क्या ?”

“नहीं, आदमियों के बीच में नहीं रह पायगा। उसका पीछा जंगलों-जंगलों में लोमड़ी की तरह किया जा रहा है। मगर उसमें हमारा आपका क्या सोच विचार। मैं मणिपुरी हूँ आप भी सीधे-साधे बंगाली हैं। बाबूगीरी के अलावा और कर ही क्या सकते हैं। सुनने में आया है कि उसका यूनीफार्म जोख करके यह अन्दाज़ लगाया जाता है कि उसकी लम्बाई बंगाली से अधिक है।

देवल का मन गाने की ओर था। वह बोला, “जाने भी दो भाई। उस हंगामे की बात सोच कर आज की रात का नाच नष्ट करने में कोई लाभ नहीं। “प्रिय सजनी” कैसी मीठी बात है। सुनते और सोचते ही हृदय नाचने लगता है। और कैसा सुन्दर नाच है आप के देश का गौरव है।”

यह कहकर देवल ने अपने को सँभालने की चेष्टा की। हमारा देश— इसके बाद अपना देश, उसके बाद यहाँ बैठ कर तरह-तरह की बातें उठ रही हैं। उसने तुरन्त ही उस बात में योग दिया, “उदयशंकर इस नाच को देख कर बहुत-सी बातें सीख सकता है।”

भद्रजन यह सुन कर भावों में विभोर से हो गये। बन्द किये हुए नेत्र धीरे-से खोल कर बोले, “ऐसा लगता है आपने उदयशंकर को देखा है ? देखने योग्य है भी। आप कलकत्ते के बंगाली हैं, उदयशंकर, रविठाकुर, शरत्चंद्र इन सब को तो आपने देखा ही होगा। एक-से-एक बढ़ कर बंगाली हैं, चित्तरंजन और सुभाषबोस ऐसे क्या यहां कहीं दिखाई पड़ सकते हैं।”

किन्तु देवल यह बात पूरी तौर से सुन न सका। वह अपनी ही कहता गया—“उदयशंकर का नाच—वह तो ‘वंडरफुल’ है। किन्तु उसका

कारण यह है कि उसने आपके नाच में थोड़ी कांट-छांट कर बदल दिया है। तभी तो देखिए आप की यह चंद्रावली इस तरह से लीला भरे हाथों से उंगलियां इस तरह घुमा कर रह जाती है—यह क्या उदयशंकर के दल की कोई लड़की कर सकेगी ? और इतने लोगों की भक्ति, इतना अधिक प्राण इस नाच में ही पैदा होता है। स्टेज के ऊपर कहीं इतना सब हो सकता है ?”

भद्रजन पीछा छोड़ने वाले नहीं थे। उन्होंने जिज्ञासा की, “ऐसा लगता है भाई, तुम विदेश भी जा चुके हो और हिन्दुस्तान के बाहर की बातचीत कर रहे हो। ‘बाल’ डांस की बात जाने दो मगर उनका ‘फोक’ डांस भी क्या ऐसा ही होता है। किन्तु बाली लोगों का डांस और बर्मी स्त्रियों का डांस देखो। मलय, स्याम इत्यादि में कैसा चमत्कारिक नाच होता है। सुनते हैं कि राधाकृष्ण को लेकर और ठीक मणिपुरी की तरह सुन्दर उंगली निर्देशन वे भी कर लेते हैं। वह सब तो आप ने देखा ही होगा ?”

नहीं, देवल ने वह सब नहीं देखा था। वह तो केवल उधर बैठे सूबेदार मेजर की तोंद और उनका जांघ पर टक्का टर-टर टक्का नाच की ताल देते हाथ के अलावा कुछ भी नहीं देख रहा था।

तब भी वह खूब स्वाभाविक गले से बोला, “भाई, मैं साधारण घर का आदमी हूँ। बर्मी और बालियों का नाच कहां से देख सकता हूँ। एक उदयशंकर का नाच देखने ही में कलकत्ते में तीन दिन तक व्यू लगाना पड़ा था।”

भद्रजन अत्यन्त शिष्ट और सहानुभूतिपूर्ण था। उसने कहा, “हाँ यह तो है ही। इसी से ऐसा लगता है कि आप के शरीर का ऐसा सुन्दर रंग धूप में जल कर काला पड़ गया है। नहीं तो कलकत्ते की गंगामाटी का प्रसाद दिया ‘औरिजिनल’ शरीर का रंग अधिक काला न पड़ता। इन सब पहाड़ी जंगली देश के धूप की बात अलग है। तब भी देखता हूँ बंगाल की पूरी हाथ की कमीज़ या कुर्ता पहनने से हाथ की धूप बहुत बच जाती है।”

थोड़ी देर रुक कर भद्रजन फिर कहने लगे, “इसके ऊपर भी देखो न दुःख की बात कही किससे जाय ? आप निश्चय ही टोपी पहिनते हैं। और क्यों न पहिने। नौकरी के लिए सभी पहिनते हैं। मगर आपके टोपी पहिनने से सिर के ऊपर उसका दाग पड़ गया है। और यहां मणिपुरी प्रोशाक पहन कर आये हैं। इससे आप के सिर को बड़ा कण्ट होता होगा। इसके अतिरिक्त

इन कंट्रोल के दिनों में मणिपुरी के कपड़े छोड़ कर विदेशी मिल के कपड़े मिलेंगे भी कहां से ? राधे-राधे, सब तुम्हारी इच्छा ।”

श्रीराधा का नाम आ जाने से देवल को थोड़ी सुविधा हुई । उसने कहा, “देखिए कितने नये-नये संगी साथी आ गये हैं । कैसे सुन्दर नाच के दुपट्टे और घांघरे समेट कर बेत के मोढ़ों पर बैठी हैं । जब तक उनके नाचने की बारी नहीं आती है तब तक उनके घाघरे और दुपट्टे मुड़मुड़ा कर खराब नहीं होने चाहिए । और भी देखिए उसमें लगी गोट कितनी सुन्दर है । ऐसी सुन्दर ज़री का काम की हुई चादर उनके पहिरावे के साथ कैसा चमत्कारिक मेल कर रही है ।”

भद्रजन समझदार व्यक्ति था । हंसकर बोला, “भाई, तुम्हारा मणिपुर आना सार्थक हो गया । इतने थोड़े समय में इस तरह सब पोशाक की टेक्निकल जानकारी और सारी बातें सीख गये । क्या बात है बताइए तो ?”

इसके बाद गले के स्वर को धीमा करके अत्यन्त घनिष्ट भाव से उसने जिज्ञासा की, “क्या ? कोई तरुणी है न ? या इस नवीन देश के पथ घाट, आचार व्यवहार के सम्बन्ध में वापस जाकर लिखेंगे ? एन्थ्रोपोलोजी या जियोग्राफी ?”

देवल इस प्रश्न को सुन न सका । वह पलट कर बोला, “देखो-देखो भाई ये सब नई रोशनी के लोग भी कैसे मौज में बैठ कर नाच देख रहे हैं । उन्हें भी अपनी यूनीफार्म की रक्षा नृत्य सखियों की पोशाक के समान यत्न से करनी पड़ रही है । ‘क्रीज’ खराब हो जाने से तो काम नहीं चलेगा ।”

“और, भाई यूनीफार्म । सुनने में आया है कि कोई अभागा जापानी या आई. एन. ए. अपनी फटी पुरानी यूनीफार्म जंगल में फेंक कर भाग गया है । ‘वासंसि जीर्णानि यथा विहाय’ गीता का वचन है भाई ।”

देवल इतनी सरलता से पकड़ में आने वाला नहीं था । हंस कर कहने लगा, “ नहीं, भाई, आप तो बिल्कुल अरसिक हैं । गीत गोविंद छोड़ कर गीता ? और वह भी इस मणिपुर में ? आप समझे—शून्य मंदिर मेरा ?”

“राधे राधे । आपकी दृष्टि श्रीमन्दिर की ओर है ? क्या श्रीघर—जेल की ओर नहीं । इसी से इसे कहते हैं—‘असारे खलु संसारे सारं . . . ।”

“क्यों भाई, समुराल या श्रीघर ? कौन सा ?”

देवल ने अपने पास देखा कि उत्तमा अभी कुछ इधर-उधर करती हुई थोड़ा आगे बैठ गई है। नाच की ओर उसका विशेष मन नहीं है। उसके दोनों पतले ओंठ कुछ गुनगुना से रहे थे मानो कुछ गा रहे हों। ठीक समझ में नहीं आ रहा था। तब भी ऐसा लगता था बीच-बीच में कुछ बंगाली बोल रही थी।

निश्चय ही कोई विशेष अर्थ है। समझ में नहीं आ रहा है।

उत्तमा हंस कर बोली, “हाँ, ऐसा लगता है कलकत्ते में बंगाली मित्र के पास हूँ। जैसे पिछले दो वर्षों से तुम्हारे पास कलकत्ते में थी। तुम्हारे साथ विक्टोरिया मेमोरियल में बैठकर जैसे गाना सुना था। ऐसा लगता है जैसे जापानियों ने दिन के समय खिदिरपुर डाक में बम फेंका था। सभी भागने लगे थे और मैं ए. आर. पी. के गड्ढों में बड़ी देर तक बैठे रहने के अलावा और करती भी क्या? वहाँ तुम्हें गाना सुनाया था। तुम ने ऐसे भावमग्न हो वह सुना था कि ‘माइरन’ ने कब आल क्लियरेंस बतलाया उसे भी सुन न सके।”

देवल को मानो रास्ता दिखाई पड़ा। सब बातों में वह हाँ हाँ करता रहा। और बोला, “उतना ही नहीं। तुम्हारे साथ कलकत्ते में रह कर मुझे इतना अच्छा लगता था कि मैं किसी दिन भी कलकत्ता छोड़ कर दूर रह ही न सका। इसीलिए तो दिल्ली में जो एक नौकरी लगी थी उसे भी कर न सका।”

भद्रजन चुप हो गये। दो तरुण तरुणी घनिष्ट भाव से बातचीत कर रहे हैं। उनके बीच में सिर खपाने की अपेक्षा उनके पास और ज़रूरी काम थे।

इधर नाच खूब जम उठा। जितनी अधिक रात बीतती गई, उतना ही अधिक नाच जम उठा। भीड़ भी खूब थी और आँसू भी खूब वह रहे थे। भक्ति से दिशाहारा होकर वयस्क जन रो रहे थे। उत्तमा भी गुन-गुन करती हुई कुछ गा रही थी, उसका पता नहीं लगता था। सब गा ही रहे हों वह भी बात नहीं थी। कितने गाने, कितनी बातें।

उधर वृन्दा चन्द्रावली का गाना चल रहा था।

“साजल-साजल धनि मनोहर वेश।”

देवल के मन में उत्तमा के लिए कण्ठ ममता भर उठी। पहिले उसके मन में आया कि यदि वह पकड़ा गया तो उत्तमा भी रिहाई नहीं पायेगी।

यदि ऐसा हो भी गया तो देश का कुछ भी बने बिगड़ेगा नहीं। समस्त बंगाल, समस्त भारत ऐसी कितनी उत्तमाओं की बलि दे चुका है।

किन्तु वे ऐसा इसलिए करते हैं कि देश को प्यार करते हैं। सब लोग सुनते हैं, सोच विचार करते हैं, चिन्तित होते हैं और दीक्षा लेते हैं। उत्तमा क्यों इस भावना को लेकर पास आई ?

वह तो अपने मन की खुशी से गा रही है—जैसे वृक्ष की डाल पर बैठ कर पपीहा गाता है—पिउ कहाँ।

नहीं नहीं। देवल सिहर उठा। उसकी सिहरन उत्तमा की विपत्ति सोच कर नहीं हुई। वह काँपा इसलिए कि मृदंग की ताल और अधिक द्रुत हो उठी। ताल-ताल पर रंगे हुए चरणों की उंगलियों के नूपुर और अधिक मस्त हो उठे। और मण्डप में नाचने के लिए और कई सखियाँ चली गईं।

इस समय श्रीकृष्ण का मान-भंजन हो गया था। इस बार उनका मोहन चूड़ा थोड़ा-सा तिरछा होकर और मोहकमय हो गया था। मुख में वंशी लगा कर राधा के पास प्रेम में विह्वल हो वे खड़े हो गये। किन्तु श्री राधा ?

अब उनकी बारी थी। बाद में वे और मान करके न रह जायें इसलिए वैष्णव पदावली छोड़ कर सखियों ने जयदेव का गान गाना। गाना शुरू हुआ —

“प्रिये चारुशीले, मुंच मयि मान मणिदानम्”

यकायक बंगला से संस्कृत में चले जाने की प्रशंसा में उत्तमा से कुछ कहना जरूरी है। उत्तमा भावावेग में झमती झमती थोड़ा आगे बढ़ गई थी। देवल भी आगे जाने को था कि उसी समय उसकी पीठ पर किसी ने बड़ी जोरों से हाथ रखा।

इसका अर्थ बिल्कुल माफ था।

देवल आगे न बढ़ कर थोड़ा पीछे हटा। पीछे जाकर चुपचाप खड़ा रहा। खूब हल्के स्वरों में बोला, “हथकड़ी लगाने की यहां जरूरत नहीं है। अभी बाहर चलता हूँ। चलो।”

सीधी बात यह कि उत्तमा इसे जान न सके।

रास और जम उठा था। सभी मस्त हो रहे थे। किसे इस बात का ध्यान था कि पीछे कौन बैठा है और कौन उठकर चला गया।

वृद्धा भक्तिमती रासधारिणी का गाने में साथ देते-देते, भावावेग में गला बिल्कुल बैठ गया था। मुंच म-यि-इ-इ करते-करते उसकी अवस्था ऐसी हो गई थी कि उसके मुंह से केवल हल्की इ इ ध्वनि निकल कर रह जाती थी। गाना कंठ में मिल गया था। स्वर दौड़ में मिल गये थे। और दौड़ आवाज में।

और देवल ? चार संगीनधारियों से घिरा !

कोर्ट मार्शल लगा हुआ था ।

देवल का विचार समरी जनरल कोर्ट मार्शल करेगा । वह मृत्युदंड तक दे सकता है । देवल का अपराध इतना सांघातिक था कि उसके प्रमाणित हो जाने पर उसे सर्वाधिक कठोर दंड दिया जा सकता था और शांति स्थापित की जा सकती थी । इस कार्य के लिए किसी छोटे दरजे के कोर्ट मार्शल से काम नहीं चल सकता था ।

समरी अर्थात् काम को संक्षिप्त करना । इधर चारों ओर लड़ाई चल रही थी । जापानी या आई. एन. ए. पलट कर हमला कर रहे थे । इसलिए ऐसे घोर गुरुतर अपराध पर विचार करने से और शांति की स्थापना से लोगों की शिक्षा भी मिल जायगी । यहाँ के सब नागा मणिपुरी लोग यह सोचने लगे थे कि इस बार अंग्रेजों का राज्य गया ।

इसके अतिरिक्त ब्रिटिश सेना की पराजय से जिन हिन्दुस्तानी सैनिकों और अफसरों का मन आई. एन. ए. की ओर झुक गया है, वे इस कोर्ट मार्शल को देख कर सावधान हो जायेंगे ।

इसलिए कोर्ट मार्शल खूब जम कर और तैयार होकर बैठा था, और संभव-असंभव सभी तरह की पूछ-ताछ कर रहा था । इस मामले में समस्त चार्ज ऐसे सांघातिक थे और इस ढंग से लगाये गये थे कि उनके मानने को बाध्य होना पड़ता था ।

पाँच मिलिटरी अफसरों का कोर्ट बनाया गया था, जिसे हाईकोर्ट की फुल बेंच कहते हैं । उसका सभापति एक कर्नल था, अर्थात् लेफ्टिनेंट कर्नल से भी काम नहीं चल सकता था । बंगाली जानने वाले विचारकर्ता छाँट-छाँट कर रखे गये थे । इससे दुभाषिये की कोई आवश्यकता न थी । मामला चटपट समाप्त करना था ।

नालिश करने वाला था अंग्रेज सरकार का जंगी विभाग । उनके पक्ष की ओर से प्रोसीक्यूटर अर्थात् कौंसल था एक बंगाली लेफ्टिनेंट कर्नल ।

कर्नल राय कलकत्ते में रह कर कानून की शिक्षा पास कर चुके थे। किन्तु उनके मन में मिलिटरी नशा चढ़ गया था। उन्होंने युद्ध में कमीशन लिया। मगर कानूनी ज्ञान के कारण वे मलय या सिंगापुर में नहीं भेजे गये। इस फारवर्ड एरिया अर्थात् युद्ध के इलाके में अवश्य ही आ गये थे। किन्तु मिलिटरी कैम्पमेंस में उनके बराबर दिलफेंक और मजलिसी व्यक्ति शायद ही दूसरा कोई हो। जैसे अदवक्रायदे में वे चुस्त दुरुस्त थे, तर्क में उतने ही पैने और बोलने में भी उतने ही पटु थे।

नियमानुसार जज एडवोकेट ने सबसे शपथ ग्रहण कराई। उसके बाद आसामी देवल के विरुद्ध अपराध पढ़ कर सुनाये गये। बहुत गुर्रतर अपराध थे। १४ नं० पंजाब रेजिमेंट के कप्तान देवल सिंह ने, सिंगापुर, मलय, रंगून, नागा पहाड़ और मणिपुर में भारतीय दंड विधान धारा १२१ के अनुसार और इंडियन आर्मी एक्ट धारा ४१ के अनुसार, भारतवर्ष के किंग इम्परर के विरुद्ध युद्ध किया। केवल इतना ही नहीं, मणिपुर में एक सन्धानी अड्डे पर एक सिपाही पर प्रहार किया और वहीं निकट के एक गाँव में एक सिपाही का खून किया।

सैनिक-जीवन में राजद्रोह सबसे बड़ा अपराध है।

किन्तु देवल ने प्रत्येक अपराध को अस्वीकार किया। सिर उँचा करके बहुत तेज गले से वह बोला, “मैं दोषी नहीं हूँ।”

उसके बाद उससे जिज्ञासा की गई कि वह अपने पक्ष के लिए कोई कौंसिल चाहेगा।

देवल ने उत्तर दिया कि अपनी ओर से जो कुछ कहना या जिरह करनी होगी वह स्वयं करेगा।

इसके बाद जज एडवोकेट ने उसे सावधान कर दिया कि इंडियन आर्मी रूल १० के अनुसार कभी-कभी विचार स्थगित करना संभव हो सकता है। किन्तु यहाँ लड़ाई के इलाके में जब कोर्ट मार्शल एक बार बैठ गया, तब वह स्थगित न हो सकेगा। इसलिए आसामी सम्पूर्ण रूप से तैयार है या नहीं, यह अच्छी तरह सोच-विचार कर अभी से देख ले। आगे ऐसा सुयोग नहीं मिलेगा।

देवल के नेत्रों के सम्मुख उसकी मां की छवि आ गई। मां ! हा, दुःखिनी

मां की छवि उसके मन से इन चार वर्षों तक बिसरी रही। चार वर्ष ही नहीं, पूरे एक युग, एक जन्मान्तर तक। उस जन्म की मां की याद आज वह कैसे करे। किन्तु वह तो उसे भूल नहीं सकती थी। इसी से उसने रंगून के आज़ाद हिन्द रेडियो के अपने हाथ में रहते भी अपने जीवित रहने की, अच्छी तरह से रहने की खबर मां के पास नहीं भेजी।

और मां ? उसने कभी यह न समझा कि उसका लड़का सैन्य-दल में भरती हो गया है तो उसकी ओर से मुँह फेर लिया जाय। उसने बराबर यही आशा की होगी कि उसका पुत्र, उसका बेटा, किसी दिन लौट कर ज़रूर आयेगा। शायद उसने यह समाचार सुन कर कि अंग्रेजों के विरुद्ध हिन्दुस्तान में आक्रमण हुआ है, गोपन आशा शुरू कर दी होगी कि देवल फिर लौट कर आयेगा।

नहीं देवल अब वापस देश नहीं जाना चाहता। उसके अपराध का प्रमाण होगा ही। फिर मृत्युदंड निश्चित है।

मिता ? हां मिता के लिए जल्दी कुछ-न-कुछ सोच लेना ज़रूरी है। कहा नहीं जा सकता कि अंग्रेज मिता के साथ उसके सम्पर्क की बात का पता लगा कर उसे भी विपत्ति में डाल दें। फिर भी उस पर सन्देह तो करेंगे ही। कोई ठीक प्रमाण न मिलने पर भी डिफेंस आव इण्डिया एक्ट में बन्दी कर सकते हैं। उस दिन रात को टीले के अड्डे पर मिता के साथ देखे जाने की बात का पता लग जाने पर सर्वनाश हो जायगा। उसके हक में सबसे अच्छा यही है कि जल्दी ही कोई फैसला हो जाय। वह आई. एन. ए. की समस्त बातें पूर्ण रूप से स्वीकार कर लेगा। इससे कोर्ट मार्शल को अधिक चलाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

औ. . . और भी एक छवि बीच-बीच में झांकी दे जाती है। उसका अभी हाल ही का चीन्हा हुआ मुख है। उस पर न उसका कोई दायित्व ही है न अधिकार। देवल अपनी गुप्तचरी सुविधा के विचार से उसके गाँव में चले गये थे। अपने छिपने की सुविधा पाने के विचार से उसके साथ-साथ घूमे फिरे थे। उस बेचारी ने भी अपनी विपत्ति की उपेक्षा की। कष्ट और बदनामी की बात ध्यान तक में न लाई। देश के लिए न जाने कितनी लड़कियाँ इस प्रकार विपत्ति में कूद पड़ी हैं। किन्तु इस तरह अपने को उत्सर्ग करने

वाली कितनी है। इतने कम समय में आत्म-बलिदान करने वाली ? रास-मंडप में उसके साथ की बातचीत और घनिष्ठता क्या मिलिटरी की नजरो में पड़ी न होगी ? नहीं, उत्तमा के मंगल के लिए भी इस विचार का जल्दी ही समाप्त हो जाना ठीक है।

अपराध स्वीकार करने से बहुतेरी बातों से बचा जा सकता है। सबूत, गवाही, जिरह, सवाल जवाब किसी की जरूरत नहीं पड़ेगी, मिता बुलाई नहीं जायगी और न ही उत्तमा को बुलाने के झगड़े में पड़ना पड़ेगा। केवल एक दीवार के महारे खड़ा किया जायगा। थोड़ी दूर पर सामने कई एक बन्दूकें ताने सैनिक। फिर आँखों पर पट्टी बांध कर एक छोटी-सी आज्ञा—
फा . . . य . . . र।

नहीं, उससे बात ठीक नहीं बनेगी। उसके दोष स्वीकार न करने पर भी उसे दोषी प्रमाणित किया ही जायगा। उसने वारतव में एक सिपाही के गोली मारी है और एक के शरीर को बाधा है। किन्तु . . . किन्तु राजा के विरुद्ध युद्ध ? राजद्रोह ?

नहीं। उसने राजद्रोह नहीं किया है। उसने किया है स्वदेश की स्वाधीनता के लिए युद्ध। वह स्वाधीनता-युद्ध का सैनिक है। नेताजी की आजाद वाहिनी का एक कर्नल है। उसने इण्डियन नेशनल आर्मी एक्ट के अनुसार शपथ ली है। अंग्रेजों की इण्डियन आर्मी एक्ट का दायित्व अंग्रेजों ने सिगापुर में समाप्त कर दिया।

ठीक। सब से बड़ा देश है। सारे जीवन भर ध्यान करने पर भी क्या कोई परिचित तस्वीर अपनी प्रेयसी से महान हो सकती है। जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

देवल ने घोषणा की “मैं कोर्ट मार्शल को किसी तरह स्थगित कराना नहीं चाहता। इसका कारण यह है कि मैं अपने ऊपर इस कोर्ट के किसी अधिकार को स्वीकार नहीं करता। हिज मेजस्टीज गवर्नमेंट ने १५ फरवरी सन् १९४२ को युद्ध के आर्डिन को भंग कर समस्त हिन्दुस्तानी सिपाहियों और अधिकारियों को सिगापुर के फेयर पार्क में एक जगह इकट्ठा किया और सब ब्रिटिश अफसरों को अन्यत्र ले गये। १६ फरवरी को सवेरे हमारे कमांडिंग अफसर मेडा ने हमारे सब के सामने खुल कर कहा कि अब से हमारे रास्ते

अलग हैं। फेयर पार्क में ब्रिटिश गवर्नमेंट के प्रतिनिधि कर्नल हंट ने हमारी परेड कराई और आज्ञा दी, 'आज ब्रिटिश सरकार की ओर से हम तुम्हें जापानी सरकार को सौंपते हैं। आज तक जिस तरह हमारी आज्ञा का प्रतिपालन तुम ने किया, ठीक वैसे ही इनकी आज्ञा मानना।' इसके बाद मेजर फूजियारा हम से बोले—'जापानी सरकार की ओर से हम तुम्हारा जिम्मा लेते हैं।' कर्नल हंट के सामने ही उन्होंने हमें कप्तान मोहनसिंह के हाथों में सौंपा और भारतवर्ष की स्वाधीनता और उद्धार के लिए हम लोगों को क्या करना होगा यह बतलाया। इसके बाद हम यदि जापानी आज्ञा से अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध करते तो कोई अपराध न करते। किन्तु हम ने वैसा नहीं किया। हम ने युद्ध किया अपने इंडियन नेशनल एक्ट के अनुसार। नेताजी के सामने शपथ लेकर। इसलिए आप के इस कोर्ट मार्शल का मेरे ऊपर कोई अधिकार ही नहीं है। हमें आप युद्ध-बन्दी कर सकते हैं, किन्तु राजद्रोह के अपराध में हमारा विचार नहीं कर सकते। अन्तर्जातिक युद्ध आईन को खोल कर एक बार देखिए।"

विचारकों के सभापति विद्रोही की इस शेखी को कैसे सहन कर सकते थे। काफी असें तक आसाम व मणिपुर के जंगलों में युद्ध-व्यस्त रहने के कारण उनके मुख का स्वेत रंग लाल हो गया था। मारे क्रोध के उन के मुख का रंग काला पड़ गया और वे मेज़ पर हथौड़ी मारने लगे। आसामी एक तो विद्रोही, उस पर से उसका यह दुःसाहस कि दुश्मनों के आईन की दुहाई दे। असह्य, असह्य। बंगाली लोग आईन के सहारे अब तक हमें चरका देते रहे। अब इन्होंने हथियार सम्भाले हैं। और बकते हैं कि इंटर-नेशनल वार लड़ रहे हैं।

"रूल ब्रिटानिया, रूल दि स्लेव्स।" सभापति की हथौड़ी तरंगों के समान चलन लगी।

किन्तु अंग्रेज कर्नल, मन से मिलिटरी होते हुए भी व्यवहार में सिविल था। मिज़ाज में चाहे जितनी तेजी हो किन्तु मुँह में मीठापन था। हँसकर बोला, "तुम कप्तान, तुम यहाँ इंडियन आर्मी एक्ट के अधीन हो। राजद्रोह के लिए मनगढ़न्त आईन का आर्मी एक्ट के सम्मुख कोई मूल्य नहीं है।"

कनल राय—“मिस्टर प्रेसिडेंट एवं माननीय कोर्ट के सम्मगण ! यह विचार सभा सम्पूर्ण रूप से न्याय सम्मत है ।” यह कह कर उन्होंने सिर थोड़ा आगे झुकाया और दाहिना हाथ वक्ष पर रख कर नमस्कार किया और रसमयी वाणी से बोले—“मै मि. प्रेसिडेंट के प्रति कृतज्ञ हूँ । इन्होंने स्वयं इस कोर्ट की मान-रक्षा का भार लिया है । भारतवर्ष किंग इम्परर के अधीन हैं । आसामी भारतवासी है अतएव जन्म ही से ब्रिटिश-प्रजा है । इसके ऊपर इन्होंने आर्डन सम्मत आर्मी एक्ट के अधीन कमीशन लिया है । उस पार्चमेण्ट कमीशन की नक़ल मै कोर्ट में दाखिल कर रहा हूँ । अभी हाल ही में दिल्ली से एरोप्लेन द्वारा उसे मंगाया गया है । एक्ट की ४१ धारा के अनुसार आसामी चाहे ब्रिटिश इंडिया में रह कर या बाहर रह कर कोई भी अपराध करेगा तो आर्मी एक्ट की सज़ा पाने को बाध्य होगा । यहां इस बात का कोई मूल्य नहीं है कि इन्होंने किस उद्देश्य से किंग इम्परर के विरुद्ध लड़ाई की । मुख्य बात तो यह है कि इनकी हरकतें क़ानून के खिलाफ हुई या नहीं । सम्राट के प्रति अनुगत रहने का कर्त्तव्य सर्वदा और सब अवस्थाओं में है । युद्धबन्दी होने पर अथवा शत्रु के अधीन होने पर भी उस कर्त्तव्य का दायित्व नहीं हट सकता । मिस्टर प्रेसिडेंट, आप की अनुमति लेकर मै आसामी के दोषों के समस्त प्रमाण देना शुरू करता हूँ ।”

उन दिनों युद्ध की जैसी अवस्था थी उसमें आज़ाद हिन्द दल के विरुद्ध प्रमाणों का कोई अभाव न था । बेतार पर रास बिहारी बोस की वक्तृता, नेताजी की भारतवर्ष को लेकर गांधीजी की सम्मति और आशीर्वाद प्राप्त कर युद्ध आरम्भ करने की वक्तृता—इन सब का रेकार्ड कर लिया गया था । आज़ाद हिन्द के नागा पर्वत तथा मणिपुर पर चढ़ाई करने के साथ-साथ कई बार जापानी एरोप्लेनों ने बंगला, हिन्दी और अंग्रेज़ी में इस्तहार और तसवीरें छोड़ी थीं । उसमें भारतवासियों से स्वाधीनता के लिए युद्ध घोषणा करने को कहा गया था । तथा नेताजी द्वारा स्थापित आज़ाद हिन्द सरकार का उद्देश्य स्पष्ट रूप से विस्तारपूर्वक बताया गया था । आज़ाद हिन्द वाहिनी तिरंगा झंडा फहराती हुई अस्त्र शस्त्र लिए मार्च करती चली जा रही है, और उसके नीचे लिखा था—क्रदम-क्रदम बढ़ाए जा । जज एडवोकेट ने इस तसवीर को कोर्ट में दाखिल किया । इसी के साथ नेताजी की

पूरी सामरिक पोशाक में आजाद हिन्द वाहिनी का सेल्यूट लेती हुई तसवीर भी दाखिल की गई ।

जज एडवोकेट ने निवेदन किया कि इतने सब लिखित प्रमाणों के बाद आजाद हिन्द दल के प्रत्येक सदस्य का राजद्रोह के अपराध के संबंध में कोई सन्देह नहीं रह गया है । और आसामी ने स्वीकार कर ही लिया है कि वह आई. एन. ए. का आदमी है ।

ले० कर्नल राय खूब विचक्षण व्यक्ति थे । वे बायीं आंख पर सोने की पतली चेन से जुड़ा एक आंख का चश्मा लगाते थे । उसे बायीं आंख पर चढ़ा कर उन्होंने आसामी की ओर एक विशेष चाह भरी दृष्टि से देखा और फिर कोर्ट को संबोधन कर बोले, “मि० प्रेसिडेंट, इस बार आप यह भी जानना चाहेंगे कि यह आसामी किस कारण से किसी और बात के लिए झूठ बात स्वीकार कर रहा है । यह राजद्रोही दल का है इसका क्या प्रमाण है ? यदि इस बात का प्रमाण नहीं मिलता है तो इसके अपराध बहुत हल्के हो जायेंगे । इसलिए मैं इसका भी प्रमाण दाखिल कर रहा हूँ । यह बैटिल ड्रेस लामलाइ गाँव के किनारे जंगल में एक तालाब में पाई गई है । आसामी का दूसरी और तीसरी बार अपराध इस तालाब के आसपास ही हुआ है ।”

आसामी को उद्देश कर जज एडवोकेट ने कहा, “आप क्या यह स्वीकार करते हैं कि यह पोशाक आप की है ? यदि स्वीकार नहीं करते तो मैं कोर्ट से अनुरोध करूंगा कि वे इसे बराबर वाले तंबू से पहन कर आवें ।”

“स्वीकार करता हूँ ।”

“इसे भी आप स्वीकार करते हैं कि इसे आप ने हिज़ मैजिस्टीज़ फ़ोर्स के कप्तान की हसियत से पहना था ?”

“करता हूँ ।”

“इसे भी आप स्वीकार करते हैं कि इसे आप ने तथाकथित आजाद हिन्द दल के नाम के वास्ते कर्नल की हसियत से व्यवहार किया था ।”

“करता हूँ, किन्तु तथाकथित नहीं, वास्तविक स्वाधीनता का सैन्य, दल । आपकी तरह पेट भरने के लिए विदेशियों के भाड़े की सेना के अफ़सर नहीं । और जो नाम के वास्ते कर्नल नहीं हैं, उसका प्रमाण यह है कि हम लोग आ

गय हैं यह सुनते ही आप लोग भागने तक का रास्ता न पा सके। आपकी ओर से मशीनें लड़ती हैं, मनुष्य नहीं। कारण यह कि आप लोग मर्द नहीं हैं।”

“आर्डर, आर्डर”—प्रेसिडेंट मेज़ पर हथौड़ी मारने लगे। “आर्डर, आसामी को सावधान कर दो कि यह कोर्ट है, राजनीतिक वक्तृता देने का अड्डा नहीं।”

देवल ने उत्तर दिया, “मि. प्रेसिडेंट, इसका दायित्व प्रासीव्यूटर पर है। उन्होंने ही इसे शुरू किया।”

राय ने एक खास अंदा से चश्मे को आँख पर लगाया और बहुत नम्र स्वरों में जिज्ञासा की, “अच्छा, आई. एन. ए. के कर्नल सिन्हा, आप ऐसे समय प्राणों को हथेली पर रख कर और इतनी बड़ी रिस्क लेकर जो मणिपुर में आये, क्या उसका उद्देश्य बतायेंगे कि जिसमें साक्षी सबूत मिलने में कष्ट न हो। आशा है कि मणिपुर में हवाखोरी के लिए तो आये न होंगे?”

“आया था हवा गरम करने के लिए। जिसमें आप लोगों के लिए हवा खूब गरम हो जाय।”

“शाबाश, शाबाश। वह रास-नाच तो मणिपुर की खास चीज़ है। अमेरिकियों ने भी उसे देख कर दिल खोल कर उसकी तारीफ की है। ऐसा लगता है आप भी नाचना गाना खूब समझते हैं? ओरियण्टल? नहीं, मेरी समझ में बालरूम डांस भी हो सकता है?”

प्रेसिडेंट ने बाधा दी। प्रासीव्यूटर को उन्होंने मना किया कि कोर्ट का इतना कीमती समय ऐसे हल्के हंसी-ठट्ठे में खर्च करना ठीक नहीं।

कर्नल राय थोड़ा झुक कर बोले, “नहीं मिलाड, मैं यह चाहता हूँ कि आसामी अपनी ज़बान से यह स्वीकार कर लें कि वह गुप्तचर है; वह योद्धा नहीं है। उसके बाद कोर्ट का समय नष्ट करने की कोई बात नहीं उठेगी। गुप्तचर को सज़ा देने के लिए विचार की व्यवस्था खूब कटी-छटी है।”

किन्तु कर्नल वीर अंग्रेज जाति का व्यवित था। आधे कर्नल राय की युद्ध की गंभीरता के बाहर की कटी-छटी व्यवस्था उसकी दृष्टि में अन-स्पोर्ट्समैन लाइक—अर्थात् खेल के नियम में अन्याय—थी। उन्होंने निर्देश दिया कि जितन सब चार्जशीट दाखिल किये गये हैं उन सब पर विचार किया

जायगा । प्रमाण जुटाने में यदि कोई और व्यापार सामने आ जाय तो वह दूसरी बात है ।

कर्नल राय ने तुरन्त ही सब गवाहों को बुलाना शुरू किया । समय कम था; बयान दर्ज करने का समय और भी कम था ।

पहली गवाही एक नान्कमिशन्ड अफसर अर्थात् एन. सी. ओ. नायक ने दी । वह जब नये अड्डे से वापस लौटा और अपने अड्डे पर उसे सन्तरी का सलाम नहीं मिला तो उसे बूढ़ने लौटा । उसे असहाय अवस्था में किसी ने हाथ-पैर बांध कर डाल दिया था । उसने शत्रु की जो हुलिया बताई वह आसामी से पूरी तरह से मिलती है । सन्तरी ने भी गवाही दी । उसकी बताई हुलिया भी देवल से मिल गई ।

देवल ने उसे क्रास एग्जामिन करना शुरू किया । उसने पूछा, “तुमने क्या अपने शत्रु को आमने-सामने से देखा था ?”

“हाँ ।”

“तो इसके मानी तो यह हुए कि तुम्हारा शत्रु पूरा बुद्ध था कि बगैर यह जाने हुए कि अड्डे पर कितने सन्तरी होंगे वह तुम्हारे सामने आ गया । मि. प्रेसिडेंट, मैं आपसे अनुरोध करूँगा कि इस तथ्य को आप विशेष भाव से नोट कर लें ।”

“अच्छा, यह तो बताओ कि तुम्हारी गुमटी में कैसी बत्ती जल रही थी ? कितनी पावर का इलेक्ट्रिक बल्ब था ?

“बिजली की बत्ती तो कोई भी न थी । सिर्फ़ केरोसिन की कुप्पी थी ।”

“मि. प्रेसिडेंट, मैं आप से अनुरोध करूँगा कि इस मामले पर गौर करें । चारों ओर गहरा अंधकार था, उसमें गुमटी में केरोसिन के हल्के प्रकाश में और ऐसी धरपकड़ में सन्तरी इतनी अच्छी तरह से शत्रु को कैसे देख सकता था कि उसका अविकल वर्णन कर सके ।”

“अच्छा गवाह, तुम्हारा दुश्मन डील डौल में तुम से कमजोर था । फिर उसने तुम से हाथापाई कैसे की ? वह अपनी रिवाल्वर की गोली से तुम्हारा काम तमाम कर सकता था ।”

“यह मैं नहीं जानता । ऐसा लगता है कि उसे रिवाल्वर चलाने की सुविधा नहीं मिली होगी ।”

“किन्तु तुम्हारे हाथ-पैर बाँधने के बाद क्या वह तुम्हें मार नहीं सकता था ? अपने विरुद्ध किसी साक्षी को क्या शत्रु का सिपाही ज़िन्दा छोड़ सकता है ?”

प्रासीक्यूटर ने कोर्ट को संबोधन करते हुए इसका उत्तर दिया, “दुश्मन अकेला था, वह चुपचाप लुक-छिप कर सारी बातों की जाँच-पड़ताल करने के इरादे से आया था। शत्रु के इलाक़े में अकेले आकर एक सिपाही को मार डालने में उसका कोई लाभ न होता। वह भेदिया था। अतएव इस मामले को यहीं समाप्त कर इसकी ठीक व्यवस्था सामरिक भेदिये के अनुसार करनी चाहिए।”

प्रेसिडेंट ने इसे अंगीकार नहीं किया। उन्होंने राय दी कि कोर्ट की दृष्टि में इस मामले में भेदियेपन की कोई बात नहीं आती है।

इसके बाद गवाह-द्वारा यह बात प्रकाश में आई कि देवल की यूनीफ़ार्म जिस गांव के तालाब में पाई गई थी, उसी गाँव के एक और तालाब में एक सिपाही की लाश भी पाई गई है।

प्रश्नोत्तर में देवल ने प्रश्न किया “यूनीफ़ार्म मेरी नहीं है, किन्तु इस इलाक़े में जितने गुप्त खून हुए हैं या जापानी हवाई हमले से जितने लोग मरे हैं क्या उन सब का दायित्व मेरा है ?”

गवाह प्रश्न का भीतरी तात्पर्य न समझ कर ताकता रह गया।

“अच्छा, लाश पर किसी बन्दूक या रिवाल्वर के दाग़ थे ?”

“थे। वह टामीगन की गोली से मारा गया था।”

“ठीक, ठीक। ‘बोर’ का क्या नंबर था ? और छेद कितना बड़ा था ?”

गवाह ने इसका उत्तर दिया।

“ठीक है। इस टामीगन का छेद और इस यूनिट को जो सब टामीगनें दी गई हैं, उनके छेद का क्या एक ही नंबर है ? यदि ऐसा है तो मैं आई. एन. ए. का अफसर इस बोर की बन्दूक कहाँ से पा जाऊंगा ?”

प्रासीक्यूटर ने बाधा देकर उत्तर दिया, “मि. प्रेसिडेंट, सिपाही की यूनीफ़ार्म में हाथापाई के प्रचुर चिह्न हैं; आसामी ने निश्चय ही उसी की टामीगन से उसका खून किया है। इसके अतिरिक्त यह उस अड्डे में एक महिला अफसर के यहां घुस गया; और उसका आतिथ्य-ग्रहण करने की चेष्टा की।”

। प्रेसिडेंट बोल पड़े—“यह सब अनुमान है । अनुमान प्रमाण नहीं हो सकता । इस समय केवल खून का मामला चल रहा है ।”

राय ने विनीत निवेदन किया, “इसी से तो मैं आसामी से यह जिज्ञासा कर रहा हूँ कि उसने लाश पर बन्दूक या गोली के दाग की बात क्यों उठाई ? सिपाही किसी और तरीके से भी मारा जा सकता था ? यह तो वही बात हुई—मन्दिर में कौन है ? उत्तर मिला, मैंने केला नहीं खाया ।”

इस तीक्ष्ण प्रश्न से भी देवल विचलित नहीं हुआ । वह बोला, “वह मेरा अनुमान है । किसने मारा कौन जानता है ? इसके अतिरिक्त मैं किसी महिला के यहाँ नहीं गया । और गया भी तो उसका प्रमाण क्या है ?”

कर्नल राय ने प्रश्न किया, “मैं जानना चाहता हूँ कि आसामी ने अभी तक इस बात का कोई इंगित क्यों नहीं किया कि इस मामले में एक नारी है और संभवतः हमारे सिपाहियों की आपस ही में मारपीट करने से उनमें-से एक का खून हो गया है ।”

देवल उनकी ओर देख कर बोला, “मैं अनधिकार चर्चा नहीं करना चाहता । इंगित करना मेरा काम नहीं है ।”

“किन्तु मेरा काम है ।” हँस कर अपनी गरदन दाहिने बायें घुमा कर कर्नल राय बोले, “मैं कहता हूँ इस मामले में नारी है । हमारे आसामी का एक मणिपुरी गुप्तचर के साथ योगायोग है । वह पक्की माताहरी है । आसामी उसे डिफेंस पक्ष की ओर से गवाह बनाकर हाज़िर नहीं करेगा । मैं भी उसके विरुद्ध कोई मामला खड़ा नहीं करना चाहता । उसे गवाह बना कर लाने के लिए उसका बयान लेना पड़ेगा । इसके पहिले मैं सूबेदार मेजर की गवाही देना चाहूँगा ।”

सूबेदार मेजर ने गवाही देते हुए कहा कि एक सिपाही के हाथ-पैर बांधे जाने से और दूसरे सिपाही का गुप्त खून हो जाने से उस इलाके में बहुत कड़ी नज़र रखी गई । प्रत्येक असैनिक आदमी पर नज़र रखी जाती थी और जो लोग बाहर से आते थे, उनमें से प्रत्येक का परिचय-पत्र अच्छी तरह परख लिया जाता था । उस रासलीला के गांव में कई नये लोग आते रहते थे । इसलिए सन्देह का कोई कारण नहीं था । किन्तु मणिपुरी लड़की के साथ एक नया व्यक्ति घूमने-फिरने नहीं, किन्तु रास देखने के लिए आया है, यह

जाँच-पड़ताल करने वाली बात थी। लडकी से इस बात का पता चला कि उस गाव में वह भी नई आई थी। यह आसामी भी नया ही आया था। फिर मैंने जमीन में गड्डे टेलीफोन से खबर मगाई कि लामलाइ गाँव के जिस घर में मृत सिपाही की बन्दूक मिली, उस घर की लडकी के बारे में सारी बातें जाँच कर भेजो। लडकी के बाप को भी बिना किसी सन्देह के रोक लिया गया और उससे भी लडकी के बारे में उसकी हुलिया इत्यादि की पूछताछ की गई। वे दिन में किसी की नजरों में नहीं पड़े यह बात भी गाँव के बड़े-बूढ़ों से मालूम हो गई। सन्देह में रास मडप में जिस जगह मैं बैठा था वहाँ से हाथ की ताल देकर इशारा करके इनके पीछे एक मिनियेचर टेलीफोन लगवा दिया। किन्तु एक मिनट के लिए भी आसामी को मैंने नजरों से ओझल नहीं किया। सब काम मैंने इस तरह किया कि सन्देह की जरा भी आहट न लगने पाये। केवल इतना ही नहीं। एक सामरिक गुप्तचर को सादे कपड़े पहना कर इनके पास बिठा कर बगला में बातचीत भी कराई। उसके साथ बातचीत करते समय कुछ प्रमाण मिलता है या नहीं, या इनके मन का क्या भाव होता है इस पर भी मैंने भरपूर नजर रखी।”

इतना बयान दे चुकने के बाद सूबेदार मेजर अपने मन में खुशी के मारे फूल उठे, और मूँछे ऐंठने लगे। ऐसा लग रहा था कि रासमडप के सब दर्शकों में उनके बराबर समझदार और कोई नहीं था तथा, समस्त नाच-गाना केवल उन्हीं के लिए हो रहा था। मानो वे यह कहना चाहते हों—“कहो बेटा कैसी रही ?”

कर्नल राय ने इस समय निवेदन किया कि एक और गवाह के सामने माइक्रोफोन रेकर्डिंग कोर्ट में दाखिल होगी और सुनाई जायगी। विचार-पति ने इस निवेदन को मजूर कर लिया।

देवल की इच्छा न हुई कि सूबेदार मेजर या उनके गुप्तचर से जिरह की जाय। उसने कहा, “मैं इस बान को अस्वीकार नहीं करता कि मैं बगाली हूँ और आई एन ए का आदमी हूँ। इसलिए इस बात पर जिरह करने की कोई जरूरत नहीं है। फिर भी एक लडकी के साथ मेरा नाम गलती से जोड़ा जा रहा है। किन्तु इस बारे में आगे कुछ कहूँगा।”

इस बार विचारपति ने राय से प्रश्न किया, “किन्तु रासमण्डप के

व्यक्ति ने ही उस सन्धानी अड्डे पर अपराध किया है, इसका क्या प्रमाण है ? इससे अधिक तो और कुछ भी प्रमाणित नहीं हुआ कि लामलाइ गाँव में एक अनजान व्यक्ति था—बस ।”

कर्नल राय अत्यन्त विनम्रभाव से नीचे झुक कर, थोड़ा मुसकरा कर बोले, “ मि. प्रेसिडेंट, हमारा शास्त्र कहता है मधुरेण समापयेत् । दो तरुणी महिलाओं की गवाही देकर मैं इस क्राउन केस का सरकारी मामला समाप्त कर देना चाहता हूँ । वे ही असली गवाही देंगी ।”

इसके बाद गले को मुलायम करके अत्यन्त अंतरंगभाव से कर्नल राय बोले, “मि० प्रेसिडेंट, आप की सम्मति लेकर एक काम करना चाहूँगा । इन दोनों तरुणियों की गवाही इतनी मज्जेदार और चटपटी होगी कि यह मामला “सेविन स्पाई ट्रायल्स आव दि वल्ड” में भी अन्यतम प्रमाणित होगा ।”

प्रेसिडेंट यकायक चंचल हो उठे । फिर भी जितना संभव था उतना गांभीर्य रख कर बोले, “जज एडवोकेट, आप शुष्क काष्ठ कोर्ट मार्शल को सरल करने पर तुले हुए हैं । इसके लिए अभिनंदन करता हूँ । और देखता हूँ कि इस फैसले को अमर कर देना चाहते हैं ।”

“बहुत-बहुत धन्यवाद, मि० प्रेसिडेंट । मेरी नई गवाह है एक तरुणी वाकाई जूनियर कमाण्डर, आइडेन्टिटी कार्ड नंबर एक्स. वी. जीरो-जीरो थ्री । बेतार का काम करती है इसलिए उसका नाम या परिचय नहीं भेजा गया । उसका लिखा बयान देख कर उसे गोपन समन भेजे गये । अर्दली, नेक्स्ट विटनेस प्लीज ।”

यह क्या, यह क्या—अकस्मात् देवल के मुख से कोई बात बाहर निकलने को हुई । किन्तु तुरन्त उसने अपने को सँभाल लिया । इधर अकस्मात् राय की फ़ौजी पोशाक की आस्तीन में भी एक झोल-सा पड़ गया और उनकी दृष्टि भी उधर ही लग गई । उनका मुख कड़ा पड़ गया । किसी नवीन निष्ठुर तर्क का पथ उनकी दृष्टि के सामने आ गया ।

और देवल ?

उसका गला सूख गया । हाय विधाता, यह कैसा परिहास । मित्ता किसी गड़बड़ी में उलझ न जाय इसीलिए तो उसने इतनी जल्दी अपना आई. एन. ए. में होना स्वीकार कर लिया था । किन्तु यहाँ तो केवल मित्ता

ही नहीं, उत्तमा को भी गवाही के कटहरे में खड़ा होना पड़ेगा। उत्तमा तो इस कारण से बच भी सकती है कि उसके ऊपर आक्रमण करने की बात प्रकाश में लाई जा सकती है। किन्तु मिता ? मिता का क्या होगा ?

किन्तु मिता ? वह इस तरह से प्रासीक्यूटर की ओर देख क्यों रही है ? क्या केवल विस्मय के कारण ? या प्रत्याशा ? या ... ?

वेदना से देवल का मन घबड़ा उठा।

प्रेसिडेंट ने गवाह का बयान तुरन्त लेने की आज्ञा दी। सध्या हो रही थी।

गले को मुलायम करके कर्नल राय ने प्रश्न किया, “यह आसामी आप के कमरे में रात को छिपा था ?”

“नहीं। मैंने अपने यहाँ किसी को छिपते नहीं देखा।”

“किन्तु आप के कमरे में तो केवल एक कैम्ब्रिश की फोल्डिंग चेयर थी; उस रात दो चेयरे थी ?”

“मैं यूँही ले आई थी।”

“हो सकता है। आप के बिना जाने अवश्य और कोई रह गया होगा। अच्छा, आप तो ओ पी यूनिट की है फिर इतने कार्टन और टिन आपके यहाँ कटे हुए क्यों पड़े थे, बताइए तो क्यों ? आप नन्वी तरुणी हैं, और आप पेटूपन के लिए खास बदनाम भी नहीं हैं”।

“अज्ञात अतिथि के सत्कार के लिए कोई बदनाम नहीं होता।”

कनल राय ने एक बार पूर्ण दृष्टि से मिता की ओर देखा। फिर उन्होंने उधर से अपनी दृष्टि फेर ली। और अनमने-से होकर अपनी पदवी के मुकुट, सितारो और बटनो पर हाथ फेरने लगे।

“छि छि। मैं वैसी कोई बात नहीं कह रहा हूँ। मैं तो केवल यह कह रहा हूँ कि आप के बिना जाने हुए कोई शत्रु पक्ष का स्पाई आप के कमरे में छिप गया होगा। और आप को उसका पता तक नहीं चला। और जान लेने पर भी आप कुछ कर न सकी। किन्तु ओ पी के लोगो ने सब जगहों की खोज करते समय देखा था कि साउड लेबल मीटर मशीन बहुत गरम थी। काफी देर से ही काम कर रही होगी। मगर आप के ‘लागबुक’ में तो कुछ भी नहीं लिखा है।”

मिता चटपट उठी। उसने कोर्ट की शरण लेकर आवेदन किया, “मि० प्रेसिडेंट, मैं आप से सुविचार चाहती हूँ। इस मामले की जाच-पड़ताल करते समय से बराबर अन्याय की ओर इंगित किया जा रहा है। कोई अनजान व्यक्ति मेरे कमरे में आया या, उसने यन्त्र इत्यादि व्यवहार किये इस बात को मैं इसलिए अस्वीकार नहीं कर रही हूँ कि मैं किसी को छिपाना चाहती थी या उसके भागने में सहायता करना चाहती थी। इस काम में प्रासी-क्यूटर भी।”

राय ने बाधा दी—“मि० प्रेसिडेंट, मैंने कोई इंगित नहीं किया। इन्क्वायरी रिपोर्ट को खोल कर देखते ही मुझे कुछ सन्देह हुआ। इसी से मैंने यह कहा कि कोई इन्ट्रूडर निश्चय ही गवाह के यहाँ घुसा। पूरा सन्देह आसामी के ऊपर है। गवाह के ऊपर कोई विशेष नहीं। मैं चाहता यह हूँ कि गवाह की सफाई के साथ-साथ आसामी का फैसला भी हो जाय। इसी से ये सब प्रश्न कर रहा हूँ। अच्छा, गवाह, एक बात तो बताइये, आप ने इस आसामी को कही और भी देखा है या नहीं? अपने घर में? या और कहीं? लडाई शुरू होने के पहिले से?”

“इसके माने?”

“माने, केवल यही कि नीचे के सन्तरी ने यह कहा कि आसामी ने उसके हाथ पैर बाँध दिये थे। उस रात को उस अड्डे पर आप के अतिरिक्त और कोई नहीं था। कमरे में खाने-पीने के बरतन बिखरे पड़े थे, मशीन का व्यवहार हुआ था, और आप को कुछ भी पता नहीं। सारा मामला कुछ अजीब-सा लगता है?”

“उसको खुलासा करने का दायित्व मेरा नहीं है।”

राय ने व्याकुल भाव में मिता और देवल की ओर देखा।

“सब बात सच है, मिस। किन्तु मैं कहना यह चाहता हूँ कि आसामी गुप्तचर है। लडाई का सम्मानजनक अधिकारी नहीं, किन्तु गुप्तचर। जिसे लोग मन में घृणा करने के भी अयोग्य समझे।”

मिता ने मुहूर्त भर सोचा। देवल का सब कुछ समाप्त हो जायगा। उसी के प्रिय की वकालत के कारण देवल का दोष प्रमाणित हो जायगा। फिर मृत्यु निश्चित है। किन्तु स्वाधीनता-युद्ध के सैनिक की मृत्यु वह वरण न कर

पायगा । उसे तो गुप्तचर कहा जा रहा है ? आर्मी एवट में जिसकी कोई रिहाई नहीं, लोगों की नज़रों में जिसकी कोई मर्यादा नहीं, वैसा गुप्तचर । और वह किसके हाथों प्रमाणित होगा ? जिसे मिता प्यार करती है, जिसके लिए इतना दुःसाहस भर कर, इतनी विपत्ति के इलाके में वह विशेष वकालत करने आया है ? साफ बात तो यह है कि देवल को स्पाई प्रमाणित करने के लिए राय कमर कस कर जुट पड़ा है । राय ने अवश्य इन्क्वायरी रिकार्ड पढ़ कर यह जान लिया है कि देवल के बारे में मिता कोई गवाही नहीं देगी ; बल्कि उसे बचाने की कोशिश करेगी । यह भी वह समझ गया है कि देवल मिता के कमरे में गया था । क्या इसीलिए वह देवल को सम्मान-जनक मृत्यु पाने से वंचित कर रहा है ? किन्तु इससे राय का क्या लाभ होगा ? क्या वह इस तरह देवल से प्रतिशोध ले रहा है ? इसके मूल में क्या जैलसी है ? प्रिया के प्रेम में भागीदार हो जाने की सन्देहजन्य ईर्ष्या है ? नहीं, नहीं । यह सौभाग्य क्या मिता को मिलेगा कि देवल का नामहीन मरण हो ? इतने दिनों के बाद राय, उसके स्वप्नों का राय, उसे यह प्रतिदान देगा ? और इस तरह ?

हे दयामय, तुम्हारी दया बड़ी महँगी पड़ती है । तुम्हारा प्रेम बड़ा ही निष्ठुर है ।

कोर्ट मार्शल अभी चल रहा था ।

“कहिये, मिस, मेरी बात का उत्तर नही दिया ।” जोंक की तरह चिपटने वाले राय ने प्रश्न किया ।

मिता उसकी ओर अपलक दृष्टि से देखती रह गई । उन नेत्रों में अन्तहीन उत्तर था, आदिहीन प्रश्न था । प्रश्न और उत्तर एक साथ ही नेत्रों में समा गये । फिर मुख से वह और क्या उत्तर दे?

कुछ देर बाद अत्यन्त म्लान मुख से मिता बोली, “आप ने मुझ से कोई प्रश्न तो किया नही ।”

“मैंने यही कहा न कि आसामी सिपाही नही स्पाई है ।”

“यह प्रश्न तो नही हुआ । मैं जो कुछ जानती हूँ उससे यह कह सकती हूँ कि किसी व्यक्तिगत अभिमत को प्रमाण नही कहा जा सकता ।”

“ठीक, ठीक । मैं अपनी भूल स्वीकार करता हूँ । किन्तु आसामी ने जो गुप्तचर का काम किया है, उसका प्रमाण आपके कमरे में मिलता है ।”

“यदि उसे प्रमाण मान लिया जाय तो यह भी अनुमान किया जा सकता है कि वह गुप्तचर मैं ही हूँ । अथवा उस गुप्तचर के साथ मेरा भी योगायोग है । क्यों, जज एडवोकेट साहब, यही तो आप कहना चाहते हैं न और फिर संसार में इतनी बड़ी अलाइड आर्मी के अफसरों पर भी घर के भेदी विभीषण का सन्देह किया जा सकता है ।”

यह बोलते-बोलते मिता उत्तेजित हो उठी । तंबू में गवाह या आसामी के लिए अलग कटहरे का प्रबन्ध नही था । मिता ताव में आगे बढ़ कर राय के सामने आ गई । उसके सम्मुख सिर ऊँचा कर उसे आँखें फाड़ कर देखने लगी ।

राय उस दृष्टि को सहन न कर सके । पहिले वे इधर-उधर देखने लगे । मानो सागर के तूफान में वे कोई आश्रय या निष्कृति पाने के लिए इधर-उधर कुछ खोज रहे हों ।

थोड़ी देर बाद राय ने मिता की ओर देखा ।

देखते-देखते उनकी दृष्टि के सम्मुख अतीत की सारी बातें घूम गई । यह वही मिता है जो उनकी होना चाहती थी । जिस समाज में लड़की प्रेम की कहानी अपने कानों से सुनती है और मन से जाँचती है, यह उसी आधुनिक समाज की कन्या है । किन्तु उसने प्रेम की बातें सुनने की अपेक्षा नहीं की । वह अपने आप ही आगे आई, और मन की बातें पहिले ही से बता गई । किन्तु जो इतनी सरलता से हाथ में आजाती है, उसे प्राप्त करने में हृदय को आनंद भी नहीं आता है ।

राय की भी विशेष इच्छा नहीं थी । किन्तु क्या वह ठीक हुआ ?

किन्तु तब भी यह नारी उसके जीवन-पथ पर सम्मुख आई । वह क्या केवल उसी का अनुसरण करेगी ? किन्तु वह काम तो बड़े दुःसाहस का है । बगाली-जीवन ठीक तरह से समझ में नहीं आता है । तब क्या वह आई एन ए. के कर्नल के लिए है ? किन्तु वह कैसे संभव है ? इस तरह का योगायोग होगा कैसे ? जो मिता उसकी होना चाहती थी—वह मिता . . ।

राय और किसी ओर देख न सके । उनका मन अतीत की ओर था और नेत्र देवल की ओर । उनके सामने मिता नहीं थी । कोर्ट मार्शल का कोई अस्तित्व नहीं रह गया । केवल देवल सिर ऊँचा किये खड़ा था ।

थोड़ी देर बाद राय ने मिता की ओर देखा । शान्त भाव से बोले, “मिस अपनी जगह वापस जाइये । कोर्ट मार्शल की गवाही में बड़ी सख्त मेहनत पड़ती है । किन्तु आपके समान पदस्थ अफसर को विचलित नहीं होना चाहिए ।”

उसके बाद कोर्ट की ओर देख कर बोले, “मि० प्रेसिडेंट, मुझे अत्यन्त दुःख है कि शत्रु के विरुद्ध मुकदमा चलाने में मैं थोड़ा सीमा के बाहर हो गया । मैंने जिरह में कोई ऐसा प्रश्न या इशारा नहीं किया जिससे इस कमीशंड अफसर का असम्मान हो ।”

मि० प्रेसिडेंट ने सिर हिला कर इसे स्वीकार किया ।

राय ने झुक कर कोर्ट का सम्मान किया और बोले, “कोर्ट की अनुमति लेकर मैं गवाह से थोड़े और सवाल करना चाहता हूँ ।” मिता की ओर देख कर बोले, “यदि कोई शत्रु का गुप्तचर टीले पर चढ़ कर आपके कमरे

में आ जाता तो आप क्या करतीं ?”

“गोली चला देती । उस रात मेरे पास रिवाल्वर था । हमेशा ही रहता है ।”

“किन्तु यदि वह आपके पीछे से रिवाल्वर आप ही पर तान देता तब ?”

“मुझे बिना बाँधे या मारे उसका वहाँ खाना या मशीन चलाना संभव नहीं था । इसके अतिरिक्त मेरी ट्रांसमिटिंग मशीन अमेरिका की बनी हुई है और बिल्कुल आधुनिक है । यदि मैं उसे नहीं चला सकती थी तो किसी जापानी या आई. एन. ए. के अफसर से उसका चलाना संभव नहीं था । मेरे बांधे जाने पर मैं सब जगह रिपोर्ट कर सकती थी । मिलिटरी अफसर होकर मैं किसी का हाथ लगाना कैसे सहन कर सकती थी ।”

“फिर मशीन गरम कैसे थी ?”

“मशीन गरम थी, या उसके गरम होने की रिपोर्ट भर कर दी गई थी यह मैं कैसे जान सकती हूँ ।”

प्रेसिडेंट हो-हो करके हँस पड़े । प्रासिक्यूटर थोड़ा पहिले ही मुसकरा रहे थे । प्रेसिडेंट को हंसते देख कर सब की हंसी का फव्वारा छूट पड़ा । सारे दिन बादल छाये रहने के बाद संध्या को थोड़ी वृष्टि हो गई ।

प्रासिक्यूटर ने फिर शुरू किया, “वहाँ इतना खाना-पीना करना भी क्या आप का ही काम था ।”

“चुपचाप अंधकार में अकेले बैठ कर और क्या किया जाय ? शत्रु पक्ष के लोगों को क्या बुला कर उनको हिस्सा दिया जाता ।”

“यह बात है । किन्तु शत्रु-पक्ष के किसी आदमी ने नीचे सन्तरी को बाँध दिया और ऊपर नहीं आया । यह कैसी बात ?”

“इसके प्रमाणित करने का काम आप का है, गवाह का नहीं । हमारे टीले में या इलाके में कोई गुप्तचर नहीं आया । लागबुक में उसका प्रमाण है ।”

कोर्ट को संबोधन कर राय बोले, “मि० प्रेसिडेंट, बिल्कुल सच बात है । इस विषय में मुझे कोई प्रमाण नहीं मिला । गवाह वहीं था । अब मेरी आखिरी गवाह एक मणिपुरी लड़की है । और उसके साथ आसामी की जो थोड़ी-बहुत

बातचीत हुई उसकी माइक्रोफोन रेकर्डिंग भी हाजिर की जायगी ।

मिता एक ओर फोल्डिंग चेयर पर जाकर बठ गई । उसके मन में विराट उत्तेजना थी, किन्तु मुख पर निर्विकार शान्ति थी । वह उत्तमा की ओर अपलक देखती रह गई ।

देवल मन ही मन अत्यन्त अस्थिर हो उठा । अब उसकी मृत्यु निश्चित है । किन्तु इस कारण इतनी अस्थिरता तो नहीं होती । मिता, उसके स्वप्न की मिता शायद बच जायगी । जज एडवोकेट ने मिता से जिरह करके सारी बातें ऐसे रखी हैं कि जो मिता के यहाँ गया था उस पर सन्देह ही किया जा सकता है । कर्नल राय की अद्भुत पैनी बुद्धि है ।

देवल ने राय के बारे में भी सोचा । अब उसे कोई सन्देह नहीं रह गया कि वह व्यक्ति कर्नल राय ही है । मिता, उसकी मिता रक्षा पा जायगी । किन्तु देवल की चेष्टा से या उसकी साधना से नहीं । उसके साथ सन्देह के कारण ही मिता विपत्ति में पड़ी । और उस विपत्ति से उसे बचाया किस ने । जिसके कारण वह मिता के मन की थाह न पा सका, उसके द्वारा । प्रिया के प्रियतम द्वारा ।

किन्तु यह वेदना क्या मिता को न पा सकने के कारण है ? या मिता को पाने के कारण । या जिसने मिता का आविष्कार किया उसके कारण ?

देवल ने क्या रणक्षेत्र में युद्ध करना ही सीखा है ? उसके मन में पृथिवी पर कुहासे के समान वेदना छा रही है । शत्रु हमला करने के पूर्व एक नकली कुहासा बना कर उसके पीछे से हमला करते हैं । वह किधर से उठता है, किधर से आता है इसका पता नहीं लगता । किन्तु समझदार शत्रु यह समझ जाता है कि इस नकली कुहासे के पीछे शत्रु का अभियान है ।

माइक्रोफोन के रेकर्ड के गीत, बातचीत और नूपुर की आवाज कानों में नहीं पडती । उसमें बज रही है मृत्यु-दण्ड की आगमनी ।

और मृत्यु के सम्मुख देवल के मन में वेदना का कुहासा छाया हुआ था ।

उसके बीच से धीरे-धीरे एक रूपवती, मस्तक उठाये, बुद्धि से उज्ज्वल और दुःसाहसी नारी मूर्ति प्रकट हुई । वह शिक्षिता किन्तु निरीह मणिपुरी कन्या थीं । वह तेज गले से बोली—

“आप उस रेकर्ड को सुन रहे हैं कि मैं आसामी को कलकत्ते से पह-

चानती हूँ। तब मैं कालेज में पढ़ती थी। जापानियों ने कलकत्ते में दिसम्बर १९४२ में बम गिराये थे। तब देवलसिंह कलकत्ते में था। कलकत्ते के लोग आई. एन. ए. में कैसे जायेंगे ?”

प्रासिक्यूटर गंभीर भाव से बोले, “किन्तु आसामी ने स्वयं स्वीकार किया है कि वह आई. एन. ए. का है। वह हिज मेजस्टीज सैन्य दल का इमरजेंसी कमीशन का कप्तान होकर मलाया सिंगापुर गया था।”

देवल की स्वीकारोक्ति उत्तमा को सुना दी गई।

किन्तु उत्तमा इतने सहज पकड़ में आने वाली न थी। वह बिना घबड़ाए बोली, “किन्तु आसामी १९४२-४३ में कलकत्ते में था। उस समय उसने मेरे साथ जापानी-विमान-हमले के समय ट्रेच में आश्रय लिया था। वह बात रेकार्ड में है। अब कटहरे में खड़ा कर आप उसकी कहीं और बातों का विश्वास कर लें, यह आपका अत्याचार है। जोर जबरदस्ती से मिथ्या बात स्वीकार नहीं कराई जा सकती, जिसे थर्ड डिगरी मेथड कहा जाता है।”

साथ-साथ उत्तमा ने प्रेसिडेंट को देख कर कहा, “मि० लार्ड, दिस इज ब्रिटिश जस्टिस ?”

प्रेसिडेंट चंचल हो उठे। विलायती यूनिवर्सिटी के शिक्षित व्यक्ति, ‘नेशनल सर्विस’ करने के लिए युद्ध में योग देने आये थे। किन्तु अन्याय या असत्य सहन करने की आदत न थी।

देवल की ओर देख कर जिज्ञासा की, “यह नालिश क्या सत्य है ?”

देवल उभय संकट में पड़ गया। उत्तमा को शत्रु पक्ष फोड़ कर गवाह बना कर लाया था। उसके साथ आसामी का इस संबंध में कोई विचार परामर्श नहीं हो पाया था। उसके बोलने से उत्तमा को और अधिक परेशानी होती। अब वह कैसे कहे कि वह आई. एन. ए. का नहीं है। इंडियन नेशनल आर्मी एकट के अनुसार उसने जो नेताजी के निकट देश के लिए शपथ ली है, उसे वह कैसे अस्वीकार करे। यह संभव नहीं है।

किन्तु उसे स्वीकार कर लेने पर उत्तमा पर भयंकर विपत्ति पड़ जायगी। यह प्रमाणित हो जायगा कि उत्तमा शत्रु-पक्ष की है। केवल इतना ही नहीं उसे स्पाई कहा जायगा। वह न होने पर राय के सामने इतनी बना कर बात कैसे कही जायगी। पाँच व्यक्तियों के सामने।

देवल क्या करे । कौन-सी बात कहे जो ठीक समझी जा सके ?

यहाँ एक जज ने उसकी रक्षा की । वे बोले, “मि० प्रेसिडेंट, आसामी यदि हाँ, या ना कुछ भी न बोले तो यह उसका दायित्व है । हम उससे एक अन्तिम प्रश्न पूछते हैं । अच्छा गवाह, बताओ तो तुम गाँव छोड़ कर भागी क्यों ? अपनी बातचीत की समस्त बैकग्राउंड खोल कर बता दो जिससे सारी सच बातें मालूम हो जायें । यह जान लो कि कोई बात छिपाने से काम नहीं चलेगा ।”

दीप्तिभंगी से उत्तमा बोली, “मैं कोई बात नहीं छिपाऊँगी । आप लोगों का ही शत्रु के भय से नरवस ब्रैकडाउन हो गया है । आप के स्नायु इतने दुर्बल हो गये हैं कि चारों ओर शत्रु और गुप्तचर ही दिखाई देते हैं ।”

गवाहों के बीच में बैठे सूबेदार मेजर को और सहन नहीं हुआ-वह हाथ से जांघ पर ताल देने लगा और खास उर्दू में चिल्ला उठा—“खामोश-खामोश ।”

प्रेसिडेंट ने तुरन्त डांट कर उसे चुप रहने की आज्ञा दी । बेचारे का उत्साह ठंडा पड़ गया ।

राय ने संक्षेप में कहा, “देखो उत्तमा सिंह । आप के घर में कई लिखा-पढ़ी के चिह्न हैं ? वहाँ से तालाब तक किसी तरह के चिह्न हैं ? तालाब में एक सिपाही की लाश पाई गई है । आप के घर के पास जंगल में एक आई. एन. ए. की पोशाक भी पाई गई है । यह आसामी उसे अपनी स्वीकार करता है । जंगल के टीले में जिस सन्तरी का पहरा था उसके हाथ पैर बांधने वाली रात की घटना है । सन्तरी ने आसामी की सनास्त कर ली है । आसामी के साथ आप खूब निकट बैठ कर और बहुत घुल-मिल कर बातें करती देखी गई है । आप की बातचीत रेकॉर्ड कर ली गई है । उसका इतना हिस्सा सुन लो ।

माथा ऊँचा कर उत्तमा बोली, “सुना है । किन्तु इससे कोई योगायोग तो नहीं हुआ । इसे कहते हैं काकतालीय । आकाश में कौआ उड़ गया और नारियल ज़मीन पर गिर गया । कौए के उड़ने से नारियल का कोई संबंध नहीं है । आपके टीले और हमारे घर की बातों से मेरा कोई संबंध नहीं है । और देवल का भी नहीं है । सिपाही के डर से मैं गाँव छोड़ कर भाग गई

थी। किन्तु लूटने के लोभ से या अन्य बुरे मतलब से यदि सिपाही गाँव में छिप कर आपस में मारामारी, खून खराबी करें तो उसका क्या फल होगा, इसे प्रमाणित करने का भार क्या उनके ऊपर है जो भय के कारण गाँव छोड़ कर भाग गये थे ?”

प्रेसिडेंट अवाक् होकर देखते रह गये। कर्नल राय के मुँह से बात ही नहीं निकली।

सब से अधिक देवल को आश्चर्य हुआ। इस सरला किशोरी, गाँव की अबोध बालिका के मन में इतना जोर कहाँ से आ गया ? कहाँ से इतनी तीक्ष्ण बुद्धि आ गई ? कैसे यह रूपान्तर हो गया ?

उत्तमा फिर बोली, “जो सिपाही मारा गया है वह लौट कर गवाही नहीं देगा। जो लोभ के मारे गाँव में आ गये हैं वे भी मुँह नहीं खोलेंगे। बात कहने के लिए केवल टीले का सन्तरी है। यह भी आप लोग समझ रखिए कि यदि वह सिपाहियों को किसी बात को मना करने के लिए गया हो और उसे अन्य सिपाहियों ने बांध रखा हो तो क्या वह इसे स्वीकार कर लेगा ? वह क्या अपने दल के सिपाहियों की बदनामी में शरीक होगा ? क्या उसे अपनी यूनिट में रहना नहीं है ? आप इस बात को क्यों नहीं समझ पाते ? आई. एन. ए. की फटी यूनीफार्म का आप लोग अभी तक कोई प्रबन्ध नहीं कर सके हैं। इस बीच देवल के माफिक नाप का आसामी ढूँढ़ना शायद कठिन था ?”

उत्तमा के कठिन प्रश्न ने कोर्ट को एक बार दिशाहारा कर दिया।

राय उत्तमा को देखते रह गये। उनके मुख पर क्या लिखा था—प्रश्न या प्रशंसा यह समझ में न आया।

प्रेसिडेंट ने उत्तर दिया, “ठीक बात है। मैं यह बात मानता हूँ कि ऐसी बात संभव नहीं हो सकती है। किन्तु सिपाही के लिए वह सब करना संभव नहीं हो सकता।”

“किसके पक्ष में संभव हो सकता है इसका विचार या मीमांसा करना मेरा दायित्व नहीं है। आसामी का भी नहीं।”

“किन्तु गवाह, आप तो फरियादी पक्ष की हैं। आसामी की ओर से आप ऐसी बचाव की बातें कह रही हैं, यह क्यों ?”

“सुविचार चाहती हूँ। मैं किसी पक्ष की गवाह नहीं हूँ। मिलार्ड, जिस सुविचार के लिए आप का इतना यश है मैं केवल वही सुविचार चाहती हूँ। देवल सिंह दोषी नहीं है। आपने उसे मिथ्या सन्देह में अभियुक्त कर लिया है।”

“किन्तु आसामी स्वयं स्वीकार कर चुका है, और उसने यह भी नहीं कहा है कि जोर-जबरदस्ती से उससे स्वीकारोक्ति कराई गई है।”

अब तक प्रेसिडेंट बातचीत कर रहे थे। अब प्रासीक्यूटर ने बात शुरू की। “अच्छा उत्तमा देवी, आप क्या कहना चाहती हैं कि आसामी किसी को बचाने के लिए यह स्वीकार कर रहा है कि वह आई. एन. ए. का है?”

राय ने प्रश्न करने के बाद उत्तर के लिए उसकी ओर देखा। एक बार उन्होंने उत्तमा को देखा और एक बार मिता को। दोनों उनकी ओर देख रही थीं; मुकुट और तारों से सज्जित मिलिटरी पोशाक पहने कर्नल राय की ओर। राय उनकी दृष्टि सहन न कर सका। उनका नाक पर लगा चश्मा न जाने कब नीचे खिसक गया। सोने की चेन को हाथ में लेकर बड़ी बेचैनी से वह उसे साफ करने लगे।

राय ने फिर शुरू किया, “अच्छा इस बात को जाने दो। यह बताओ, देवल जो इतने दिनों से तुम्हारा पुराना मित्र है, वह इस युद्ध के बाज़ार में और उस गाँव में क्या कर रहा था, उसकी गतिविधि का हिसाब तो चाहिए ही।”

उत्तमा इससे घबड़ाई नहीं। उसने उत्तर दिया, “गतिविधि यदि सन्देह-जनक होती तो उसका प्रमाण फरियादी को देना चाहिए। आसामी यहाँ उस प्रमाण का क्या करेगा। उसकी गवाही देने किस साहस से लोग आयेंगे। आपने जैसे ढोल पीट कर कोर्ट मार्शल बिठाया है, उसमें कौन-सा दो सिर वाला असैनिक यहाँ देवल के पक्ष में गवाही देगा।”

राय ने तुरन्त वह बात स्वीकार कर ली। यह भी स्वीकार किया कि विचार के नियम के अनुसार आसामी के पक्ष में कोई गवाही देने या सफाई देने वाला मिलना असंभव है। लोग भयभीत हैं। कोई गवाही नहीं देगा।

जज एडवोकेट फरियादी गवर्नमेंट या आसामी पक्ष दोनों ओर के मामलों

को सरल कर सकता है। वह बोला, “किन्तु लड़ाई के इलाके में सब समरी कोर्ट मार्शल ऐसे ही होते हैं। उसके कारण विचार में देरी नहीं की जाती, या दंड भी कम नहीं होता।”

राय फिर बोले, “मैं निवेदन करता हूँ, कि यह बात ठीक है। किन्तु फरियादी पक्ष को अकाट्य प्रमाण देना होगा। मेरी कठिनता यह है कि गवाह के बयानों में कहीं-कहीं त्रुटियाँ रह गई हैं।”

एक विचारक ने हँस कर कहा, “गवाह के मानें दो तरुणियाँ गवाह ही हैं न?”

सिर झुका कर राय बोले, “ठीक है, मिलार्ड। तरुणी अर्थात् संसार के दाँव पेचों में पड़ कर जिनकी सच बोलने की इच्छा अभी तक नष्ट नहीं हुई है।”

विद्रूप भरा उत्तर मिला, “कर्नल राय, आप गलती से इस पेशे में आ गये हैं। कोर्ट मार्शल के जज एडवोकेट की बजाय आप नीतिवागीश की ववतृता हज़ार गुनी अच्छी और स्वाभाविक दे सकते थे। यह बात ठीक नहीं रही।”

राय इससे विचलित नहीं हुए। पहिले की ही तरह अदब कायदे से खूब झुक कर बोले, “मि. प्रेसिडेंट, अब हमारे बाज़ी बयानों पर दृष्टि डालिये। अच्छा गवाह, रिकर्ड की हुई यह विशेष बात तो सुनो।”

रिकार्ड चलाया गया। रास प्रिया के प्रसाधन की वंदना हो रही थी।

“साजल साजल धनि मनोहर वेशे,

धनि सखीजन माझे—साजे,

साजे मनोहर वेश।”

इस गाने की मनोहर ध्वनि में कहीं दूर से परिष्कार की हुई उत्तमा की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी। उस गाने के बीच में मृदु स्वरों में गाती गाती वह बंगला स्वरों में बोल रही थी।

“तुम्हारी, तुम्हारी कवि की भाषा में भी थोड़ा-बहुत बोलना चाहती हूँ। सुनो, क्या तुम कृष्ण होकर हमारे घर आये हो?”

फिर उत्तमा के गले को दबाता हुआ रास गीत सुनाई दिया।

“साजे मनोहर साजे,

धनि कतो रूपे साजे।”

फिर उसके बीच में उत्तमा का गला सुनाई दिया ।

“हृदयपुर माझे
महाराज ए कि साजे
एले हृदयपुर माझे ।”

उसके बाद उत्तमा की अपने मन ही में धीरे-धीरे कुछ कहती हुई बोली सुनाई दी—“तुम कौन-सा साज सज कर आये हो । तुम साधारण बंगाली नहीं हो । लाखों मनुष्यों के बीच में तुम एक मनुष्य हो । यूनीफार्म छोड़ने पर भी तुम वीर वेष में हो ।”

इतना सुनने के बाद रेकॉर्ड रोक देने की आज्ञा हुई । जज ने एडवोकेट से कहा, “हमें इन बातों को सुन कर कोई संदेह नहीं रह गया है कि आसामी आई. एन. ए. का है और गुप्तचर है । इस विषय में “कारोबोरेटरी एविडेंस” अर्थात् प्रमाण के समर्थन में नवीन प्रमाण पाया गया है । सूबेदार मेजर का माइक्रोफोन रखना सार्थक हो गया ।

“मैं भी यही बात कहता हूँ, मि. प्रेसिडेंट,” सिर और नीचे नवा कर राय बोले, “इस माइक्रोफोन से यह प्रमाणित हो गया है कि आसामी क्यों इतना लापरवाह होकर अपने को शत्रु पक्ष का कह कर दोष स्वीकार कर रहा है ।”

प्रेसिडेंट ने अपनी कुरसी थोड़ा आगे खिसकाई और पूछा, “कोई नया प्रमाण कोर्ट के सामने हाजिर करना है या किसी नवीन दृष्टि से मामले को देखना है ।”

राय बोले, “इस रेकॉर्ड को सुन कर कोई संदेह नहीं रह गया है कि गवाह उत्तमा आसामी देवल को गंभीर भाव से प्यार करती है । इसने आत्म-समर्पण कर प्यार में सब कुछ न्योछावर कर दिया है ।”

एक विचारक ने बाधा दी, “ठीक बात है । इसीलिए आसामी गवाह के घर गया और सिपाही का खून किया । ऐसा भी हो सकता है कि गवाह ने कहीं और हिंसा की हो । अवश्य ही सिपाही को किसी खराब मतलब से देखकर ही मारा गया है । वह खून न होने पर भी नरहत्या अवश्य है ।”

राय बोले, “किन्तु दुःख की बात है । हमें इसका प्रमाण नहीं मिला कि किसी घर में आसामी गवाह के साथ था । यह अवश्य साबित हुआ कि बंगाली

मीत है। आजकल के अनेक आधुनिक अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोग धोती या तहमत पसंद नहीं करते हैं।”

“कालेज-शिक्षिता गवाह ने अपने मन की वासना प्रकाशित की कि वह उसे धोती के बदले वीर वेष में देखेगी। मिलार्ड, यहाँ मैं वर्तमान बंगाली तरुण-तरुणी की एक भीतरी बात की हँसी ठट्ठे का एक उल्लेख करना चाहूँगा। असामरिक तरुण यह कहते हैं कि युद्ध के कारण धन के विवाह या प्रेम का बाज़ार मारा गया। अर्थात् तरुणियाँ यूनीफार्म पहने मस्कटधारी सामरिक तरुणों के गले में वरमाला पहनाना पसंद करती हैं।”

यह कह कर राय ने एक बार सबकी दृष्टि बचा कर मिता की ओर देखा। उसने देखा कि मिता भी उसी की ओर देख रही थी। बिल्कुल अनिमेष।

उत्तमा भी अपलक राय को देख रही थी। वह समझ नहीं पा रही थी कि राय मामले को किस ओर मोड़ना चाहते हैं। अब उसकी जिरह और हँसी दोनों अधिक शत्रुता से भरी हुई नहीं लग रही थीं।

प्रेसिडेंट ने पुकारा, “अर्थात् !”

“अर्थात् बहुत साफ है मि. प्रेसिडेंट, गवाह आसामी के साथ खूब गहरे प्रेम में पड़ी है। तरुणी जिसे प्यार करती है, उसे वीर वेष में देखने की उसकी विशेष साधना होती है। गवाह के मन की यह वासना स्वाभाविक है।”

सबने देखा कि सूबेदार मेजर विशेष प्रशंसा के भाव से अपनी मूछों को दोनों ओर मरोड़ रहे थे। वीर पूजा की बात सुन कर उनका सीना फूल उठा। उनके सिर के ऊपर सुनहरा कुला और उस पर लिपटा तंजैब का दस गज के करीब का साफा और भी ऊँचा हो गया।

राय से पूछा गया, “यह बात कैसे मानी जा सकती है ? इसका प्रमाण क्या है ?”

“कुछ भी नहीं, मिलार्ड हमारे पक्ष का मामला बड़ा कमज़ोर लगता है। और कोई नया गवाह या प्रमाण भी नहीं है। इसलिए यदि मामले को मुलतबी करने की आज्ञा हो तो कल मैं सरकार की ओर से सारी बातों का जवाब दूँगा। इसके बाद कोर्ट किसी निर्णय पर आ सकता है। मैं एक आखिरी प्रश्न करके इस आखिरी गवाह को छोड़ दूँगा।”

आँख पर चश्मा चढ़ा कर कर्नल राय ने उत्तमा से प्रश्न किया,

“गवाह, सच बताना । आसामी के साथ आपका प्रेम पहिले दर्शन में ही हुआ था, जो आप उसे बचाने की इतनी चेष्टा कर रही हैं या उसके अतीत का इतिहास सुन कर उससे प्रेम हो गया ? आसामी शत्रु-पक्ष का आदमी है या नहीं, उसका सबसे बड़ा प्रमाण आपने ही दे दिया है ।”

उत्तमा ने इस बार करुण भाव से चारों ओर देखा । उसमें अब दुःसाहसी निश्चिन्त बुद्धि का युद्धदेहि भाव नहीं रह गया था । उसने राय की ओर देखा । उनके नेत्र मिता की ओर अनुसरण किये थे । मिता की दृष्टि देवल की ओर अनुसरण कर रही थी ।

उसके बाद वह और कुछ देख न सकी। धीरे-धीरे मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़ी।

× × ×

दूसरे दिन कोर्ट मार्शल में सभी राय का चेहरा देख कर चौंक पड़े। उनके केश अस्तव्यस्त थे। आँखें भीतर घँस गई थीं। उनकी पोशाक गुंजटी सिमटी और बेतरतीब थी। चेहरा श्रीहीन और मलिन हो गया था। उनका वेषभूषा की ओर बिल्कुल ध्यान न था।

प्रसिडेंट ने इच्छा प्रकट की कि यदि जज एडवोकेट अस्वस्थ हों तो मामला मल्टी कर दिया जाय।

राय ने तुरन्त उत्तर दिया कि वह बिल्कुल ठीक हैं। मामला इतना जटिल है कि वे सारी रात आइन और नत्थी किये कागज-पत्र पढ़ते रहे। जैसी युद्ध की अवस्था है, उसे देखते मामले को आज ही समाप्त कर देना उचित है।

मिता, मिता । वह अपनी संपूर्ण शक्ति बटोर कर राय ही को देख रही थी । राय ने रुमाल निकाल कर मस्तक का पसीना और आँखें पोंछीं । फिर थोड़ा साहस बटोर कर उन्होंने मिता की ओर देखा ।

उसके बाद शुरू हुई असामरिक जीवन के ड्राइंगरूम और सामरिक जीवन के मेस रूम के वीर पुरुष की वक्तृता। वह बिल्कुल नया व्यक्ति लगा। नई विद्या के आलोक से, नई दृष्टिभंगिमा से वह अनुप्राणित हो उठा। वक्तृता देते-देते उन्होंने एक जगह स्वीकार किया, “मि. प्रेसिडेंट, इस मामले में सरकार पक्ष के प्रमाण और वक्तव्य की जांच करते-करते मुझे एक नया प्रकाश मिला। उससे केवल मुझे मन में ही नहीं, नीरस कानून के अँधेरे कोने में भी

प्रकाश दिखाई दिया। आपसे अनुरोध करूँगा कि उसका थोड़ा अंश ग्रहण करें।”

“मि. प्रेसिडेंट, मैंने अब तक सरकारी पक्ष के सब गवाहों के बयानों को खूब अच्छी तरह जाँचा है। किन्तु अत्यन्त दुःख के साथ स्वीकार करने को बाध्य होता हूँ कि ठीले पर किसने संतरी के शरीर को बांधा, इसका कोई ठीक प्रमाण नहीं पा सका। संतरी की गवाही का कोई समर्थन नहीं है। इसी तरह वाकाई की जूनियर कमांडर की गवाही का भी कोई प्रमाण नहीं है। वे एक दायित्वपूर्ण अफसर हैं। मिलिटरी में अत्यन्त गोपनतम कार्य कर रही हैं। उन्होंने भी जब आसामी को नहीं देखा, या उसकी आवाज़ को वे साउंड रेकर्डिंग यंत्र में पकड़ न सकीं, तो आसामी पर दूसरी बार चार्ज प्रमाणित नहीं हुआ।

“अभी तक तीसरे अभियोग का भी कोई प्रमाण नहीं मिल सका है। किसी ने भी आसामी को गाँव में घुसते नहीं देखा। गवाह उत्तमा के घर में नहीं देखा गया। किसी ने उसे मारामारी करते नहीं देखा। इस बारे में मेरा भरोसा उत्तमा पर था। किन्तु उसने स्पष्ट कह दिया है कि तालाब पर पाई गई लाश, और एक आई. एन. ए. की पोशाक कुछ भी प्रमाणित नहीं करती है। इसलिए आसामी को इस मामले में हम ठीक तरह से जकड़ नहीं सकते। गुप्तचर के हिसाब से भी कोई चार्ज नहीं लगता। अतएव इस मामले की आलोचना करके मैं कोर्ट का और समय नहीं लेना चाहता।”

“अब बाक़ी रह जाता है पहिला अभियोग—राजद्रोह—सबसे बड़ा अपराध। मि० प्रेसिडेंट, यह अपराध यदि प्रमाणित हो जाय तो आसामी के बचने का कोई उपाय नहीं। तब निश्चय ही उसका प्राणदंड मैं चाहूँगा। हाँ—प्राणदंड, प्राणदंड !!

कहते-कहते राय ने मिता की ओर देखा। उसका सूखा मुरझाया मुख आशा से भरा था।

प्रेसिडेंट ने बाधा दी, “जज एडवोकेट, आप विचलित न हों। दंड की बात बार-बार कह रहे हैं, पहिले दोष के बारे में तो कहिए।”

“वही कह रहा हूँ—मि. प्रेसिडेंट। इंडियन पेनल कोड में, राजद्रोही किसे कहते हैं, यह स्पष्ट लिखा है। राजा के विरुद्ध युद्ध करना अपराध है। राज्य किसका है? अंग्रेज का। किन्तु मैं देखता हूँ कि अंग्रेज-साम्राज्य के विरुद्ध

आज़ाद हिन्द सरकार ने युद्ध घोषणा की है। इस घोषणा के प्रमाण मैंने कोर्ट में पहिले ही दाखिल कर दिये हैं। अन्तर्जातिक न्याय के महान् पंडित ओपेन-हीम ने लिखा है कि यदि न्याय के अनुसार युद्ध घोषणा हो, तो जो एक हिसाब से विद्रोही कहे जाते हैं, उनका विचार अन्तर्जातिक नियम के अनुसार होना चाहिए। १९१७ में पुलिस नेशनल आर्मी को उस समय के मित्र पक्ष ने 'वेली-जारण्ट' अर्थात् युद्ध-पक्ष का मान कर स्वीकार किया था। १९१८ में प्रथम महायुद्ध के समय अंग्रेज, अमेरिकन, फ्रांस इत्यादि ने चैकोस्लोवाकिया के विद्रोहियों को युद्ध-पक्ष का कह कर स्वीकार किया था।"

प्रेसिडेंट इस नई तर्क शैली को सुन कर अवाक् रह गये। उन्होंने प्रश्न किया, "इससे क्या हुआ?"

राय ने आर्डर नहीं माना, "मिलार्ड, इससे हुआ यह कि आसामी या आई. एन. ए. का कोई भी योद्धा विद्रोही नहीं है। १९३७ की 'ब्रिटिश इयर बुक आफ इंटरनेशनल ला' में देखिये, लिखा है कि योद्धा कह कर स्वीकार करने के अर्थ हैं, कि कानून के अनुसार युद्ध करने वाला कह कर स्वीकार करना। जापान ने आज़ाद हिन्द गवर्नमेंट को स्वीकार किया है। समस्त 'एक्सिस' पक्ष ने स्वीकार किया है। इसलिए आसामी को कैसे राजद्रोही कह कर प्रमाणित करूँ, समझ में नहीं आता।"

प्रेसिडेंट तिलमिला उठे। उनसे भी अधिक क्रोध दिखाया डिप्टी विचारक ने। वे चिल्ला कर बोले, "इस तरह की बेईमानी की रिपोर्ट हम अभी दिल्ली के आर्मी हेड क्वार्टर में करेंगे।"

खब्र विनीत भाव से झुक कर प्रासीक्यूटर बोले, "मिलार्ड, अवश्य करना चाहिए। तब भी न्याय चिरकाल तक न्याय ही रहेगा। वह हमारी इच्छा, उद्देश्य या सुविधा के अनुसार नहीं होगा। मैं स्वयं इस संबंध में प्रस्ताव करूँगा। किन्तु उसके पहले मेरा वक्तव्य ठीक है या बेकानूनी है, इसका विचार करना होगा। उसके अनुसार आप अपनी राय यही लिख दें।"

"अच्छा ठीक। आगे कहो।"

"मि. प्रेसिडेंट, मैं आसामी की तरह मारेले या इमोशनल कारण की बात नहीं उठा रहा हूँ। कर्नल हंट ने भारतीय दल को जापानियों के हाथ में देते समय सम्राट् को दी हुई शपथ से मुक्ति दी या नहीं, यह तर्क नहीं करूँगा।

वह डिफेंस पक्ष करेगा। किन्तु प्रासीक्यूशन की ओर से मैं मुश्किल में पड़ गया हूँ। विराट प्रामाणिक पंडित डिव्कावेट ने लिखा है कि अन्तर्राष्ट्रिक युद्ध होता है, दो राष्ट्रों के सैन्य दलों में अथवा एक राष्ट्र और युद्धरत एक साम्राज्य के बीच में। विटने ने इंटरनेशनल ला की पुस्तक में कहा है कि अन्तर्जातिक अन्याय को दमन करने के लिए यदि कोई अन्तर्जातिक कर्तृपक्ष न हो तो युद्ध को इंटर-नेशनल ला बेकानूनी नहीं कह सकता। इस संबंध में अमेरिका के प्रेसीडेंट अब्राहम लिंकन की घोषणा पढ़ कर सुनाता हूँ। इसके अतिरिक्त मैं ब्रिटिश पार्लमेंट की वक्तृता संग्रह हैन्सर्ड पुस्तक से प्रधान मंत्री विंस्टन चर्चिल और परराष्ट्र मंत्री ईडन की वक्तृता आपको पढ़ कर सुनाता हूँ। उनमें-से प्रत्येक के मूल्यवान मत के अनुसार आसामी को राजद्रोही नहीं कहा जा सकता।”

कोर्ट मार्शल के विचारकों के सिर चकरा गये। उनके जीवन में कभी ऐसी विपत्ति नहीं पड़ी थी। इतनी पांडित्य, इतनी बुद्धि, इतनी न्याय-विद्या। बन्दूक की गोली जहाँ समाप्त हो जाती है विचार वहाँ.....।

करुण नेत्रों से मि० प्रेसिडेंट ने जिज्ञासा की, “लर्नेड प्रासीक्यूटर ! इस अवस्था में क्या करना उचित है। आसामी निश्चय ही छोड़ा नहीं जा सकता। फायरिंग स्क्वाड बाहर तैयार है—और.....”

“अवश्य अवश्य, मि. प्रेसिडेंट। फायरिंग स्क्वाड तो पहुँच से दूर की चीज है। इंटरनेशनल ला तो उससे बहुत ऊँचा है। आज़ाद हिन्द सरकार का यह पहला मामला है। देश का श्रेष्ठ कोर्ट, इसमें क्या निदश देगा, यह नहीं मालूम। कल रात को मैंने बेतार से आर्मी हेड क्वार्टर का निर्देश मँगाया है। आर्मी एक्ट की ९८ धारा के अनुसार इस मामले के सब. : .आपको दिल्ली भेजने का अधिकार है। बात यह है कि इस मामले में आसामी का कोई दोष प्रमाणित नहीं होता है। यह राय देकर मैं अनिर्दिष्ट काल तक के लिए कोर्ट को मुलतवी करने को कहूँगा।”

“बांस के आगे बेंत को पकड़ना” यह कह कर सरकारी विचारक बोले, “किन्तु डिसर्सन ? आसामी इंडियन आर्मी छोड़ कर भाग गया था, इसका प्रमाण तो है।”

गंभीर भाव से झुक कर राय बोले, “मिलार्ड, उससे कुछ नहीं होगा। पिनल कोड में लिखा है कि एक अपराध के लिए दो दंड नहीं दिये जा सकते।

इसलिए यदि आसामी राजद्रोही नहीं है—तो उसके सैन्य-दल छोड़कर भागने की बात नहीं ठहरती ।”

यह कहते-कहते राय अन्यमनस्क हो गये । मिता—उनकी मिता—इस बारे में वह क्या सोचेगी ?

दिल्ली का लाल क़िला ।

नेताजी उसके ऊपर तिरंगी जातीय पताका फहराना चाहते थे । उनकी वाहिनी की ध्वनि थी, “दिल्ली चलो, दिल्ली चलो ।”

देवल वहीं लाया गया । विजयी सेनानी हो कर नहीं, किन्तु राजा के विरुद्ध युद्ध करने के अभियोग में । उसका मामला मुलतवी हो जाने से फिल-हाल उसके प्राण बच गये थे, किन्तु इसी बीच में आई. एन. ए. के तीन अफसरों का विचार शुरू हो गया था । शाहनवाज़, सहगल और ढिल्लन के विचार के फलाफल पर देवल का भाग्य निर्भर करता था । वास्तविक अपराध चारों जनों का एक ही था ।

लाल क़िले का कोर्ट मार्शल मेजर जनरल शाहनवाज़, कर्नल सहगल, और कर्नल ढिल्लन को सम्राट के विरुद्ध युद्ध करने के अपराध के लिए बठा था । उन्हें आजीवन द्वीपान्तर की सज़ा दी गई । और मामला प्रधान सेनापति आकिनलेक के पास भेज दिया गया । उनकी स्वीकृति से सज़ा पक्की मानी जायेगी ।

इसी बीच समस्त देश में विराट आन्दोलन शुरू हो गया । नेताजी भारत के स्वाधीनता-युद्ध के सेनापति थे । आई. एन. ए. की सेना मणिपुर नागा पहाड़ पर दश को स्वाधीन करने के लिए आ गई है, इस समाचार ने पराधीन देश में सभी को उत्साह और आनन्द से भर दिया । उसके जोरदार धक्के से अंग्रेजी सिंहासन ड़ाँवाडोल हो उठा ।

आज़ाद हिन्द दल युद्ध हार गया । किन्तु उसे पराजय में भी जय मिली । आई. एन. ए. के विजयी हो जाने पर उसे शायद देश के लोगों से या हिन्दुस्तानी सेना से बाधा मिलती । उन्हें जापानी शत्रुओं के मित्र समझ कर उनसे युद्ध किया जाता । किन्तु पराजित आज़ाद हिन्द सेना ने देश में सभी को जय कर लिया ।

उसी आज़ाद हिन्द का कर्नल देवल सिंह लाल क़िले के गुप्त कारागार में

भाग्य की प्रतीक्षा कर रहा था ।

३ जनवरी, सन् १९४६ ।

लाल किले के बाहर मनुष्यों की जय ध्वनि से आकाश फटा पड़ रहा था । किन्तु बात क्या है, यह किसे पता ? हो सकता है कि नेता जी की वाहिनी युद्ध जीत कर दिल्ली पहुँच गई है । इसके अतिरिक्त और कोई कारण इतनी जय-हिन्द या विजय-ध्वनि का नहीं हो सकता । सन् १९४२ में देश का मेरुदंड तोड़ दिया गया था । भारत छोड़ो की आवाज़ अब इतनी ऊँची नहीं उठ सकती थी यह बन्दी देवल अच्छी तरह समझ सकता था, किन्तु,

“टूट जाय तन्द्रा जिससे बादशाहजादों की,
तोड़े गये दिल्ली के प्रासाद इससे बार बार ।”

इस तरह जो जय हिन्द ध्वनि हो रही है, उससे ब्रिटिश बादशाह की तन्द्रा भी टूट जायेगी ।

लोहे के कारागार में मोटे सीखचों में लगा ताला खट-खट शब्द कर खुल गया । एक नायक ने बताया कि उससे मिलने के लिए तीन व्यक्तियों को आज्ञा-पत्र मिला है । उससे मिलने के लिए एक-एक व्यक्ति को अलग-अलग भेजा जायेगा ।

देवल नायक के मुख की ओर थोड़ी देर तक देखता रहा । तीन व्यक्ति ? उसके साथ तीन व्यक्तियों ने मिल कर मरण का अभिसार किया था । उम-रावसिंह को मृत्यु सहस्र बाहुओं से आलिंगन कर ले गई । रवीन का क्या हुआ कोई नहीं जानता । उसे भी संभवतः आजीवन द्वीपान्तर होगा । शाहनवाज़ को भी द्वीपान्तर हुआ है । यह जय ध्वनि निश्चय ही उसका प्रतिवाद नहीं है, नहीं तो अब तक गोली चलने की आवाज़ आ गई होती । तीन आदमियों को उससे मिलने की फिर आज्ञा क्यों दी गई ? ये तीन व्यक्ति कौन हो सकते हैं ?

शायद कल से उसका विचार भी आरम्भ हो जायगा । क्या उसके पक्ष को समर्थन करने की कोई व्यवस्था की गई है ?

नहीं । उसे अपने लिए किसी वकील की ज़रूरत नहीं है । मिता ने जज एडवोकेट की वकालत का मोड़ संपूर्ण रूप से उसकी ओर फेर दिया है । यह सब कैसे हुआ, उसे देवल मरने के बाद भी जान न सकेगा । किन्तु उसका

फल मिता को क्या मिलेगा, यह भी वह समझता है। उनमें-से किसी की कोई खबर देवल नहीं जानता है।

और राय ? उनकी भड़कीली पोशाक एवं पद-मर्यादा इसके बाद कैसे रहेगी ? राय उसे हर तरह से फँसाना चाहता था। उसी राय ने उसके लिए अपना गला फँसा दिया। केवल इतना ही नहीं। राय ने किसके लिए यह सब किया ?

नायक बोला, “मैं समझता हूँ कि आप किसी से मिलने को राजी नहीं हैं।”

देवल चुप रहा।

नायक धीरे-से फुसफुसा कर बोला, “नहीं मत करो। बाहर बहुत कुछ हो रहा है।”

हो रहा है। उसके जीवन में भी बहुत कुछ हो रहा है। किन्तु जिस घटना में वह फँस गया है, वही उसके सम्मुख फिर आ रही है। वह उसमें और अधिक फँस जायेगा।”

देवल को सोच-विचार का अधिक समय नहीं मिला। उसे आशा थी कि बन्दी को देखने लोग आयेंगे।

उससे मिलने जो सबसे पहिले आया, देवल ने उसकी आशा नहीं की थी। मिता छूटते ही आई। देवल का हाथ पकड़ कर बोली, “भगवान्, भगवान्, उसने मेरी प्रार्थना सुन ली, देवल ! तुम्हें निश्चय ही मुक्ति मिलेगी।”

मुक्ति ? हाँ, यह जय हिन्द की ध्वनि उसके कानों में मुक्ति का मंत्र ही सुना रही है। एक ओर खड़े होकर अस्फुट स्वरों में उसने कहा, “नेताजी की जय। आज़ाद हिन्द की जय।”

“हां, तुम्हारी जय देवल। देश में सबकी सम्मिलित माँग की उपेक्षा करके दंड देने का साहस और क्षमता ब्रिटिश में अब नहीं रही। कमाण्डर-इन-चीफ आकिनलेक ने शाहनवाज़ इत्यादि की समस्त सज़ा को रद्द कर दिया है। तुम भी निश्चय ही छोड़ दिये जाओगे। आज-कल ही में।”

देवल चुप रहा।

“तुम्हारी ही जय है देवल। तुम्हारी ही। आज़ाद हिन्द की भी निश्चय ही जय है।”

“किन्तु.....।”

“क्यों चुप क्यों हो गये ?”

“मिता तुम यहाँ क्या करने आई हो ? मैं शायद छूट जाऊँ ? किन्तु तुम्हें यहाँ सन्देश की दृष्टि से देखेंगे ।”

“नहीं, वह भय नहीं है । इतनी विपत्ति और इतना दायित्व लेकर युद्ध के इलाके में गई थी । वहाँ स्पेशल डिस्पैच ने मेरा नाम भेजा है । इसलिए मुझे सीनियर कमांडर का प्रमोशन दिया गया है ।”

“हृदय से अभिनन्दन करता हूँ, मिता । तुम क्या इसीलिए दिल्ली आई हो ?”

मिता चुप रही ।

“समझ गया । कर्नल राय के क्या समाचार हैं ?”

तब भी मिता नीरव रही ।

“वे क्या मेरे पक्ष में बोलने के कारण विपत्ति में पड़ गये ? पहिले ऐसी आशा बिल्कुल नहीं थी ।”

इस बार मिता ने बातचीत की, वह बोली, “देवल, वह बात अभी रहने दो ।”

“क्यों, वह बात तो तुम्हारी अपनी ही होगी, मिता । इतना अधिक साहस, इतनी बड़ी बुद्धि, इसकी बात तो मैं तुमसे कहूँगा । तुम्हारा थोड़ा-सा स्पर्श पाकर ही तो इस मामले का प्रवाह ऐसा हो गया ।

मिता चुप हो गई ।

किन्तु देवल से चुप नहीं रहा गया । “देखो मिता, एक निमिष में इतना परिवर्तन । समस्त जीवन में इतना परिवर्तन शायद नहीं हो सकता । यह राय के मन में तुम्हारे ही कारण हुआ । तुमने उसके मन में इतना ऊँचा स्थान पा लिया है । उसे प्रमाणित करने की ज़रूरत नहीं । मैं तुम्हारा किस प्रकार अभिनन्दन करूँ ।”

मिता का मुँह पीला पड़ गया ।

देवल बोलता रहा, “मिता तुम वीरनारी हो । मेरी सज़ा, मुझे यदि प्राणदंड भी हो जाती, तो मैं इस आशा को लेकर जाता कि तुम अपने को सँभाल कर एक दिन सुखी होओगी । और अब तो मुझे मुक्ति मिल ही जायेगी । तुम उससे और सहज सुखी होगी । तुम्हारा मन्दिर चिर दिन भरा रहेगा, मिता ।”

मिता के नेत्रों में आँसू छलछला उठे ।

“यह क्या मिता ? छिः मैंने तुमसे कभी किसी दुर्बलता की आशा नहीं की थी ।”

“नहीं, नहीं । मैं बिल्कुल दुर्बल नहीं हूँ ।” मिता बाधा देकर बोली ।
“किन्तु तुम्हारे गले में कोई आश्वासन का स्वर नहीं है ।”

“उससे, उससे तुम्हारा..... ?”

“नहीं, मेरे, मेरे नेत्रों की ओर मत देखो देवल ।”

देवल और कुछ समझ न सका । आश्चर्य से भर कर मिता की ओर देखता रह गया ।

थोड़ी देर बाद देवल ने नीरवता भंग की, “तो क्या मेरा आशा करना ठीक नहीं है ?”

“आशा ? तुम्हारी आशा क्या है देवल ?”

“मेरी आशा यह है कि कर्नल राय तुम्हें अच्छी तरह समझते हैं । तुम सुखी होवो ।”

“किन्तु तुम्हारे सुख की समाधि के ऊपर मैं अपने स्वप्न की, अपने नवीन घर की रचना कैसे कर सकती हूँ ?”

“इसमें आपत्ति क्या है मिता, संसार में सभी की आशा पूर्ण नहीं होती है । इसी से सब सुखी भी नहीं हो सकते । याद है तुमने रात को उस टीले के घर में मुझसे कहा था कि प्यार करने में ही सुख है । यदि वह सुख एक पक्ष को भी मिले, तो यथेष्ट है । प्यार का प्रतिदान न मिलने पर भी । तुम्हारी वह बात मैं भूला नहीं हूँ ।”

“किन्तु मैं उसे भूल गई, देवल ।”

“इसके मानी ?”

“मानी यही है कि मैं समझती हूँ कि अपना प्रतिदान पाने पर ही देने वाला बड़ा नहीं हो जाता । उसके बदले में पाने की इच्छा भी होती है । देने से जो शुरू होता है, पाने पर ही उसकी संपूर्णता होती है ।”

देवल म्लान भाव से हँसा । बोला, “मिता देखो, मैं कई दिन से बराबर इसी पर सोच रहा हूँ । तुम्हारी वाणी ने मुझे नई शिक्षा, नई सान्त्वना दी है । उसी सान्त्वना से मुझे युद्ध में हारने पर भी कष्ट नहीं हुआ । सोचता था

कि देश को ही तो प्यार करता हूँ, उसी के लिए लड़ता हूँ और मरता हूँ। बस, और देवल है ही क्या ? और उसे मिलना ही क्या है ?”

मिता इसे स्वीकार न कर सकी। बोली, “नहीं देवल, देश के बारे में यह बात नहीं हो सकती। करोड़ों लोगों की स्वाधीनता, उन्नति और सुख इसी में लगा हुआ है। वहाँ केवल प्यार करने ही से सब कुछ समाप्त नहीं हो जायेगा। तुम्हारा असली काम तो अब शुरू होगा, जब तुम छूट जाओगे। किन्तु वह अभी संभव नहीं है। अभी तो तुम लाल किले के बन्दी हो।”

बातचीत में लाल का प्रसंग आ जाने से देवल को धक्का लगा। वह हँस पड़ा।

मिता ने उसे हसते देख कर जिज्ञासा की, “हँसे क्यों ?”

“लाल बातचीत को सोच कर हँस रहा हूँ। बचपन में बिवाह के निमंत्रणों के लिफाफे लाल देखे थे। लाल किले में रहते-रहते तुम्हारा लाल लिफाफा मेरे पास आ जाय, यह प्रार्थना करता हूँ।”

“मैं ठीक समझती हूँ देवल। तुम्हारे मन की वेदना मेरे जीवन को रँग देगी। तुम उस व्यथा को जान न सकोगे। जानोगे भी तो मानोगे नहीं। किन्तु तुम्हारी व्यथा, तुम्हारी रिक्तता मेरे मन को सदा तड़पाती रहेगी। और यह दण्ड मुझे मिलना उचित भी है। भित्तिहीन स्वप्न से तुम्हारे मन को रँग दिया था। उसका यही दंड है।”

देवल अस्थिर हो उठा। तुरन्त मिता के दोनों हाथ पकड़ कर बोला। “नहीं, नहीं मिता। मेरी स्मृति तुम्हारे निकट कभी दंड का रूप लेकर नहीं रहेगी। मेरे साथ इतनी सहानुभूति तुम जरूर करोगी। और इसी से मुझे शांति मिलेगी।”

मिता ने सिर नीचा कर लिया। “इतनी सरलता से शांति नहीं मिलती देवल ! मनुष्य के मन का व्यापार इतना सरल नहीं है। उसमें तिल-तिल करके रक्त बहता है। और मन उसे समझ नहीं सकता। और उस तिल तिल करके बहते हुए रक्त भरे हृदय के कारण मनुष्य को कभी चैन की नींद नसीब नहीं होती।”

देवल ने हँसकर बात को उड़ा देना चाहा। “अर्थात् तुम मुझे इस तरह उप-देश दोगी। फिर इस बीच में अफ्रीम का प्रबन्ध भी कर देती।”

“तुम बहुत निष्ठुर हो गये हो देवल ! मिता ने क्षीण अनुयोग किया ।
“मैंने जो कुछ कहा है, उसे तुमने बड़े कठोर भाव से सुना है ।”

“क्षमा करो मिता ! मैं तुम्हें आघात नहीं पहुँचाना चाहता । मैं तो हँसाना चाहता था । हँसा कर हल्का करना चाहता था । इसी से इसके अतिरिक्त मेरा और कोई मतलब नहीं था । तुम बताओ, क्या कहना चाहती हो ?”

“सुनो, मेरी इण्टरव्यू का समय समाप्त हो गया है । इससे संक्षेप में कहूँगी । बाहर तुमसे मिलने के लिए और दो लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं । एक है उत्तमा और दूसरे…… ।”

मिता को चुप देख कर देवल ने नाम जोड़ दिया । वह बोला, “जान गया—कर्नल राय । उस नाम को बोलने में कोई द्विविधा मत करो, मिता ।

मिता मुख नीचा कर रह गई ।

देवल भी दृष्टि मिला न सका । वह बोला, “हार तो मैंने स्वीकार कर ही ली है । इसमें तुम्हें संकोच करने का कोई कारण नहीं है ।”

मिता ने उत्तर दिया, “तुम वैसे ही भोले बालक रहे देवल । वह बात रहने दो । ३१ दिसम्बर को मेजर जनरल शाहनवाज़ को द्वीपान्तर का दंड हुआ था, उसी दिन कार्यवश मैं दिल्ली के लिए रवाना हुई । पता लगा कि अबकी तुम्हारी बारी है । ट्रेन में देखा कि वे भी दिल्ली जा रहे हैं । उद्देश्य एक ही था । वे बोले कि तुम्हारे डिफेंस का ठीक प्रबन्ध करना है । किन्तु उनका कमीशन अब नहीं रहा ।”

देवल को आश्चर्य हुआ “क्यों ? गवर्नमेंट ने क्या उन्हें मेरे कारण बर-खास्त कर दिया ?

उच्छल मुख से मिता ने उत्तर दिया, “नहीं, वह बात नहीं । उन्होंने स्वयं पदत्याग कर दिया है । तुम्हारा मामला करते-करते उन्हें जीवन में नया प्रकाश मिला ।”

प्रसन्न होकर देवल बोला, “वह मैं कोर्ट-मार्शल के समय ही समझ गया था, मिता ।”

मिता का मुँह लाल हो उठा । पुलकायमान होकर थोड़ा सँभल कर वह बोली, “नहीं, नहीं । वह बात नहीं है । उन्होंने उसी समय अपना कर्तव्य निश्चित किया ।

देवल रुकने वाला पात्र न था। वह उसे दिखा देना चाहता था कि वह कितना सुखी है।

वह बोला, “कर्नल साहब को मैं कवि की वाणी में अभिनन्दन करना चाहता हूँ—

“सेइ चेनार आलोक दिये आमि चिनी आपनारे।”

मिता ने बाधा दी, “आः, सुनो तो। उन्होंने अनुभव किया कि विदेश का मोह, विदेशी-आज्ञा पालन, मिलिटरी-पोशाक की तड़क-भड़क, इन सबसे कितनी उच्च, कितनी महान साधना की वस्तु है देश। उन्होंने तुम्हें देख कर अपने को पहिचाना। तुम्हें देख कर ! वह मेरा कितना बड़ा सुख है ! कितना महान गौरव है !! यह सोच कर देखो देवल।”

देवल ने इसे अवश्य सोच कर देखा। मिता यदि यह बात सोच कर अपने को प्रबोध देती है, प्रसन्नता पाती है तो देवल उसमें बाधा नहीं देगा। वह अपने रक्त भरे हृदय को बिल्कुल अलग रखेगा। वह सैनिक है, योद्धा है। आघात झेलना उसकी शिक्षा है।

वह केवल इतना कह सका, “वह मेरे भी कम गर्व की बात नहीं है, मिता। तुम्हारी रिफ्लेक्टेड ग्लोरी से, तुम्हारी प्रतिफलित महिमा से मैं भी उनकी दृष्टि में आज बड़ा हो गया हूँ। मेरे अनेक लाभ हैं।”

मिता बोली, “उन्होंने कमीशन छोड़ दिया है। हाईकोर्ट में नाम लिखाया है। देश के नेता कहते हैं कि उनका भविष्य बड़ा उज्ज्वल है।”

देवल हँस पड़ा। “मिता, मैं अपना भी अभिनन्दन करता हूँ। मैं ही उनका प्रथम मुक्किल हूँ।”

किन्तु समय थोड़ा रह गया। नायक थोड़ी दूर आकर ठहर गया। मिता जल्दी से बोली, “सुनो, हम दोनों अच्छी तरह समझते हैं कि उत्तमा तुम्हें कितना प्यार करती है। जिरह के समय यह बात साफ़ समझ में आ गई थी। नहीं तो वह उस तरह मूर्च्छित न हो जाती। दिल्ली आई है और रोज़ ही लाल किले के सामने चक्कर काटा करती है। क्यों ? उससे क्या कहा जाय ?”

देवल मिता की ओर अपलक देखता रह गया। उसके मुख पर उसने कौन-सा प्रश्न देखा, उसका उत्तर क्या मिला, इसे देवल ही जाने।”

मिता सब कुछ समझ गई, वह बोली, “सोच कर देखो देवल। तुम्हारे लिए

उसने मणिपुरी गाँव में जो कुछ किया, उसे बिना प्यार के कोई भी कन्या नहीं कर सकती थी। यह साधारण प्यार नहीं है। अपने घर में बैठ कर निरापद, निष्कण्टक प्यार सहज है, किन्तु प्राणों की ममता छोड़ कर, सब दुःख-विपद में अपने को होम कर प्यार करना, वह एक अलग बात है देवल। तुम स्वयं वीर हो, तुम इस वीर-नारी को उसके प्यार की मर्यादा निश्चय ही दोगे।”

देवल का मुख थोड़ा कठोर हो गया। मिता ने इसे लक्ष्य कर लिया। थोड़ी देर चुप रहने के बाद मिता ने ही बात शुरू की, “सरकार के पक्ष की गवाह है। अत्यंत आदर से दिल्ली में रखी गई है, मामला होगा इस आशा से। किन्तु बेचारी के मन की अवस्था सोच कर देखो। उसके मुख को देख कर ही तुम समझ जाओगे कि प्यार में वह मर रही है। तुम जब छूट जाओ, तब उसे मत भूलना। उसे उसका प्राप्य देना। यही एक मेरी.....।

“ठहरो, ठहरो मिता, अन्य किसी के लिए तुम वक्तालत मत करो।” देवल के स्वर में तेजी आ गई। किन्तु उसे टाल देने से मिता का उद्देश्य व्यर्थ हो जायगा। इसलिए उसने अपने क्रोध को रोक कर मिता की कही बातों को समझने की चेष्टा की।

वह बोली—“उत्तमा के ऊपर तुम्हारी इतनी करुणा देख कर मैं सुखी हो गई देवल। मैं यह आशा लेकर निश्चिन्त हूँ कि यह सहानुभूति तुम्हारे मन को स्निग्ध और सार्थक कर देगी।”

किन्तु देवल इससे भुलावे में नहीं पड़ा। वह बोला, “मिता, मैं बड़ा दुःखित हूँ कि इस बात में मित्राज दिखा बैठा। किन्तु मेरे मन की ओर दख कर मुझे क्षमा करो। मैं तुम्हारे मुख से केवल तुम्हारी बातें सुनना चाहता हूँ। और लोगों की बातें करके इतना अमूल्य समय नष्ट मत करो।”

सान्त्वना भरे स्वरों में मिता बोली, “जीवन बहुत बड़ा है। उसे अच्छी तरह चलाने के लिए बहुत कुछ आवश्यकता होती है। अनेक मनुष्यों को, अनेक मनों को लेकर चलना पड़ता है। आजकल केवल एक ही को दे देने से काम नहीं चलता है। अच्छा, उत्तमा की बात उत्तमा को ही कहने दना। यदि वह कुछ कह न सके तो उसकी दशा की उपेक्षा मत करना।”

पीछे से नायक ने धीरे से खाँसा। अर्थात् अब देर मत करो। चलो।

आधुनिकतम वेषभूषा में सज्जित रहने वाले कर्नल राय को धोती कुरते में पहचानना कठिन काम था। किन्तु ठीक पहले की तरह अपने ऊपर पूर्ण रूप से निर्भरशील वे सामने आकर खड़े हो गये। पहले की ही तरह उनकी भाव-भंगी अत्यंत सौम्य एवं मधुर थी। आंतरिक भाव से वे देवल की ओर बढ़े। उनमें अतिभद्रता का उद्धतपन न था, किन्तु सभ्यता की नम्रता थी।

देवल थोड़ा पशोपेश में पड़ गया। नमस्कार करूँ या हैण्डशेक। राय ने बढ़ कर देवल को आलिंगन पाश में बद्ध कर लिया और कहा, “नमस्कार, आपको नमस्कार ! आपकी जय हो !”

देवल ने मुसकरा कर प्रतिनमस्कार किया और कहा, “जय यदि है तो वह आपकी है। आपने कोर्ट मार्शल में जिसे फाँसी से बचाया है, उसकी नहीं। आपकी कानूनी विद्या के कल्याण से आई. एन. ए. के सब लोग निर्दोष प्रमाणित हुए। आपकी जय हो।”

राय ने थोड़ा विवृत बोध किया। तुरन्त अपनी बात को दबा दिया और बोले, “सुनिये, आप हैं असली वीर, योद्धा। अपने देश की स्वाधीनता के लिए अपना सब कुछ उत्सर्ग कर दिया। यह सुनिये, बाहर अविराम जय ध्वनि सुनाई पड़ रही है। देश वीर-पूजा में आत्महारा हो उठा है।”

“आत्महारा अवश्य ही, किन्तु आत्मविस्मृत भी। यह समाप्त भी होगा ?”

राय ने धीरे से बाधा दी और बोले, “वह बात रहने दीजिये। मुझे आपसे जो बात कहनी है, उसका समय दीजिये।”

हाय राय, विजयी राय। पराजित देवल की व्यथा तुम कैसे समझ सकोगे? देवल कैसे समझाये कि वह अपनी एकान्त भाव की सुख-दुःख की आलोचना नहीं चाहता।

तब भी वीर के समान देवल सुनने को तैयार हो गया। ऐसा लगा मानों उसके सामने बन्दूकधारी सिपाही खड़े हों और उसे दीवार के सहारे खड़ा कर उसके सामने बन्दूकें ताने हों।

अत्यन्त नरम स्वरों में राय बोले, “मैं आपके निकट अपनी आन्तरिक कृतज्ञता जताने आया हूँ।”

देवल को आश्चर्य हुआ, “मेरे प्रति कृतज्ञ ? आप ? किन्तु मैं जो आज जीवित हूँ, उसके लिए मुझे आपका चिरकृतज्ञ होना चाहिए।”

“नहीं, नहीं, आप नहीं समझ सकेंगे। आपने मेरे नेत्र खोल दिये हैं। मुझे परम संपदा का संधान मिला है।”

देवल की रक्षा नहीं। कोर्ट माशिल से तो वह बच गया। किन्तु उसके मन की निष्कृति नहीं हो सकती। उसने अपने रक्ताक्त आहत हृदय को सँभाल लिया।

वह बोला, “मैं चिरकाल तक आपके सुख और सौभाग्य की कामना करता हूँ। केवल आपका अभिनन्दन ही नहीं, परम सुख की कामना भी करता हूँ।”

वह कैसी कामना कर रहा है, इसे जानना नहीं चाहता। जिज्ञासा भी नहीं करना चाहता। सब कुछ समाप्त हो, शांत हो। देवल अब इस अध्याय को समाप्त कर देना चाहता है।

राय भी इस बात को टालना चाहते थे। इसलिए कोई और बात करने की चेष्टा करने लगे। वे बोले, “मैं भी प्रार्थना करता हूँ कि आपकी जय शेष जय में परिणत हो जाय। ऐसा लगता है कि मानों देश ‘जयहिन्द’ की ध्वनि को चिरकाल तक रखना चाहता है।”

“धन्यवाद, धन्यवाद, कर्नल राय। आपने भी कम स्वार्थत्याग नहीं किया है। केवल मेरे लिए ही नहीं समस्त आज़ाद हिन्द, समस्त देश की स्वाधीनता के लिए भी।”

स्वार्थ-त्याग की बात से राय के मन में मिता की बात याद हो आई। मिलिटरी पद-मर्यादा उन्होंने छोड़ दी है। किन्तु उसका पूरा सूद शीघ्र ही वसूल हो जायगा। कलकत्ता हाईकोर्ट उसका प्रमाण है। किन्तु उसे सब कुछ यूँ ही मिल गया। देवल का असली स्वार्थ-त्याग है। वह कितने सहज में, कितने कष्ट सह कर हार स्वीकार कर रहा है। मिता ने उसे सारी बात खोल कर बता दी है।

देवल की सुख-शांति की बातों का देखना भी ज़रूरी है। यह बात कहने के लिए ही उसका यहाँ आने का उद्देश्य है। जिसके कल्याण से मिता का आविष्कार हुआ, उसे भी तो शांति मिलनी चाहिए।

थोड़ी इतस्ततः करके राय फुसफुसा कर बोले, “एक और व्यक्ति आपको देखने के लिए बाहर प्रतीक्षा कर रहा है। आप उसे समझने की चेष्टा कीजिये,

यही आपसे अनुरोध है ।”

मिता से उसने जो कुछ मुन लिया था, राय उससे अधिक क्या कहते ? वे खूब आन्तरिक भाव से देवल के दोनों हाथ पकड़ कर खड़े रह गये ।

इस बात के उत्तर से देवल ने मिता को चोट पहुँचाई थी । किन्तु राय से क्या कहा जाय ? क्या उनसे यह कह दिया जाय कि उत्तमा को लेकर उनका सिर पच्ची करने की ज़रूरत नहीं है । मिथ्या अभिनय को छोड़ कर वह जो कुछ उत्तर देगा, उससे राय को कष्ट होगा । अपने जीवनदाता को वह कष्ट कैसे दे ? और वह मिता का प्रिय भी तो है । किन्तु उसकी प्रतिध्वनि ने मिता के मन को भी जगा दिया है ।

चुपचाप लोहे के जंगले को अपने दोनों हाथों की मुट्ठियों से जोर से पकड़ कर देवल राय के पास खड़ा रह गया ।

राय सब कुछ समझ गये । किन्तु जैसे कुछ भी नहीं हुआ हो, ऐसे भाव से शुभ कामना करते हुए बाहर चले गये ।

देवल की समझ में न आया कि वह उत्तमा से क्या बातचीत करेगा । उसे माताहारी बनाने के स्वप्न में वह एक बार विभोर हो उठा था । किन्तु एकमत एक उद्देश्य लेकर काम करते-करते वे एकप्राण हो जायेंगे, यह संधान तो देवल को किसी ने नहीं दिया था । उसके मन में रास के उत्सव की सब रेकर्ड की बातें याद हो आई । एक कुमारी की नव नीरव प्रीति ।

कोर्ट मार्शल के बाद देवल कई दिनों तक रास के नाच की सारी घटनाएँ और बातें सोच-सोच कर मनन करता रहा । देवल ने पहिले ही लक्ष्य कर लिया था कि कुछ दिनों से उत्तमा की बातें कुछ अधिक काव्यमयी हो गई हैं और वह अपने गोपन मन की बातें भी किसी तरह कह देती हैं । किन्तु उत्तमा ही ने तो उसका कारण देख लिया था । इतनी घोर दुश्चिन्ता के बीच सारे दिन जलवायु की आलोचना करके ही तो नहीं रहा जा सकता है । शत्रु-पक्ष के गुप्तचर यदि संदेहवश उन प्रेमालाप की बातों को सुन लें तो उन पर दिमाग खराब करने की ज़रूरत नहीं है ।

दो चकमक पत्थरों की रगड़ से अग्नि पैदा हो जाती है । किन्तु देवल ने किसी भी दिन उससे हृदय की बातें नहीं कीं । और न उसे प्रतिदान दिया । सब बातें एकतरफा हैं । किन्तु एक पत्थर यदि बेकार हो और दूसरा चकमक

पत्थर उस पर घिसा जाय तब भी अग्नि तो जलेगी ही। उसमें क्या देवल का कोई दायित्व नहीं है। कोई दायित्व ही नहीं।

देश के लिए, केवल देश के लिए ही क्यों ? किसी काम में यदि पुरुष और नारी हाथ में हाथ पकड़ कर चलें और उनमें अलक्षित प्रेम जाग उठे तो छन प्रेम के बारे में किसी का दायित्व नहीं है। सहकर्मिणी यदि एक धर्म की पुजारी होकर सहधर्मिणी हो उठे तो क्या दोनों प्रेम के बंधन में माने जा सकते हैं ? वैसा होने पर तो फिर इस युग में एक साथ कोई काम ही नहीं हो सकता है।

देवल ने अनेक युक्ति अनेक तर्क देकर अपने मन में अपनी सफाई दी। उसका कोई भी दायित्व नहीं है। उसे कुछ भी देना-लेना नहीं है। तब भी.... तब भी.....

हाँ, एक चीज़ लेनी है। उसे एक चीज़ लेनी है। मिता को जो उसने मन दिया है, वह मिता ने नहीं लिया है। किन्तु उसे देने पर भी उसके मन के ऊपर उसका सब अधिकार समाप्त हो गया है। संसार में अब और किसी के लिए उसका प्रेम बिल्कुल बाकी नहीं रह गया है।

फिर भी उसने अपने मन को जाँच कर देखा। उत्तमा के लिए उसका दायित्व निश्चय ही है। वही उसे इस पथ पर लाई है। उसी के लिए उत्तमा की कोर्ट मार्शल में इतनी लाँछना हुई, इतनी उलझन और कानाफूसी हुई। उसे बचाने के लिए ही उत्तमा का व्यक्तित्व और हाँ, उसका प्रेम भी विकसित हुआ। उसके लिए आखिर कोई बात तो रखनी ही होगी।

किन्तु यदि उसका अपना ही कोई संबल न हो तो ? संसार के आईन में दिवालिया होने पर जेल मिलती है। मन की आईन में दीवालिया होने पर जीवन भर मानसिक जेल रहती है। उत्तमा उसे प्यार करती है। उसकी साथ जेल में भी क्या समस्त जीवन भर संगिनी होकर रह सकती थी ?

जेल के द्वार पर उत्तमा आकर खड़ी हो गई। उसके सामने। बिल्कुल सम्मुख। कुछ बातचीत तो करनी ही चाहिए।

देवल केवल इतना ही कह सका, “उत्तमा तुम्हारा स्वास्थ्य बड़ा खराब हो गया है। इसका कुछ यत्न करो। मेरे बारे में अधिक कुछ मत सोचो। अपने पिता की ओर देखो, उत्तमा। मेरे बारे में अधिक मत सोचो।”

देवल चुप होकर रह गया। उत्तमा भी।

चारों ओर नीरवता छा गई। संध्या हो आई। इतनी जोर से जय हिन्द की ध्वनि बन्द हो जाने के बाद नीरवता पर बार-बार ध्यान जाता था। देवल थोड़ा चौंक उठा। केवल उनके हाथ में बँधी घड़ी टिक-टिक कर रही थी।

उत्तमा ने बात शुरू की, “सीनियर कमांडर, मिता देवी आई थीं। जज एडवोकेट साहब भी। उन्होंने ही मुझे तुम्हें देखने की व्यवस्था की है। उनके प्रति मैं चिरकृतज्ञ हूँ।”

उत्तमा में बोलने का और कुछ साहस नहीं था। किन्तु प्रत्याशा थी। जो बात वह कहना चाहती थी, सुनना चाहती थी, उसकी शुरूआत देवल से ही होना चाहिए थी। किन्तु हाय, शुरू करना तो दूर की बात है, उसका इशारा भी उधर से नहीं मिला। मिलिटरी फरियादी पक्ष की ओर से उसकी गवाही ठीक करने के लिए कोर्ट मार्शल में मिता का बयान, राय की जिरह, और अनेक नक्थीपत्र देखे गये थे। उन्हें देख कर वह सब कुछ समझ गई थी। सब कुछ। जो अन्य व्यक्तियों, विचारकों या वकीलों की आँखों में नहीं आ सकता नारी के नेत्र उसे अच्छी तरह समझ लेते हैं।

हाय !

किन्तु प्यार करन से क्या भिखारी होना पड़ता है ?

देवल ने उत्तर दिया, “तुम अच्छी तरह रहो। तुमने मेरे साथ रहकर नेताजी के लिए जो कठिनाइयाँ उठाई, जितनी विपत्तियाँ झेलीं, उन्हें तुमने सौभाग्य कहकर सादर स्वीकार किया है। तुम्हारी आदर्श मूर्ति की मैं समस्त जीवन भर श्रद्धा करूँगा। अपने पिता को मेरा नमस्कार कह देना।”

पिता की बात उठाने पर उत्तमा विचलित हो गई। वह बोली, “पिता भी दिल्ली आये हैं। तुम्हारे छूट जाने पर तुमसे मिलने आयेंगे।”

अब, अब क्या शुरू होगा। दिवालिए को लेकर कोई द्वंद्व ? नहीं देवल, अपने लिए कोई इतस्ततः नहीं करेगा। किन्तु उत्तमा, उत्तमा के लिए ही उत्तमा से दूर रहना ठीक है। पास रहकर वह कुछ दे न सकेगा। उसके नेत्रों के सामने बार-बार आना या किसी संभावना का कोई भी इंगित देना ठीक नहीं होगा।

तब भी देवल बोला, “तुम्हारे समान कन्या के पिता देश की श्रद्धा के पात्र हैं। उनके दर्शन अवश्य करूँगा।”

थोड़ी देर ठहर कर देवल बोला, “तुम्हारा देश अब तक निश्चय ही शांत हो गया होगा। वहाँ तुम्हें सब लोग कितना सम्मान देंगे, कितनी पूजा करेंगे, उसे सोच कर ही मुझे बड़ा अच्छा लगता है। सरकार की पक्ष की ओर से तुम्हें हाज़िर करने पर भी जिस दुःसाहस वीरत्व का परिचय तुमने दिया, उसे तुम्हारे देश के लोग अब तक अच्छी तरह जान गये होंगे।

उत्तमा सिर नीचा कर रह गई। कुछ मीठे स्वरों में बोली, “वह सब देख कर होगा क्या?”

इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया जा सका। एक टामी यह जानता था कि इस महिला विज्जीटर को अभी चले जाना होगा। संध्या हो आई थी। अब किले के सैनिक बिगुल से ‘ग्रिट्टीट’ बजायेंगे। अर्थात् सैनिक पहरेदार बिगुल सुन कर किले में लौट पड़ेंगे। और उनके संकेत पर किले के फाटक इत्यादि बन्द हो जायेंगे। विलायती बैंग पाइप बजने लगा। ऐसा लगा मानों विहाग में विदाई का स्वर बज रहा हो। भुवन भर में अभी निर्जन, निःसंग संध्या समा जायगी।

इस तरह की रिक्त संध्या देवल पर क्या लेकर आयेगी। देवल ने निमिष भर सोचा। केवल निमिष भर। उसके बाद उसने अपने को स्वाभाविक रूप से मजबूत किया। वह वीर है, योद्धा है, वह हार सकता है किन्तु हार मान नहीं सकता। जीवन के साथ, भाग्य के साथ लड़ने की शक्ति का होना ही उसका सबसे बड़ा लाभ है। यही सबसे बड़ा संचय है। नहीं उसकी संध्या रिक्त नहीं है, वह रक्तराग से भरी है।

उत्तमा धीरे-धीरे लोहे के कटहरे से बाहर चली गई। एक बार कुछ सोच कर उसने पीछे देखा। उसने देखा कि देवल भी उमी ओर देख रहा है। तुरंत वह सँभल गया। उसका मुख संध्या के आलोक में रंग गया था।

ब्रिटिश बैंड के बजने के साथ-साथ अंग्रेजों का यूनिफ़ॉर्म जैक प्रति दिन की तरह लाल किले की चोटी से धीरे-धीरे नीचे उतर गया और किले के लाल पत्थरों पर, उसकी दीवारों पर करुण भाव से आसन्न संध्या का रक्तराग रचा गया।

